



श्री पार्वनाथाय नमः ।

# श्रीजैनज्ञान-गुणसंग्रह ।

लेखक और संग्राहक

मुनिश्रीसौभाग्यविजयजी महाराज

गोलनगर के श्रीजैनमठ की आधिकारिकद्वारासे

प्रकाशक—

श्रीरुविशान्त्रसंग्रह समिति,

जालोर (मारवाड)

धीरस्तयत् २४६२

विक्रमस्तयत् १९९३

ईस्वी न १९३६

प्रथमावृत्ति

मूल्य मरकटिका । ६ ३२-५

---

इदं पुस्तकं श्रीशारदामुद्रणाडये तद्विनिना  
श्रीमद्वर्षचद्रात्मजेन पण्डितभगवानदासेन मुद्रितम्  
जैनसोसाइटी न० १५-भमदायाद

---

## प्रस्तावना

मारवाड के निहारसे अनुभव हुआ कि इस प्रदेशके निवासियोंके लिये ऐसी पुस्तकोंकी खास जरूरत है जिन्हें सामान्य मनुष्य भी पढ़ सके और आवश्यकता तथा उससे सम्बन्धित अन्य सामान्य बात सुगमतासे जान सके। जो कि इस आवश्यकता को किसी अंशमें पूरा करने वाली गुजराती भाषाकी पुस्तक मिल सकती हैं, परन्तु इस प्रदेशवासियों के लिये गुजराती पुस्तक उतनी उपयोगी नहीं हो सकती, जितनी कि हिन्दी हो सकती है, यह मन विचार करने पर यही निश्चय हुआ कि यहां के जनगृहस्थों के लिये एक ऐसे ग्रन्थकी योजना होनी आवश्यक है जो हर प्रकारसे उपयोगी हो सके, हमने इस कार्य के लिये मुनिश्रीश्री सौभाग्यविजयजी को सूचना की और उन्होंने ने परिश्रमपूर्वक एक गद्यपद्य का संग्रह कर के हमारे सुपुर्द किया जो “जैनज्ञान-गुणसंग्रह” नामक पुस्तक के रूपमें पाठकगण के सामने है।

“जैनज्ञान-गुणसंग्रह” एक ‘संग्रह’ ग्रन्थ है। इसमें दो खण्ड और उनमें अनेक प्रकरण हैं।

ग्रन्थ का पहला खण्ड हिन्दीगद्यमें है जो अन्य ग्रन्थों के आधारसे मुनि श्रीमौभाग्यविजयजीने लिखा है, सिर्फ “शरणागति अथवा नामाजोडा” और “रोगिमृत्युज्ञान” नामक

दो अप्रसिद्ध लेख इसमें हमारा भी शामिल किये गये हैं जो “त्रिषधिविचार” शीषक प्रकरणमें छपे हैं।

दूसरा खण्ड पद्यमय है, इसमें कुछ रचनाय मुनिश्रीगौ भाग्यप्रियजीकी सुद की है, और बाकी सब नये पुराने अनेक कवियों की। इन की पसदगी हम प्रदेश के श्राव-श्राविकागण की रुचि के अनुसार की गई है।

हम प्रकार इस सदर्भ के दो खण्डोंमें ब्रह्म जैनान और जैनगुणोंका संग्रह होने के कारण ही इसका सार्थक नाम “जैनज्ञान-गुणसंग्रह” रखा गया है।

“जैनज्ञानगुणसंग्रह” की भाषा सरल और सुबोध बना नेका लक्ष्य रखा गया है, इसी कारण हममें कहीं वही देशप्रसिद्ध शब्दों का प्रयोग किया गया है और कुछ हिन्दी शब्दों के उच्चारण दृश्यभाषा के अनुसार लिखे गये हैं।

दूसरे खण्ड में प्राचीन लेखकों के स्तुति, स्तवन, मञ्जाय, पद आदि सब मुद्रित पुस्तकों में से लिये गये हैं परन्तु अयकाश न मिलने के कारण उनका हस्तलिखित-मूलपुस्तकों से मिलान नहीं हो सका, इस कारण कचिन् अशुद्धि रह गई हो तो पाठरुगण सुधार कर पढ़।

ग्रन्थ के अन्तमें “गोलनगरीयपार्श्वनाथप्रतिष्ठाप्रबन्ध” और “पोषधविधि” नामक दो परिशिष्ट जोड़े गये हैं, जिनमें

“पोषधविधि” का तो ग्रन्थ के साथ स्वामि सबन्ध है, क्यों कि ‘पोषधग्रन्थ’ का ग्रन्थमें निरूपण है तो उस के लेने पारनेकी विधि भी बतानी चाहिये ही, अतः ‘पोषधविधि’ का इस के साथ जोड़ना बिलकुल प्रासंगिक है परन्तु ‘प्रतिष्ठाप्रबन्ध’ का इस ग्रन्थ के साथ क्या सम्बन्ध है ? यह एक प्रश्न है और उत्तर इस का यह है कि प्रस्तुत “जैनज्ञानगुणसङ्ग्रह” ‘गोलनगरीयपार्श्वनाथप्रतिष्ठा’ का स्मारक ग्रन्थ है, गोलनगर के श्री जैनसंघकी प्रार्थना और आर्थिक सहायता से ही यह ग्रन्थ प्रसिद्ध किया गया है, इस दशा में “गोलनगरीयपार्श्वनाथ प्रतिष्ठाप्रबन्ध” का भी इस के साथ छपना अन्यन्त जरूरी था।

‘प्रतिष्ठाप्रबन्ध’ को इस स्थायीसाहित्य के साथ जोड़ने का एक और भी कारण है, वह यह कि मारवाडमें प्रतिवर्ष छोटी बड़ी अनेक प्रतिष्ठायें हुआ करती हैं, और उनमें हजारों रुपया खर्च होता है, परन्तु कई जगह पर प्रतिष्ठाकारकों को अपने काम में ‘यश’ नहीं मिलता, इसका मुख्य कारण प्रतिष्ठाकार्य सम्बन्धी योग्य व्यवस्था की खामी होती है। प्रतिष्ठा में कार्यव्यवस्था कमी होनी चाहिये और उसके व्यवस्थापकों को अपने कार्य में किस प्रकार तत्पर रहना चाहिये, यह जानने के लिये ‘गोलनगरीयपार्श्वनाथप्रतिष्ठाप्रबन्ध’ एक पठनीय निबन्ध है। कोई भी प्रतिष्ठारूपा साधु और श्रावकगण इसमें लिखे मुजब प्रतिष्ठारूप की व्यवस्था करेंगे तो उन्हें अपने

कार्य में कभी 'अपयश' नहीं मिलेगा ।

अन्त में पाठकगण से निवेदन है कि वे इस पुस्तक को जिज्ञासावृत्ति से पढ़ें और इसमें लिखी हुई शिक्षाओं को अपने हृदय में व्यापित करें, निस्मन्देह इससे उनको अपने जीवन सुधार में मदद मिलेगी और ऐमा होने से ही इस पुस्तक के लेखक, प्रकाशक और सहायका का परिश्रम भी सफल होगा ।  
तथास्तु ।

तत्त्वतगद  
ता० २५-५-३६  
ज्येष्ठशुदि ५ स० १९०३

मुनि कल्याणविजय

# श्रीजैनज्ञान-गुणसंग्रह का विषयानुक्रम

## प्रथमखण्ड—

विषयनाम	पृष्ठाङ्क
१ <u>देयदर्शनविधि—</u>	१-१२
सामान्य उपदेश	१
८४ आशातना	५
४० मध्यम आशातना	९
१० जघन्य आशातना	११
२ <u>जिनपूजाविधि—</u>	१२-३८
सामान्य उपदेश	१२
भूर्तिपूजा की जरूरत	१३
प्राथमिक कर्तव्य	१६
पूजाभाषना के दोहरे	२७
जिनमन्दिर में प्रवेश और द्रव्यपूजा	२८
जलाम्बिक में भाषना और जयणा	२९
नवमङ्गपूजा के दोहरे	२२
पूजामें मूलनायकजी की मुख्यता	२३
पुष्पपूजा में विवेक	२४
अग-मङ्गपूजाविषयक भाषना	२५
स्वस्तिक	२८
भाषपूजा	२९
सतरामेदी पूजा	३३



इकीस प्रकार की पूजा	३४
दर्शन और पूजनसम्बन्धी कुछ सूत्रनार्ये	३५

### ३ धातक-द्वादशमत— ३८-९५

सम्यक्त्व अथवा समकितस्वरूप	३८
स्थूलप्राणातिपातविरमण	४२
स्थूलमृदागदविरमण	४७
स्थूलअदत्तादानविरमण	५०
स्वदारस्तनोप-परस्त्रीविरमण	५४
स्थूलपरिग्रहपरिमाण	५६
दिवपरिमाणव्रत	६२
भोगोपभोगपरिमाण	६५
(७२ अमृत्य, ३२ अनन्तराय, १४ नियम, वनस्पतिटीपसहित)	
अनर्थदण्डविरमण	८४
सामायिक व्रत	८६
देशायनाशिक व्रत	८९
पोरघोषवास व्रत	९१
अतिथिसविभाग व्रत	९३

### ४ तपस्याविधि— ९५-११५

धीमस्थानक-तपविधि	९५
अष्टकर्मओली ( कर्मसूदनतप )	९७
रोहिणीतपविधि	९८
वर्धमानओली की विधि (वधमात्रायणिल तप)	९९
गुपचमी तप	९९
ज्ञानपचमी तप	१००
४५ आगम तप	१००
पक्षयाडातपविधि	१०४

पौषदशमीतप की विधि	१०५
पचरगीतप विधि	१०६
दशपञ्चदश्राण विधि	१०७
२४ जिनकल्पणकृतप विधि	१०८

#### ५. विधिधविचार— ११५-१८८

(१) वर्तमानजैनागमपरिचय	११५
(२) ६३ शलाकापुरुषविचार	१२८
(३) ५२ थोल्का नकशा	१३३
(४) धारणागति अथवा तामाजोडा	१५५
(५) घर कदा आर कैसा बनाना चाहिये ?	१६६
(६) सूतस्विचार	१७१
(७) रोगि-मृत्युसात	१७८

### द्वितीयखण्डे—

#### १. चैत्यपदनसंग्रह १८९-२०१

(२४ जिनने २४ समुत्तचैत्यपदन)

#### २. स्तुतिसंग्रह— २०१-२२०

आदिजिनस्तुति ( शारसेनी )	२०१
शान्तिनाथजिनस्तुति ( मागधी )	२०२
नेमिनाथजिनस्तुति ( पैशाची )	२०४
पार्श्वनाथजिनस्तुति ( चूलिका पैशाची )	२०५
वर्धमानजिनस्तुति ( अपभ्रश )	२०६
दीपमालास्तुति ( समुत्त )	२०८
वीरजिनस्तुति ( ग्राह्य )	२०८
अग्रमदेवस्तुति	२०९
शान्तिनाथस्तुति	२१०
गिरिनाग्नेमिजिनस्तुति	२११

पार्श्वनाथजिनस्तुति (२)	२१२
अध्यात्मगर्भित महावीरजिनस्तुति	२१३
सीमधरजिनस्तुति	२१४
सिद्धाचलस्तुति	२१४
सीमधरजिनस्तुति	२१४
वीरजतिथि स्तुति (२)	२१५
पंचमी की स्तुति	२१७
मौन एकादशी की स्तुति	२१८
रोहिणीतप की स्तुति	२१९
पर्युषणापर्य की स्तुति	२१९

### ३. स्तवनसंग्रह—

अथमवेष्टस्तवन (११)	२२१-२२९
अजितनाथस्तवन (२)	२२९-२३०
समरजिनस्तवन (२)	२३१-२३२
अभिनन्दनजिनस्तवन (२)	२३३-२३५
सुमतिनाथस्तवन (२)	२३५-२३६
पद्मप्रभजिनस्तवन (२)	२३७-२३८
सुपार्श्वजिनस्तवन	२३९
चन्द्रप्रभजिनस्तवन	२३९
सुविधिनाथस्तवन	२४०
शीतलनाथस्तवन	२४२
अयासजिनस्तवन	२४२
वासुपूज्यजिनस्तवन (२)	२४३-२४४
विमलनाथस्तवन (२)	२४५-२४६
अनन्तनाथजिनस्तवन	२४६
धमनाथजिनस्तवन	२४८

शान्तिनाथस्तव (२)	२४९-२५४
कुन्धुनाथस्तवन	२५४
अरुनाथजिनस्तवन	२५५
मल्लिनाथस्तवन	२५६
मुनिसुव्रतस्तवन	२५७
नमिनाथस्तवन	२५८
नेमिनाथस्तवन (६)	२५९-२६३
पार्श्वनाथस्तवन (७)	२६४-२७०
महावीरजिनस्तवन (६)	२७०-२७५
चीथीसजिनस्तवन	२७५
सोमधरजिनस्तवन	२७६
युगमधरजिनस्तवन	२७७
चन्द्राननजिनस्तवन	२७८
भादि-शान्तिजिनस्तवन	२८०
सामायजिनस्तवन (२)	२८१-२८२
परमात्मस्तवन	२८२
जिनस्तवन (२)	२८३-२८४
जैनधर्मकी महत्ता पर स्तव	२८५
प्रभुपूजागायन	२८६
प्रभुभक्ति-उपदेशपद	२८६
प्रभुप्रार्थना पद	२८७
प्रभुगुणगायन	२८८
जिनप्रतिमास्थापनस्तवन	२८८
दीवाली-वीरप्रभुस्तवन (२)	२८९-२९१
पर्युषणास्तवन	२९१
सिद्धचल-शत्रुजयस्तवन (३)	२९३-२९५
पुडरीकस्वामिस्तवन	२९६

## विजयसिद्धिसूरिगद्गरी

४ सज्जायसग्रह—

२०७

२०८-३५४

धन्नाजी की सज्जाय

२९८

सद्गुरु-सदुपदेशसज्जाय

५०९

समकितमेद भावनारूपसज्जाय

३०१

मुनिगुणसज्जाय

३०१

माया अधिर की सज्जाय

३०५

धराग्य-उपदेशकसज्जाय

३०३

षष्ठादशी की सज्जाय

३०४

मरदेवी माना की सज्जाय

३०५

रहनेमि की

३०६

वरणिक्मुनि की

३०८

रघूलभद्रजी की

३१०

आत्मप्रबोध

३१२

भैतारजमुनि

३१५

रघूलभद्र

३१७-३५५

भूखप्रतिबोध

३५५

लोभ की

३५६

देवानदा की

३५७

अम्बुस्वामि का चौदालिजा

३५९-५३३

आठमदकी सज्जाय

३३३

बाहुयली की

३३५

माया की

३३६

चयरस्वामी की

३३८

नदियेणमुनि की

३४०

प्रसन्नचन्द्रमुनि

३४३

दशवैकालिकसूत्र

३४४

पचमो की	॥	३४५
नागिला की	,	३४८
सामाधिक्यस्त्रीसदोष	॥	३५२
मनममरा की	॥	३५३

#### ५ पदसमूह ३५५-३७५

लघुताभात्रनापद	३५५
रहेणो-कहेणीस्यरूपपद	३५६
भिन्नमि नमतस्वरूपपद	३५६
जैनस्यरूपपद	३५७
चैतन-उपदेशपद	३५९
उपशम पर पद	३६०
शरीररथ पर पद	३६१
कायामदिर पर पद	३६५
उपदेशपद	३६२
समयकी दुर्लभता पर पद	३६३
चैतन-उपदेश पद	३६४
उपदेश पद	३६५
आत्म-उपदेश पद	३६७
आशा-त्याग पर पद	३६८
गुरु-उपदेश पद	३७०
प्राणिप्रार्थना	३७०
धर्म और कर्मका सवाद	३७२
रात्रण के प्रति सीता का वाक्य	३७३

१ श्रीगोलनगरीयशर्भनाथप्रतिष्ठाग्रज व धनकी सफलता	३७७-४१८ ४१९
२ पोषधविधि	४६१-५०३

## शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	२०	जुते	जूते	१९५	५	मीने	मीने
१६	१०	किमी	किमी	१९५	१५	हीन	हीन
१६	२२	पहने	पहनने	२११	०	३११	२११
३७	२०	मेझ	मेझ	४१९	१	मिण	मिम
३९	३	रीशोंनो	राशो	२३०	१३	घाजित	घाछित
६१	११	डागें	डालें	२३९	७	प्रति	प्राति
६८	२	ऊपरऊपर	ऊपर	२५५	१०	पचावन	घोपन
६०	२०	घोर	वेर	२७७	७	णइ	रण
७१	६	२०	३५	३०५	१	पायर	पायर
७४	९	गितनी	गिनती	३०६	११	रहा	रहा
७२	५	मराद	पकाध	३७	१९	शुद्ध	शुद्ध
९५	१५	का० का०	का०	३९९	१	मिमानजी	मिमन जी
१०८	२१	दूसरी	दूसरी	४०४	१३	घनकूट	फूट
११६	२१	ताउपर	ताडपर	४०७	४१८	घाकूट	फूट
१५५	१०	सख्या	स०	४११	९११	समितियों	समितिया
१५०	५	रूपम	रूपम	४६१	७	मयकारका	नयकार का
१५७	३	वृषे	वृष	४७१	७	अप्रकटलेख	प्र०लेख
१८८	१५	यवेगा	यवेगा	४७१	६	पठ	परठ
१८३	१०	दीध	दीध	४७५	५	फरे	फरे
				४७५	१७	पोपण	पोपध

## श्रीवर्धमान जैनविद्याभवन-जालोर

ऊपर की सन्ध्या सन्त १९९२ ( मारवाडी १९९१ ) के वैशाख शुदि ६ के दिन जालोर में स्थापित हुई और अच्छी उन्नति कर रही है । इस समय इसमें १०० जैन विद्यार्थी धार्मिक, महाजनी, हिन्दी और अंग्रेजी का अभ्यास कर रहे हैं ।

कार्यवाहकों की लगन और श्री जैनसभ की मदद से आज तक यह संस्था ३००००) का चन्दा और बिल्डिंग के वास्ते ६०००० गज जमीन प्राप्त करने में समर्थ हुई है । चन्दा अभी चालू है, और पूर्ण आशा है कि सकल श्री जैनसभ इसमें योग्य सहायता देकर इसकी नींव मजबूत करेंगे, ताकि भविष्य में यह विशेष कार्य कर सकें ।

कम से कम २५०) रुपया मकानवाते में देनेवाले सज्जनों के नाम आरसपाषाण की तख्तिरों पर खुदा कर मकानों के द्वार पर लगाये जाते हैं ।

भोजनरुण्ड, स्थायीफण्ड, आदि किसी भी खाते में कर से कम ५००) रुपया देने वाले सद्गृहस्थ इस सन्ध्या के 'स्वायंदाहर-महामद' बनाये जाते हैं और उनकी मलाइके अंशुमार संस्था का पारोबार चलाया जाता है ।



सस्या को २०००० या १०००० अथवा तो ५००० की सहायता देने वाले व्यक्ति अथवा श्रीसघ इसके क्रमशः पहले, दूसरे और तीसर वर्ग के पट्टन रनाये जाने हैं ।

पेट्रनों के बड़े फोटो सस्या अपने खर्च से बनवा कर मुख्य हॉल में स्थापित करगी ।

पेट्रनों, मेम्बरो और अन्य स्वाम महायका की गुमनामा वाली उनकी दी हुई सहायता के उल्लेख और सत्त्व मिति के साथ शिलाओं पर खुदमा कर व शिलालेख हाल में लगवाये जायगे ।

किसी भी प्रकार की फुटकर मदद देनेवाले भाइयां को सस्या के नाम की पत्नी रसीदें दी जाती हैं ।

### विद्यार्थी भेजिये—

हमारी प्रार्थना केवल आर्थिक सहायता क लिये ही नहीं विद्यार्थी भेजने क सम्बन्ध में भी है ।

जिन भा बापा को अपने पुत्रों को धार्मिक के साथ २ व्यापहारिक विद्या में प्रवीण बनाना हो वे उन्हें वर्धमान-जैन विद्यामयन में भर्ती कर । कम खर्च और कम समय में बच्चों को तैयार करनेवाली इसके मिया दूसरी कोई सस्या नहीं है ।

७ साल से १४ साल तक के बालक इनमें भर्ती हो सकते हैं ।

१० वर्ष की उमर तक विद्यार्थियों को मासिक रु० ३) और इसके ऊपर की उमर में मासिक रु० ४) भोजन खर्च के देने पड़ते हैं ।

खर्च देने में असमर्थ विद्यार्थियों को मुफ्त भी लिया जाता है ।

११ रुपया डीपाझीट और तीन साल की गैरटी ली जाती है । ३ साल पूरा करने पर डीपाझीट की रकम लौटा दी जाती है ।

विशेष जानकारी के लिये पत्रव्यवहार नीचे के पते से करें ।

शा० नवलमल मूलचन्द,

मे० सेक्रेटरी श्रीगर्धमान जैन विद्याभवन-जालौर(मारवाड़)



## जाहिर सूचना—

इस पुस्तक के उपरान्त नीचे की पुस्तकें भी हमारे शास्त्रसंग्रहमें मिलती हैं—

१-वीरनिर्वाणसचत् और जैनकालगणना ।

इस पुस्तक की रायबहादुर म० म० प० श्रीगौरीशङ्करजी ओझा आदि धुरन्धर विद्वानों ने मुक्तफुल्ल से प्रशंसा की है । इतिहास के अभ्यासियों और जैन पाठकों के लिये बड़े ही काम की चीज है । मूल्य १)

२-चातु चर्चामा मत्पाश केटलो ? ।

( देवद्रव्यचर्चाविषयक निबन्ध )

फरीत १७ वर्ष ऊपर जैनसभ में एक सैद्धान्तिक चर्चा चल पड़ी थी जो 'देवद्रव्यचर्चा' के नाम से प्रसिद्ध है । उसी चर्चा का स्फोट करने वाला मुनिमहाराज श्रीकल्याणविजयजी द्वारा लिखा गया यह विद्वत्पूर्ण निबन्ध है । मूल्य २)

३-जिनस्तुतिकुसुमाञ्जलि ।

मुनिमहाराज श्रीकल्याणविजयजी प्रिचित सस्कृत-प्राकृत स्तुति-स्तोत्र-चैत्यवन्दनों का संग्रह है । मूल्य भेंट ।

१ ठी पुस्तक भगानेवालों को पिछली दोनों ही पुस्तकें भेंट भेजी जायगी ।

पता—सेक्रेटरी श्रीकविशास्त्रसंग्रह-समिति,

जालोर ( मारवाड )

॥ श्रीजिनाय नम ॥

# श्रीजैनज्ञान-गुणसंग्रह ।

प्रथम-खण्ड ।

नमन करी जिनदस को, वदन करी गुरुराज ।  
“जैन ज्ञान-गुण संग्रह” लिख बाल हितराज ॥ १ ॥  
दर्शननिधि १ पूजानिधि २, गृहिद्वन्द्वनतमार ३ ।  
तपनिधि ४ निविधनिचार ५ इति, प्रथम खण्ड अधिसार ॥ २ ॥  
१ देव-दर्शन निधि ।

सामान्य उपदेश—

प्रत्येक जैन श्रावक श्राविका का यह मर्तव्य है कि प्रति-  
दिन जैन मंदिरमें जा कर दस दर्शन करें ।  
देवदर्शन जाते वक्त सन स पहले बाह्य शुद्धि रखनी  
चाहिये । कारण कि बाह्य शुद्धि जतर शुद्धिमें निमित्त कारण है ।  
इसी लिये मंदिर-जाने यदि स्नान न बने तो हाथ पाव आदि

तो अग्नय धोते, चाहिये । फिर उत्तम रूप में पहिन कर दर्शन करने को जाय । - भस्म स्तम्भ-पवित्र भाग से एक एक कदम रखने वाला मनुष्य कितना फल प्राप्त करता है यह नीचे दिये हुए श्लोक में पढ़िय—

“यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते ध्यायश्चतुर्ध्रुव फल,  
पाठ्योत्थित उग्रतोऽष्टममग्रे गन्तुं प्रवृत्तोऽध्वनि ।  
श्रद्धालुर्वशम रत्तिर्जिनगृहात्प्राप्तस्ततो द्वादश,  
मध्ये पाक्षिक मीक्षिते जिनपतौ मामोपयास फलम् ॥१॥

तात्पर्य—मंदिर में जाने का विचार करने पर १ उपवास का फल, दर्शन के लिये खड़ा होते २ उपवास का फल, चलने को तैयार हुआ कि ३ उपवास का फल, मंदिर तर्फ निदा हुआ कि ४ उपवास का फल, मंदिर के पास पहुँचा कि ५ उपवास का फल, मंदिर में प्रवेश करते ६ उपवास का फल, मंदिर के मध्य भाग में जाते १५ उपवास का फल, और साक्षात् भगवान् को देखते तो १ मामखमण का फल होता है ।

यहां ध्यान रहना चाहिये कि ऊपर सुजन फल तब ही होगा जब कि दर्शन करने वाला मन वचन और कर्मा के अशुद्ध व्यापार को रोक कर मंदिर तर्फ पवित्र भागना से गमन करेगा ।

श्रीमान् आनन्दधनजी महाराज श्रीसुविधिनाथ भगवान् के स्तवन में फर्माते हैं—

“द्रव्य भाव शुचि भाव घरिने, हरखे देखे जइये रे ।  
दहतिक पण अहिगम साचवतां, एकमना धुरि धटये रे ?

मन्दिर जाते रास्ते में दूसरी ससार की झड़टा में न पड़-  
कर सीरा मंदिर पहुँचना चाहिये। मंदिर में जाने के बाद मन  
जगह नजर डालते कहीं धूल कचरा या कोई भी अशुद्धि मा-  
लूम हो तो स्वयं दूर करें या मंदिर के पूजारी को कह कर  
दूर करावे ।

दर्शन करते भगवान् क न नदीक न जाना उलके अग्रह  
के बाहर दूर खड़े रह कर प्रार्थना करें ।

पुण्य भगवान् क दाहिनी (जीमणी) तर्फ और स्त्री बायीं  
(डाही) तर्फ खड़े रहकर दर्शन कर । उम वक्त यह भी ध्यान  
रहना चाहिये कि कोई दूसरा दर्शन करता हो उसको हरकत  
न पहुँचे बसे खड़े रहना चाहिये और कोई आगे चैत्यवदन  
स्तवनादि बुलद आराज से बोलता हो तो सुद अपने दिल  
में ही पड़े, प्रारण कि ऐसा न करने से गाने वाले की एका-  
ग्रता में भग पहुँचने का समय है ।

मंदिर में जहा तक हो मके शांति रहनी चाहिये । न  
किसी से ससारिक बात चीत करें और न मुख से गाली ग-  
लोज बोले । दर्शन करने वाले रुई एक महाशय मंदिर में  
हा हू मचा दते हैं । एक कहता है मैं पहले पूजा करूंगा दूसरा  
कहता है मैं करूंगा, पालिताणा जैसे तीर्थ स्थानों में मंदिर में

दर्शन करने उक्त और पूना के उक्त इतनी भीड़ और हष्टा मच जाना है कि उमम पता नहीं लगता कि कौन क्या कहता है, यहा उम समय शांति भी नहीं दग्गी जाती । जब शांति क स्थान में आमा को शांति न मिली तो अन्यत्र उहा मिलेगी । दुनिया की गड़गड़ को छोड कर घडी भर शांति प्राप्त करने को मंदिर में गया और वहा भी यही गड़गड़, तो कहिये वहा जाने में अपने आत्मा को क्या लाभ मिला । जिन मंदिर शांतिरा स्थान है, उहा मच मनुष्य जा मरने हैं, किसी रूम या शेठ माहुरार के घगले पर जाने में प्रतिग्रध और रोक टोक हो मरती है, मगर भगवान के स्थान पर रैमा हिमान नहीं है । राना भर्तृहरि ने इम विषय पर क्या ही मनोरंजर श्लोक कहा है—

“नाथ ते समयो रत्नस्यमधुना निद्राति नाथो यदि,  
स्थित्या द्रक्ष्यसि कुप्यति प्रभुरिति द्वारेषु चेपा चच ।  
चेतस्तानपहाय याहि भवन देवस्य त्रिश्वेशितु-  
निर्दावारिकनिर्दयोऽस्त्यपरुष निस्मीमशर्मप्रदम् ॥१॥”

तात्पर्य—‘अरे अभी जाने का समय नहा है । उहा रानगी गति हो रही है । शेठ निंदमें है । अगर तू देरेंगा तो शेठ कोषायमान होगे ।’ इस प्रसार के वचन जिनके दरवाजे पर सुने जाते हैं, अथे दिल । ऐसे स्थानों को छोड कर परमात्मा के उस सुखप्रद स्थान पर जा, जहा न द्वारपाल है,

न कठोर वचन सुनाई दते हैं, और न किसी प्रकार की हरकतें हैं।

कहने का तात्पर्य कि ऐसे शांति के स्थान मंदिर में शांति रखना इसी में दर्शन की सफलता है, यूरोपीयन लोग के चर्च (दुल) में देखो कैसी शांति होती है ? सिर्फ एक ही पादरी प्रार्थना बोलता है और दूसरे लोग खामोश रहकर सुनते हैं। जरा भी गड़गड़ नहीं होने पाती। इस प्रकार की शांति जिनमंदिर में रखनी चाहिये जिससे दर्शन का यथार्थ लाभ प्राप्त हो।

मंदिर जाने वालों को ८४ आशातना भी टालनी चाहिये जिनके नाम नीचे मिले हैं—

### ८४ आशातना

- १ मंदिर में धूमना।
- २ जुआ शतरंज पत्ते आदिसे खेलना।
- ३ टटा किमाद करना।
- ४ धनुर्विद्या सीखना (धनुष बाण चलाना)।
- ५ जल से कुरले करना।
- ६ पान खाना।
- ७ पान खाकर धूमना।
- ८ गाली गलोज देना।
- ९ टट्टी या पैमान करना।
- १० हाथ पाव आदि धोना।



- ११ मस्तक क कस ममागना ।
- १२ नख समारना ।
- १३ मृन का गिरना ।
- १४ गुम्टी (मिठाई) आदि खाना ।
- १५ फोडे आदिमी चमटी उगैड कर गिरना ।
- १६ दवाइ खाना पित्त गिरना ।
- १७ उलटी करना ।
- १८ मुखमें से हिलता दात गिरना ।
- १९ हाथ पाव क मालिश कराना ।
- २० घोडा उर आदि बांधना ।
- २१ दातों का मेल गिराना ।
- २२ आख का मेल गिराना ।
- २३ नाख का मेल निकालना ।
- २४ गाल का मेल उतारना ।
- २५ नास का मेल निकालना ।
- २६ मस्तक का मेल गिराना ।
- २७ शरीर का मेल उतारना ।
- २८ कान का मेल निकालना ।
- २९ भूत जल आदिकी मायना करना ।
- ३० मित्राह शार्दा की पचायत करना ।
- ३१ व्यापार का लेखा हिसाब करना ।

# धातुवर्णन—गुणगण्य

- ३० गन सवधी क्रम करना अपन भाद रिगेरह को माल
- मिलहन बांटो की व्यसथा करना ।
- ३३ घर की मित्रता मंदिरमें रखना ।
- ३४ पाय पर पाँव चारर बैठना ।
- ३५ मन्त्रि की गिरा पर गावर धराना या दर लगाता ।
- ३६ कपड़ गुमाना ।
- ३७ दान दटना ।
- ३८ पारट रिगेरह गुमाना ।
- ३९ पटोंपा बनाना घर आदि गुमाना ।
- ४० पोलिग आदि क मय स मन्त्रिमें छिप जाना ।
- ४१ पुत्र गी आदि क निमित्त रोना ।
- ४२ राचरथा दगारथा भनकथा गीरथा करना ।
- ४३ पाय धनुष लगार आदि गय तप्पार करना ।
- ४४ गाय में आदि बाचना ।
- ४५ टटक मार गीगरी लगा कर तापना ।
- ४६ अनाज पराता ।
- ४७ नाप परगना ।
- ४८ रिधि स निम्निदी न फटना ।
- ४९ छाला (हर्षा) धागण करना ।
- ५० जूते पृट या म्लीपर पदनना ।
- ५१ शय करना ।

- ५२ चामर ढलाना ।
- ५३ मन में एकाग्र न करना ।
- ५४ गरीर पर अक्षर सेंद्र आदि लगाना ।
- ५५ गरीर के मन्त्रित फूलमालादि का त्याग न करना ।
- ५६ हार जुड़ल अगूठी सिंगेह जैवर उतारना ।
- ५७ भगवान को दग्न कर हाथ न जोटना ।
- ५८ उत्तरासन न रखना ।
- ५९ मस्तक पर मुद्रा रखना ।
- ६० मस्तक को रमाल आदि से सपटना
- ६१ फूल का गन्ध पास में रखना ।
- ६२ श्रीफल आदि का छिलका डालना ।
- ६३ दंड से खेलना ।
- ६४ पिता आदि को प्रणाम करना ।
- ६५ भाव भगवत् की चेष्टा करना ।
- ६६ तूफान वचन बोलना ।
- ६७ लेहणे के लिये पिकेटिंग—रखा देना ।
- ६८ युद्ध करना ।
- ६९ मस्तक के बाल सुखाना ।
- ७० पलथी लगाकर बैठना ।
- ७१ खड़ाब पाव में रखना ।
- ७२ पाव लवे कर बैठना ।

- ७३ पगपेरी बगना ।
- ७४ स्नात पर कीचट बगना ।
- ७५ पाव के लगी हुई धूल झाटना ।
- ७६ मृत्युन घेष्ठा करना ।
- ७७ जू निशानना ।
- ७८ मोचन करना ।
- ७९ शरीर के गुप्त भाग हांक कर न धुटना ।
- ८० पैदल का घघा करना ।
- ८१ गरीबने और धेने का फाँप करना ।
- ८२ पिम्परा पिछार मोना ।
- ८३ जल पीने की मटरी रखना ।
- ८४ स्नान करने के लोपे ध्यान बनाना ।

ये योगी आशाना उत्पट रही जाती हैं और मध्यम आशाना ४० तथा उच्च आशाना १० हैं जिन के प्रथम पाठ नाम नीचे सूत्र्य है—

#### ४० मध्यम आशानना

- १ पैताल करना ।
- २ जंगल जाना ।
- ३ मृते पदनना ।
- ४ चल पीना ।
- ५ मोचन करना ।
- ६ मोना ।

- ७ मैथुन ब्रीडा करना ।
- ८ पान खाना ।
- ९ धूमना ।
- १० जुगार खेलना ।
- ११ जुगार दग्गना ।
- १२ विश्रुति करना ।
- १३ पलकी लगा कर बैठना ।
- १४ पाप अलग अलग लपे करना ।
- १५ टटा फिमाद करना ।
- १६ हासी ठठे करना ।
- १७ किमी पर इर्ष्या करना ।
- १८ ऊने आमन पर बैठना ।
- १९ शरीर का शृणगार बनाना ।
- २० मस्तक पर छाता रखना ।
- २१ तलवार चट्टक आदि गृह रखना ।
- २२ मुटुट मस्तक में रखना ।
- २३ चामर ढलवाना ।
- २४ स्त्रियों के साथ मजाक करना ।
- २५ वरणा लगाना ।
- २६ खेल करना ।
- २७ मुख कोश विना पूजा करना ।

- २८ मलिन कपड़ों से पूजा करना ।
- २९ पूजा करते मनही स्थिर न रखना ।
- ३० शरीर पर सचित्त पुष्पमालादि पहन कर जाना ।
- ३१ गहने उतार कर जाना ।
- ३२ उत्तरासण न रखना ।
- ३३ भगवान् को देख कर नमस्कार न करना ।
- ३४ शक्ति होने पर भी पूजा न करना ।
- ३५ खरान फूलों से पूजा करना ।
- ३६ पूजा में आदर भाव न रखना ।
- ३७ प्रतिमा के निदक को न दाटना ।
- ३८ मन्दिर के द्रव्य की हिफाजत न रखना ।
- ३९ शक्ति होने पर भी सगरी पर चढ़ कर जाना ।
- ४० बड़े पुरुषका अपमान करना ।

### १० जघन्य आशानना

- १ मन्दिरमें पान मुषारी खाना ।
- २ जल पीना ।
- ३ भोजन करना ।
- ४ जूते पहिनना ।
- ५ स्त्री क्रीडा करना ।
- ६ सोना ।
- ७ धूमना ।
- ८ पैसान करना ।

९ टट्टी जाना ।

१० जुगार चोषट पत्ते गेलना

ऊपर लिखी हुई आशातना टालने में विनय धर्म प्रकट होता है और भक्ति भी विपुद्ध मानी जाती है । दरबार की डालाम म या कोर्ट रचहरियोंमें जाना पडता है तो यहाभी कितना जडय (विनय) रखना पडता है ? । कपडे अन्डे पहनने हैं, विचार कर गेलने हैं, गाली गलोन मुख से नहीं निकालते, हर तरह से सोच विचार कर चलते हैं तो भगवान् तो तीन जगत् के भ्यामी ह, इन का जदय करें उतनाही थोडा है । भगवान् बीतराग हे, इन को किमी प्रकारकी दरकार नहीं है, मगर भक्ति करने वाले का फर्ज है कि पूज्य पुरुष के प्रति अपना जत करण से बहुमान दिखलावे और किमी प्रकार की आशातना न करे ।

### २ जिनपूजाविधि ।

भामान्य उपदेश ।

तीर्थंकर देव की पूजा करना यह भी हर एक जैन श्रावक का स्वाम कर्तव्य है । शास्त्रासों ने श्रावकों के जो पदकर्म बतलाये हैं उनमें जिनपूजा को प्रथम नम्बर में रखवा है, कारण कि एकनिष्ठा से की गई यह जिनपूजा समन्वितकी शुद्धि करने के साथ मोक्ष तक के उत्तम फल देने वाली है । रहा भी है—

“जो पूण्ड निसन्न, जिण्णिदराय तहा विगयदोस ।  
सो तइयभवे सिज्झइ, अट्ठा सत्तट्ठमे जम्मे ॥ १ ॥

इमका तात्पर्य यह है—“जो मनुष्य शुद्ध अतःकरण से जिनेश्वर देवकी त्रिकाल ( सुपह—दोपहर—शाम को ) पूजा करता है वह तीसरे भव में या सातवें आठवें भव में मोक्षसुख को प्राप्त करता है ।” देखिये ऐसा उत्तम फल दियेलाया है ? मोक्षामिलायी गृहस्थ के लिये पूजामयि मय सुचही मोक्ष का साधन है ।

मूर्ति पूजा की जरूरत—

इस साधन के द्वारा दयाधिदेव तीर्थंकरा की भक्ति करनी चाहिये । क्यों कि वे हमारे महान् उपकारी हैं । उन्होंने अपनी वाणी द्वारा तत्त्वज्ञान और मोक्ष का मार्ग बता कर हम पर बड़ा भारी उपकार किया है । इस उपकार को न भूलना इसी का नाम कृतज्ञता है । यह कृतज्ञता तब ही मानी जायगी जब कि हम भगवान् की पवित्र हृदय से भक्ति करेंगे ।

परन्तु यहां पर एक सवाल उठता है, भगवान् यहां साक्षात् नहीं है, फिर हम किसकी भक्ति करें ? इसका जवाब यही है कि भगवान् की गैरहाजरी में उनकी मूर्ति ही हमारे लिये भगवान् है । जिनविरह में जिनमूर्ति ही जीवों के लिये पूर्ण आलम्बन है । उसमें भगवान् का आरोप कर उसके सामने जो कुछ भक्तिभाव किया जायगा उससे जिन भक्ति का



ही फल-लाभ होगा । त्रिगियन प्रजा मूर्ति पूजा की नहीं मानती किन्हीं उद्द नच म ( गिगिनाध म ) जेगम् बाइष्ट की मूर्ति रखती है । मृमल्मान मूर्ति पूजा क कहर निगेधी ~ फिर भी व मरुता की तफ गृह करर निमान पदत है जो रि एर तरह स मूर्ति पूजा रा ही स्वीकार है । चीन जापान मारोन जाति में बाइ लोर बुद्ध दय को पूजते है और भारत उप म हिंदू लोग विष्णु शरर आति को । अत उग्रदष्टि स दया तो जमान हाल में मूर्तिपूजा एर व्यापक धार्मिक मार्ग है । किसी भी व्यक्ति क भाव्यात्मिक गुण-दोषों की परीक्षा क लिय उमरी मूर्ति ही जाग्य भूत मान है । तीव्र दय अन्य दयों स श्रेष्ठ व यह बात भी हम उनकी मूर्ति से ही जान सकते है । तीव्रकररी मूर्ति म जो शान्ति, वमा, धी-तरागता आति गुग झलकन है वे अन्य मूर्तियों में नहीं पाये जात । इस विषय में पंडित घनपालरा नीचे लिखा श्लोक पढ़ने लायक है—

“प्रशमरसनिसमग्न इष्टियुग्म प्रसन्न,  
वदनरुमलमङ्ग कामिनीसगन्ध्य ।

करयुगमपि यत्ते शम्भुसम्बन्धवन्ध्व,  
तदमि जगति देवो चीतरागस्त्यमेव ॥१॥”

भाचार्य—“ह प्रभो ! तेरे दोनो नेत्र शान्तरम से भर हुए है, तेरा मुखरुमल प्रमन्न है, तेरा अस्थान (गोद) सी

सग से रहित है और तेरे दोनों हाथ शस्त्ररहित हैं इस लिये तू ही सत्य वीतराग देव है ।” हरिमद्र सूरि का भी एक श्लोक यहा याद आ जाता है—

“मूर्तिरेव तवाचष्टे, भगवन् ! वीतरागताम् ।


नहि कोटरसस्थेऽग्नौ, तन्ममति जाद्वत् ॥१॥”

“ह भगवन् ! आपकी मूर्ति ही वीतरागदशा को बता रही है । यदि आपमें राग-द्वेषादि दोष होते तो आपकी यह मूर्ति ऐसी शान्त कभी नहीं होती, क्यों कि मूल में अग्नि के रहते घृक्ष कभी हरा नहीं होता ।”

ज्यादा क्या कहें, जैसी मूर्ति होती है वैसे ही प्रभाव देखने वालों पर पड़ता है । मोट पट्टून घूट मटोकिंग पहने हुए एक जेंटलमेन् का फोटो देखने पर शौकिनी का भाव पैदा होता है और ध्यान समाधि में बैठे हुए एक त्यागी महात्मा की तमजीर देख कर वैराग्य भाव पैदा होता है । इसी तरह मर्कथा राग-द्वेष रहित तीर्थंकर भगवन् की शांत मूर्ति देखकर हमें वैराग्यभाव पैदा हो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? । इसी लिय कहा जाता है कि—

“वीतराग स्मरन् योगी, वीतरागत्वमश्नुते ।”

“योगी पुरुष वीतराग का स्मरण करत हुए वीतराग दशा को प्राप्त होते हैं ।”

इस प्रकार  प्रमाण वाली मित्र हटें तो उसके

द्वारा तीर्थंकर भगवान् की पूजा भक्ति रूग्ना भी स्वतः मिट्ट होता है और इससे गृहस्थ धर्म में 'पूजा' निषय कितना जरूरी है यह अच्छी तरह मिट्ट हो चुका ।

प्राथमिक कृत्य—

प्रातः काल में उठकर प्रथम पंचपद्मेष्टी मंत्र की ( नमस्कार को गिने और सामायिक का नियम हो अगर भाग्य हो तो वह भी कर लेव, रात्र जल्दी रामों से निवृत्त होकर जहां जीव-जंतु न हो ऐसी शुद्ध जमीन पर बैठ कर गरम जलसे या छाने हुए जल से स्नान कर, ( यहां ध्यान रहना चाहिये कि अगर किसी क शरीरक किसी भाग में कुछ भी जखम हो और उसमें से खून या पीप निरुलना हो तो पूजा नहीं हो सकती ) स्नान करते वक्त अगर नमस्कारमी का पंचखाण आ गया हो तो दातून भी कर सकते हैं । स्नान करने के बाद रुमाल या दुगल से अपने शरीर को अच्छी तरह पोंछ लेवे फिर अच्छी मफ्फ धोती जो फटी न हो सधावाली न हो जिमसे पैसाव या टट्टी न गया हो त्रिलकुल अखंड हो पहिन लेवे । उत्तरामन भी पैमाही मफेद अखंड बायी तरफ से तिरछा ज नोड़ की तरह धारण कर ले । पूजा षोडशक ग्रंथ के अभिप्राय से पूजा के लिये रेशमीन कपडा भी चल सकता है । परंतु वह रेशमीन कपडा भी सिमाय पूजा के ओर किसी काम में नहीं पहिनना चाहिये, तथा इन पूजा के कपडों से हाथ नारु या मुख न पोंछना चाहिये, दूसरे पहने के कपडा क शामिल भी

न रखे ।

इस तरह जब पवित्र कपड़े पहिन कर ठीक ठाक होजावे तब पूजा का सामान तय्यार करें ।

शास्त्र में द्रव्य और मात्र मेद से दो प्रकार की पूजा बताई है । द्रव्य पूजा ८ द्रव्य से की जाती है, अष्टद्रव्य के नाम ये हैं—

१ जल, २ चदन, ३ पुष्प, ४ धूप, ५ दीप, ६ अक्षत (चावल), ७ नैवेद्य, ८ फल । इन आठ द्रव्यों को लेकर घर से जिनमंदिर की तरफ चले, रास्ते में नीचे दिये हुए दोहे दिल में याद करता रहे ।

पूजाभावना के दोहे ।

मधुपूजन कु मैं चला, घसि चदन घनसार । नव अगे पूजा की, सफल करू अवतार ॥१॥ पाच कोडी के फूल से, पाया देश अद्वार । कुमारपाल राजा हुआ, वरता जय जय-कार ॥२॥ तीर्थकर को पूजते, उत्कृष्टे परिणाम । पाया है कई जीवने, स्वर्ग मोक्ष के धाम ॥३॥ समकित को अजुआलवा, उत्तम यही उपाय । पूजा से तुम जाणजो, मन चछित सुख भाय ॥४॥ पूजा कुगति की अर्गला, पुण्य सरोवर पाल । मोक्षगति की प्रियसखी, देवे मंगलमाल ॥५॥ जिन दर्शन पूजा विना, दिन जितने ही जाय । निष्फल वे सब जाणजो, अरु जन्म अकारथ जाय ॥६॥

## जिनमदिरमें प्रवेश और द्रव्यपूजा ।

८म तर्हू श्री भावना क साथ ५ 'अभिगम (सन्मुख जाने क ५ नियम) और १० 'त्रिक का पालन करता हुआ जिनमदिरमें प्रवेश करे । प्रवेश करते उक्त 'निमीही' बोल

(१) पांच अभिगम-१ सचित्त यस्तुका त्याग (पास में पल फूट भाग त्रिगैर हो तो छोड़ देना )

२ अचित्त यस्तुका अत्याग-अथात् पास में रहे हुए आभूषणादि को न छोड़ना ।

३ देश का उत्तरासन रचना

४ निःप्रतिमा पर दृष्टि पड़त ही दूरसे नमस्कार करना ।

५ अपने मनको पकाय करना ।

(२)-१० त्रिक के नाम-अवग्रहत्रिक, आलयनत्रिक, प्रदक्षिणात्रिक, क्षमाधमणत्रिक, प्रणिधानत्रिक, निस्सिद्धीत्रिक, अयस्थात्रिक, मुद्रात्रिक, दिशात्रिक भूप्रमांजनत्रिक ।

दशत्रिक का तापर्य है-अलग अलग तीन तीन धारों के दश नियम, जिन का प्रसार ध्यान इस मुक्त है ।

१ अवग्रहत्रिक-अवग्रह भगवान के नजदीक के उस भूमि भागको कहते हैं जिसको छोड़ कर चैत्यपूजन आदि करने के लिये बैठते हैं । यह अवग्रह उत्पृष्ट ६० हाथ मध्यम ९ हाथ और अधः ३ हाथ का होता है, अर्थात् भगवानसे इतना दूर बैठना चाहिये ।

२ आलयनत्रिक-१ धर्णालयन २ अर्णालयन ३ प्रतिमालयन । शुद्ध पद धोलने को धर्णालयन कहते हैं, पदके अर्थ विचार को अर्णालयन कहते हैं और प्रतिमा के सामने दृष्टि रखना इसे प्रतिमालयन कहते हैं ।

कर भीतर जावे और तीन चार प्रदक्षिणा देवे । पहले अपने

३ प्रदक्षिणात्रिक-मंदिर की भग्मती में ३ चार परिभ्रमा करना इसे प्रदक्षिणात्रिक कहते हैं ।

४ क्षमाश्रमणत्रिक-भगवान् को तीन चार समासमण देना ।

५ प्रणिधानत्रिक-दोनों जाग्रति और जयवीरराय का पाठ बोलना यह प्रणिधानत्रिक कहा जाता है ।

६ निस्सीहीत्रिक-गृहव्यापारादि निषेध सूचक तीनचार निस्सीही' शब्द बोलना ।

७ अवस्थात्रिक-भगवान् की छद्मस्थ अवस्था, वैचली अवस्था, और सिद्ध अवस्था ये तीनों अवस्था त्रिचारना इसको अवस्थात्रिक कहते हैं ।

८ मुद्रात्रिक-१ योगमुद्रा २ जिनमुद्रा ३ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ।

दोनों हाथ की १० अंगुलिया परस्पर मिलाकर कमल के डोडे की शकल में दोनों हाथ जोड़ पेट पर धुणी रख कर चैत्यवदन करना यह 'योगमुद्रा' कही जाती है ।

दोनों पाय के अंगुठों के बीच ४ अंगुली का अन्तर और दोनों एड़ी के बीच ३ अंगुली का अन्तर रखकर रखे खड़े काउस्मगा करना यह 'जिनमुद्रा' कही जाती है ।

दोनों हाथ बराबर पङ्क्त कर ललाट के लगाकर जयवीर राय का पाठ बोलना यह 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा' कही जाती है ।

९ दिशात्रिक-आसपास की दो दिशाएँ तथा पिछली दिशा इन तीन दिशाओं से दृष्टिको हटाकर भगवान् के सामने देपना इसका नाम दिशात्रिक है ।

१० भूमिपूजात्रिक-चैत्यवदन करते तीन वच शेष से भूमि पोंछना इस का नाम भूमिपूजात्रिक है ।

ललाट में तिलक न किया हो तो तिलक करे फिर आठ पडका मुखमोश राध कर दूरी बार 'निनीही' कह कर गूट मडप में जा घुटने तक कर तीनवार नमस्कार करे, फिर मूल गभारे में जावे, प्रथम मूलनायक भगवान् पर अगले दिन के चढ़े हुए पुष्पादि निर्माल्य मोस्पीछ से प्रमार्जन करे, इसी तरह आसनाम के त्रिगो पर प्रमार्जन कर । बादमें यचाभुत से (दही दूध घी शक्कर और जल से) प्रक्षालन (पखाल) करने

१ यहापर ललाट के सिवाय अपने शरीर के दूसरे अंग-उपाग-मस्तक-कान-गर्ग-हृद्य आदि पर कितनेक लोग केशर का तिलक करते हैं लेकिन यह निरर्थक देखादेखी की रुढ़ि है, पूजा की विधि में ऐसा लेख नहीं है पूजा करने वालों को चाहिये के ऐसी रुढ़ि पर ध्यान न देकर मूल यात पर खयाल रखे ।

ललाटमें जो केशर का तिलक किया जाता है उससे लिये केशर साधारण खाते का होना चाहिये, मंदिर का उपयोग में नहीं आ सकता । मंदिर खाते का केशर सिर्फ भगवान् की पूजा में ही काम आता है । कितनीक जगह देखा जाता है कि जो मंदिर खाते का केशर घीस कर भगवान् की पूजा के लिये तय्यार किया जाता है, उसीसे अपने ललाट में भी तिलक करते हैं, परन्तु उस में देवद्रव्य का दोष लगता है । हा अगर पूजा करने वाले महाशय अपने घर का ही केशर पूजा के वास्ते ले जावे तो वह केशर अपने तिलक में और पूजा में दोनों जगह काम आ सकता है, वहा देवद्रव्य का दोष नहीं लगता । तिलक के लिये केशर दूसरी यादकी में ले लेना चाहिये ।

के बाद शुद्ध जलसे अभिषेक करे उम वक्त दिल में जन्माभिषेक की भावना करे ।

जलाभिषेक में भावना और जयणा—

बालत्तणमि सामिय, सुमेरुसिहरंमि कणयकलसेहिं ।  
तियसासुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहि दिट्ठो सि ॥१॥

“ हे प्रभो ! वचन में मेरुशिखर पर ६४ इन्द्रोने सुवर्ण कलशोंसे आप का अभिषेक किया उम समय जिन्होंने आपका दर्शन किया वे धन्य हैं । ” इस भावना से प्रभालन करे, यहां ध्यान रहना चाहिये कि भगवान् के शरीर पर कहीं केशर चिपक गया हो तो धीमे हाथ से या अंगलूणे से साफ करे वालाकुची को अधिक न घिसे, कारण के उमसे मूर्ति पर सदा घमारा लगने से किमी समय मूर्ति के खड़े होने का समय है, हां अगर किसी जगह हाथ या कपड़े से भी रेशर रह जाता हो तो उस जगह अवश्य वालाकुचीका उपयोग कर सकते हैं । आज कल कई जगह देखा गया है कि मंदिर के भाइती पूनारी पूजाविधिरा पूरा रहस्य न समझने मे वालाकुची से भगवान पर दूट पडते हैं , जल छिड़क कर खुर घिसने लग जाते हैं, कई जगह थानक लोग भी जानकारी न होनेसे इसी तरह वालाकुची का उपयोग करते हैं यह सब अविवेक है । पूजा करने वालों को चाहिये कि ऊपर लिखे मुताबिक जहां जरूरत हो वहीं वालाकुची का उपयोग करें, संक्षेप में कहना यही है कि बड़ी जयणा के साथ जल से भगवान् का प्रक्षा-



ललाट में तिलक न किया हो तो तिलक करे फिर आठ पडका मुखमोश बाध कर दूसरी बार 'निमीही' कह कर गूँ मड़प में जा घुटने टक कर तीनवार नमस्कार करे, फिर मूल गभारे में जाये, प्रथम मूलनायक भगवान् पर अगले नि के चढ़े हुए पुष्पादि निर्माल्य मोरपीछ से प्रमार्जन करे, इसी तरह आसपाम के त्रिों पर प्रमार्जन कर । बादमें पचामृत से (दही दूध घी शक्कर और जल से) प्रक्षालन (परवाल) करने

१ यहापर ललाट के निचाय अपने शरीर के दूसरे अंग-उपांग-मस्तक-कान-गर्भ-हाथ आदि पर कितनेक लोग केशर का तिलक करते हैं लेकिन यह सिर्फ देवादेवी की रुढ़ि है, पूजा की विधि में ऐसा लेख नहीं है, पूजा करने वालों को चाहिये के बेसी रुढ़ि पर ध्यान न देकर मूल बात पर खयाल रखें ।

ललाटमें जो केशर का तिलक किया जाता है उसके लिये केशर साधारण खाते का होना चाहिये, मंदिर का उपयोग में नहीं आ सकता । मंदिर खाते का केशर सिर्फ भगवान् की पूजा में ही काम आता है । कितनीज जगह देखा जाता है कि जो मंदिर खाते का केशर घीम कर भगवान् की पूजा के लिये तय्यार किया जाता है, उसीसे अपने ललाट में भी तिलक करते हैं, परन्तु उस में देवद्रव्य का दोष लगता है । हा अगर पूजा करने वाले महाशय अपने घर का ही केशर पूजा के रास्ते ले जाये तो वह केशर अपने तिलक में और पूजा में दोनों जगह काम आ सकता है, यहा देवद्रव्य का दोष नहीं लगता । तिलक के लिये केशर दूसरी घाटकी में ले लेना चाहिये ।

के बाद शुद्ध जलसे अभिषेक करे उम उक्त दिल में जन्माभिषेक की भावना कर ।

जलमिषेक में भावना और जयणा—

यालत्तणमि सामिय, सुमेरुसिहरमि कणयकलसेहि ।  
नियसासुरेहि ण्हविओ, ते धन्ना जेरि दिट्ठो सि ॥१॥

“ हे प्रभो ! बचपन में मेरुशिखर पर ६४ इन्द्रोने सुवर्ण कलशोंसे आप का अभिषेक किया उस समय जिन्होंने आपका दर्शन किया वे धन्य हैं । ” इस भावना से प्रक्षालन कर, यहा ध्यान रहना चाहिये कि भगवान् के शरीर पर कहीं केशर चिपक गया हो तो धीमे हाथ से या अंगलूणे से साफ करे वालाकुची को अधिक न घिसे, कारण के उमसे मूर्ति पर सदा घमारा लगने से किसी समय मूर्ति के खड़े होने का समय है, हा अगर किसी जगह हाथ या कपड से भी केशर रह जाता हो तो उस जगह अवश्य वालाकुचीका उपयोग कर सकते हैं । आज कल कई जगह देखा गया है कि मंदिर के भाइती पूजारी पूजानिधिरा पूरा रहस्य न समझने से वालाकुची से भगवान पर दूट पडते हैं , जल छिडक कर खूब घिसने लग जाते हैं, कई जगह श्रावक लोग भी जानकारी न होने से इसी तरह वालाकुची का उपयोग करते हैं यह सब अनिवेक है । पूजा करने वालों को चाहिये कि ऊपर लिखे मुताबिक जहा जरूरत हो वही वालाकुची का उपयोग करे, संक्षेप में कहना यही है कि बड़ी जयणा क साथ जल से भगवान् का प्रक्षा

लन करे। इस के बाद स्पृच्छ अगन्तुओं से यथाक्रम सब मूर्तियों को पोंछ कर स्पृच्छ कर लेवे। पीछे कैथर चदन से पहले मूलनायक की, बाद दूसरे भगवान की नव अंगे पूजा कर। पूजा करते समय नीचे मूजय भावना के साथ एक एक दुहा बोलता जाये।

पूजा के दोहे—

जल भरी सपुट पत्रमा, युगलिक नर पूजन ।

ऋषभ चरण अगुठडो, दायर भयजल जत ॥ १ ॥

इस तरह बोल कर भगवान् के दाहिने और बाये अगुठे पूजा कर।

जानुपले फाउस्मग्ग ग्हा, विचर्या देश विदेश ।

खटा ग्वडा केजल लघु, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥

ऐसा बोल दोनों घुटनों की (गोडों की) पूजा करे।

लोकुतिक वचने करी, वरस्या वरसीदान ।

धर फाडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥

दोनों हाथा की पूजा करे।

मान गयु दोग असयी, दुखी वीर्य अनत ।

भुजा पले भय जम् तयारी, पूजो खध महत ॥ ४ ॥

दोनों खधो की पूजा करे।

सिद्धशिला, गुण ऊजली, लोकते भगवत ।

वमिया तिण कारण भवि, शिरशिखा पूजत ॥ ५ ॥

मस्तक पर पूजा करे।

तीर्थकर पद पुण्य थी, त्रिभुवन जन सेवक ।

त्रिभुवन तिलक ममा प्रभु, भाल तिलक जयवत ॥ ६ ॥

ललाट में पूजा करे ।-

सोल पहर प्रभुदेशना, कठ विरर वर्तुल ।

मधुर घनि मुर नर मुणे, तेणे गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥

कठ भाग में पूजा करे ।

हृदय कमल उपशम घले, बाल्या रागने रोष ।

हिम दहे वन खडने, हृदय तिलक सतोष ॥ ८ ॥

हृदय भाग में पूजा करे ।

रत्नप्रयी गुण ऊनली, सरल सुगुण विश्राम ।

नाभिर्मलनी पूजना, करता अनिचल धाम ॥ ९ ॥

नाभिम्यान में पूजा करे ।

इस तरह मूलनायक की नर अंगे पूजा करने के बाद आस पास के बिंदोंकी तथा इनसे और अधिक बिंद हों तो उनही भी पीछे ( उतारल न हो तो ) पूजा कर लेये ।

पूजा में मूलनायक की मुख्यता—

यहा पर शका पैदा हो सकती है कि पहिले मूलनायक की पूजा और पीछे आमपास की पूजा करने पर स्वामी सेवक मात्र ( छोटे बड़े का हिमाच ) होजाता है, एक तीर्थकर की विशेष पूजा करना और दूसरों की साधारण, यह भेद तीर्थरों में क्यों होना चाहिये ? । इसका समाधान यह है कि वेशक तीर्थकर भगवान् सब समान है, उनमें स्वामी सेवक

भात्र नहीं हो सकता, तो भी यह व्यवहार है कि जिन विंकी पहले स्थापना की गई हो वह मुख्य विं है इस लिये उसका पूजन पहले किया जाता है । ऐसा करने पर शेष तीर्थंकरों के नायकभात्र में कमी नहीं होती । सप्ताचार भाष्य में भी मूलनायक की पूजा विशेष प्रकार से करने के लिये कहा है—  
 “उचिअत्त पूआण, विसेसकरण तु मूलविंदस्स ।

ज पडट तत्थ पढम, जणस्स दिट्ठी मए मणेण ॥१॥”

अर्थात्—“उचित रीति से सर्व विंकी की पूजा करनी चाहिये परंतु खास कर मूल विंकी, क्यों कि अदर जाते ही लोगों की दृष्टि और मन पहले उसी पर ( मूल नायक पर ) ठहरते हैं ।’

पुष्पपूजा में धिवेक—

केशर चदन से पूजा कर चुम्बने पर भगवान को पुष्प चढ़ाये जाते हैं । पुष्प गुलाब, चपेली, जाई, जुड़, मरुआ, मोगरा आदि के सुगंधी होने चाहिये । देखिये इस विषय में जिन हर्षहरि अपने ‘विंशतित्यागरविचारामृतसंग्रह’ ग्रंथ में क्या फरमाते हैं—

“न शुष्कं पूजयेद्देव, कुमुदैर्न महीगतै ।

न विशीर्णदलै स्फुटै-नांशुमैर्नाऽनिकाशिभि ॥१॥

कीटकेनापविद्धानि, शीर्णपर्युपितानि च ।

वर्जयेद्दूर्णनामेन, वामित यदशोभनम् ॥२॥

पूतिगन्धीन्यगन्धीनि, आम्लगन्धीनि वर्जयेत् ।

मलमूत्रादिनिर्माणा-दुत्सृष्टानि कृतानि च ॥३॥  
ग्रथिमादिचतुर्भेदं, पुष्पः सद्यस्वसौरभैः ।  
निजान्यहृदयानन्द-दायिनीं कुरुतेऽर्चनाम् ॥४॥”

तात्पर्य—“जो खरे हो, जमीन पर गिरे हुए हों, जिन

की पाखडिया खडित हो, खराब चीज क स्पर्शगाले हों, पूरे  
तौर से न खिलें हों, कीड़ों से काट हुए हों, छिने हुए हों,  
वासी हों, जिन पर मक्खड़ी का जाला लगा हो, खराब वास  
वाले हों, सुगंध रहित हा, खट्टी वास वाले हा, मलमूत्र करते  
समय पास रहने से छोट दिये गये हों ऐसे फूलों से देव की  
पूजा न करे । इनके विपरीत १ ग्रथिम ( गुथे हुए माला  
आदि ) २ वेष्टिम ( किमी आकार में बाँट हुए ) ३ पूरिम  
( नकसी के रूप में बने हुए ), ४ मघातिम ( दगले के रूप में  
बने हुए ) इन चार प्रकार में से किमी भी प्रकार के ताजे  
और खुशबूदार फूलों से पूजा करे । ये फूल धर्य उदय होने  
के पहले नहीं लाने चाहिये । अंधेरे में जीनजतु का उपयोग  
नहीं रहता । लाये हुए फूलों को सुइ से छेदना नहीं चाहिये,  
और उनकी पाखडिया नहीं तोड़ना चाहिये । वे ज्यों के त्यों  
अखड ही चढ़ाने चाहिये जिससे जयणा धम का पालन  
होता रहे ।

अङ्ग-अप्रपूजा विषयक भावना—

इस तरह-जयणा और विवेकपूर्वक लाये हुए फूलों से  
जा कर इस मुजब भावना करे—

“ह प्रभो ! ये उत्तम सुगंधी फूल जैसे सुगन्ध में भरे हुए हैं वैसेही मेरे त्रिचार समकृत रूप सुगन्ध से भरपूर हों”

यहां पर ध्यान रहना चाहिये कि जल चंदन पुष्प और जगी त्रिगैरह की पूजा को अग्रपूजा कहते हैं, कारण कि उक्त जलादि पदार्थ भगवान् के शरीर पर चढ़ाये जाते हैं ।

धूप दीप अबत नैवेद्य और फल पूजा अग्रपूजा कही जाती है ।

इस अग्रपूजा में प्रथम धूप अगरबत्ती या दशांग धूप का कर, उम वक्त मन में मारना करे—

“ह प्रभो ! इस धूपको अग्नि में डालने से जल कर हमका धूआ ऊर्ध्व गमन काता है इसी तरह मेरी आत्मा के साथ लगे हुए कर्म जल कर मेरी आत्मा ऊर्ध्व गमन करे । अर्थात् मोक्षगति को प्राप्त हो”

धूप करने के बाद पवित्र घीका दीपक करे उम वक्त यह भावना होनी चाहिये—

“हे त्रिलोकीनाथ ! यह दीपक जैसे अधकार को दूर कर प्रकाश करता है इसी तरह मेरी आत्मा में रहा हुआ अज्ञान रूप अधकार दूर हो और आत्मा केवलज्ञान से प्रकाशमान हो”

इसके बाद अथत (चारल) से बानोठ पर अष्टमंगल (१ दर्पण २ भद्रासन (मिहासन) ३ वर्धमान ४ कलश ५ श्रीमत्स ६ मीनयुगल ७ स्वस्तिक ८ नवार्घ) इनका आले-

खन करे अथवा अकेला स्पष्टिकर करे यहा पर ऐसी भावना होनी चाहिये—

“हे नाथ चार गति के भ्रमण को हठा कर मुझे अम्बड-पद (मोक्षस्थान) दीजिये जिससे जन्म जरा मरण वाले ससार में मुझे फिर भ्रमण करना न पड़े”

इसके बाद शक्कर, ताजी मिठाई विगैरह नैवेद्य चढ़ावे और मनमें भजना करे—

“हू दीन दयाल ! जैसे इम आहार का त्याग कर आपने अणाहारी पद प्राप्त किया वैसे मुझे भी यही पद प्राप्त हो”

इसके बाद श्रीफल सुपारी विगैरह फल चढ़ा कर ऐसी भजना करे—

“हे कृपालु स्वामिन् ! यह फल आपके चरणों में रखकर मैं यही चाहता हू कि मुझे उत्तम मोक्ष रूपी फल जल्द-ही प्राप्त हो”

इस तरह क्रमवार अष्टद्रव्य चढ़ाने के बाद और भी घादाम, पिस्ता, इलायची, लवंग आदि मेवा चढ़ाना, अशरफी रुपया पैसा चढ़ाना, आरती और मङ्गलद्रीप करना, बाजे बजवाना इत्यादि सब अग्रपूजा में गिना जाता है। भाष्य में भी कहा है—

“गधञ्च नष्ट वाइय—लवणजलारत्तिआइदीवाई।

ज किच्च सञ्चपि उ, ओअरई अग्रपूजा । १॥”

अर्थात्—“गान, नाच, वादित्य, लवणजल, आरती और मङ्गलद्रीपक आदि जो कुछ पूजा कर्तव्य है उन सबका अग्रपू-



जामें समावेश होता है । '

मन्त्रि—

द्रव्यपूना का रह तब मंडपमें जाकर चोरा सुपारीकी डगिया खोल कर पाटने पर अक्षतका स्वस्तिक (साधिया) नीचे का दुहा घोलता हुआ करे ।

“अथतपूजा करता थमा, सफल कर अन्तार ।

फल मागु मधु जागले, तार तार मुझ तार ॥ १ ॥ ”

उसके बाद—

“दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनवी सार ।

मिद्वशिलानी उपरे, हो मुझ वाम श्रीरार ॥ २ ॥ ”

इस तरह दुहा घोल कर चारलकी तीन दगलिया तथा अर्ध चद्राकार मिद्वशिलाका आकार बनावे ।



इनका भार्वा भी पढ़िये—

ऊपर दिये गये साधिये के चार पाखंडिया है जिनसे देव मनुष्य तिर्यञ्च नरकरूप चार गतियों की सूचना होती है, साधिये के ऊपर चारल की तीन दगलियां १ ज्ञान २ दर्शन और ३ चारित्र इन तीन रत्न की सूचना करती है, ३ दगलि

यो के ऊपर जो अर्घ चद्राकार किया गया है वह सिद्धशिला का सूचक है, इससे भावना यह होनी चाहिये—

हे त्रिलोकीनाथ ! चार गति क भ्रमण को हठा कर मुझे ज्ञान दर्शन और चारित्र दे कर मोक्षमार्ग पहुचनेको शक्तिमानू कर ।

ऐसी भावना के साथ साधिया कर उसपर मुपारी निर्गै-  
रह फल रखे ।

भावपूजा—

भगवान् की दाहिनी तर्फ (जीमणी तर्फ) बैठ कर चैत्य-  
वदन करना यह भावपूजा है ।

चैत्यवदन के तीन भेद हैं—जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट ।

जघन्य चैत्यवदन वह है जिसमें सामान्य नमस्काररूप कोई एक श्लोक या दुहा बोला जाता है ।

मध्यम वह है कि जिसमें चैत्यवदन नमस्तुभ्यं दोनों जा-  
घति स्तवन जयवीरराय तथा अरिहंत चेइयाण बोलकर एक  
नमस्कार का फाउस्मग्ग कर ऊपर एक स्तुति बोली जाती है ।

उत्कृष्ट वह है कि जिसमें चार अथवा आठ स्तुतियोंसे  
चैत्यवदन किया जाता है ।

इन तीनों भेदों के चैत्यवदनमें स्तवन स्तुति आदि पाठ  
शुद्ध अर्थ विचारणापूर्वक बोलना चाहिये । अशुद्ध और उप-  
योग रहित बोलनेसे उसका यथार्थ फल नहीं मिलता । मि-  
ठाई बहुत मीठी होती है लेकिन उसमें कड़ूर या धूल पड़ी

हुई हो अथवा खानपान गानेम ध्यानहीन हो तो खाने का खात प्रियुक्त जाता है अथवा उमरा पता ही नहीं लगता । इसी तरह अशुद्ध उपासणमें अथवा उपयोगशून्यतामें ममज्ञ लेना चाहिये ।

अन चैत्यगृह स्तम्भनादि मन्दिरमें ऊँचे घोलने चाहिये यह बात भी समझने लायक है ।

चैत्यगृह स्तम्भनादि कितनेक मन्त्र (मन्दिरमें पटिकमणा या पौमहमें) घोलने लायक होते हैं, जिनमें अमुक स्थानमें कहने लायक । कितनेक पुष्पके कहने लायक होते हैं और जिनमें स्त्रीके कहने लायक ।

जिस चैत्यगृहमें स्तम्भमें और स्तुतिमें सिर्फ भगवान् के गुणों का वर्णन हो अथवा अपनी आत्मनिन्दा हो वे मन्दिर मति क्रमणादिमें सर्वत्र घोले जाते हैं, परन्तु जिनमें आठम ग्यारम आदि विधियोंका वर्णन हो या दान शील तपस्या ध्यान पूजा विगैरहका उपदेश हो ऐसे स्तम्भनादि प्रतिक्रमण सामायिक या पौषध में ही घोलने चाहिये मन्दिरमें नहीं घोलने चाहिये ।

स्तुतियाँ विषयमें भी यही बात है । पाचम आठम ११ ग्यारम आदि विधियोंकी स्तुतियाँ प्रतिक्रमणादिमें घोल सकते हैं परन्तु भगवान् के सामने तो भगवान् के गुणवर्णनवाली स्तुति ही घोलनी चाहिये ।

चार स्तुतियोंमें पहली स्तुतिमें एक तीर्थङ्करका गुणवर्णन, दूसरीमें सब तीर्थङ्करोंका गुणवर्णन, तीसरीमें ज्ञान का

वर्णन और चौथीमें समकितदृष्टि शमन दयदेवियाकी प्रशंसा आती है। ऐसे क्रमपूर्वक वर्णनवाली चारों स्तुतिया बोलनी चाहिये। कई ऐसी भी स्तुतिया होती हैं जिनमें उक्त क्रम नहीं पाया जाता, व नहीं बोलनी चाहिये।

ऊपरकी सूचना सुजय स्तुति स्तवनादि भावपूजामें पढ़ने चाहिये और यह भी बहुत शक्तिपूर्वक एकाग्रचित्तसे। क्योंकि लाभ स्थिरतामें है उतावलमें नहीं। स्थिरतासे की गई यह भावपूजा द्रव्यपूजासे अधिक श्रेष्ठ है। भावमें वृद्धि करानेवाली होनेसे उत्कृष्ट फल इसीसे प्राप्त होता है। भावपूजा के समय इतना एकाग्र हो जाना चाहिये कि आसपास क्या हो रहा है उस तर्क बरा भी खयाल न जाव। एक यूरोपीयन्

**Astrologer** (खगोलशास्त्री) **Sir Issac Newton** सर आइजार् न्युटन जो कि ई सन् १६४२ में जन्मा था, जिसकी कुल उम्र ८४ वर्षकी थी उसका मन इतना एकाग्र था कि जब कभी **Philosophical** (तत्त्वज्ञान) और **Arithmetical** (गणित) विद्या सवन्धी विचारोंमें मग्न होता था उस वक्त खाना पीना भी भूल जाता, यहा तक कि रात है या दिन है इसकी भी उसको खबर न रहती थी।

इसके सिवाय और भी एक आर्किमिडीन् नामका मनु-  
हर गणितशास्त्री अपना अभ्यास इतनी एकाग्रतासे करता

कि बाहर क्या हा रहा है उस तर्क उसका लनिश भी ध्यान न जाता था । एउ रोज किमी परदगी दुश्मनने उसके गाय-पर हमला किया और बंदूक तथा तोपों के घडाकोसे वहाँके मनुष्यों को भगान लगा उस वक्त यह रिद्वान् **Geometry** (भूमिति) सब ची जटिल प्रश्नक गुलझानमें मशगुल था, फोन के गिवाइयोंन उस के बंद कमर की दिवार तोड़कर भीतर नाकर कहा—‘हमार तावे हो जा अन्यथा तेरी जानको गतरा है’ यह सुन न तो वह डरा और न गमराया, शातिसे जमान दिया—

‘ Please wait some time till I finish this my knotty riddle ’

“ कपाकर थोड़ी दर ठहरिये मेरा यह रुठिन कोपडा पूर्ण करने दीजिये । ”

अहा देखिये उसकी एकाग्रता और मन की स्थिरता ! यह तो आधुनिक दृष्टांत है परन्तु शास्रमें भी सुना जाता है—

एउ रोज लङ्कापति रामज अपनी रानी मन्दोदरी के साथ अष्टाषद तीर्थ पर गया और थोड़म भगवान् की प्रथम अष्ट द्रव्य से पूजा की बाद भागपूजामें लगा । त्रिम वक्त मन्दोदरी नाच करती थी और रामज गीणा बजाते हुण गाते थे उस वक्त उनकी भावना इतनी बढ गई थी कि वहा उन्होंने तीर्थङ्कर गोत्र कर्म बाध लिया ।

देखिये कितना है भावपूजा का प्रमाण ? इसी लिये शास्त्रारोने द्रव्यपूजाका उत्कृष्ट फल बारसा अच्युत दण्डोक्त कर गमन बताया है और भावपूजा का फल एत अन्तर्मुहूर्तमें मोक्षप्राप्ति कर बताया है । दोनों पूजाओंका लाभ श्रावक को उठाना चाहिये ।

उक्त अष्टप्रकारी पूजा के उपरांत सतराभेदी और इक्कीस प्रकारी पूजा भी शास्त्र में बताई हैं जिन का दिग्दर्शन नीचे सुचार है ।

### सतरा भेदी पूजा

- १ स्नात्र करना, निलेपन करना ।
- २ चक्षु चढ़ाना ।
- ३ सुगंधी फूल चढ़ाना ।
- ४ पुष्पमाला पहनाना ।
- ५ पचरंगी फूल चढ़ाना ।
- ६ बराम कपूर आदिका चूर्ण चढ़ाना ।
- ७ अलंकार (अंगी आदि) चढ़ाना ।
- ८ फूला का घर बनाना ।
- ९ फूलों का ढेर करना ।
- १० आरती तथा मंगलदीवा करना ।
- ११ वक्तियों का दीपक धरना ।
- १२ धूप करना ।

- १३ नवद्य चणना ।
- १४ उत्तम फल चणना ।
- १५ गीत गान करना ।
- १६ नाटक रङ्गना ।
- १७ नाचे गायना ।

### इक्कीस प्रकारी पूजा

- १ स्नात्र अभिषेक करना ।
- २ त्रिलेपन करना ।
- ३ जलस्नान चणना ।
- ४ फूल चणना ।
- ५ वाम रोप चढाना ।
- ६ धूप धरना ।
- ७ दीपक धरना ।
- ८ फल चढाना ।
- ९ अक्षत चढाना ।
- १० पत्र चढाना (नागर बेल के पान चढाना) ।
- ११ सुपारी बादाम चणना ।
- १२ नैवेद्य चणना ।
- १३ जलामिषेक करना ।
- १४ वस्त्र चणना ।
- १५ चामर वीजना ।

१६ चादी के छत्र बाधना ।

१७ बाजे बजाना ।

१८ गीत गान करना ।

१९ नाटक करना ।

२० स्तुति बोलना ।

२१ भंडार वृद्धि करना (चढावा बोल कर देवद्रव्य में वृद्धि करना) ।

इस मुजब यथाशक्ति अष्टप्रकारों सतग भेदी और इषीस प्रकारी पूजा कर श्रावक को भगवान् के आगे अपना भक्ति-भाव प्रकट करना चाहिये ।

**दर्शन और पूजन सम्बन्धी कुछ सूचनायें—**

(१) जिनमंदिरमें दर्शन करने का टाइम सूर्य उदय होने के बाद समझना चाहिये अर्धर में दर्शन करना नहीं कल्प सकता, कई जगह देखा जाता है कि पिछली रात करीब घड़ीभर रहती है तब जैन श्राविका दर्शन करने को चली जाती हैं, राजपूताना के कई बड़े बड़े शहरों में तो मर्दा वाली श्राविकायें हमेशा पिछली रात में ही दर्शन करने को जाती हैं, इस के सिवाय किसी जगह ऐसा भी देखा गया है कि पञ्चमण या नवपद ओली के पर्व दिनों में पिछली एक पहर जितनी रात रहती है उम वक्त दर्शनकी उतावल करने लग जाती है, मगर तत्पश्चात् से देखा जाय तो यह प्रवृत्ति बगैर उपयोग की है, जय-



णा धर्म मानने वाले जैन गृहस्थों को ऐसी प्रवृत्ति बंद करने में ही लाभ है ।

(२) मंदिर में भगवान् का प्रक्षालन (पराल) मुख्य उदय होने के बाद करना चाहिये जहां तक ज्वेरा हो नहीं हो सकना, कारण कि ज्वेरे में जीमूजतु का उपयोग नहीं रहता । प्रक्षालन के लिये जल अगोस्ट मीच कर लाना चाहिये वह भी ज्वेरे में नहीं बल्के प्रसाज होने पर लाना ठीक है । माथ में यह भी ध्यान रहना चाहिये कि जल का कलश लाने वाला पूजारी जहां तक बन सके खुद स्नान कर शुद्ध कपड़े पहन कर जल का कलश लावे ।

(३) भगवान् के प्रक्षालन अगलुणे करना तथा केशर पूजा करना इत्यादि सब अंगपूजा का कार्य स्वयं श्रावक ही कर, राखल सेवन आदि पूजारी के पास करना ठीक नहीं, कारण वे नोकर हैं, उन में भक्तिभाव नहीं होता, पूजारी का काम तो जल का कलश लाना, काजर घोटना, झाड़ू निरालना, मंदिर के चरतन साफ सफ करना इत्यादि हैं, मगर आज कल श्रावकों में प्रमाद बहुत बढ़ जाने से प्रक्षालन अगलुणा आदि सब कारोबार पूजारी को सुपुर्द कर देते हैं, जिस से पूजारी जी चाहे जैसा कार्य करे, श्रावक लोग तो जब पूजारी प्रक्षालन निगैरा बुल कार्य कर चुके तब भिक्षु भगवान् के चिंदका लगाने को आ

यह है, हा अगर

है, पूजाभक्ति करना श्रावक ही पूजारी के

अधिकार पर रखा हुआ हो तो बात और है, कारण कि वह जैन श्रावक होने से विवेक और भक्तिपूर्वक ही कार्य करेगा।

यहां कोई सवाल करेगा कि श्रावक पगारदार पूजारी कैसे हो सके ? इसका उत्तर यह है कि कोई श्रावक गरीब हालत में हो तो वह साधारण खाते से मासिक पगार ले कर पूजारी बन सकता है। साधारण खाते से पगार लेने पर देव-द्रव्य का दोष नहीं लगता। मंदिर में चावल सुपारी फल नैवेद्य विगैरह जो पूजापा आवे वह देवका निर्माल्य होने से श्रावक पूजारी को न देकर मंदिर में झाड़ू निकालने वाला या कोई नोकर हो उसको दे दिया जावे और सिर्फ साधारण खाते से पगार देकर पूजारी रखा जाय तो श्रावक को कोई दोष नहीं।

(४) मंदिर में खुले दीयों की रोशनी न होनी चाहिये। कई जगह देखा है कि जिस दिन मंदिर में अगी बनाई जाती है उस दिन शामको (संध्या समय में) खूब रोशनी करते हैं वहां खुले गिलामों में तैल भर कर बत्ती लगा देते हैं जिससे पतगिया विगैरह अनेक जीवों का विनाश होता है। बताइये ऐसी रोशनी किस काम की। अगर रोशनी की इच्छा हो तो काच के बंद फाणस लगावे जिससे जीवों की हिंसा रुक जावे। दीया रोशनी में पूरा विवेक रखना चाहिये।

(५) अन्त में कहना यह है कि श्रावक लोग अगर बुद्धिमान हैं और उन में विचारशक्ति है तो अपने यहां प्रतिमाओं का संग्रह न करके जहां खास जरूरत हो वहां भेजे दें, और

ले जाने वाले अपनी गुरुजी से जो नम्रग दें उसी से सतोष करें, क्या कि मन्त्रि म ज्यो बोटी प्रतिमा रहेंगी त्यो उनकी पूजा भक्ति विशेष होगी और विशेष लाभ प्राप्त होगा ।

### ३ श्रावक-द्वादशावत ।

सम्पत्त अथवा समन्वित स्वरूप—

निम्न ऋषि मे वस्तु के पथार्थ स्वप्न पर श्रद्धा होना उसका नाम 'सम्पत्त' है और चतुर्दश से १ सुदेव २ सुगुरु और ३ सुधम इन तीन तंत्रों पर श्रद्धा करना भी सम्पत्त अथवा समन्वित कहलाता है ।

(१) सुदेव—जो अठाग दोष रहित, बारह गुण सहित चौतीस अनिशय युक्त और पैंतीस गुणयुक्तगणी से देशना देने वाले, जिनका ज्ञान गर्वव्यापक है, जिनको पुनर्जन्म लेना नहीं है और जो नाम स्थापना द्रव्य और मात्र इन चार नियमों से पूननीय है ऐसे प्रमादशाली अरिहत दर 'सुदेव' हैं ।

(२) सुगुरु—पच महाप्रतधारी, मतरा मेद से सयम की पालने वाले, नमगुप्तिगुप्त नल्लचर्य पालक, पाच समिति और तीन गुप्ति रूप जाठ प्रचन माता के आराधक, चयालीस दोष रहित शुद्ध अहार लेने वाले, तीर्थंकर भगवान् के आगमानुसार शुद्ध प्ररूपणा करने वाले ऐसे निस्पृही त्यागी मुनि 'सुगुरु' हैं ।

(३) सुधर्म—तीर्थंकर भगवान् ने समयमरण में बैठ कर चार पर्वदा के सामने द्वादशांगी की पररूपणा कर उसमें शुद्ध

स्याद्वादमय नय निक्षेपा सहित साधुधर्म और श्रावक धर्म का जो स्वरूप बताया गही 'सुधर्म' है ।

सम्यक्त्वधारीको कोइनतीन तत्वों का श्रद्धापूर्ण आदर और इनसे विपरीत कुदेव कुगुरु और कुधर्म का त्याग करना चाहिये ।

प्रतिज्ञा—

“मैं देवगुरु साक्षिक मिथ्यात्व का त्याग कर सम्यक्त्व स्वीकार करता हूँ । आप से जीवित पर्यन्त जिनदेव, महाव्रतधारी साधु और दयामय जैनधर्म पर ही श्रद्धाविश्वास रखूंगा”

सम्यक्त्वधारी को निम्न लिखित सम्यक्त्व सगधी पाच अतिचार, छ अपवाद और चार आगार ध्यान में रखना चाहिये—  
अतिचार—

(१) शका—तीर्थंकर भगवान् के उचनों में सशय करना उमका नाम 'शकातिचार' ।

(२) साक्षा—अन्य धर्म वालों में कुछ चमत्कार अथवा जाडवर देख कर उम तर्फ झुकने की इच्छा करना ।

(३) विचिकिमा—यह धर्म क्रिया करता हूँ परन्तु इसका फल मिलेगा या नहीं इस तरह शकागील होना ।

(४) मिथ्यात्तिप्रशम्भा—अज्ञान फट करने वाले तापस सन्यासियों की प्रशंसा करना उनके तप की महिमा ऊँचा ।

(५) कुलिगिमस्तत्र—मिथ्यामताग्रही साधु अथवा गुणहीन वेश्यागी का परिचय करना ।

अपवाद—

(१) गयाभियोगेण—राजा के हुक्म से कभी ममन्त्रित-वारी को अपने नियमविरुद्ध कार्य करना पड़े तो उसमें समझि का भग नहीं होता ।

(२) गणाभियोगेण—न्याति जाति के समुदाय के कहने से कोई कार्य करना पड़े तो उसमें समझि का भग नहीं होता ।

(३) उलाभियोगेण—उल्लान् चोर श्लेच्छादिक के पजे में फँसा हुआ नियमविरुद्ध कार्य करे तो सम्यक्त्व भग नहीं होता ।

(४) देशभियोगेण—भूत प्रेतादिक की परवशता से वज्रित कार्य करे तो भग नहीं होता ।

(५) गुरुनिग्गहेण—माता पिता अथवा गुरु के कहने से वज्रित कार्य करना पड़े तो भग नहीं होता ।

(६) त्रिचित्तारण—आजीविता के लिये कोई वज्रित काम घटा करना पड़े तो भग नहीं होना ।

आगार—

(१) अन्नन्थणामोगेण—उपयोग विना कोई वज्रित कार्य हो जाय तो भग नहीं ।

(२) सहमागारेण—अरुस्मात् यथायक वज्रित कार्य हो जाय तो भग नहीं ।

(३) महत्तस्यारण—घर के बड़े पुरुष क कहने से मित्यात्य प्रवृत्ति करनी पड़े तो भग नहीं ।

(४) सव्यसमाहित्तियागारेण—शरीर में सन्निपात अति भयकर रोग के आक्रमणमय में कोई विरुद्ध आचरण हो जाय तो भग नहीं होता ।

नियम—

- १ प्रति दिन—चार देवदर्शन करूंगा ।
- २ „ नौकारसी या मास में—करूंगा ।
- ३ „ नौकारमत्र की माला—गिनूंगा ।
- ४ महीने में—चार या—तिथि पूजा करूंगा ।
- ५ प्रति वर्ष छोटी बड़ी तीर्थयात्रा—करूंगा ।
- ६ „ सप्तश्रेण में—स्वर्च करूंगा ।
- ७ „ सागरण में—स्वर्च करूंगा ।
- ८ „ ज्ञान खाते में—स्वर्च करूंगा ।
- ९ „ साधर्मिक की भक्ति—वार करूंगा ।

ऊपर के नियम जीवन पर्यन्त पालूंगा । आगाढ़ कारण विशेष की जयणा है । मन शरीर अथवा आत्मा की परमेश्वर दशा में भी जयणा है ।

सम्यक्त्व सब उत और नियमों का मूल और आधार कहा गया है इस वास्ते पहले धर्मश्रद्धारूप सम्यक्त्व दृढ़ करना चाहिये फिर गृहस्थ योग्य दूसरे उत नियमों को अंगीकार करे ।

जैन श्रावक क लेने योग्य जनेऊ नियम अभिग्रहों में स्थूल प्राणातिपातविरमण आदि चारह व्रत मुख्य हैं जिनका संक्षिप्त स्वरूप नीचे दिया जाता है ।

### स्थूलप्राणानिपातविरमण ।

स्वरूप—

स्थूल यानी उद्द्रिय आदि बड़े जीवा के प्राणों के अनिपात ( विनाश ) में विरमण—रुकना उसका नाम 'स्थूल प्राणातिपात विरमण' है । अर्थात् जीव हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ।

जीवहिंसा के विषय में द्रव्य और भाव जादि से चतुर्भंगी बनती है जैसे—

- (१) द्रव्य और भाव से हिंसा ।
- (२) द्रव्य से हिंसा भाव से नहीं ।
- (३) भाव से हिंसा द्रव्य से नहीं ।
- (४) द्रव्य से नहीं और भाव से भी नहीं ।

(१) पहले भग श्री द्रव्य और भावसे हिंसा, जैसे फोड़ शिकारी 'मैं मारू ऐसा शोचता हुआ मारने के इरादे से तीर फेंक कर जंगल में हिरण आदि का शिकार करता है, यहा पर द्रव्य जीव मारा जाता है और भाव मारने का इरादा होता है ।

(२) भग में द्रव्य से हिंसा है लेकिन भाव से नहीं, जैसे ध्यान पूरक चलते हुए मुनि के पैर नीचे कोई कीड़ी मर गई, यहा पर द्रव्य—कीड़ी की हिंसा हुई, मगर भाव से नहीं, क्योंकि भाव मारने का नहीं था ।

(३) भग में भाव से हिंसा है, द्रव्य से नहीं, जीव मारने का उपाय किया मगर वह मरा नहीं, जैसे अगरमर्दकाचार्य ने रात को जीव जान कर कोलसे पात्रसे दगाये, यहा पर मारने का भाव था मगर द्रव्य से जीव नहीं मरा ।

(४) भग में न द्रव्य से हिंसा है, न भाव से । जैसे मन वचन और काय इन तीन योगों को स्थिर कर काउस्मग ध्यान में खड़े मुनि में न द्रव्य से हिंसा है, न भावसे ।

पीस विंध्या और सग विंध्या दया—

त्रस-चलते फिरते जीव और स्थावर-पृथिवी-जल-अग्नि-वायु और वनस्पति, ये पांच प्रकार के स्थिर जीव । इन त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा का त्याग करने से वीम विंध्या दया होती है, ऐसी दया मुनि मार्ग में पाली जा सकती है । श्रावक मरिफ सग विंध्या ही दया पाल सकता है । यह हकीकत नीचे के विवेचन मे समझ में आयगी ।

“जीवा सुहुमा थूला, सकप्पारमओ भवे दुविहा ।  
सावराह्निरवराहा, माविग्ग्रा चेव निरचिक्खा ॥१॥”

अर्थात्—जीव के दो भेद हैं—सूक्ष्म और स्थावर, अर्थात् स्थावर और त्रस इन दो भेदों में तमाम जीव जा जाते हैं, उन सग की रक्षा करना उस का नाम पीस विंध्या दया है । इस प्रकार की दया त्यागी मुनि रख सकते हैं, इस लिये मुनि की दया वीम विंध्या मानी जाती है । श्रावक थावर जीवों की



हिमा का त्याग नहीं कर सकता, कारण कि सचित्त अनाज जल अग्नि आदि काम में लाता है इस वास्ते वीम विश्वा में से बार सवन्धी दश विश्वा कम किये तब त्रम सवन्धी दश विश्वा शेष रहे ।

हिमा दो तरह से होती है, सकल्प (इरादे) से और आरभ से । गृहस्थ इरादे से त्रमहिंसा नहीं करेगा मगर आरभ में अथात् घर नार सवन्धी कामों के करने में वह होही जायगी, इस कारण दश में भी आरभ के पांच विश्वा निकाल देने में शेष पांच विश्वा रहे ।

गृहस्थ सकल्प से भी निरपराध त्रमजीव की हिमा टाल सकता है, अपराधी त्री नहीं, इस लिये सापराध के २॥ दाद विश्वा कम करने पर शेष २॥ विश्वा रहे ।

निरपराध त्रम जीवों की सकल्प हिंसा भी अपेक्षा विशेष से हो जाती है इस वास्ते सापक्षता का १। सत्रा विश्वा कम करने पर शेष १। विश्वा दया रहती है, बस इतनी ही दया त्र तवारी त्रामरु से पल सकती है ।

उपयोग रखना चाहिये—

धारका का अपने घर कामों में बहुत उपयोग रखना चाहिये जिस से कि निर्वन्ध किसी भी जीव की हिमा न हो । उपले (छाणे) उधन विगैरह जलाने को लेवे उन को देख भाल कर लेवे ता कि उनमें फिजूल जीव हिमा न हो । घी, तैल, गुड,

नमक, आटा प्रिगैरह के घरतन खुले मुह न रखवें। चूले, पनेहरे पर, खाने तथा सोने की जगह पर, और घरटी तथा ऊग्वल पर कपडा कतान या चट्टोआ राधना चाहिये जिम मे किमी जीव का विनाश न हो। जीव जंतु की उत्पत्ति न हो वैसी हिफाजत से अनाज रखवें। जल छानने के लिये उमदा खदर का गलना रखवें और उस से जल छान कर जीरानी जैसा जल हो वैसे स्थान में डाले। अर्थात् मीठे जल का जीरानी मीठे जलाशय में और खारे का खारे में डाले, अन्यथा एक दूसरे में रदोनदल करने से उन जीवों का विनाश हो जाता है।

मोने के भाचे पलग या पाट में खटमल पैदा न होने दना चाहिये और किमी हालत में पैदा हो गये हों तो उन को धूप में न रखना चाहिये, क्यों कि ऐसा करने से जीव मर जाते हैं।

भोजन या जल जूठा नहीं रखना चाहिये, क्यों कि उन में समूर्निष्ठम जीवों की उत्पत्ति और हिंसा होती है। मुरग से लगा हुआ लोटा गिलाम आदि मटकी में न डाले, क्यों कि ऐसा करने से मटकी का जल भी जूठा हो जाने के कारण बड़ा जीव उत्पन्न होते हैं।

सूखे साफ़ भाजी को देग माल कर काम में लाना चाहिये। मीठाइ पकान्न प्रिगैरह मीजाले (ठंडी) में एक महीना उन्हाले (गर्मी) में बीस दिन और चोमामे (वर्षाकाल) में १५ पद्रह दिन के उपरांत न खाने चाहिये, क्यों कि उक्त काल

ऊ उपरात उन म जीव उत्पन्न हो जान का अधिक सभय है ।  
 कहा तर लिखें, चला जलाने में मरीची को चाम चारा डालने  
 में दलने में राहने म चीज वस्तु लेने रखने आदि हर एक  
 काम में पूरा खयाल रख कर कार्य कर, ताकि जीवदया का  
 निरंतर पालन होता रह ।

प्रतिष्ठा—

“म दयगुह मात्रिक मूल-हिंसा का त्याग करता हूँ ।  
 जीवन पयन्त निरपराध तम (सूत) जीवों की सम्पूर्ण हिंसा  
 (मन्त्रिचारहिमा) न रख करूंगा न दूर से कराऊंगा ।”

अतिचार—

१ वध—कोव या अभिमान के वश हो कर मनुष्य  
 अथवा गाय, भैंस, बैल, घोडा, ऊट आदि पशु पक्षियों को  
 निर्दयपनेसे मार प्रहार करे इसका नाम ‘वध’ अतिचार है ।

(२) वन्ध—घोडा बैल गाय भैंस आदि को सरत वधन  
 मे बांधे अथवा गुन्हेगार मनुष्य को भी उसी हालत से मन्वृत  
 बांधे जिम में उन का नाश दम आ जावे इस को ‘वन्ध अ  
 तिचार’ कहते हैं ।

(३) छिन्नेद—बैल ऊट आदि का कान आदि शरीर  
 के अवयव का छेद करना कराना सो ‘छिन्नेद’ नामा  
 अतिचार है ।

(४) अतिभारोपण—बैल ऊट आदि के ऊपर उनकी

शक्ति के अनुसार जितना भार बोझा लादना चाहिये उस से ज्यादा लादना उसका नाम 'अतिभारोपण' अतिचार है।

(५) भक्तपान व्यञ्छेद—गाय भोंम बैल ऊट आदिको गुराऊ देना घब कर दे अथवा गुराऊ में से कुछ निम्न ले या खाने का समय व्यतीत कर खिलावे तो अतिचार होता है, अपने नोकर दास दासी की रोजी में खलल पहुँचाने या बर्गर कारण पगार में कमी करे तो भी दोष है। किसी पर कामण दूमण मारण मोहन उच्चाटण मूठ चलाना निर्गह भी इसी त्रुट के अतिचारों में गिना जाता है।

### स्थूलमृपावादप्रिमण ।

स्वरूप—

'स्थूल' का अर्थ है बड़ा, 'मृपावाद' का अर्थ है झूठ बोलना और 'प्रिमण' का अर्थ है रक्कना, इस कारण 'स्थूलमृपावाद प्रिमण' का शब्दार्थ 'बड़े झूठ बोलने में रक्कना' यह होगा, गृहस्थमें छोटे झूठ वचन का तो त्याग नहीं हो सकता मगर बड़े झूठ वचन का त्याग अग्र्य करना चाहिये।

मृपावाद दो प्रकार का है—१ द्रव्य मृपावाद और २ भाव मृपावाद। लेन देन में जो झूठ वचन बोला जाता है वह 'द्रव्य मृपावाद' है और शास्त्र विरुद्ध भाषण करना—उत्सृज वचन बोलना यह 'भाव मृपावाद'।

द्रव्य मृपावाद में १ कन्यालीक, २ गवालीक, ३ भूम्य-

लिङ्ग, ४ स्थापनाम्ना और ५ वृद्धमाक्षी, इन पांच गृह अमत्या का त्याग अनिवार्य करना चाहिये।

इन अमत्योक्तों का निरर्थक नष्ट होना ही है।

(१) कन्यालीक—कन्या सप्तमी अष्ट, कन्या के विषय में किसी के पड़ने पर अथवा बगैर पड़े गुणवती को निर्गुणा बताने और निर्गुणा को गुणवती अथवा उसकी उमर कमी वेशी बताने, लक्षणा में विपरीत बात कह उस का नाम 'कन्यालीक' है।

जहां तक हो सके कन्या के लेन देन की दृष्टि में उत्तरी आर्य को पटना ही ठीक नहीं, पर वैसी मध्यस्थ शक्ति न रहे सके और कन्या सप्तमी व्यवहार में पटना ही पड़े तो जो मही हकीकत हो वही कह, किसी तरह अष्ट न बोले।

कन्यालीक की ही तरह अन्य किसी भी मनुष्य सम्बन्धी अमन्य नहीं बोलना चाहिये।

(२) गवालीक—गाय भूमि बल हाथी घोड़ा विगैरह की उमर के बारे में उन के गुण दोष बताने में उन की कीमत करने में जैसा हो वैसा कहे अभी अष्ट न बोले।

(३) भूम्यलीक—जमीन सप्तमी अष्ट दूसरे की जमीन को अपनी कहना, थोड़ी जमीन हो और ज्यादा बताना, घर दुकान बगला हवेली बाड़ी बाग विगैरह के बारे में अष्ट बोलना, दूसरे के कर्म का ममान जूठी गवाही खटी कराने के हुकूम से अपने कबने कर लेना इत्यादि अमन्य का

नाम भूम्यलीक है । श्रावक को चाहिये कि ऐसे झूठ से दूर रहे ।

(४) स्थापना मृषा—विश्वास पात्र जान कर अपने घर विना साक्षी विना लिखत-दस्तावेज के रखी हुई अमानत को दबा लेने की नीयत से 'मेरे पाम नहीं है, मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानता' इस प्रकार अपने यहाँ रखी हुई चीज के विषय में नारूपूल होना इसको 'स्थापणमोमा'—स्थापना मृषा कहते हैं ।

(५) कूट साक्ष्य—झूठी शहादत । दो आदमी आपस में झगड़ते हों उस उक्त पक्षपात से या लोभ के वश हो कर झूठी गवाही देना 'कूट साक्ष्य' कहलाता है । प्रतियोगी को झूठी गवाही कभी नहीं देना चाहिये ।

प्रतिज्ञा—“मैं देवगुरु—सात्विक स्मृत अमृत्य भाषणका त्याग करता हूँ । आजीवन कन्यालीलादि पाच प्रकार का असत्य न स्वयं बोलूँगा न दूसरे से बोलाऊँगा ।”

अतिचार—१ सहसाम्याग्यान—विना विचारे किसी पर झूठा इलजाम लगाना, जैसे—‘तू चौर है, तू लोफर है’ इत्यादि । प्रतियोगी ऐसा किसी पर दोष न लगावे, अगर किसी में अवगुण हो तो भी उस की निंदा करना तज्ज मन है तो झूठा इलजाम लगाना तो बड़ा ही अपराध है ।

(२) रहस्याभ्याग्यान—खानगी बात कग्नेवालों पर झूठा इलजाम लगा कर कहना ‘तुम अशुभ बात करते हो’

डम का नाम 'गहस्याभ्यारथान' है।

(३) स्त्रदागमत्रभेद-अपनी स्त्री की गुप्त बात किसी को आग जाहिर करना, सानगी भर्म प्रकट करना डमका नाम 'मन्त्र-भ्रम-भेद' अतिचार है।

(४) मृषा उपदेश-किसी को दुःख में डालने के लिये झूठी राय देवे, झूठी दलीलें सिखाने, टटे फिमाद उत्पन्न करने वाली तरकीबें बतावे इस को मृषाउपदेशनामक अतिचार कहते हैं।

(५) कूट लेख-किसी के नाम पर झूठा सतपत्र लिखना असल आंक को तोड़ कर दूसरा जाली अंक लिखना या अक्षर रद्दोदल करना झूठी मुहर छाप लगाना ये सब काम 'कूटलेख' अतिचार में शामिल हैं।

### स्थूलअदत्तादानविरमण

स्वरूप-

जिम चोरी से राजदरबार में सजा मिले या दुनिया में बदनामी हो ऐसी बड़ी चोरी नहीं करनी चाहिये।

अदत्तादान के दो भेद हैं १ द्रव्य अदत्तादान २ भाव अदत्तादान।

किसी का घर फाड़ना जबरन किसी के धन से चीजें लेना किसी की सखी हुई चीज के देने में इनकार करना तथा हीरा मोती पन्ना जैवरत्न में थूठ सनेहा अदल बदल करना यह तमाम द्रव्य अदत्तादान हैं।

२ भाव अदत्तादान—वर्ण गघ रम स्पर्श आदि तेईस विषय तथा जाठ कर्म की वर्णना यह आत्मा से पर वस्तु है इन को ग्रहण करना यह भाव अदत्तादान ।

प्रकारान्तरसे अदत्तादान के ४ भेद हैं—१ स्वामि अदत्त २ जीव अदत्त ३ तीर्थंकर अदत्त ४ गुरु अदत्त ।

(१) किसी भी चीज को उस के मालिक की आज्ञा मित्राय लेना उम को 'स्वामि अदत्त' कहते हैं ।

(२) अपने दाम या दामी अथवा अन्य किसी भी जीव को उस की इच्छा बगैर दूसरे के सुपुर्द करना लेना 'जीव अदत्त' कहा जाता है, क्यों कि उम में उस के जीव की आज्ञा नहीं होती ।

(३) जिस चीज के लिये तीर्थंकर भगवान् ने निषेध किया हो वह नहीं लेना चाहिये, लेने तो तीर्थंकर अदत्त-चोरी कही जाती है । जैसे मुनि के वास्ते भगवान् ने अशुद्ध आहार लेने का निषेध किया है तथा श्रावक के लिये अभक्ष्य वस्तुका निषेध किया है अगर मुनि और श्रावक इन निषिद्ध चीजों को ग्रहण करें तो 'तीर्थंकर अदत्त' लगता है ।

(४) गुरु की आज्ञा मित्राय जो चीज ग्रहण करे उम को 'गुरु अदत्त' कहते हैं ।

उम के मित्राय किसी की कुछ भी चीज रास्ते में गिरी हुई मिले तो उम के मालिक का पता लगा कर उम के हवाले कर दे, यदि मालिक का पता न लगे तो उस को धमाद कर



८, अगर वह चीज ज्यादा सीमती हो और सब धर्म मार्ग में खर्च करने को जी न चले तो जितना जी चले उतना तो अवश्य खर्च करे।

अपनी जमीन में से गन निराला हो तो वह स्वयं स्वयं मकता है, उम में चोरी नहीं लगती।

जिमी दूसरे का मजान सिराये लिया हो और उम में स रूमी खोद घाम करने धन निराले तो उम का हजदार मजान का मालिक होता है उम को वह धन दे देना चाहिये, अगर ऐसा करने में अपना दिल अनाशानी करता हो तो धन में से आधा हिस्सा रुद रखे और आधा धम मार्ग में खर्च करे।

अपने पाम जिमी की खम हो और उमका मालिक गुजर गया हो और उस का कोई पारम भी न हो तो वह रुम रुद न खर कर गाव के पचों के सुपुर्त करे अथवा पच कहे वहा खर्च कर दे।

अपने घर की मिलरुत के मालिक जब तर माता पिता या और कोई बडेरा हो तब तक ब्रतधारी उन सी आना ले कर चीज उठावे, हा, अगर माता पिता अपना पुत्र जान पर कोई पतरान न करें तो वह उनसी आज्ञा के मिराय भी चीज उठा सकता है।

प्रतिज्ञा—

“मैं देवगुरु साक्षिक स्थूल अदत्तादान का त्याग करता

हूँ। आजीवन न स्वयं चोरी करूँगा, न अन्य से कराऊँगा।”

अतिचार—

(१) स्तेनाहृत-चोरी का माल खरीदना यह स्तेनाहृत अतिचार है। चोरी का माल लेने वाला भी एक तरह का चोर ही है। हेमचन्द्राचार्य ने योगशास्त्र में सात प्रकार के चोर बताये हैं देखो—

“चौरश्चौराण्यो मनी, मेढज्जं काणककयी।

अन्नदं स्यानदश्चैत्र, चौरं मसविधं स्मृत ॥१॥”

तात्पर्य—चोरी करने वाला १, चोरी कराने वाला २, चोरी की राय देने वाला ३, चोरी का भेद जाननेवाला ४, चोरी का माल खरीदने वाला ५, चोर के खान पान की व्यवस्था करने वाला ६, तथा चोर को रहने की जगह देनेवाला ७, ये सात प्रकार के चोर होते हैं।

(२) स्तेनप्रयोग—चोरी करने वाले को चोरी की प्रेरणा करना ‘तुम आजकल चुपचाप क्यों बैठे हो?, तुम्हारे पास खर्चा न हो तो मैं दूँ, तुम्हारी लाई हुई चीज मैं बेच डालूँगा’ इस तरह प्रेरणा करना इसका नाम ‘स्तेनप्रयोग’ अतिचार है।

(३) तत्प्रतिरूपक व्यवहार—अच्छी चीज में खराब चीज मिला कर बेचे, जैसे दूध में जल, केशर में कसुना, धी में घेजिटेबल धी मिला कर बेचे। पुराने कपड़े को रंग कर नये कपड़े के भाव में बेचे। यह तीसरा अतिचार है।

(४) विरुद्ध गमन-अपने देश के राजाने जहा जाने को मना किया हो वहा जात्र तो चोया 'विरुद्ध गमन' नाम का अतिचार ।

(५) हटतुला रुटमान-खोटे तोल माप रखने, कमती तोल से देव और अधिक तोल ल लेवे यह पाचनों अतिचार ।

### स्वदारमतोप-परस्त्रीविरमण

स्वरूप—

इस व्रत के दो भाग हैं—'स्वस्त्रीसतोप' और 'परस्त्री विरमण ।' अपनी स्त्री से सतोप कर दूसरी स्त्री का त्याग करना इसका नाम है 'स्वदार मतोप' और दूसरे की स्त्री का त्याग करना उसका नाम 'परस्त्री विरमण' ।

मैथुन दो प्रकार का होता है, १ द्रव्य मैथुन और २ भाव मैथुन ।

द्रव्य मैथुन का अर्थ है स्त्री पुरुष का शारीरिक सम्बन्ध, और भाव मैथुन है शरीर से सम्बन्ध न होते हुए दिल में स्त्री विषयक ध्यान करना अर्थात् दिल में विषयों की चाहना करना ।

भाव मैथुन समारी से कतई बढ़ होना कठिन है परन्तु द्रव्य मैथुन में परस्त्री का त्याग कर अपनी स्त्री से सतृप्त रहना गृहस्थ से हो सकता है । अपनी स्त्री से भी दिन को कभी सम्बन्ध न करना चाहिये, धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वैद्यक दृष्टि से भी दिन में स्त्रीसंग का निषेध है, क्यों

कि वैसा करने से सतान कम जोर होती है और उम की उमर भी थोड़ी होती है ।

प्रतिष्ठा—

“मैं देवगुरु साक्षिक परस्त्री विषयक स्थूल मैथुन का त्याग करता हूँ । अपनी कायासे आजीवन परस्त्री गमन नहीं करूँगा ।”

अतिचार—

(१) अपरिगृहीता गमन—जिस के स्वामी नहीं हैं ऐसी कुमारी विधवा नैश्या आदि से ‘यह दूसरे की स्त्री नहीं है’ इस कल्पना से सम्बन्ध करे तो ‘परस्त्री त्यागी’ से अतिचार लगे और ‘स्वस्त्री-सतोष-प्रतधारी’ का प्रतभग हो ।

(२) इत्तरपरिगृहीता गमन—थोड़े समय के लिये वेश्या आदि को अपनी कर रख ले और अपनी समझ उस से समागम करे तो ‘स्वस्त्री सतोषप्रत’ वाले को अतिचार लगे ।

(३) अनगक्रीडा—काम वासना जगाने की चेष्टा को अनगक्रीडा कहते हैं । चतुर्थप्रतधारी को जिनसे काम बिसर हो ऐसे वचन नहीं घोलने चाहिये और कामोत्तेजक चेष्टा न करनी चाहिये करे तो अतिचार लगे ।

(४) परिवाहकरण—अपने पुत्र पुत्री आदि के मिवाय घडाई के खातिर अथवा पुण्य मार्ग समझ कर दूसरों के मिवाह शादी करावे तो अतिचार लगता है, जहाँ तक बन सके प्रतधारी मिवाह जैसे कार्या में अगुआ न बने, वहीं

अपने बर्गर न चले तो मामागि रूनि समझ कर वह कार्य करे, दिल में हर्ष या गुस्ती न मनावे ।

(५) तीत्र अनुराग-पुरुष का स्त्री पर और स्त्री का पुरुष पर हृदय से ज्यादा प्रेम 'तीत्रानुराग' कहलाता है । प्रतधारी को इस प्रकार के अमर्यादित विषय राग में लीन न होना चाहिये । क्यों कि इस प्रकार का विषयानुराग चौथे प्रत का पाचवाँ अतिचार है । प्रतधारी को विकारों को रोकना चाहिये । ऐसा न करने से इच्छा अत्यन्त बढ़ती जाती है और परिणाम स्वरूप अतिव्रम व्यतिव्रम अतिचार और अनाचार तक हो जाते हैं ।

अति स्त्री प्रसंग से धर्म हानि ही नहीं शरीर हानि भी होती है इस लिये उक्त अतिचार टाल कर श्रावक इस प्रत पर साधित फलम रहे ।

नियम—

ऋष्यपक्षत्री—इन तिथिओं में ब्रह्मचर्य रक्ष्युगा ।

शुक्लपक्षत्री—इन तिथिओं में ब्रह्मचर्य रक्ष्युगा ।

प्रतिमास—दिन ब्रह्मचर्य पाल्युगा ।

अथवा सर्वथा ब्रह्मचर्य पाल्युगा ।

### स्थूल परिग्रहपरिमाण

स्वरूप—

अपनी हकदारी के माल मिल-वृत्त परिमाण कर इच्छा का धूम लेना इसका नाम 'परिग्रहपरिमाण' है ।

यह जीव अनादि काल से परिग्रहमें आमन्त्र है । इसकी इच्छा कभी पूरी नहीं होती, उत्तराध्ययन सूत्र में इच्छा को आकाङ्क्ष की उपमा दी है इसका भी यही कारण है कि जीव की 'इच्छा' का कर्ता अत ही नहीं आता । इस अमर्यादित इच्छा को मर्यादित करने के लिये इसको परिमित करना चाहिये ।

परिग्रह के दो भेद हैं—१ द्रव्यपरिग्रह और २ मायपरिग्रह ।

उन धान्यादि नौ प्रकार के परिग्रह को 'द्रव्यपरिग्रह' कहते हैं और लोभ ममता मूर्च्छा को 'मायपरिग्रह' । द्रव्यपरिग्रह के १ घन २ घान्य ३ क्षेत्र ४ वास्तु ५ रूप्य ६ सुवर्ण ७ कृष्य ८ द्विपद और ९ चतुष्पद ये नव भेद हैं ।

(१) घन—दोआनी, पावली, धेली, रुपया, निर्गहर रोकड़ और हुडी, नोट बिगेरह, अधरा गणिम—(नालियर निर्गहर जो गिनती से बेचा जाय) धरिम—(गुड प्रमुख जो तोल कर बेचा जाय) परिच्छेद्य—(सोना चादी रत्न जराहरात आदि जो परीक्षा से बेचा जाय) मेय—(घी दूध आदि वस्तु जो माप कर बेची जायँ) भेद मे घन ४ प्रकार का है । इसका परिमाण करना इसको 'घन परिमाण' कहते हैं ।

(२) घाग्य—१ चावल, २ गेहूँ, ३ ज्वार, ४ बाजरी, ५ जव, ६ मूग, ७ मोठ, ८ उडद, ९ हूठ, १० बोडा, ११ मटर, १२ तुअर, १३ मिमारी, १४ कोद्रवा, १५ कगणी, १६ चणा, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कुलथ, २० मगूर, २१ तिल, २२ मडवा, २३ कुरी, २४ परटी, २५ मक्की इन में से जिस

धान की नितनी जम्बूत हो उमका वर्षभर के लीये सेर या कलमी में परिमाण कर लेना । व्यापार के लिये अधिक रखना पड़ उमकी जयणा रखना ।

(३) क्षत्र-धान बोने के खेत तथा चांग बर्गीचे इनका परिमाण करना ।

(४) वास्तु-घर हवेली नोहरा तथा दूसान भिन्डींग विंग रह, इनका परिमाण करना । घर के दूसरी खिडकी खोलने तथा दूसान, तरेला, गोदाम, घस्वामी जाति किराये रखनेकी जयणा । मित्र के मरानकी, अपने कुटुम्बी सचर्धी और मित्र के मरानकी, मालिक के मरान की मरम्मत कराने अथवा कमठा करानेकी जयणा ।

(५) रुप्य-नाणे के रूप में चलते हुए मिक्को को छोड़ कर चादी, चादी के गहने आदि, इनका तोल में परिमाण करना ।

(६) मुरण-सिधों को छोड़ कर शेष मोना तथा भूषण-गत सोना इस का परिमाण करना ।

(७) कुप्य-ताया, पीतल, मीमा, लोह आदि धातु के वरतन आदिका नाम कुप्य है । इनकी संख्या कर अथवा मणों या सेरा में तोल कर कुल इतने या इतने मण धातु रखनेका नियम कर लेना । कारण बेश दूसरों के वास्ते परिमाण के उपरान्त वरतन लाने पड़े तो जयणा ।

(८) द्विपद-द्विपद का अर्थ यहां मनुष्य है । अपने आश्रित

दाम दासी आदि रखने हा उन की गिनती कर नियम लेना ।  
नोसर, चारुर, मजदूर आदि रखनेकी जयणा ।

(९) चतुष्पद-गाय भेस घोड़ा ऊट बेल आदि जानवर  
चतुष्पद कहलाते हैं, इन की आवश्यकतानुसार गिनती कर  
नियम लेना । कभी कारण वश किसी अन्य की मवेशी घोड़े  
ममय के लिये रखनी पड़े अथवा आमीनाले घाली हुई मवेशी  
कमी आ जाय तो वेचे वहा तक रखनेकी जयणा ।

मतिज्ञा—

“मै दयगुरु साक्षिक अपरिमित परिग्रह का त्याग करता  
हूँ और जीवन पर्यन्त के लिये धन धान्यादि वस्तु निषयक  
इच्छाओं परिमाण करता हूँ ।”

अतिचार—

(१) धन-धान्यपरिमाणातिक्रम-परिमाण से अधिक धनके  
घट जाने पर लोभ के वश कुछ रूम पुत्र स्त्री आदि के नाम  
पर चढ़ा दे तथा अनान अपने नियम मुजब घर में रख कर  
भाकी दूसरे के घर पर रख छोड़े और जब चाह तब ले आवे,  
इस के सिवाय व्रत लेने के समय में कच्चे मण के हिसाब से  
अनान रखता हो और परदश जाने पर वहा पक्के मण का  
तोल जान कर पक्के मण के हिमाब से रखे, इत्यादि कर-  
तब करने वालों को पहला अतिचार लगता है ।

(२) क्षेत्र-वास्तुपरिमाणातिक्रम-घर, दूकान आदि के  
परिमाण से अधिक हो जाने पर निचली दिवार तोड़ कर दो



का एक घर बना दवे, हृद तोड़ कर दो तीन गैतों का एक गैत कर लेवे और दिलमें ग्याल कर 'नियम के उपरान्त मैं ने कुछ नहीं रक्खा, ऐसी कस्तूत करने वालों को दूसरा अतिचार लगता है ।

(३) रूप्यसुवर्णप्रमाणातिक्रम—अपने लिये या अपनी स्त्री आदि के लिये सोना चादी के जेवर भारी तोल के बनवा कर सग्या कायम रख कर सोना चादी अधिक प्रमाण में रखे तो तीसरा अतिचार लगता है ।

(४) कुप्यपरिमाणातिक्रम—तावा पीतल आदि के बामणों घरतनों की सरया करने के बाद सपत्ति बढ़ जाने पर वे बामण वजन में भारी तोल के बनवावे । मन में मोचे 'मैंने बामणों की जो गिनती की है वह टूटती तो नहीं है, फिर वजन में अधिक होने में क्या हर्ज है' इसी तरह पहले कच्चे तोल के परिमाण में रख कर फिर पक्के तोल के परिमाण से रख लेवे तो चौथा अतिचार लगता है ।

(५) द्विपद—चतुष्पदअतिक्रम—दास दासी गाय भैंस परिमाण से अधिक हो जायें तब बेच कर फिर गर्भ धारण करावे, तथा अपने माद बहना के नाम के कर रख दवे तो पाचवा अतिचार लगता है ।

नियम—

१ रोरुड धनरु	लाख या	हजार
२ कुल धान्य कलमी	अथवा	मण

३ खेतीगारीकी जमीन	एकड़ या	शीघा
४ कुल मरनात		
५ चादी	मण या	सेर या तोला
६ मोना	सेर अथवा	तोला
७ धातु के वर्तन	नग अथवा	मण के
८ ढाम—दामिया कुल		
९ चतुषद—जानवर कुल		

१० सर्व परिग्रह मिल कर रु लाख या हजार

परिग्रह परिमाण त्रत धारियों की चाहिये कि अपने त्रत धन, धान्यादिका जो परिमाण किया हो उसके ऊपर परिग्रह त्रत जाय तो उम को धर्म मार्ग में खर्च कर डालें ।

व्यापार के निमित्त तेजी मदी के समय में मोना, चादी, धातु, धान्य आदि बेच खरीद कर परिग्रह की जाति-योंमें रुमी बेशी करना पडे उस भी जयणा रखना चाहिये परन्तु कुल परिग्रह का अरु नियम के उपर जाते ही उसे धर्म मार्ग में खर्च कर देना चाहिये ।

इस प्रकार पाच अणुव्रतोंका दिग्दर्शन कराया, अणु-व्रतों के आगे तीन गुणव्रत आते हैं जिन क नाम नीचे मुजत है—

१ दिक्परिमाण गुणव्रत २ भोगोपभोगपरिमाण गुणव्रत और ३ अनर्थदृष्टिपरिमण गुणव्रत ।

इन का गुणव्रत नाम पढने का कारण यह है कि इन

त्रता के पालन से पूर्वोक्त पात्र अणुवर्तों की पुष्टि अर्थात् उत्तरोत्तर गुणवृद्धि होती है जैसे निशिपरिमाण प्रत धारण करने से परिमाण व ऊपर की तमाम जिज्ञाओं के जीवों को अभयदान मिलता है और प्राणातिपातनिर्मण प्रत की पुष्टि होती है। बाहर के तमाम जीवों के साथ झूठ बोलना बंद होने से दूसरे प्रत की पुष्टि होती है। बाहर के क्षेत्र में रही हुई वस्तु की चोरी का त्याग होने से तीसरे प्रत की पुष्टि होती है। बाहरी क्षेत्र की सर्वास्त्रियों से मधुन चेष्टा का त्याग होने से चौथे प्रत की पुष्टि होती है और बाहरी सभी चीज वस्तुओं का क्रय विक्रय बंद होने से पाचवें प्रत की पुष्टि होती है।

### दिग्परिमाण प्रत

स्वरूप—

पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण ये चार दिशा और आग्नेयी (अग्नि कोण) नैऋत कोण, वायव्य कोण और ईशान कोण ये चार निदिशा कहलाती हैं। ऊर्ध्व (ऊपर) और अधो दिशा (निचली दिशा) मिलाने से कुल १० दिशाएँ होती हैं। इन दश दिशाओं में जाने आने का नियम करना 'दिग्परिमाण प्रत' है। दिशाओं में जाना आना तीन तरह से होता है जलमार्ग से स्थलमार्ग से और आकाश मार्ग से।

जलमार्गसे नाव, आगबोट, स्टीमर आदिमें, स्थलमार्गसे

गाड़ी, एका, रेलगाड़ी, मोटर, सार्दमल आदि पर और आकाश मार्ग से विमान, हवाई जहाज एरोप्लेन विगैरह पर बैठ कर दशों दिशाओं में जाने आनेका योजनो में, कोशो म, भीलों में, गजो मे अगर कदमो मे नियम करना चाहिये। चार दिदिशाओं का ठीक पतानरहने के कारण आप फल पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊर्ध्व और अधो इन छ दिशाओं का ही नियम किया जाता है।

वृष, रावडी, टाका, भूमिगृह सुरग आदिमें उतरना अथवा पहाडसे नीचे उतरना 'अधो दिशा गमन' है और नीचेवालों को पहाड पर चढना 'ऊर्ध्व दिशागमन'। त्रत लेने वालों को अपनी स्थिति का विचार कर के इम नियम म नियम करना चाहिये। नियम किये हुए क्षेत्र के बाहर सासा-रिक्त कार्य फ लिये अथवा मौज शोक और हवा खोरी के निमित्त नहीं जाना चाहिये, तीर्थयात्रा के निमित्त जाने की जयणा। पवन के तूफान से नात्र आगबोट विगैरह घसीट कर हद के आगे ले जाय, भूल से हद के आगे चला जाय, चौर विगैरह पम्ड कर दूर ले जाय तो त्रत भग नहीं होता। नियत क्षेत्र के बाहर वागज-पत्र तार टेलीफोन मेजने भगाने की जयणा।

प्रतिज्ञा—

“मं देवगुरु साक्षिक्त निशा गमन को नियमित करता हूँ। भिन्न भिन्न दिशाओं में जाने के लिये रखे हुए अन्-

काग के उपरान्त न मैं म्रिय जाऊगा न दूसरे को मेज़गा।”  
अतिचार—

(१) ऊर्ध्वदिशातिक्रम—प्रमाद से या भूलसे ऊर्ध्व दिशा में परिमाण से अधिक ऊपर चढ़े तो ‘ऊर्ध्वदिगतिक्रम’ नामातिचार।

(२) अधोदिगतिक्म—भूल प्रमाद से परिमाण से ज्यादा नीचे जाने से ‘अधोदिगतिक्रम’ नामातिचार।

(३) तिर्यग्दिशातिक्रम—पूर्व पश्चिमादि तिरछी दिशा त्रिदिशा में परिमाण से अधिक भूल से रुद जावे या अपने नौकर को भेजे तो तीमरा अतिचार।

(४) परस्पर परिमाण परावर्तन—एक दिशा में कम कोश रखें हैं और दूसरी में अधिक, कालान्तर में कम परिमाण वाली दिशा में अधिक दूर जाने के संयोग उपस्थित हो जाय तब जिस दिशामें अधिक दूर जानेकी छूट है उस को कम कर दे और कम परिमाण को अधिक बढ़ा दे, और यह सँचे कि मैं अपने नियमित योजना से अधिक आगे नहीं गया। इस प्रकार दिशान्तिपरिणाम करने से चौथा अतिचार लगता है।

(४) स्मृतिअतर्धान—अपने नियम को भूल जावे, न मालूम पूर्व दिशा में १०० कोश रखे हैं या ५०। इस तरह संशय में पड़ा हुआ १०० कोश का परिमाण होते हुए भी ५० कोश से अधिक चला जाय तो पाँचवाँ अतिचार

लगता है।

नियम—

- १ पूर्व में \_\_\_\_\_ योजन जाऊगा।
- २ दक्षिण में \_\_\_\_\_ योजन जाऊगा।
- ३ पश्चिम में \_\_\_\_\_ योजन जाऊगा।
- ४ उत्तर में \_\_\_\_\_ योजन जाऊगा।
- ५ ऊँचा \_\_\_\_\_ योजन चढ़ेगा।
- ६ नीचा \_\_\_\_\_ योजन उतरूँगा।

छोटे बड़े पहाड़ों के ऊपर चढ़ना, टीलो-टेरों वृक्षों मरानों पर चढ़ना भी ऊर्ध्व दिशा गमन में शुमार है। इसी प्रकार ऊपरवालों से नीचे उतरना अधोदिशागमन में।

### भोगोपभोगपरिमाण

स्वरूप—

इस व्रत में खाने पीने की वस्तु का परिमाण होता है, तथा जिन में ज्यादा हिस्सा होती है ऐसे व्यापार धर्मों का त्याग किया जाता है, चाहे अमर्ष और वृत्ति अनन्तर का त्याग किया जाता है। चौदह नियम भी इसी के अंतर्गत हैं।

आहार, फल, पुष्प, तैल अन्न विगैरह जो एक बार काम में आवे उस को 'भोग' और घर मरान कपड़े जेवर स्त्री विगैरह जो बार बार उपयोग में आवे उस को 'उपभोग' कहते हैं, दोनों तरह की वस्तुओं का नियम करना मो 'भोगो

पभोगपरिमाण ' त्रत कहलाता है ।

इस त्रत क अनुसार श्रावण को निदोष जाहार और निर्दोष व्यवहार करना चाहिये । कमसे कम यह २२ अभक्ष्य और ३२ अनवशाय का त्याग तो अवश्य करे ।

### २२ अभक्ष्य

- १ बड का फल
- २ पीपले का फल
- ३ पिलखण ( पाश्च पीपले ) का फल
- ४ कठनर का फल
- ५ उदुनर ( गूलर ) का फल ।

ये पाच फल अभक्ष्य याने खाने लायक नहीं हैं, कारण कि इन में बहुत से सूक्ष्म जीव होते हैं ।

- ६ मदिरा ( दारु )
- ७ माम
- ८ मधु ( शहद )
- ९ मक्खन

ये चार ' महाविगई ' कहलाते हैं । इन में उसी वर्ण के सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते हैं, वे तद्वर्णवाले और अतिसूक्ष्म होने से देखने में नहीं आते, ये महाविगईया चारों अभक्ष्य गिनी जाती हैं ।

१० हिम ( बरफ ) यह असंख्यात अप्काय जीवों का बना हुआ पिंड है, इस के खाने से जल के जीवों की हिंसा

के अतिरिक्त चेतना शक्ति कमजोर होती है, तत्काल शरदी करता है बल की क्षीण करता है इस लिये यह भी अभक्ष्य है।

११ मर्ब प्रकार का जहर (विष)—अफीम निर्गिरह जहरी पदार्थ प्राणघातक होने से अभक्ष्य है। अफीम मोमल भाग गाजा चरम तमाखू निर्गिरह जहरी पदार्थों का सेवन करने वालों की जो दशा होती है उसका वर्णन करने की जरूरत नहीं। इन के खाने पीने की जिन को आदत पड़ जाती है उन की परवशता का क्या वर्णन किया जाय ? भोजन के बगैर वे रह सकते हैं लेकिन इन पदार्थों के बगैर नहीं, उन की शारीरिक और मानसिक प्रकृति भी पराधीन बन जाती है। अभ्यस्त व्ययन की प्राप्ति होने पर ही उन का शरीर और मन किसी भी काम के योग्य हो सकता है, अन्यथा नहीं। इस प्रकार के घुरे परिणामों से बचने के लिये उक्त सभी प्रकार के विषों का त्याग करना चाहिये।

१२ करहा—करह जो आमाश से जल के साथ बर्फ के टुकड़े गिरते हैं जिनको 'ओला' कहते हैं वे भी अभक्ष्य हैं।

१३ कच्ची मिट्टी—सर्व प्रकार की कच्ची मिट्टी अभक्ष्य है। कच्ची मिट्टी सचित्त है इस के खाने से दो तरह के नुकसान होते हैं। एक तो यह कि मिट्टी के मक्षण से पेट में कट्ट एक जटु उत्पन्न होते हैं और पादरोग आम्रान पित्त पथरी आदि अनेक र्द भी सडे होते हैं। दूसरा—व्यय एकेंद्रिय



जीरा की हिमा होती है। इस लिये इस को अभक्ष्य समझना चाहिये।

१४ रात्रिभोजन—रात में खाना भी अभक्ष्य में गिना गया है। दिन का भोजन सात्त्विक है और रात्रिभोजन तामसिक—राक्षसी है। इस लिये यह छोटने लायक है। रामकर व्रतधारी को तो रात्रिभोजन का अनर्थ त्याग करना चाहिये।

१५ बहुबीजफल—जिस में गूदा (गिर) फल और बीज बहुत हों जैसे बेंगण (घुतारु) पपीटा रसखम विगैरह, फलों में जो बीज होते हैं वे सब सजीव होते हैं इस वास्ते इन के भक्षण में अधिक जीरा की हिमा होने से वे 'बहु बीज फल' अभक्ष्य हैं।

१६ स्रगान (अथाणा—अचार) यह अथाणा याने अचार केरी का नींबू का करमदे का आदे का इत्यादि कई किसम का होता है, यह खटाई वाला होने से तीन दिन तक खाने योग्य होता है। जिसमें खटाई न हो वह एक दिन के बाद ही अभक्ष्य हो जाता है, कारण कि उसमें सूक्ष्म प्रस जीव उत्पन्न होने का समझ है। गुजरात में नींबू अमचूर या नींबू मिली मिर्ची के अथाणे को तीन दिन के बाद सूरज के धूप में अच्छी तरह सुखा देते हैं फिर उसको गर्म किये तैल में डाल देते हैं। तैल अचार के ऊपर ऊपर ३-४ उझल तक रहता है। इस हालत में वह अथाणा अभक्ष्य नहीं होता। म-

साला डाल कर योही महीनो और बषों तरु रखा हुआ अचार (अथाणा) अभक्ष्य होने से त्याज्य है ।

१७ द्विदल (मठोल)—जिन धान्यों की दो दाल (फाड़) होती है और उनमें तेल की चिकनाहट न हो उनको द्विदल कहते हैं । मुग चणा चोला उडद बटाना वाल मटर मेथी दाना आदि सब द्विदल है । कच्चे दूध दही या छाम के माध मिलने से द्विदल अभक्ष्य बन जाता है । क्योंकि उनमें तत्काल जीरोत्पत्ति होजाती है । परंतु गम किये हुए दूध दही गिरगरड में द्विदल मिलने से यह अभक्ष्य नहीं होता, इस वास्ते खान पान के समय द्विदल का पूरा रयाल रहना चाहिये । मुग चणे जैसे द्विदल का श्राक खात समय अगर हाथ श्राक में डाला हुआ हो तो धोकर तथा मुह में कुल्ला कर फिर कच्चा दही या छाम खाने का उपयोग रखे । इमक मिराय बेमण गटा पतोल आदि कोई भी द्विदल का श्राक छाम या दही मिलाकर करना हो तो पडले दही छाम को गरम कर ले पीछे उम में द्विदल का चून डाल आदि टालकर श्राक बनावे ताकि उनमें अभक्ष्य का दोष प्राप्त न हो ।

१८ घोलभडा—दहिना घोल कर उसमें डाले गये बडे । घोल को गर्म कर उनमें डाले गये बडे अभक्ष्य नहीं होते ।

१९ तुच्छफल—टीवरु, केरडा के पीचू, पीलु, घोर आदि फल जिममें खाना थोडा और छोडना बहुत ये सब तुच्छ

फल है और ये अभक्ष्य माने जाते हैं प्रतगरी इनका त्याग करे ।

२० अनजाना फल—जिम फल का नाम स्वभाय मालूम न हो वह भी अभक्ष्य है ।

२१ चलित रस—जिम भक्ष्य पदार्थ का वर्ण गन्ध रस स्पर्श बदल गया हो, सड़ने की वजह से जिसमें से खराब बू आती हो, जिममें से तार निकलते हो वह सब 'चलित रस' नामक अभक्ष्य है । रोटी, शकर, सिचड़ी, बडा, नरम पूरी, लापसी, सीरा, मालपुआ त्रिगैरह चार पहर के बाद प्रायः चलित रस हो अभक्ष्य हो जाते हैं । दाल के बडों भजियों में जल का भाग मिला हुआ होने से वे भी दूसरे दिन बामी गिने जाते हैं ।

दही में बना हुआ चायल का करवा तथा छाम में रनी हुई मक्का धाजरा आदि की पहले दिन की घेंस दूसरे दिन काम में आ सकती है । कट लोग दूध में आटा बाधकर पुडिया बनाते हैं परन्तु दूध में जल का भाग अधिक और खटाई का भाग बहुत कम होने से वे पुडिया बासी-चलित रस हो जाती हैं इस लिये रात निकलने के बाद अभक्ष्य है । जो जो चीज घी में या तेल में बनाई जाती हैं वे अमुक काल तक बामी नहीं होती । शीयाले की मौसम में मिठाई का उत्कृष्ट काल एक महीने का, उन्हाले में २० दिन रा और चोमासे में १५ दिन का है । बाद में अभक्ष्य हो जाती है । मिठाई का

यह आखिरी समय है, अगर इस मुदत के भीतर खराब हो जावे तो उसी समय अभक्ष्य समझ कर नहीं खाना चाहिये। समझ कर सब चीजों में भक्ष्य अभक्ष्यपन का खयाल रखकर काम में ले। ठहरा तथा छाम १६ पहर के बाद अभक्ष्य मन-झनी चाहिये।

२२ अनन्तराय—एक शरीर में अनन्त जीव हो वह वनस्पति अनन्तराय कही जाती है। शास्त्र में बत्तीस प्रकार के अनन्तराय अभक्ष्य रहे हैं, जो नीचे मुद्रण हैं—

(१) भूमिरुद (जमीन में जो कद पैदा हों व सय)।

(२) छरण कद

(३) वज्ररुद

(४) लीली हलदी (हरी हल्दी)

(५) आदा लीला (हरा अदरक)

(६) हरिया कचुरा (हरा कचूरा)

(७) बरीयाली की जड (दूसरा नाम बिराली कद)।

(८) शतावरी (शतावर)

(९) कुआर पाठा (धीम्वार)

(१०) धुअर

(११) गिलोय (गुरच)

(१२) लहसुन (लमण)

(१३) करेला वास का

(१४) गाजर

- (१५) लाणा (जिमकी मज्जी धनती है)
- (१६) लोण क
- (१७) गिरिवरणी (गिरामिर) कच्छ देश में प्रसिद्ध है।
- (१८) कोमल पत्र (वनस्पति के नये उगते जवरे अनत-  
काय होते हैं, घटन के बाद वेही प्रत्यक्ष वनस्पति कहलाते हैं)
- (१९) रसरस्यार (कसेरु)
- (२०) यग (जुगार के दाने की तरह का रन्ध्र)
- (२१) हगमोथ (नागर मोथा)
- (२२) लूणी धृष की छाल
- (२३) खिलोडा
- (२४) अमृतवेल (अमरवेल)
- (२५) मूला (मूली)
- (२६) भूमिस्फोट—(जो सफेद छत्र के आकार में चोमामे  
में जमीन में से निरलते हैं)
- (२७) चधुए की भाजी (प्रथम उगती हुई)
- (२८) ररुहार
- (२९) स्रवर वेल
- (३०) पलक की भाजी
- (३१) कोमल इमली—(जहां तरु बीज न पड़े वहां तरु  
अनतकाय)
- (३२) आलु रतालु पिंडालु। इसके मित्राय और भी हैं

यहा पर खाम खाम नाम दिसलाये हे । सन अनतराय  
अभक्ष्य है ।

अनतराय का लक्षण यह है कि पत्ते, फूल, फल आदि  
में नमो का गुप्त होना, साधे गुप्त होना, तोड़ने से बरानर टूट  
जाना, और जड़ से फाटे जाने पर भी अर्से तक हरा रहना  
और रोने पर फिर से लग जाना ये सन अनतराय के  
लक्षण हैं ।

इन अभक्ष्य वस्तुओ में से भाग अफीण आदि जिनके  
खाने की आदत पहले पड़ गई हो और न छूटती हो तो उ-  
सके खाने की छूट रखे । तथा रात्रिभोजन में चउग्रहार  
तिग्रहार अथवा दुग्रहार जो भी बने पञ्चमवाण रखने  
का नियम करे । रोगादिक के कारण अभक्ष्य खानी  
पड़े तो जयणा रखे । इसके सिवाय जननान म किसी  
वस्तु में अभक्ष्य चीज खाने में आ जावे तो उमकी  
जयणा है ।

षोडश नियम—

“मचित्त दन्त्र त्रिगद् बाणहत्तरोल-वत् कुसुमेन्दु ।

बाहण-सयण-प्रिलेखण-रभ दिसि न्हाण भस्तेसु ॥”

१ सचित्त—मजीय पदार्थ सचित्त कहलाता है, अनाज  
जो बोने से उगता है, कच्चा पानी, हरा शकर, फल पान, रुचा  
निमक विगैरह सब सचित्त है । इन सब में शस्त्र प्रयोग होने  
पर ये अचित्त हो जाते हैं । कितनीक चीजें ऐसी भी होती हैं

जो बीज निम्बालने के बाद कच्ची दो घड़ी समय के उपरान्त अचित्त होती है, जैसे पके गुरबूने पके आम (करी) इनमें से बीज निम्बालने पर दो घड़ी के बाद उसका गूदा रम या डुकुड अचित्त बनते हैं। खान पान में मचित्त का त्याग, स-रया या परिमाण किया जाता है।

२ द्रव्य—जितने प्रकार की चीजें मुख में डालने की हों व सत्र अलग अलग द्रव्य गिने जाते हैं, रोटी पूरी दाल चारल मूँदी शाक मिठाई पापड़ आदि, इनमें से जिन चिन द्रव्यों की दिन भर के लिय जरूरत समझे गितनी या वनन फायम कर रखना चाहिये।

३ विगई—कुल विगई १० हैं जिनमें १ मधु (शहद) २ माम ३ मक्खन ४ मदिरा ये चार महाविगई अभक्ष्य हैं। श्रावक को इनका अनश्व त्याग करना चाहिये। भक्ष्य (खाने लायक) विगई ६ हैं—१ दूध, २ दहि, ३ घी, ४ तेल, ५ गुड—खाड़ और ६ कडाह विगई (घी या तेल में बनाई जानेवाली मिठाई विगई)।

हर एर विगई के निप्रियाते के पाच पाच भेद है जिन-का विस्तार सहित वर्णन पञ्चखाणभाष्य में दिया हुआ है, वहा से देख सकते हैं।

७ विगई में से रम से कम एक एक विगई का त्याग सत्ता रखना चाहिये।

विगई का त्याग तीन तरह से होता है—

१ कच्ची का त्याग (२) निवियाती का त्याग (३) मूल से त्याग ।

कच्ची दूर विगई का त्याग किया हो तो खीर, माया (खौरा) विगैरह दूरकी बनी चीज अथवा दूध मिली चीज खाई भी जा सकती है, निवियाती का त्याग करने पर दूध विगई के खीर आदि निवियाते भी नहीं खा सकते और मूल से ही दूर का त्याग करने वाला तो जिसमें दूध का या उसका पदार्थों का थोड़ा भी भाग मिला हो उन चीजों को भी नहीं खा सकता । कच्ची दहि विगई का त्याग करने वाला दहि के बने रायता, मठा आदि का उपयोग कर सकता है परंतु निवियाते दहि का त्यागी उक्त पदार्थ नहीं खा सकता । मूल से दहि का त्यागी दहि जिसमें डाला गया हो ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं खा सकता । कच्चे घी, तैल का त्याग करने वाला जला हुआ घी या तैल खा सकता है । निवियाते का त्यागी नहीं खा सकता और मूल से त्याग करने वाला जिनमें घी तेल पड़े हों ऐसी कुछ भी चीज नहीं खा सकता ।

कच्ची कड़ाह विगई का त्याग हो तो तीन घाण के वाद बनी हुई चीज पूरी भजिया आदि खा सकते हैं । निवियाते का त्याग हो तो तीन घाण के वाद के घाण का भी नहीं खा सकते । शीरा लापसी आदि कड़ाह विगई के निवियाते होने से



वे भी नहीं रखाये जा सकते । भूजे बधारे श्राक आदि कडाह निगड नहीं है ।

४ राणह—(उपानह) जूता, चूट, चपल, खडाउ, मोजा जोड़ी आदि की सरया कर लेव । भूल से पहनने में आ जाय तो उमकी जयणा ।

५ तगोल—पान, सुपारी, इलायची, लॉग आदि मुख रास की चीजा का अंदाज करना (नगटाक पान मेर आदि )

६ वस्त्र—पगड़ी, टोपी, शाफा, अगरखा, कुरता, कमी स, कोट, धोती, पायजामा, दुपट्टा, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपडा जो ओढ़ने पहिनने में आवें उन-की सरया तथा गहन की सरया कर लेना चाहिये । धर्मकार्य में जयणा । भूल से पहना जाय उमकी जयणा ।

७ कुसुम—फूल, गजरा, तुरा, अक्षर, तमारु, आदि सुघने की चीजें हैं उनका परिमाण करना ।

८ वाहन—सवारी का साधन—फिरता, चरता और तिर ता यह तीन प्रकार का है । गाटी, मोटर, साइकल, टाम, रथ, पालखी, रलवे, मिगराम, उडता एरोप्लान आदि फिरता, घोडा, उट, हावी, सच्चर, बैल आदि सवारी के वाहन पशु चरता, और नाव—जागरोट—स्टीमर आदि जल मार्ग के वाहन तिरता वाहन कहलाते हैं । अपने काम के लिये इनकी प्रतिदिन सरया करनी चाहिये ।

९ शयन—सोने बैठने का साधन कुरमी, टेबल, पट्टा,

पलग, चारपाई, (भाचा), कोच, गादी, तक्रिया, चटाई, दरी (सेत्रजी), बिस्तर आदि सी सरया करना ।

१० विलेपन—शरीर में लगाने की चीज तेल, स्नान, चदन, मेट, सुरमा, काजल, उमटना, साबुन, हजामत, घुसल, कथा, काच, मलम पट्टी का लप आदि । इनका बजन कर लेना चाहिये ।

११ ब्रह्मचर्य—परस्त्री का त्याग और स्वदार सतोष रखें । उमका भी रात्रि में परिमाण करें । काया में पालन करें । मन वचन की जयणा ।

१२ दिशि—(१० दिशा) ४ दिशा ४ विदिशा ऊर्ध्व और अधो इन दश दिशाओं में जाने आने का (अमुरु मोरु तरु का) नियम करना । धार्मिक कार्य की जयणा, तार चिट्ठी भेजना माल भेजना भगवाना आदमी भेजना रिगैरह इमी में समझना चाहिये ।

१३ स्नान—दिन में इतनी बार स्नान करना ऐसी धारणा करना । धार्मिक कार्य के लिये जयणा ।

१४ भक्त—( भक्त ) अशन-पान-स्नादिम-स्वादिम इन चार प्रकार के आहारों में से, जितना खाने पीने में आवे उतने का सेरा में परिमाण रखना चाहिये ।

इन १४ नियम क उपरात ६ काय और ३ कर्म की म रीति भी करनी चाहिये ।

॥ पीपनिशाय—

शुशिराशाय मिट्टी, निमरु आदि (खाने में या उपभोग में आये) उमरा पायसेर, आमरेर, सेर मण आदि वजन कायम करना।

२ अपसाय—जो पानी पीने में या दूसरे उपयोग में आवे उससे मग दोमण या चाहिये उतना नियत करना।

३ तेउकाय—चूल्हा, जमीठी, मट्टी, मइमस, दीवा विगै रह में तेउकाय का आरम्भ होता है इस वास्ते इन की सख्या नियत करना, एक दो या तीन घर क चूल्हे रखे, हलवाई क चूल्हे की छट रक्खी हा तो बड़ा री मिठाई खा सक अन्यथा नहीं।

४ नायुकाय—हिडोले और परे (अपने हाथमें या दुरुम से) जितने चलते हो उनकी सख्या नियत करना, रुमाल से या कागज से हना लेना यह भी परे में शामिल है उसकी जयगा।

५ वनस्पतिकाय हरा शर, फलादि इतनी जातके खाने, घर समधी मगाव उसकी गिनती तथा दो सेर तीन मेर का वजन करना।

६ तमकाय—चलत फिरते तमाम तस जीवों को मारने की तुद्धि में मारु नहीं ऐसा नियम करना हर एक प्रवृत्ति में उपयोग रखना कारण 'उपयोगे धर्म' है।

तीन कर्म—

अभि कर्म—तलवार, बंदूर, तमचा, चारू, तुगी, कैंची,

छूटी, सुई आदि जो उपयोग में आवे उसकी सूरया करना ।

२ मसिकर्म—लिखने के उपयोगी साधन स्याही, कलम, होल्डर, पन्मील, टचात आदि की सूरया रखना ।

३ कसिर्म—खेती के उपयोगी हल, कुटाला, हलराणी, फायड़ा, ( पारड़ा ) आदि की सूरया करना ।

पद्रह कमादान—

१ इगालर्म—कोयले बनाकर बेचना इट बनाकर बेचना लुहार का सुनार का कलाल का हलवाई का धधा जो अग्नि आरम्भ से होता है इसमें आरम्भ ज्यादा है इस लिये जहा तक हो सक यह कर्म श्रावक न करे । लकड़ी के कोलमे घना कर बेचने का तो अवश्य ही त्याग करे । सुखी लकड़ी फटाने की जपणा ।

२ वनकर्म—लीले लकड़े कटाना, फल, फूल, कदमूल हरि वनस्पति निर्गैरह बेचना इत्यादि काम श्रावक को न करना चाहिये, जंगल कटाने का तो अवश्य ही त्याग करे । सुखी लकड़ी फटाने की जपणा ।

३ साडीकर्म—गाड़ी रथ नाव हल चरखा धूमरा चम्की मूमल निर्गैरह बनाकर बेचना यह 'साडी कर्म' श्रावक को छोड़ने लायक है ।

४ भाडीकर्म—उट बेल खचर घोड़ा गाड़ा आदि सिराये देकर गुजरान करना यह भाडीकर्म कहलाता है ।

फोडीकर्म—आजीविका के लिये रूआ तालाव खुदावे, हल

चलाय, रान, गुनावे, सुरग गुदावे यह 'फोडीम' है ।  
 ६ दतगणिज्य—(दातका व्यापार)—हाथी का दात, विंगरह  
 वचने का व्यापार 'दतगणिज्य' है । इसका ठेका लेना अत्यंत  
 आरम्भ-हिमा का कारण है । श्रावक ऐसा व्यापार न करे ।  
 दात की रनी बनाई चीजें ले कर तग हालत में व्यापार कर  
 उमकी जयणा है ।

७ लाखगणिज्य (लाख आदिका व्यापार)—लाख, मा-  
 जीखारा, मानुन, सुहागा, मनसील, हस्ताल विंगरह का व्या-  
 पार न कर । खास कर लाखका व्यापार अवश्य वर्जनीय है ।

८ रसगणिज्य—मदिरा माम तथा घी तैल गुड खाड  
 आदि में चोमासे के दिनो में मकसी मकोडा कीड़ी विंगरह  
 जीवों की बहुत हिसा होती है इस लिये रसव्यापार न करे ।  
 खास कर मय मास का व्यापार श्रावक को वर्जित है ।

९ केशगणिज्य—घेटा बररा की ऊन, जाट, पक्षियों के  
 रोम, चवरी गाय के बाल विंगर का बेचना 'केशगणिज्य'  
 है जो न करना चाहिये ।

१० त्रिपगणिज्य—सखिया, वछनाग, अफीम आदि जह-  
 रिली चीजों का व्यापार न करना ।

११ यत्रपीलनकर्म—घाणी कोल्हू विंगरह चला कर तैल  
 रस विंगरह निगलने का काम न करना ।

१२ निलाछनकर्म—बल, उट विंगरह के नारु फडवाना  
 वछडों को बधिया (खमी-सोई ममार) करवाना या इन को

जलाना, कोटवाल की नोकरी, जेलखाने की नोकरी विगैरह निर्दयपनेका काम करना यह सब निर्लालनकर्म के शामिल है।

१३ दावाग्निर्कर्म—जंगल में आग लगा कर जलाना यह दावाग्निदान कर्म है।

१४ शोषणकर्म—तालाब, बघा, बाग आदि के जलको नहर द्वारा निकाला कर खेत पिलाना, इस से जल खाली हो जाता है और लाखों जीव जल बिना तड़फ कर मरते हैं इस लिये यह 'जलशोषणकर्म' पाप का कारण है।

१५ अमतीपोषण—कुलटा—व्यभिचारिणी स्त्री का पोषण कर उससे धन पैदा करना या उम आश्रयसे उम का पालन करना, कुत्ता बिल्ली आदि शिकारी जानवरों का पालन करना यह सब 'अमतीपोषण' कहा जाता है।

यह १५ कर्मदान है, याने ज्यादा पापबन्ध के कारण है, प्रतधारी इन व्यापारों में न पड़े।

प्रतिष्ठा—

“मैं देवगुरु साक्षिक उपभोग—परिभोग व्रत ग्रहण करता हूँ। आजीवन अनन्तकाल बहुबीजादि भोजन और कर्मदानादि व्यापार का यथाशक्ति त्याग करता हूँ।”

अतिचार—

(१) मचित्त जाहार—मचित्त का त्याग कर बगैर उपयोग के मचित्त को अचित्त समझ कर खावे पीवे, जल पंग गंदा न हुआ हो और उम को पीव नो यह पहला

(२) मचित्तप्रतिग्रहाहार-जिम के सचित्त का नियम है वह मूल (धानलिये) पर लगा हुआ गोद अथवा डमी प्रकार सचित्त के माथ लगे हुए अचित्त पदार्थ उखाड़ कर एक मुहूर्त समय होने के पहल खावे तो यह दूसरा अतिचार लगता है ।

(३) अपक्वौषधिभक्षण-मचित्त का खायी फली पुखड़ा भाजी विगैरह उबे खावे तो यह तीसरा अतिचार लगता है ।

४ दु पक्वौषधिभक्षण-गेहू के होले मर्राड के मकिये चनों क सरपटिये विगैरह अथ पके खावे तो चौथा अतिचार लगता है ।

(५) तुच्छौषधि भक्षण-जिस में खाना थोडा और फें कना ज्यादाह ऐसी बेर, सहजने की फली, विगैरह तुच्छ चीज का खाना यह तुच्छ औषधि भक्षण है । नियम-व्रत वाला खावे तो पाचवों अतिचार लगता है ।

नियम—

१ बादस अभक्ष्यों में से न ————— को छोड़ शेष अभक्ष्य भक्षण का त्याग ।

२ धत्तीस अनन्तक्रायों में से न. ————— को छोड़ शेष अनन्तक्राय भक्षण का त्याग ।

३ पदरह कर्मादानों में से न ————— को छोड़ शेष कर्मादान करनेका त्याग ।

४ महीने में ————— बार रात्रिभोजनही छूट कृष्णपक्ष

की और शुद्ध पत्र की

इन तिथिया में रात्रिमोजन का मर्यादा त्याग ।

आगे दी हुई सूचीमें रक्खी हुई वनस्पतियों को छोड़ शेष हरि वनस्पति भक्षणका त्याग । रोगादि कारण अथवा अनजानपन में कभी छोटी हुई चीज खाने में आ जाय उम की जयणा । गद्य उपभोग में लेने की जयणा ।

हरि वनस्पति (लीलोतरी) की टीप—

अजमापत्र	खरबूजा	तुलसी	बेरी (पचाग)
अटवीपत्र	गलरा	दूधिया	भाड़ी
अदरक	गयारफली	द्राग	मरिया
अननस	गिलोय	गनिया	मतिरा
अनार	गुलान	नारंगी	मिरची
अनीर	गुना (छोटा)	नारंग	मिरच
आम (कैरी)	गुदा (बड़ा)	नीम	मूला (भानी)
आलू	गूलर	नीम (मीठा)	मेथी (पचाग)
आमला	गोयली	नीमू	मोगरी
इमली	घींग्रा	पपनस	मोगरी (गु-
इत्र (शेलडी)	चक्री	पपीता	जगती)
उर्ला	चणा (पचाग)	(पोपिया)	रजगा
रकटी	चपलेगी	पराल	रामफल
कणनरा	चीकू	पजण	रापडोडी



मरला	चीभडा	पान	रायण
मरला (घडा)	चीभडिया	पीलु	रटाणा
मरमदा	चील (मार्जी)	पोरु	वरियाली
कफोडा	जरीगी	पोस्तडोडा	वालोल
फालिंगा	जामफल	फणस	सफरनन
हुमटिया	जामून	पुदीना	मरमन (भाजा)
कर	टमेटा	बधुआ	सतरा
केला	टावरु	घदाम	मागरी
कैय	तडबूज	चावल	सींघोडा
कोबी (पत्ता)	तदुलिया	बीजोरा	सोआभाजी
कोरी (फल)	तींडमी	बेर (बडे)	
कोइला	तुरई	बेर (पेमजी)	

ऊपर की धनस्पतियों में से जिन जिन का त्याग करना हो उन के नामके पहले ० इस प्रकार शून्य लगा देना चाहिये ।

### अनर्थदण्डविरमण

स्वरूप—

बिना मतलब अपराध लेना उसका नाम 'अनर्थदण्ड' है, वह ४ प्रकारका है—१ अपध्यान, २ पापोपदेश, ३ हिंस्रप्रदान, और ४ प्रमादाचरित ।

१ अपध्यान—अपने सुख में विनडालने वाले संयोग प्राप्त न हो इसके लिये फिर करना अथवा इष्टमस्तु—क्षी

पुत्र धन निगैरह का नियोग न हों ऐसी चिन्ता करना इस को 'अपध्यान' अनर्थदण्ड कहते हैं।

२ पापोपदेश—पाप का उपदेश करे, जैसे खेती वाले को कहे 'तुम हल क्यों नहीं जोतते ? हलगाई की भठी ठडी पडी ठरख कर कह—' आज भठी क्यों नहीं जलाते ? इस प्रकार बिना प्रयोजन पाप की गण देना इस को 'पापोपदेश' अनर्थदण्ड कहते हैं।

३ हिंस्रप्रदान—कुदाला, डलगाणी, कुल्हाडी, गदूक निगैरह हिंसा के उपकरण किसी को मागे बर्गर मागे दे उमका नाम 'हिंस्रप्रदान' है।

४ प्रमादाचरित—बिना मतलब कामशान्ध सीखना, जुगार म पटना, ठरखतों में हिचोला बागर हीचना, कुत्ते गिल्ली घेरे मेंसे निगैरह को आपस में लडाना चार प्रकार की निरुधा करना, मंदिर में हासी ठठे करना इत्यादि मय 'प्रमादाचरित' अनर्थदण्ड कहा जाता है, इन चारोंका त्याग करे।

प्रतिज्ञा—

“मं देवगुरु साक्षिक हिंस्रप्रदानादि चतुर्विध अनर्थदण्ड का जीवनपर्यन्त क लिय यथाशक्ति त्याग करता हूँ।”

भक्तिचार—

(१) कटर्पचेष्टा—हाथ पार, आंग आदि की चेष्टा से

किमी को हमावे या किसी को क्रोध उत्पन्न करावे यह पहला अतिचार ।

(२) असमर्थ वचन-चाहियात वचन निभाले, दूसरों के मर्म खोले, घेर बढ़ाने वाले चुगलीगोर वचन निकाल कर फिजूल रफाट कर यह दूसरा अतिचार ।

(३) भोगोपभोगातिरक-अपने शरीर के लिये जितने की जरूरत हो उससे अधिक पदार्थ उपयोग में ले यह तीसरा अतिचार ।

(४) कौटुच्य वा मर्म कथन-जिसक बोलने से दूसरा क दिल में काम या क्रोध या जोश उत्पन्न हो या प्रियोग की वार्तायुक्त वधा तथा शृंगार से भरी हुई कविता सुनाकर काम भाव जागृत करना यह चौथा अतिचार ।

(५) सयुक्ताधिकरण-उखल के साथ मुसल रखना, घ घुप के साथ तीर रखना इत्यादि हिमा के उपकरणों को तग्यार कर रखना यह पाचवा अतिचार है, कारण कि शस्त्र हाजर रखने से हर कोई हमरा गेर उपयोग कर सकता है उस आरम का भागी शस्त्र रखने वाला थायस बनता है, वास्ते पापोपरणों को जोड़ कर न रखने ।

### सामायिकव्रत

स्वरूप—

रागद्वेपादि विषमताओं को दूर हटा कर दो घड़ी (४८ मिनट) तक समभाव में रहना इसको सामायिक कहते हैं ।

मामायिक का अथ आयस्यक सूत्र में इस मुजब किया है—

“समाना-ज्ञानदर्शनचारित्राणा आय-समाय ममाय एव मामायिकम् ।”

अर्थात्—सम याने ज्ञान दर्शन और चाग्रि इनका जो ‘आय’ अर्थात् लाभ उमका नाम ‘ममाय’ समाय ही मामायिक है ।

भनुयोगहारटोका में भी कहा है—

“सामायिक गुणाना-माधार त्वमिव सर्व भाषानाम् ।  
नहि सामायिकहीना-ध्वरणादिगुणान्विता येन ॥१॥”

तात्पर्य—सामायिक समाम गुणा का आधार है जैसा कि सर्व पदार्थों का आधार आकाश, सामायिक रहित मनुष्य चारित्रादि गुण युक्त नहीं होते ।

यह सामायिक त्रत ३२ दोष रहित होना चाहिये । ३२ दोष नीचे लिखे मुजब है—

मन के १० दोष—१ अगिबेन, २ यश की इच्छा, ३ लाभ की इच्छा, ४ अहकार, ५, भय, ६ नियाणा बाधना, ७ फल में सगुय लाना, ८ क्रोध करना, ९ अगिनय, १० भक्ति-शून्यता ।

वचन के १० दोष—१ बुवचन बोले, २ अविचारा बोले, ३ प्रतिधातवचन (अगले के दिल में प्रहार करे ऐसा वचन), ४ चडचड बोलना, ५ प्रशमा वचन बोले, ६ कलह करे, ७

मिथ्या करे, ८ हांसी कर, ९ गरम वाक्य निरुद्धे, १० मिमी को 'जाओ' 'जाओ' कह ।

काया क १२ दोर-१ जालम (प्रमाद) रखना, २ नोंद लेना, ३ घुटने ओंवे करना, ४ अस्थिर आसन, ५ नजर फिराना, ६ अन्य कार्य में प्रवर्तन, ७ भीत का महाग लना, ८ शरीर के अवयव छिपाना, ९ मेल उतारना, १० खान पानना, ११ रुटक पाडना और १२ लगे पान करना ।

ऊपर रह ३२ दोनों से गहित कम से कम एक मामायिक थायक हमेशा करे । शुद्ध सामायिक से ही आत्मा में गुण प्रकट होता है, पूर्व काल में केशरीचोर ने मन उचन और काया की एकाग्रता से शुद्ध मामायिक करने से केवल ज्ञान प्राप्त किया था यह बात शास्त्र में प्रसिद्ध है ।

शुद्ध सामायिक का फल उपदशसप्तति ग्रंथ में यों बताया है—

“याणवइ कोट्ठीओ, लम्बा गुणसट्ठि सहस पणधीस ।  
नधसय पणर्जासाण, सतिहा अट्ठभाग पलियस्स ॥१॥”

अर्थात्—९२ कोट ५९ लाख २५ हजार ९२५ नौ सौ पचीस पल्योपम के ऊपर १ पल्योपम के ८ भाग में से ३ भाग अधिक, इतने पल्योपम का स्वर्ग गति का आयु प्राप्ता है ।  
प्रतिज्ञा—

“मैं दशगुरु साक्षिक सामायिक त्रत स्वीकार करता हू ।  
आजीवन धारणा मुजब यथाशक्ति सामायिक करूंगा ।”

अतिचार—

- (१) काय दुष्प्रणिधान—शरीर को या उमक किमी अंग को बिना पूजे इतर उतर हिलाना ।
- (२) मनोदुष्प्रणिधान—दिल में खराब विचार करना ।
- (३) वचन दुष्प्रणिधान—आरभ के वचन बोलना या सामायिक सूत्र ज्यादा समती बोलना ।
- (४) अनवस्था—सामायिक का वक्त पग न करना, अधरा करके शांति न रखना ।
- (५) स्मृतिविहीन—सामायिक सूत्र पाठ बोलना या नहीं अथवा सामायिक का माल पूरा हुआ या नहीं इस प्रकार स्मृति विहीन होकर शरार्शील बनना ।

नियम—

प्रतिदिन—सामायिक करूंगा ।

अथवा महीने में—और वर्ष में—सामायिक करूंगा ।

देशावकाशिक व्रत—

स्वरूप—

पहले के व्रतों में जो नियम किया है उनमें सक्षेप करना अथवा छूटे व्रत में जाने आने का परिमाण किया है उसको उस दिन के लिये कम करके दो पाच कोश रखना, अथवा 'आन गाव के दरगाने तक जाऊंगा, आगे नहीं' ऐसी धारणा करना उसको देशावकाशिक कहते हैं । यह देशावकाशिक १

दिन का १० सामायिक का और १ सामायिक का भी होता है, जैसा समय हो जैसा करे।

प्रतिष्ठा—

“मैं दशगुरु मासिक देशायनाशिक व्रत स्वीकार करता हूँ। आजीवन धारणा मुझ पर यथाशक्ति देशायनाशिक व्रत करूँगा।

अतिचार—

(१) आनयन प्रयोग—अपनी धारी हुई भूमि से बाहर की किसी चीज की जरूरत पड़ने पर मन में खयाल करे कि मेरे तो बाहर जाने का नियम है, चीज मगाना तो क्या हर्ज है एसी रूपना से नियत भूमि से बाहर से कोई चीज मगवाना तो पहला अतिचार।

(२) प्रेषण प्रयोग—अपनी नियमित (मुझरे की हुई) भूमि से कुछ चीज बाहर भेजने तो दूसरा अतिचार।

(३) शब्दानुपाती—अपनी नियमित भूमि ॥ बाहर कोई जाता हो उसको शब्द द्वारा अपना सुन्वार कर जुलावे और अपने लिये कोई चीज मगाने का हुक्म करे तो तीसरा अतिचार।

(४) रूपानुपाती—नियम की भूमि से बाहर जाते किसी को देखकर हवेली निर्गह ऊँचे स्थान पर चढ़ कर अपना रूप बतावे, इस इरादे से कि वह मनुष्य अपने पाम आ जाय,





३ उचन या दृष्टि का दोष जिनमें न टले उसको दशव्रत चय पौषध कहते हैं और सत्रथा ब्रह्मचर्य रखना उसको सर्व ब्रह्मचय पौषध कहते हैं ।

४ मर्त्या व्यापार का त्याग करना यह सर्वव्यापार पौषध और एकाद व्यापार खुला रह यह देश अव्यापार पौषध है ।

प्रतिज्ञा

“मैं दशगुह्यमात्रिक पौषधोपनाम व्रत स्वीकार करता हू ।  
धारणा मुजन यथाशक्ति पौषधोपनाम करूंगा ।”

अतिचार—

(१) अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहिय—सिञ्जासथारक—जिम पर शयन कर उम पधारी की पडिलेहणा न करे तो पहला अतिचार ।

(२) अपमज्जियसथारक—सधारा बराबर न पूजे जीवज यणा न रखे तो दूसरा अतिचार ।

(३) अप्पडिलेहिय सडिलभूमि—लघुनीति या बड़ी नीति की जगह बराबर दृष्टि से न देखे जीवरक्षा न कर तो तीसरा अतिचार ।

(४) अपमज्जियपासवणपत्त—लघुनीति का कुडा या पाला ठीक न पूजे तो चौथा अतिचार ।

(५) पोसहनिहिमिरीय—पोषध में भूख लगने पर खाने की चिन्ता करे याने पोसह पारने के बाद अम्ल चीज तयार

कर खाऊगा, स्नान करूगा, तैल लगाऊगा ऐसी कल्पना करे, तथा पौषध में निरुधा करे और टोप न टाले तो पाचमा अतिचार लगता है ।

नियम—

प्रतिवर्ष आठ पहर के—पोसह करूगा ।

प्रति वर्ष चार पहर के—पोमह करूगा ।

अतिथि सविभागव्रत—

स्वरूप—

पौषधोपवासव्रत के पाचणे साधु मुनिराज को दान द रर पीछे खाना उसका नाम 'अतिथि सविभाग' व्रत है । पहले दिन जहां तक बन सके उपवास पूर्ण ८ पहर का पौषध करे, दूसरे दिन पारणा में एकासना कर मुनिराज को बहरावे और जितनी चीजें मुनि लेवे उतनी ही आप खावे यह अतिथिसविभाग का तात्पर्य हुआ ।

दान देते वक्त दाता में ५ गुण होने चाहिये—१ हर्षाश्रु-इष्ट मनुष्य के मिलने पर जैसा हर्ष होता है वैसा हर्ष दान देते वक्त श्रावक को होवे, हर्ष के आसु आर्य । २ रोमाच-दान देते वक्त शरीर के रोम खड़े हो जायें । ३ बहुमान-मुनि को देख कर उनका बहुमान करे । (४) प्रियवचन-दान देता हुआ मधुर और विनय युक्त वचन बोले और ५ अनुमोदना-दान की बार बार प्रशंसा करे । 'फिर बन ऐसा दान दूंगा' ऐसी भावना

प्रतिभा—

“मै दय गुरु माभिर अतिथि सविभाग व्रत स्वीकार करता हू। वारणा मुनय यथाशक्ति अतिथि सविभाग करूगा।”

अतिचार—

(१) मचित्तनिक्षेप—आहार पर सचित्त उन्मुत्त रख छोड़े, मन में मौचे ‘यह आहार मुनि लेवेगे नहीं लेकिन् निमज्जन से मेरा व्रत पल जायगा, यह पहला अतिचार। (२) मचित्त पीहण—न ठने की उद्धि से आहार को मचित्त वस्तु से दारु द यह दूसरा अतिचार। (३) मालातिक्रम—गोचरी का समय टाल कर मुनि को आहार के लिये निमज्जना करे यह तीसरा अतिचार। (४) पर व्यपदशमत्तर—दूसरा कोई निमित्त नि काल कर आहार जल्दी न तबे अथवा दूसरे की ईर्ष्या से दान देवे यह चौथा अतिचार (५) परउन्मुत्तयन—दान के वक्त अपनी वस्तु होने पर भी यह चीन दूसरे की है ऐसा कहकर न दवे यह पांचवा अतिचार है।

नियम—

प्रतिवर्ष—अतिथि सविभाग करूगा।

इस तरह आश्वों के सम्यक्त्वमूल बारह व्रतों का मभित्त वर्णन ऊपर मुजब है। हममें लिया हुआ व्रतों का स्वरूप समझ कर उस मुजब चलने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। प्रत्येक

प्रतक अतिचारे को ममय कर उनका त्याग करना चाहिये और धारण मिये हुए नियमों को पालना चाहिये ।

आशा है, इसे पढ़ कर श्रावगग अपना कतन्य धर्म म-  
मझेंगे और उसे अगीकार कर अपने मनुष्यजन्म की भफलता  
करेंगे ।

### ४ तपस्या विधि—

वीशधानक तप विधि—

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहताण । नम पद की नोकर वाली २०,  
खमाममण साधिया काउस्मग लोगस्म १२ ।

२ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण । नो० २०, ख० मा० का०  
लो० ८ ।

३ ॐ ह्रीं नमो पवयणस्म । नो० २०, ख० सा० का०  
लो० ४५ ।

४ ॐ ह्रीं नमो आयरियाण । नो० २०, ख० सा०  
का० लो० ३६ ।

५ ॐ ह्रीं नमो थेराण । नो० २०, ख० सा० का०  
लो० १० ।

६ ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण । नो० २०, ख० सा०  
मा० लो० २५ ।

७ ॐ ह्रीं सव्वसाहण । नो० २०, ख० मा०  
का० लो०

८ ॐ ह्रीं नमो ज्ञानस्म । नो० २०, ख० मा०  
लो० ५१ ।

९ ॐ ह्रीं नमो दसणस्म । नो० २०, ख० मा०  
लो० ६७ ।

१० ॐ ह्रीं नमो विनयसपञ्चाण । नो० २०, ख० सा०  
ला० १० ।

११ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्म । नो० २०, ख० सा०  
लो० ७० ।

१२ ॐ ह्रीं नमो धमनयधारीण । नो० २०, ख० सा०  
लो० ९ ।

१३ ॐ ह्रीं नमो मिरियाण । नो० २०, ख० मा०  
लो० २५ ।

१४ ॐ ह्रीं नमो वरस्मीण । नो० २०, ख० सा० लो०  
५० ।

१५ ॐ ह्रीं नमो गोयमस्त । नो० २०, ख० मा० लो०  
२८ ।

१६ ॐ ह्रीं नमो जिणाण । नो० २०, ख० मा० लो०  
१० ।

१७ ॐ ह्रीं नमो चरणम्म । नो० २०, ख० सा० लो०  
१७ ।

१८ ॐ ह्रीं नमो अपुव्वनाणस्म । नो २०, ख० सा०  
लो० ८ ।

१९ ॐ ह्रीं नमो सुपनाणस्त । नो० २०, ख० सा०  
का० लो० ४५ ।

२० ॐ ह्रीं नमो तित्थस्म । नो० २०, ख० सा०  
का० लो० ५ ।

यह तप वैशाख-आषाढ-भागमिर-फागुण इन चार मही  
नों में ग्रहण करना चाहिये, हर एक ओली दो महीने में और  
ज्यादा से ज्यादा ६ महीने में मपूर्ण करनी चाहिये, जिससे  
१० वर्ष में यह बीज धानरूप तप समाप्त हो जावे ।

अष्टकर्म ओली विधि

( कम सुदन तप )

१ ज्ञानावरणीय-उपनाम । खमासमण, काउस्मग्ग लोग  
स्म ५, 'ॐ ह्रीं अनतज्ञानगुणेभ्यो नम ' इमकी २० नोकर-  
वाली गिने ।

२ दर्शनावरणीय—एकसणा । खमासमण, काउस्मग्ग  
लोगस्म ९, 'ॐ ह्रीं अनतदर्शनगुणेभ्यो नम ' नोकरवाली २० ।

३ वेदनीय—एफलसिथु ( एक दाया खाता ) । खमास-  
मण, काउस्मग्ग लोगस्म २, 'ॐ ह्रीं अव्यावाधगुणेभ्यो नमः'  
नोकरवाली २० ।

४ मोहनीय—एफलठाणु ( एकही माथ आहार और जल  
लेना ) । खमासमण, काउमग्ग लोगस्म २८, 'ॐ ह्रीं यथा  
रयातगुणेभ्यो नम ' नोकरवाली २० ।

५ आयु—एकदत्ति (एक धार दिया हुआ खाना) । खमासमण काउमग्ग लोगस्स ४, 'ॐ ह्रीं अक्षयनिधिगुणेभ्यो नमः' नोकरवाली २० ।

६ नामरुम—निरी । खमाममण काउमग्ग लोगस्स १०३, 'ॐ ह्रीं अरुपिगुणेभ्यो नमः' नोकरवाली २० ।

७ गोत्रकम—आयगिल । खमासमण काउमग्ग लोगस्स २, 'ॐ ह्रीं अगुरलघुगुणेभ्यो नमः' नोकरवाली २० ।

८ अतराय—अष्ट करल (सिर्फ आठ करले खाने) । खमाममण, काउसग्ग लोगस्स ५, 'ॐ ह्रीं अनतर्कीर्यगुणेभ्यो नमः' नोकरवाली २० ।

इसके उजमणे में चार्दी का घृक्ष और सोने का कुठार (कुहाडा) भगवान् के आगे चढ़ावे तथा पुस्तक पूजा कर मुनि-राज को दान देवे ।

### रोहिणी तप विधि

सत्तार्द्धम नक्षत्रों में चौथा नक्षत्र रोहिणी है । यह नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन उपवास कर वासुपूज्य स्वामी की पूजा करे, तीनों वक्त प्रभात मध्यान्ह और संध्या समय देव वंदन करे, दोनों टक प्रतिप्रमण करे, 'ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनाय नमः' इस प्रकार वासुपूज्य स्वामी के नाम २० नोकरवाली गिने । इस रीति से ७ वर्ष और ७ महीने तक

यह तप किया जाता है। अतः में उज्जमणे के समय अशोक वृक्ष युक्त श्रीगामुपूज्य स्वामी की प्रतिमा बना कर प्रतिष्ठापूर्वक मंदिर में स्थापन करावे, उसके आगे नैवेद्य १०८ लट्ठ चढ़ावे।

## वर्धमान ओली की विधि

(वर्धमान आयविल तप)

प्रथम १ आयविल कर ऊपर १ उपग्राम, पीछे २ आयविल ऊपर १ उपग्राम, फिर ३ आयविल ऊपर एक उपग्राम, इस क्रम से बढ़ते बढ़ते १०० आयविल ऊपर १ उपग्राम करने पर कुल तपस्या का हिसाब १०० उपग्राम और पाच हजार पचास आयविल होते हैं। पहली ५ ओलियाँ एक साथ की जाती हैं। इस तप की समाप्ति १४ वर्ष ३ महीने और २० दिनों में होती है। इस तप में 'ॐ ह्रीं नमो निगण। इस पद की २० नोस्त्राली गिने। साथिया, काउस्मग्ग लोगस्म १० कर।

## लघुपचमी तप

पौष और चैत्रमास छोड़ कर अन्य किसी एक महीने में लघु पचमी तप ग्रहण किया जाता है और शुद्ध तथा वाटि पचमी के दिन उपग्राम करते १ वर्ष में २४ पचमियाँ होती हैं, इनके ऊपर १ पचमी करने पर २५ पचमियों का यह तप संपूर्ण होता है। अतः में उज्जमणा ज्ञानपचमी के मृताब्धि करें।



### ज्ञानपचमी तप

वातिक शुद्धि पचमी से यह तप शुरू किया जाता है । हर एक महीने की शुद्धि पचमी को उपवास करते पाच वर्ष और पाच मास में ६५ उपवास होते हैं और इस तप की समाप्ति होती है ।

इस तप में 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्म' इस पद की २० माला गिने तथा साधिया काउमग्ग लोगस्म ५१ का करे । तप संपूर्ण होने पर इसके उपमण में नान दर्शन और चारित्र के सर्व ५-५ उपकरण लावे और पेंतालीस आगमनी पूजा पढ़ावे । साथ में यथा शक्ति साहमीबच्छल भी करे ।

### पेंतालीस आगम का तप

यह तप ४५ दिन का होता है । हमेशा एकाग्रता किया जाता है । तप संपूर्ण होने पर उजमणा बग्योडा तथा पूजाप्रभावनात्रिक करें और नदीघ्न तथा भगवती घ्न का रुपये और सोना महोर से पूजन करे । दूसरे घनों का पूजन चासखेप तथा पैसे से करे । इसकी विधि नीचे मुख्य है—

१ श्रीनदीघ्नप्रायनम । नोकरगाली २०, खमासमण साधिया काउस्मग्ग लोगस्म ५१ ।

२ श्रीअनुयोगद्वारघ्नप्राय नम । नोकरगाली २०, समासमण, साधिया, काउमग्ग लोगस्म ६२ ।

३ श्रीदर्शनगालिघ्नप्राय नम । नोकरगाली २०, खमासमण, साधिया, काउमग्ग लोगस्म १४ ।

४ श्रीउत्तराध्ययनसूत्राय नमः । नोकरमाली २०, ख-  
मासमण, साधिया, काउसग्ग लोगस्स ३६ ।

५ श्रीजोधनिर्युक्तिसूत्राय नम । नोकरमाली २०, खमा  
समण, माधिया, काउसग्ग लोगस्स १० ।

६ श्रीआज्यक्कसूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० ३२

७ श्रीनिशीथडेदसूत्राय नम. । नो० २०, ख० सा०  
लो० १६ ।

८ श्रीव्यवहारकल्पसूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० २० ।

९ श्रीदशाधुतस्कधसूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० १९ ।

१० श्रीपचक्कपडेदसूत्राय नम. । नो० २०, ख० मा०  
लो० १९ ।

११ श्रीजीतकल्पछेदसूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० ३५ ।

१२ श्रीमहानिशीथडेदसूत्राय नम । नो० २०, ख०  
सा० लो० ४२ ।

१३ श्रीचउसरणपइन्नयसूत्राय नम । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

१४ श्रीआजरपञ्चस्वाणसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

१५ श्रीभक्तपरिज्ञासूत्राय नमः । नो० २०, ख० मा०  
लो० १० ।

१६ श्रीसधारापइन्नयसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
मा० लो० १० ।

१७ श्रीतदुलवेयालियसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

१८ श्रीचदामिजयपइन्नयसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

१९ श्रीदेविन्दुइपइन्नयसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
मा० लो० १० ।

२० श्रीमरणममाधिसूत्राय नमः । नो० २०, ख० सा०  
लो० १० ।

२१ श्रीमहापचम्खाणसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

२२ श्रीगणिमिज्जापइन्नयसूत्राय नमः । नो० २०, ख०  
सा० लो० १० ।

२३ श्रीआचारागसूत्राय नमः । नो० २०, ख० सा०  
लो० २५ ।

२४ श्रीसूयगढागसूत्राय नमः । नो० २०, ख० सा०  
लो० २३ ।

२५ श्रीठाणागसूत्राय नमः । नो० २०, ख० मा०  
लो० १० ।

२६ श्रीममयायागमूत्राय नम । नो० २०, ख० मा०  
लो० १०४ ।

२७ श्रीभगवतीमूत्राय नम । नो० २०, ख० मा०  
लो० ४० ।

२८ श्रीजातारथागमूत्राय नम । नो० २०, ख० मा०  
लो० १९ ।

२९ श्रीउपामरुदशागमूत्रायनम । नो० २०, ख० मा०  
लो० १० ।

३० श्रीअतगडदद्यागमूत्राय नम । नो० २०, ख०  
मा० लो० १९ ।

३१ श्रीअणुत्तरोपगइयमूत्राय नम । नो० २०, ख०  
सा० लो० ३३ ।

३२ श्रीप्रश्नव्याकरणमूत्राय नम । नो० २०, ख० मा०  
लो० १० ।

३३ श्रीमिषाभागमूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० २० ।

३४ श्रीउपगइयमूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० २३ ।

३५ श्रीरायपसेणीयमूत्राय नम । नो० २०, ख० मा०  
लो० ४० ।

३६ श्रीजीवाभिगममूत्राय नम । नो० २०, ख० सा०  
लो० १० ।

३७ श्रीपद्मपाउषागमत्राय नम । नो० २०, ख० मा० लो० ३६ ।

३८ श्रीगुरुपद्मतिष्ठत्राय नम । नो० २०, ख० सा० लो० ५७ ।

३९ श्रीजगदीशपद्मतिष्ठत्राय नम । नो० २०, ख० सा० लो० ५० ।

४० श्रीचन्द्रपद्मतिष्ठत्राय नम । नो० २०, ख० मा० लो० ५० ।

४१ श्रीरूपगडनिषागमत्राय नम । नो० २०, ख० मा० लो० १० ।

४२ श्रीनिर्यागलीगमत्राय नम । नो० २०, ख० सा० लो० १० ।

४३ श्रीपुष्कचूलियागमत्राय नम । नो० २०, ख० सा० लो० १० ।

४४ श्रीगन्धिदशोपागमत्राय नम । नो० २०, ख० सा० लो० १० ।

४५ श्रीपुष्कियाउपागमत्राय नम । नो० २०, ख० मा० लो० १० ।

### पञ्चवाटा तप विधि

गुटि एकम से पूनम सरु एरु ही साथ १७ उपवास करे, अगर ऐसा न बन सके तो प्रथम शुद्ध पक्ष की एकम का,

दूधरे शुद्ध पत्र की दूज का तथा तीमर शुद्ध पत्र की तीज का एक एक उपग्राम कर अनुक्रम से पढ़ह शुक्ल पत्र में तप सपूर्ण करे । त्रिकाल देवपदन कर । मुनिमुत्रत भगवान् का स्तवन रहे । 'श्री मुनिमुत्रतसर्वनाथ नम' इम पद की २० नोहरगाली गिने । तप की समाप्ति के दिन चांदी का पालणा मुर्ण पुतली तथा लड्डु का थाल चिन मठिर म चढ़ावे स्नान पूजा भी पढ़ावे ।

### पौष दशमी तप की विधि

पौष दशमी के पहले दिन याने नयमी के दिन शक्कर के पानी का एकासणा करे, उम दिन सिर्फ गरम जल में शक्कर डाल कर पी लेवे, बाद दशमी को ठाण एकासणा याने भोजन और जल एक ही साथ लेवे, ऊपर चउविहार कर लेवे, तथा उस दिन जिनमठिर में पच कल्याणक की पूजा भणारे और 'पार्श्वनाथ अर्हते नम' इम पद की बीस नयहरगाली गिने, फिर एकादशी की हमेशा के मुआफिर एकासणा करे । तीनों दिन सुपह शाम भतिक्रमण कर, तीनों टङ्क द्रव्य चदन करे, नक्षत्र्य पाले, जमीन पर सोवे ।

इम रीति से यह तप दशग्र्य में पूर्ण होता है । तप की समाप्ति में ज्ञान दर्शन और चारित्र क दश दश उपकरण चढ़ा कर उजमणा कर, अठाई महोच्छ्रय कर साधर्मी वात्मन्य भी करें ।

## पंचरत्नी तप विधि

इत तप म २० पुन्य अथवा २० गियां होती है।

पहले दिन—पाच जणा पांच उपवास करें, उस दिन 'मतिनानाय नम' इस पद की बीस नौकरवाली गिने और स्वामिमण साधिया काउमग लोमस २८, तथा प्रदक्षिणा २८, और २८ श्रीफल चढ़ावे।

दूसरे दिन—दूसरे पाच जणा पांच उपवास का पंचक्रवाण करे, उस दिन 'श्रुतानाय नम' इस पद की २० माला गिने, स्वामिमण साधिया काउमग लो० १४ का करे। तथा प्रदक्षिणा १४ दवे, १४ श्रीफल चढ़ावे।

तीसरे दिन—पाच जणा तीन उपवासका पंचक्रवाण कर, 'अधिनाय नम' इस पद की २० नौकरवाली गिने, स्वामिमण साधिया काउमग लोमस ६ करे तथा प्रदक्षिणा ६ दवे, श्रीफल ६ चढ़ावे।

चौथे दिन—पाच जणा दो उपवासका पंचक्रवाण कर, 'मन पर्यज्ञानाय नम' इस पद की २० माला गिने स्वामिमण साधिया काउमग लोमस २ कर प्रदक्षिणा २ तथा श्रीफल २ चढ़ावे।

पांचवे दिन—पाच जणा एक उपवास करे, 'केवलज्ञानाय नम' की २० माला गिने, स्वामिमण साधिया लोमस १ प्रदक्षिणा १ श्रीफल १ चढ़ावे। इन पांचां दिनों में ज्ञानपद

की पूजा पढ़ावे, रूपानाणे से पुस्तक की पूजा करे, पारणा के नि ४५ आगम की पूजा मणावे ।

### दशपञ्चगव्याण विधि

१ उपनाम—‘श्रीअक्षयसम्यक्त्वाय नम ’ नोकरगाली २०, साथिया लोगम्भ खमाममण ६७ ।

२ एकामणा—‘श्रीसम्यक्त्वाय नम ’ नो० २०, ख० सा० लो० १७ ।

३ एकसिक्थ—(एक चामल खावे) ‘श्रीकैवलनाणीना-  
थाय नम ’ नो० २०, ख० सा० लो० ८ ।

४ नीवि—‘श्री एकत्वगताय नम ’ नो० २०, ख० सा० लो० २१ ।

५ एकदत्ती—(अनजान मनुष्य भोजन थाल में पीरम कर कपड़े से ढक कर रखे उतना ही खावे) ‘श्रीमरगताय नम!’ नो० २०, ख० सा० लो० ३१ ।

६ परधरिया एकामणा । ‘श्री गौतमस्वामिने नम ’ नो० २०, ख० सा० लो० ४५ ।

७ एकलठाणा (हृदय पर्यंत थाली रखे सारा हाथ हिलावे विना भोजन करे) ‘अक्षयस्थितये नम ’ नो० २०, ख० सा० लो० २८ ।

८ एकामणा (एक कल खावे) ‘श्रीप्रताय नम ’ नो० २०, ख० मा० लो० ९० ।



९ एक घीका दूधरा जलका दो बरतन कपड़े से ढक कर गालर के पाम कपड़ा दूर करावे, याने दो बरतनो में से एक बरतन गुला कावाये, घी आवे तो एकामणा और जल आवे तो आगिल करे । 'श्रीमुनीश्वराय नम' नो०, २०, स० सा० लो० १३ ।

१० आधिल' (सिर्फ खाखरे खाना) 'श्रीअक्षयनिधिनाथाय नम' नो० २०, स० सा० लो० १२ ।

थोईस तीर्थकरो के कल्याणक देखने का कोण्टक  
कार्तिक यदि शुदि

तीर्थकर	तिथि	कल्याणक	मतान्तरेण तिथि
३	वदि ७	केवलज्ञान	
२२	वदि १२	व्यसन	
६	" १२	जन्म	
४	" १३	दीक्षा	(१२)
२४	" ३०	मोक्ष	
९	शुदि ३	केवल	(२)
१८	" १२	केवल	

मगसिर यदि शुदि

तीर्थकर	तिथि	कल्याणक
९	वदि ५	जन्म

१ दूसरी विधिमें ५वा पत्र बबल ६ठा पक्कलठाणा ७वा पक्कलती, ८वा आयरिज ९वा पक्कलरा और १०वा लूग्वीनिरी, इस प्रकारसे तप लिखे हैं ।

९	वदि ६	दीक्षा
२४	„ १०	दीक्षा
६	„ ११	मोक्ष
१८	शुदि १०	जन्म
१८	शुदि १०	मोक्ष
१८	शुदि ११	दीक्षा
१९	„ ११	जन्म
१९	„ ११	दीक्षा
१९	„ ११	केवल
२१	„ ११	केवल
३	„ १४	जन्म
३	„ १५	दीक्षा
पौष वदि शुदि		
तीर्थार	तिथि	कल्याणर
२३	वदि १०	जन्म
२३	वदि ११	दीक्षा
८	वदि १२	जन्म
८	वदि १३	दीक्षा
१०	वदि १४	केवल
१३	शुदि ६	केवल
१६	शुदि ९	केवल
२	शुदि ११	केवल

४	शुदि १४	कनल
१७	शुदि १७	केनल
माघ वदि शुदि		
तीर्थसर	तिथि	कल्याणक
६	वदि ६	व्यवन
१०	वदि १०	जन्म
१०	वदि १०	दीक्षा
१	वदि १३	मोक्ष
११	वदि ३०	केनल
४	शुदि ७	जन्म
१२	शुदि २	केनल
१५	शुदि ३	जन्म
१३	शुदि ३	जन्म
१३	शुदि ४	दीक्षा
२	शुदि ८	जन्म
२	शुदि ९	दीक्षा
४	शुदि १२	दीक्षा
१५	शुदि १३	दीक्षा
फागुण वदि शुदि		
तीर्थसर	तिथि	कल्याणक
७	वदि ६	केनल
७	वदि ७	मोक्ष

मतान्तरण

८	वदि ७	केवल	
९	वदि ९	च्यवन	
१	वदि ११	केवल	
२०	वदि १०	केवल	
११	वदि १२	जन्म	
११	वदि १३	दीक्षा	(३०)
१२	वदि १४	जन्म	
१२	वदि ३०	दीक्षा	
१८	शुदि २	न्यसन	(१)
१९	शुदि ४	च्यवन	
३	शुदि ८	च्यवन	
२०	शुदि १२	दीक्षा	
१९	शुदि १२	मोक्ष	
	चैत्र वदि	शुदि	
तीर्थरु	तिथि	कल्याणरु	
२३	वदि ४	च्यवन	
२३	वदि ४	केवल	
८	वदि ५	च्यवन	
१	वदि ८	जन्म	
१	वदि ८	दीक्षा	
१७	शुदि ३	केवल	
१४	शुदि ५	मोक्ष	

२	शुदि ५	मोक्ष
३	शुदि ५	मोक्ष
५	शुदि ९	मोक्ष
५	शुदि ११	केवल
२४	शुदि १३	जन्म
६	शुदि १५	केवल

## वैशाख यदि शुदि

तीर्थर	तिथि	फल्याणक
१७	शुदि १	मोक्ष
१०	शुदि २	मोक्ष
१७	शुदि ५	दीक्षा
१०	शुदि ६	च्यवन
२१	शुदि १०	मोक्ष
१४	शुदि १३	जन्म
१४	शुदि १४	दीक्षा
१४	शुदि १४	केवल
१७	शुदि १४	जन्म
४	शुदि ४	च्यवन
१५	शुदि ७	च्यवन
४	शुदि ८	मोक्ष
५	शुदि ८	जन्म
५	शुदि ९	दीक्षा

श्रीजैनज्ञान—गुणसंग्रह

२४	शुदि १०	केवल
१३	शुदि १२	च्यवन
२	शुदि १३	च्यवन
तीर्थंकर	जेठ वदि शुदि	
११	तिथि	कल्याणकर
२०	वदि ६	च्यवन
२०	वदि ८	जन्म
१६	गदि ९	मोक्ष
१६	गदि १३	जन्म
१६	वदि १३	मोक्ष
१५	वदि १४	दीक्षा
१२	शुदि ५	मोक्ष
७	शुदि ९	च्यवन
७	शुदि १०	जन्म
	शुदि १३	दीक्षा

आपाठ वदि शुदि

तिथि

वदि ४

वदि ७

गदि ९

शुदि ६

शुदि ८

शुदि १४

कल्याणकर

च्यवन

मोक्ष

दीक्षा

च्यवन

मोक्ष

मोक्ष

तीर्थंकर

१

१३

२१

२४

२२

अध्ययन २३, मूलश्लोक २१००, श्रीलागाचार्यकृत टीका १०८५० तथा चृणि १०००० श्लोक हैं, भद्रबाहुस्त नियुक्ति की गाथा २०८ श्लोक २५० । इस पर माप्य नहीं है, सर्व श्लोक २५२०० हैं ।

३ ठाणागसूत्र-इस में अनेक तात्त्विक बातों की गिनती और उनकी व्याख्या दी है ।

इस का अध्ययन १० है, मूलश्लोक ३७७० हैं, म ११२० म अभयदेवसूत्र की प्रनाद हुई टीका १७२७० श्लोक प्रमाण है । सर्वश्लोक १९०२० हैं ।

४ समसायागसूत्र-इस में भी ठाणाग का मा ही वर्णन है, परंतु इसमें दश के उपरकी मर्यादाही बातों का भी वर्णन है । इस के मूलश्लोक १६६७, टीका अभयदेवसूत्र की श्लोक ३७७६ प्रमाण है । चृणि पूर्वाचार्य की ४०० श्लोक प्रमाण । सर्वश्लोक ५८४३ हैं ।

५ विवाहपत्राक्षि (भगवती)-इसमें गौतमस्मृतियों के मिश्र २ त्रिपयक ३६००० प्रश्न और महावीर के दिये हुए उत्तरों का वर्णन है । इसके ४१ शतक हैं । मूल श्लोक १७७५२, टीका स० ११२८ में अभयदेवसूत्र की की हुई द्रोणाचार्य सहायित १८६१६ श्लोक की है । चृणि ४००० श्लोक की पूर्वाचार्यकृत है । कुल सग्या ३८३६८ है । तथा इसकी

१ ताडपत्रकी प्राचीन सूचीमें टीका का प्रमाण १०२४० और सर्वसग्या १९०१० श्लोक बताया है ।

लघुवृत्ति स० १५६८ में उपाध्याय दानशेखर की की हुई  
१२००० श्लोक प्रमाण है।

६ ज्ञाता धर्मकथाग—इसमें जुदे जुद पुस्तों और स्त्रियों  
की कथाये हैं। इसके अध्ययन १९, श्लोक ७७००, टीका  
अभयदेवसूरि की श्लोक ४२५२ प्रमाण है। मर्यादा इस  
की ९७५२ श्लोक है।

७ उपामकशाग—इसमें आनन्द कामदेव आदि १०  
आत्माओं के चरित्र हैं। अध्ययन १०, मूल श्लोक ८१२, टीका  
अभयदेवसूरि की ९०० श्लोक प्रमाण, और कुल मर्यादा  
१७१२ है।

८ अतगददशाग—इसमें महावीर भगवान् के जो ग्रास  
ग्रास मुनि मोक्ष गये हैं उनका वर्णन है। इसके अध्ययन ९०,  
मूल श्लोक ९००, टीका अभयदेवसूरि की श्लोक ३०० की  
है। कुल श्लोक १२००।

९ अणुत्तरोदनाग—इसमें जो मुनि अनुत्तर विमान में गये  
हैं उनका वर्णन है। इसके अध्ययन ३३, श्लोक १९२, टीका  
अभयदेवसूरि की श्लोक १००। कुल श्लोक २९२।

१० प्रश्न व्याकरण—इसमें आश्रव और मर्यादा वर्णन है।  
अध्ययन १०, श्लोक ८२५०, टीका अभयदेवसूरि की श्लोक ४६००।  
कुल मर्यादा ५८५०।

१ ताडपत्रीय सूची में मूल श्लोक ७९० बताये हैं।



११ विपाकमूत्र-इसमें सुख दुःख या कर्मफल भुगतने मधवी अधिभार है, इसके अध्ययन २०, श्लोक १२१६, अभयदेवसूरि टीका श्लोक ९००, सर्व श्लोक २११६, है।

कुल ग्यारह अंग की मूल सख्या ३७६५९ तथा टीका ७३५४४, चृणि २२७००, निर्युक्ति ७००, मिल कर १३२६०३ श्लोक है, इसमें आचारांग और सुयगडांग की टीका शीलागाचार्य कृत है, बाकी नव अंग की टीकायें अभयदेवसूरि कृत हैं। इसी लिये इनका नाम 'नगागवृत्तिकार अभयदेवसूरि' जैनसभ में मशहूर है।

### १२ बारह उपांग सूत्र

१ उववाइ सूत्र-इसमें कोणिक राजा महावीर स्वामी के दर्शनार्थ गया उसका वर्णन है, तथा स्वर्ग में कौन क्या उत्पन्न हो सकता है उसका निरूपण है। यह आचारांग प्रतिगद्ध उपांग है। मूल सख्या १२००, अभयदेव टीका श्लोक ३१२५, और कुल सख्या ४३२५ श्लोक है।

२ रायप्पसेणीय-पार्श्वनाथ सतानीय कशीकुमार भ्रमण ने प्रदशी राणा को नास्तिक मत छुड़ाकर आस्तिक धर्म में लाया उसका तथा वही प्रदशी गुजर कर सूर्याभि देव होकर वापस

१ ताडपत्रीय सूची में अंगों की श्लोक सख्या १३२४८६ लिखी है।

२ ताडपत्रीय सूची में सूत्र श्लोक सख्या ११६७ और सर्व सख्या ४२९२ लिखी है।

महावीर प्रभु के पाम वदन से आया उसका वर्णन है। यह सुयगढागप्रतिबद्ध है। मूल श्लोक २०७८, मलयगिरि टीका श्लोक ३७०० कुल सरया ५७७८ है।

३ जीवाभिगम—इसमें जीव अजीव सबकी वर्णन है। यह ठाणागप्रतिबद्ध है। मूल श्लोक ४७००, मलयगिरि टीका १४०००, लघुवृत्ति ११०००, चृणि १५०० और सर्व सरया ३१२०० है।

४ पञ्चवणा—इसमें जैन मान्य अनेक विषयों का वर्णन है। यह समवायागप्रतिबद्ध है। मूल श्लोक ७७८७, मलयगिरि-टीका १६०००, हरिमद्रक्त लघुवृत्ति ३७२८ और सर्व सरया २७५१५।

५ जम्बूद्वीप पन्नति—इसमें जम्बूद्वीप का भूगोल वर्णन है। यह भगवतीप्रतिबद्ध है। मूल श्लोक ४१४६, मलयगिरि-टीका १२०००, चृणि १८६०, कुल सरया १८००६। ताडपत्रीय सूची में टीका का उल्लेख नहीं है।

६ चन्द्रपन्नति—इसमें चन्द्र की गति तथा यह नक्षत्रों का वर्णन है, यह ज्ञाताप्रतिबद्ध है। मूल श्लोक २२००, मलयगिरि टीका ९४११, लघुवृत्ति १०००, कुल सरया १२६११।

७ सूर्य पन्नति—इसमें सूर्य आदि ग्रहों का ही वर्णन है।

१ ताडपत्रीय सूचीमें मूल ७००० और वृत्ति (टीका) १००० श्लोकप्रमाण लिखी है। सूर्य सरया २७२८ लिखी है।

२ ताडपत्रीय सूची में चन्द्रप्रसक्ति-सूर्यप्रसक्ति का मूल २५००, वृत्ति १००० और सूर्य सरया १३४०० श्लोक बताया है।

यह भी ज्ञाताप्रतिपद है । मूल श्लोक २०००, मलयगिरि-टीका ९०००, चूणि १०००, कुल मग्या १२२०० ।

८ कप्पिया-इसमें १० राजकुमार अपने ओरमान भाई राजा कोणिक के साथ मिलकर अपने नाना वैशाली नगरी के राजा चेटक (चेडा) के सामने युद्ध में उतरे, वहा दशों मारे गए, मर कर नरक में गये इत्यादि वर्णन है । इसके अध्ययन १० है ।

९ कप्पडमिया-इसमें राजा कोणिक के पोते राजकुमार ने दीवा ली और जुटे जुटे स्वर्ग में गये उसका वर्णन है । इसके अध्ययन १० है ।

१० पुष्किया-इसमें जिन देवताओं ने महावीर की पूजा की उनके पूर्व जन्म का वर्णन है । इसके अध्ययन १० है ।

११ पुष्कूलिया-इसमें भी ऊपर जैसी ही कथाएँ हैं । इसके अध्ययन १ है ।

१२ उन्निदमा-इसमें नेमिनाथ ने १० यदुवशी राजाओं को प्रतिघोष दत्तर जन बनाया उसका वर्णन है । इसके अध्ययन १० है ।

उपर्युक्त पांचो उपागों का समुच्चि नाम 'निरयापली' है । इनकी अध्ययन मग्या ५२ है । वे यथाक्रम उपासकदशा गादिक पांच अंगप्रतिपद हैं । इन पांचा की मिल कर श्लोक मग्या ११०९ है इन पांचों की वृत्ति चद्रगुरि कृत ७०० श्लोक कुल मग्या ४८०९ है । इन १२ उपागों की मूल स-

ग्या २५४००, टीका ६७९३६, लघुटीका ६८०८, चर्णि  
३३६० कुल सरया १०३५४४ है।

### १० पयन्ना

१ चउमरण पयन्नो—अरिहत, सिद्ध, माधु, फेंगली भा  
पित धर्म, इन चार शरणों का अधिकार है। गाथा ६३ है।

२ आउरपच्चकराण—अत समय में अभिग्रह पचक्खाण  
जादि कराने का अधिकार है। गाथा ८४।

३ भक्तपरिज्ञा—इसमें आहार पानी त्याग करने मयधी  
अभिग्रह की विधि है। गाथा १७२ है।

४ सथागपयन्नो—इसमें अत समये मथारा लेने का अ  
धिकार या जि होने सवारा लिया है उनका वर्णन है। गाथा  
१२० है।

५ तदुलवेयाली पयन्नो—गाथा ४००, इसमें गर्भ में जीरनी  
उत्पत्ति कैसे होती है इत्यादि वर्णन है।

६ चदामिज्जगपइन्नो—गाथा ३१०, इसमें गुरुशिष्य के  
गुण प्रयत्न निर्गह का वर्णन है।

७ देविदत्थो पडन्नय—इसमें मर्ग के इद्रों की गिनती  
है। गाथा २०० है।

१ ताडपत्रीय सूची में बारह उपागों की सर्व श्लोक सख्या  
केवल ९००१३ निगानये हजार सेगह गिरी है।

२ ताडपत्रीय सूचा में गाथा १७० बताई है।

३ ताडपत्रीय सूची में गाथा ११० बताई है।

८ गणिविज्जा पद्मनय—इस में ज्योतिष की चर्चा है।

गाथा १०० हैं।

९ महापञ्चसाण—इस में आराधना का अधिकार है।

गाथा १३४।

१० मरणममाधि—अत समय में शांतिपूर्वक मरण होना चाहिये, उस का वर्णन है। गाथा ७२०।

इन १० पद्यों की गाथाएँ २३०५ हुई हर एक को एक एक अध्ययन समझना चाहिये।

### ६ छेद सूत्र

‘छेद सूत्रों’ का मतलब है ‘उडनीति शास्त्र’। जैसे राज्य व्यवस्था के लिये कानून ग्रन्थ होते हैं उसी तरह साधुओं को कोई दोष अपराध लगे उस का दंड प्रायश्चित्त प्रदान करने वाले ‘छेदसूत्र’ हैं। साधु समाज की व्यवस्था के लिये यही धर्मकानून ग्रन्थ है। इन के मुताबिक चलने से साधुओं का सध शासन व्यवस्थित रीति से चलता रहता है।

१ निशीथ—उद्देशक २०, मूल पुरानी सूची में ८१५ श्लोक हैं। इस का लघुभाष्य ७४०० श्लोक, पूर्ण २८००० श्लोक और बड़ा भाष्य १२००० श्लोक हैं। कुल सरया ४८२१५ है।

२ महानिशीथ—अध्ययन १३, मूल श्लोक ४५०० हैं मतातरे इस की तीन वाचनार्थ हैं—१ लघुवाचना श्लोक

१ तादृशनीय सूची में इस भाष्य का उल्लेख नहीं है।

४२००, २ मध्यम वाचना श्लोक ४५००, ३ बड़ी वाचना श्लोक ११८०० है।

३ बृहत्कल्प—उद्देशक २४, मूल श्लोक ४७३, इस की वृत्ति सरया १३३२ की साल में बृहत्छासीय श्रीक्षेमकीर्ति संस्कृत ४२००० श्लोक है, भाष्य १००००, लघुभाष्य ८०००, चूर्णि १४३०५, कुल सरया ७६७९८ है।

४ व्यवहार—उद्देशक १०, मूल श्लोक ६००, मलयगिरि टीका श्लोक ३३६२५, चूर्णि १०३६१, भाष्य ६०००, कुल सरया ५०५८६ है।

पंचरत्न—अधिनार १६, मूल श्लोक ११३३, चूर्णि २१३०, भाष्य ३१२५, कुल ६३८८ और इस में गाथा संग्रह २०० है।

१ ताडपत्रीय सूची में महानिशीय की तीन वाचनाओं के श्लोक क्रमशः ३४००, ४२०० और ८००० लिखे हैं।

२ ताडपत्रीय सूची में मूल ४७३, भाष्य ८०००, सा माय चूर्णि १४०००, विशेष चूर्णि १००००, बृहद्भाष्य १३००० और सबसरया ४४७३ श्लोक की लिखी है।

३ ताडपत्रीय सूची में सूत्र ३७३, भाष्य ६०००, चूर्णि १०३६१, वृत्ति ३३००० और सबसरया ४९७३४ श्लोक लिखा है।

४ ताडपत्रीय सूची में मूल के स्वान निर्मुक्ति शब्द है। चूर्णि की २१३१, भाष्यकी २१३० और सब सरया ३९४ श्लोक प्रमाण लिखी है।

५ दशातस्कध—जिम का ८ वा अध्ययन कल्पसूत्र है, मूल श्लोक १८३५, चूर्णि २२४५, निर्युक्ति १६८ श्लोक, कुल ४२४८ ।

६ जीतकल्प (१)—मूल १०८, टीका १२०००, तथा सेनकृत चूर्णि १००० श्लोक, भाष्य ३१२४, कुल १६२३२ श्लोक है । इस की चूर्णि का व्याख्यान ११२० है । लघु वृत्ति श्री माधुरस्तनकृत श्लोक ५७००, तथा तिलकाचार्यकृत वृत्ति १५०० श्लोक है ।

६ माधु जीतकल्प (२)—मूल श्लोक ३७५, वृत्ति १५०० श्लोक, तथा धोषसरि कृत २६५० ।

### ४ मूल सूत्र

१ आवश्यक सूत्र (१)—मूल १२५ गाथा, टीका हरि-भद्रसरि कृत २२०००, निर्युक्ति भद्रबाहुरकृत ३१००, चूर्णि १८०००, तथा दूसरी आवश्यकवृत्ति (चतुर्विंशति स्तव) २२००० है, इस की लघुवृत्ति तिलकाचार्य कृत १२३२१ श्लोक, अञ्जलगच्छाचार्य कृत दीपिका १००००, भाष्य ४०००, आवश्यक टिप्पण मलयारी हंसचन्द्रसरि कृत ४६००, सब मिलात ९८१४३

२ तादृषत्रीय सूची में मूल १८३० चूर्णि २२२ और मधसण्या ४०२३ श्लोक लिगी है ।

३ तादृषत्रीय सूची में जीतकल्प मूल के १०८ श्लोकों का उल्लेख नहीं है । यहा मधे संख्या १६१२४ है ।

३ तादृषत्राय सूची में मूल के १०० एव सौ श्लोक कहे हैं ।

श्लोक, तथा निर्युक्ति की टीका २२५०० हरिभद्रकृत है। ताडपत्रीय सूची में विशेषावश्यकभाष्य पाक्षिक सूत्र और इन की टीका आदि मिला कर आवश्यकसूत्र का श्लोक प्रमाण १२८६५० लिखा है।

विशेषावश्यक भाष्य (२)—यह सूत्र आवश्यक का विशेष भाष्य है। मूल भाष्य ५००० जिनभद्रगणितभाष्यमणकृत है। लघुवृत्ति १४००० श्लोक की ग्रंथ के अंत में मोट्याचार्यकृत लिखी है और सूची में द्रोणाचार्य का नाम लिखा है। गूटी वृत्ति मल्लधारी हमचंद्र कृत २८००० श्लोक प्रमाण है।

पक्षीसूत्र (३)—मूल श्लोक ३६०, टीका सग्या ११८० में योगेश्वरसूरिने की है जिस के श्लोक २७०० हैं, चूणि ४०० श्लोक हैं।

यतिप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति (४)—श्लोक ६०० है।

२ दशैकालिक—इस में माधु जीवन के नियम लिखे हैं। यह शम्भुभक्तकृत है। मूल श्लोक ७०० (७५०)। अध्ययन १०। वृत्ति तिलकाचार्यकृत श्लोक ७०००। दूसरी वृत्ति हरिभद्र-कृत श्लोक ६८१०, तथा मलयगिरिकृत वृत्ति श्लोक ७७००। चूणि ७५००। लघुवृत्ति ३७००। निर्युक्ति गाथा ४५०। लघुटीका सोमसुंदरसूरि कृत ४२००। दूसरी टीका उपाध्याय

१ ताडपत्रीय सूची में पाक्षिक सूत्र श्लोक ३०० और वृत्ति ३००० श्लोक की लिखी है।



इन म आयश्य, आचाराग, सुयगडाग, दशवैकालिक उत्तराध्ययन तथा कल्पसूत्र इन छ की नियुक्ति भद्रवाहु की बनाइ हुई मिलती ह । निशीधभाष्य, बृहत्कल्पका लघुभाष्य तथा बडाभाष्य, व्यवहारभाष्य, जीतरूपभाष्य, पचरूपभाष्य और ओघनियुक्तिभाष्य ये ७ भाष्य पुराने आचार्यों के बनाये हुए ह ।

आचाराग, सुयगडाग, भगवती, जगृहीपपन्नक्ति, आनश्य, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पम्परीसूत्र, अनुयोगद्वार, नदी, निशीध, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध, पचरूप और जीतरूप इन १३ सूत्रों की वर्णिका प्राचीन आचार्यों ने बनाइ ह ।

## (२) ६३ जालाका पुरुष विचार

२४ तीर्थकर

तीर्थकरनाम	शरीरमान	आयुर्मान
१ ऋषभप्रभ	५०० धनुष	८४ लाख पूर्व
२ अजितनाथ	४५० धनुष	७२ लाख पूर्व
३ सभयनाथ	४०० धनुष	६० लाख पूर्व
४ अभिनदन	३५० धनुष	५० लाख पूर्व
५ सुमतिनाथ	३०० धनुष	४० लाख पूर्व
६ पद्मप्रभ	२५० धनुष	३० लाख पूर्व
७ सुपार्थनाथ	२०० धनुष	२० लाख पूर्व
८ चद्रप्रभ	१५० धनुष	१० लाख पूर्व

९ मुनिधिनाथ	१०० धनुष	२ लाख वर्ष
१० श्रीतलनाथ	९० धनुष	१ लाख वर्ष
११ श्रेयासनाथ	८० धनुष	८४ लाख वर्ष
१२ गामुपूज्य	७० धनुष	७० लाख वर्ष
१३ निमलनाथ	६० धनुष	६० लाख वर्ष
१४ अनतनाथ	५० धनुष	३० लाख वर्ष
१५ धर्मनाथ	४५ धनुष	१० लाख वर्ष
१६ शातिनाथ	४० धनुष	१ लाख वर्ष
१७ दुधुनाथ	३५ धनुष	९५ हजार वर्ष
१८ अरनाथ	३० धनुष	८४ हजार वर्ष
१९ मल्लिनाथ	२५ धनुष	५५ हजार वर्ष
२० मुनिसुत्रत	२० धनुष	३० हजार वर्ष
२१ नमिनाथ	१५ धनुष	१० हजार वर्ष
२२ नेमिनाथ	१० धनुष	१ हजार वर्ष
२३ पार्श्वनाथ	९ हाथ	१०० वर्ष
२४ महावीर	७ हाथ	७२ वर्ष

१० चक्रवर्ती

नाम	गति	होने का समय ।
१ भरतचक्रवर्ती	मोक्ष	रूपभेद के समय में ।
२ मगर	मोक्ष	अजितनाथ के समय में ।
३ मध्या	तीसरा स्वर्ग	१५ वा जिनके पीछे ।
४ सनत्कुमार	” स्वर्ग	१६ वा जिन के आगे ।

५ गतिनाथ	मोक्ष	१६ वा सुद तीर्थस्नान ही चक्री
६ कुण्डनाथ	मोक्ष	१७ वा जिन गुट चक्री
७ अरनाथ	मोक्ष	१८ वा जिन गुट ,,
८ सुभूम	नरक	१८ वा जिन पीछे १९ के पहले
९ महापद्म	मोक्ष	२० वा जिन के समय में ।
१० हरिपण	मोक्ष	नमिनाथ के समय में ।
११ जयनामा	मोक्ष	२१ क और २२ के बीच में ।
१२ ब्रह्मदत्त	नरक	२२ पीछे २३ के पहले ।

## ९ वासुदेव

नाम	गति	होने का समय ।
१ त्रिपृष्ठवासुदेव	नरक	११ वा जिन के समय में ।
२ द्विपृष्ठवासुदेव	नरक	१२ वा जिनके समय में ।
३ स्वयम्भू	नरक	१३ वा जिन के समय में ।
४ पुष्पोत्तम	नरक	१४ वा जिन के समय में ।
५ पुष्पमिह	नरक	१५ वा जिन के समय में ।
६ पुष्पपुडरीक	नरक	१८ पीछे १९ के पहले ।
७ दत्त	नरक	१८ पीछे १९ पहले ।
८ लक्ष्मण	नरक	२० पीछे २१ के पहले ।
९ कृष्ण	नरक	२२ वा के समय में ।

## ९ प्रतिवासुदेव

१ अश्वघ्रीव । २ तारक । ३ मोरक । ४ मधु । ५ निशुभ  
६ नली । ७ मल्हाद । ८ रायण और ९ जरासंध । क्रमशः

ये नर प्रतिगामुदेव पूर्वोक्त नर वासुदेवों के समकालीन हैं ।  
इन सभी की भी गति नरक है ।

### ९. बलदेव

नाम	गति
१ अचल	मोक्ष
२ विनय	"
३ भद्र	स्वर्ग
४ सुप्रभ	"
५ सुदर्शन	मोक्ष
६ आनन्द	मोक्ष
७ नन्दन	"
८ रामचन्द्र	"
९ नलराम	स्वर्ग

ये नर ही बलदेव नर वासुदेवों के भाई होने से वासुदेवों  
का समय ही इनका यथा क्रम समय है ।

इन ६३ पुरुषों के पिता ५१ माता ६१ और जीव ५९  
होते हैं इसका भ्रमन्वय यह है कि ९ वासुदेव और ९ बलदेव  
के पिता जुड़े नहीं बल्के एक हैं जिस से ९ कम हुए, तथा  
प्रातिनाथ बुधनाथ और अस्नाथ ये तीनों तीर्थंकर हैं और  
चन्द्रवर्ती भी हैं इस से भी तीन कम हुए । पूर्वोक्त ९ और ३

मिलाने पर १२ हुए, ६३ म से १० कम किये तो शेष ५१ पिता रहते हैं ।

माता के त्रिपय में भी शक्ति कुथु अर ये तीनों भगवान् हैं और चक्रवर्ती भी ह जिनसे इन की माता ३ हुई तथा महावीर स्वामी की माता देवानदा और त्रिशला दो हैं बाकी सब पुरुषों की मातायें भिन्न भिन्न हैं इस लिये मन को मिलाने पर मातायें ६१ होती हैं ।

इसी तरह जीव के त्रिपय में भी शक्ति कुथु अर ये तीनों तीर्थंकर और चक्रवर्ती भी ह इस लिये इन में से तीन जीव कम हुए, त्रिष्टु वासुदेव का और महावीर स्वामी का जीव एक हैं शेष सब पुरुषों के जीव भिन्न हैं उक्त ४ जीव ६३ में से कम करने पर जीव सख्या ५९ होती है ।

१ यहा पर महावीर स्वामी के दो पिता (ऋषभदेव और मित्राध) गिनने से पिताकी सख्या ५२ भी होती है ।



## ५२ बोल का नकशा

### खुलामा

जो कि २४ तीर्थंकर विषय ५२ बोल का नकशा समझना कुछ भी मुश्किल नहीं है, तो भी बिलकुल अनजान मनुष्यों के लिये कुछ खुलामा लिख देना जरूरी है।

५२बोलका अर्थ है तीर्थंकरके माथ सबन्ध रखनेवाली ५२ बातें

कोई जानना चाह कि कौन तीर्थंकर किम तिथि में किम स्वर्ग से च्युत हो कर माता की कुख में आये ? किम नगरी में किम दिन उनका जन्म हुआ ? उनका पिता और माता के नाम क्या थे ? उनका जन्म नन्ध और जन्मराशि क्या है ? उनकी जाय में बिह्व क्या था ? उनके शरीर की उचाइ कितनी थी ? आयुष्य कितना था ? शरीर का वर्ण कैसा था ? गृहस्थाश्रम में किम पद पर थे ? विवाह किया था या नहीं ? कितने पुरुषों के साथ गृहत्याग किया ? किम नगरी में दीक्षा ली थी ? इत्यादि कुल ५२ बातों का खुलामा उनके नामके आगे के ५२ कोठों में देखने से मिलेगा। जिस तीर्थंकर के विषय में उक्त बातों का खुलासा देखना हो उसका आगे के कोठे देखने चाहिये।

उदाहरण—कोट यह जानना चाह कि भगवान् ऋषभदेवके 'गणधर' रितने थे ? तो उसे ऋषभदेव के नाम के आगे का २७वा कोठा देखना चाहिये, ता कि ज्ञात हो जायगा कि ऋषभ देव के 'गणधर' ८५ थे। इसी तरह सब बात देखनी चाहिये।

तीर्त्तर

१ च्यवनतिथि

२ विमान

१ ऋषभदेव

आषाढ यदि ४

सर्गार्थ सिद्ध

२ अजितनाथ

वैशाख सुदि १३

विजय विमान

३ मन्मथनाथ

फागुण सुदि ८

सातगा प्रेक्षेयक

४ अभिनदन

वैशाख शु ४

जयत विमान

५ सुमतिनाथ

श्रावण शु २

" "

६ पद्मप्रभ

माघयदि ६

९ वा प्रेक्षेयक

७ सुपाशनाथ

भाद्रवा यदि ८

छद्वा प्रेक्षेयक

८ चन्द्रप्रभ

चैत्र यदि ५

विजयत

९ सुविधिनाथ

फागुण यदि ९

आनत देवलोक

१० शीतलनाथ

वैशाख व ६

प्राणत देवलोक

११ श्रेयात्मनाथ

जेठ व ६

अच्युत

१२ वामुपूज्य

जेठ शु ९

प्राणत

१३ विमर्गनाथ

वैशाख शु १२

सहस्रार देवलोक

१४ अनन्तनाथ

श्रावण व ७

प्राणत देवलोक

१५ धर्मनाथ

वैशाख ॥ ७

विजयविमान

१६ शांतिनाथ

भाद्रवा व ७

सर्गार्थसिद्ध

१७ कुशुनाथ

श्रावण व ९

"

१८ अग्नाथ

फागुण शु २

"

१९ मल्लिनाथ

फागुण शु ४

जयत

२० मुनिमुदत

श्रावण शु १५

अपराजित

२१ नमिनाथ

आसोज शु १५

प्राणत स्वर्ग

२२ नेमिनाथ

कार्तिक व १२

अपराजित

२३ पाश्वनाथ

चैत्र व ४

प्राणत स्वर्ग

२४ महावीर

आषाढ शु ६

प्राणत स्वर्ग

धीनैनान—गुणसंग्रह

३ जन्मनगरी

४ जन्मतिथि

५ पिता

रक्ष्यातुभूमि  
अयोध्या  
मायतयी  
अयोध्या

"

कौशात्री

घनारस

चन्द्रपुरी

कारुदी

भदिलपुर

सिंहपुरी

चपापुरी

काम्पिल्यपुर

अयोध्या

रत्नपुरी

राजपुर

"

"

मिथिला

राजगृह

मिथिला

सौरिपुर

घनारस

क्षत्रियतुङ

चेन यदि ८

माघ सुदि ८

मृगशिर शु १४

माघ शु २

वैशाख शु ८

कार्तिक यदि १०

जेठ शु १०

पाप यदि १२

मृगशिर यदि ५

माघ घ १२

फागुण घ १२

फागुण य १४

माघ शु ३

वैशाख घ ३

माघ शु ३

जेठ घ १३

वैशाख घ १४

मृगशिर शु १०

मृगशिर शु ११

जेठ घ ८

श्रावण घ ८

श्रावण शु ५

पाप घ १०

चैत्र शु १३

नाभिकुलर

जितशत्रु

पितारि

मघर राजा

मेघराजा

धर राजा

प्रतिष्ठ राजा

महासेन

सुमान

दृढरथ

विष्णु

चसुपूच

वृत्तयमा

निहसेन

भानुराजा

विश्वसेन

शूरराजा

सुदर्शन

कुमराजा

सुमित्र

विजय राजा

समुद्रविजय

अ वसेन

सिद्धाथराजा



तीर्थंकर	६ माता	७ जन्मनक्षत्र
१ ऋषभदेव	मन्देवी	उत्तराषाढा
२ अजितनाथ	विजया	रोहिणी
३ मधुसूतनाथ	सेना	मृगशिरा
४ अभिनन्दन	मिह्यार्या	पुनर्वसु
५ सुमतिनाथ	मंगला	मघा
६ पद्मप्रभ	सुस्मीमा	चित्रा
७ सुपाश्व्यनाथ	पृथ्वी	विशाखा
८ चन्द्रप्रभ	रश्मणा	अनुराधा
९ सुनिधिनाथ	रामाराणी	मूल
१० शीतलनाथ	नन्दा	पूर्वाषाढा
११ श्रेयासनाथ	विष्णु	श्रवण
१२ वासुपूज्य	जया	शतभिषा
१३ विमलनाथ	दयामा	उत्तराभाद्रपद
१४ अनन्तनाथ	सुयशा	रेवती
१५ धर्मनाथ	सुवता	पुष्य
१६ शास्तिनाथ	अचिरा	भरणी
१७ कुण्डुनाथ	श्रीगणी	कृत्तिका
१८ अरुनाथ	देवी	रेवती
१९ महिनाथ	प्रभावती	अश्विनी
२० मुनिसुवत	पद्मावती	श्रवण
२१ नमिनाथ	विप्रा	अश्विनी
२२ नेमिनाथ	शिवादेवी	चित्रा
२३ पार्श्वनाथ	चामा	विशाखा
२४ महावीर	विशला	उत्तराषाढा

८ जन्मराशि	९ लाला	१० शरीरमान
धन	धृषभ (जेल)	५०० धनुष
धृष	हाथी	४५० "
मिथुन	घोडा	४०० "
मिथुन	मर्कट (घानर)	३५० "
सिंह	प्राच (कुम्हाडा)	३०० "
कन्या	कमल	२५० "
तुला	स्थस्तिष	२०० "
वृश्चिक	चन्द्रमा	१५० "
धन	मगरमच्छ	१०० "
धन	श्रीरत्न	९० "
मकर	गेंडा	८० "
कुम्भ	भैंसा	७० "
मीन	घराह (सूअर)	६० "
मीन	सिंघाणा (वाज)	५० "
कर्क	घज	४० "
मेष	हिरण	३० "
धृष	घरुवा	२५ "
मीन	मद्यावर्त	२० "
मेष	कल्श	१५ "
मकर	काचगा (कच्छप)	१० "
मेष	नीलकमल	१० "
कन्या	शय	१० हाथ
तुला	सर्प	९ "
कन्या	सिंह	७ "

तीर्थंकर	११ आयुर्मान	१२ शरीरवर्ण
१ ऋषभदेव	८४ लाख पूर्व	पीलावण
२ अजितनाथ	७२ "	पीला
३ सभवानाथ	६० "	"
४ अभिनन्दन	१० "	"
५ सुमतिनाथ	४० "	"
६ पद्मप्रभ	३० "	लाल
७ सुपाश्वनाथ	२० "	पीला
८ चन्द्रप्रभ	१० "	सफेद
९ तुषिधिनाथ	२ "	"
१० शीतलनाथ	१ "	पीला
११ श्रेयासनाथ	८४ लाख वर्ष	"
१२ वासुपूज्य	७२ "	"
१३ विमलनाथ	६० "	"
१४ अनन्तनाथ	३० "	"
१५ धर्मनाथ	१० "	"
१६ शांतिनाथ	१ "	"
१७ कुण्डुनाथ	९५००० वर्ष	"
१८ धरनाथ	८४००० वर्ष	"
१९ मल्लिनाथ	५५००० वर्ष	नीला
२० मुनिमुदत	३०००० वर्ष	श्याम
२१ नमिनाथ	१०००० वर्ष	पीला
२२ नेमिनाथ	१००० वर्ष	श्याम
२३ पाश्वनाथ	१०० वर्ष	नीला
२४ महावीर	७२ वर्ष	पीला

१३ पदवी	१४ विवाह	१५ मायदीक्षा
राजपदवी	परणे	४००० साथ
,	परणे	१००० ,
"	,	" "
राना		" "
"	,	,
"	,	,
"	,	,
"		,
"		"
"		,
"		,
कुमार		६०० ,
राना		१००० "
"		,
"	,	,
चन्द्रवर्ति		" "
"	,	,
"		,
कुमार	नहीं परणे	३०० ,
राना	परणे	१००० ,
"		" "
कुमार पदवी	नहीं परणे	" "
कुमार पत्नी	"	३०० "
"	परणे	अथेला

तार्थहर	१८ दीक्षानगरी	१७ दीक्षातप
॥ रूपभदेव	अयोध्या	२ उपवास
२ अनितनाथ	,	" "
३ समन्तनाथ	सागथी	" "
४ अभिनन्दन	अयोध्या	" "
५ सुमतिनाथ		एकाशन
६ पद्मप्रभ	कौशारी	२ उपवास
७ लुपा वनाथ	बनारस	" "
८ चन्द्रप्रभ	चन्द्रपुरी	" "
९ सुविबिनाथ	काशी	" "
१० शीतलनाथ	महिलपुर	" "
११ श्रेयामनाथ	सिंहपुरी	" "
१२ घासुपूज्य	चपापुरी	" "
१३ विमलनाथ	फणिलपुर	२ "
१४ अनन्तनाथ	अयोध्या	" "
१५ धर्मनाथ	रत्नपुरी	" "
१६ शातिनाथ	गजपुर	" "
१७ कुशुनाथ	,	" "
१८ धरनाथ	"	"
१९ मल्लिनाथ	मिथिला	३ उपवास
२० मुनिसुन्दर	राजगृह	२ उपवास
२१ नमिनाथ	मिथिला	" "
२२ नेमिनाथ	हारिषा	"
२३ पाश्वनाथ	बनारस	३ उपवास
२४ महावीर	क्षत्रियकुटु	२ उपवास

१८ प्रथमआहार १० पाण्डा रजान २० किन्ने दिनरा पारणा

सेङ्गीरन	धेयाम के घर	१ यय याद
पीर	प्रयदस के घर	२ दिन याद
"	सुरेन्द्रदत्त के घर	"
"	इन्द्रदत्त के घर	"
"	पद्म के घर	"
"	मोमदेय के घर	"
"	माहेन्द्र के घर	"
"	मोमदत्त के घर	"
"	पुण्य के घर	"
"	पुनपामु के घर	"
"	नद के घर	"
"	मुनद के घर	"
"	जय राना के घर	"
"	विजयराना के घर	"
"	धर्मसिद्ध के घर	"
"	सुमित्र के घर	"
"	ध्याग्रमिद्ध के घर	"
"	अपराजित के घर	"
"	विश्वसेन के घर	"
"	ब्रह्मदत्त के घर	"
"	दिनपुमार के घर	"
"	वरदिन के घर	"
"	धन्य के घर	"
"	यहूँ ब्राह्मण के घर	"







नार्थक	२६ ज्ञानतिथि	२७ गणधर
१ अथमनाथ	फागुण यदि ११	८४ गणधर
२ अन्नितनाथ	पौष शु ११	९५ "
३ ममनाथ	कार्तिक यदि ५	१०२ "
४ अभिनन्त	पौष शु १२	११६ "
५ सुमतिनाथ	चैत्र शु ११	१०० "
६ पद्मनाथ	चैत्र शु ११	१०७ "
७ सुपाधनाथ	फागुण यदि ६	९५ "
८ चन्द्रनाथ	फागुण व ७	९३ "
९ सुविधिनाथ	कार्तिक शु ३	८८ "
१० शीतलनाथ	पौ व १४	८१ "
११ श्रेयासनाथ	माघ व ३०	७२ "
१२ वासुपुत्र	माघ शु २	६६ "
१३ विमलनाथ	फा० शु ६	७७ "
१४ अनन्तनाथ	वैशाख व १४	१० "
१५ धमनाथ	पौष शु ११	४३ "
१६ शान्तिनाथ	पौष शु ०	३१ "
१७ कुतुभाथ	चैत्र शु ३	३० "
१८ अग्ननाथ	कार्तिक शु १०	३३ "
१९ मन्त्रिनाथ	मृगशिरा शु ११	२८ "
२० मुनिमुद्रनाथ	फागुण व १२	१८ "
२१ नमिनाथ	मृगशिरा शु ११	१७ "
२२ नमिनाथ	आश्विन व ३०	११ "
२३ पाधनाथ	चैत्र व ४	१० "
२४ महावीर	वैशाख शु १०	११ "

ग्रन्थ में जो २४ तीर्थस्थानों का ही शीक्षादृष्ट अंगोप लिखा है



३३ केवली	३४ मन पर्यवधानी	३५ चौदहपूरी
२००००	१२७० म० १२६५०	४७००
२२००० (१)	१२५५० (२)	३७५०
१ ०००	१२१५०	२१५०
१४०००	११६०	१५००
१३०००	१०४०	२४००
१२०००	१०३००	२३००
११०००	९१५०	२०३०
१००००	८०००	२०००
७५००	७५००	१०००
७०००	७०००	१४००
६०००	६०००	१३००
६०००	१५०० स० श० (३) १०००	१२००
५५००	५५००	११००
५०००	५०००	१०००
४५००	४५००	९००
४३००	४०००	८००
३२०० म० २२००	३३४०	६७०
२८००	२५५१	६१०
२५००	१५०	६६८
१८००	१०००	५००
१५००	१२५० म० १२६०	४५०
१५००	१०००	४००
१०००	७००	३००
७००	५००	३००

(१) 'सप्ततिशतस्थानक' ग्रंथ में मूलसंख्या २०००० मतातरे ५५०००। (२) 'सप्ततिशत' में मूलसंख्या १२५०० मतातरे १२५५०।



३३ कैरली

३४ मन,पर्यवशानी

३५ चौदहपूरी

२००००

२०००० (१)

१५०००

१४०००

१३०००

१२०००

११०००

१००००

७ ००

७०००

६ ००

६०००

५ ०००

५ ०००

४५००

४३००

३२०० म० २२००

२८००

२२००

१८००

१६००

१५००

१०००

७००

१२७ ० म० १२६५०

१२५ ०० (२)

१२१ ५०

११६ ०

१०४ ०

१०३ ००

९१ ०

८०००

७५००

७५००

६०००

६५०० स० श० (३) ६०००

५६००

५०००

४ ००

४०००

३३६०

१५५१

१७ ०

१५००

१५५० म० १२६०

१०००

७ ०

५००

४७ ०

३७५०

३६५०

३५००

२४००

२३००

२०३०

२०००

१ ००

१४००

१३००

१५००

११००

१०००

९००

८००

६७०

६१०

५६८

५००

४५०

४००

३५०

३००

(१)

२५०००

गान' प्र य में मूलसख्या २००००  
'में मूल सख्या १२५०० मतातरे

तीर्थहर	३६ आयक	३७ राशि
१ रुद्रमंदर	३० ०००	२ ४०००
२ अजितनाथ	२९८०००	४००००
३ सभवननाथ	२९३०००	६३२०००
४ अभिनवन	२८८०००	१ २७०००
५ सुमतिनाथ	२८१०००	२१६०००
६ पद्मप्रभ	२७७०००	५० ०००
७ नृपाभ्यनाथ	२७३०००	४९३०००
८ चन्द्रप्रभ	२ ००००	४९१०००
९ सुविधिनाथ	२२९०००	४७१०००
१० शीतलनाथ	२८९०००	४८ ८०००
११ श्रयासनाथ	२७९०००	४४८०००
१२ चासुपूज्य	२१ ०००	४३६०००
१३ तिमलनाथ	२०८०००	४२४०००
१४ अततनाथ	२०६०००	४१४०००
१५ धमनाथ	४१३००० म० २४००००	४१२०००
१६ शक्तिनाथ	२९००००	३९३०००
१७ कुण्डनाथ	१७९०००	३८१०००
१८ अरनाथ	१७४०००	३७२०००
१९ मल्लिनाथ	१८३०००	३७००००
२० मुनिसुवत	१७२०००	३ ००००
२१ नमिनाथ	१७००००	३२८०००
२२ नेमिनाथ	१६९०००	३३६०००
२३ पावननाथ	१६४०००	३३९०००
२४ महावीर	१५९०००	३१८०००

(३) स० श० का अथ सप्ततिशतस्थानप्रकरण है

३८ यक्ष	३९ यक्षिणी	४० प्रथमगणधर
गोमुख	चम्बेसरी	पुडरीक
महायश	अजिता	सिद्धसेन
त्रिमुख	दुरितारि	चारु
यक्षश	कालिका	यज्ञबाध
तुष्टु	महाकाली	चरम
कुसुमयक्ष	अच्युता	सुघोत
मातंग	शाता	रिद्ध
विजय	ज्वाला	दिन्न
अजित	मुनाररा	वराहक
प्रलयक्ष	अशोका	नद
मनुजेश्वर	धीरसा	कौस्तुभ
कुमारयक्ष	चडा'	सुभूम
पद्ममुखयक्ष	विजया	मदर
पातालयक्ष	अकुशा	यश
किन्नरयक्ष	प्रपत्ति	अरिष्ट
गन्ध	निराणा	चक्रायुध
गन्धर्व	अच्युता	शार
यक्षद्र	धरणा	कुम्भ
कुपेर	चैरुट्या	भिक्क
घरुण	दत्ता	मल्ली
भृकुटी	गाधारी	शुभ
गोमेध	अरिका	चरदत्त
पाश्वयक्ष	पद्मावती	आयदिन
मातायक्ष	सिन्धायिका	इन्द्रभूति

१ शक्ति शतस्थानकमे 'प्रपत्ति' नाम है

तीर्थस्थ	४६ अंतरमान	४७ गण
१ ऋषभदेव	५० लाखश्रोड सागर	मानव
२ अजितनाथ	३० " "	"
३ गन्धर्वाथ	१० " "	देव
४ अभिनन्दन	० " "	"
५ मुमतिनाथ	९० हजार " "	राक्षस
६ पद्मप्रभ	९००० " "	"
७ सुपा देवाथ	१०० " "	"
८ चन्द्रप्रभ	९० " "	देव
९ सुविधिनाथ	९ " "	राक्षस
१० शीतलनाथ	७३७३९०० सागर	मानव
११ त्रैपालनाथ	५४ सागर	देव
१२ धामपूज्य	३०	राक्षस
१३ विमलनाथ	९	मानव
१४ अनन्तनाथ	४	देव
१५ धमनाथ	पानपत्त्यापमन्यून ३ सागर	
१६ शांतिनाथ	अर्ध " "	मानव
१७ कुण्डनाथ	श्रोडसहस्रयपयून पाव पत्थो	राक्षस
१८ भरनाथ	१००० श्रोड वष	देव
१९ मालिनाथ	५०००००० वष	"
२० मुनिमुत्तम	१०००००० वष	"
२१ नमिनाथ	१०००००० वष	"
२२ नमिनाथ	८३७ ०	राक्षस
२३ पाश्र्वनाथ	" "	"
२४ महावीर	" "	मानव



धीजनान—गुणसमद

४० मोक्षपरिवार

४८ यानि

नकुल	१००००	साथ
सप	१०००	"
सप	"	"
यिल्ली	"	"
उदर	"	"
प्याम	"	"
"	३०८	"
द्विरण	१००	"
यान	१०००	"
नर	"	"
नकुल	"	"
घाडा	"	"
यकरा	१००	साथ
हाथी	६००	"
यकरा	५००	"
हाथी	१०८	"
यकरा	९००	"
हाथी	१०००	"
अभ्य	"	"
नर	१००	साथ
अभ्य	१०००	"
द्विर	"	"
द्विरण	५३६	"
युयम	३३	"
अकाकी	"	"



## (४) धारणागति अथवा नामा जोडा

ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार हर एक नामगारी पदार्थ का हर एक के साथ एक प्रकार का आभिधानिक सम्बन्ध रहता है। वह सम्बन्ध अनुकूल और प्रतिकूल दो प्रकार का होता है। यह अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों चीजाँ के नाम, नक्षत्र की योनि, गण, राशि और नार्द्धावेध तथा नामाक्षर से जानने योग्य वर्ग और लभ्य-देय (लेना देना) इन छः बातों को देख कर निश्चित की जाती है।

### १ योनि—

भिन्न भिन्न नक्षत्रों की भिन्न भिन्न योनियाँ होती हैं, जैसे अश्विनी की 'घोडा' भरणी की 'हाथी' इत्यादि, इन में जिन दो व्यक्तियों के नक्षत्र विरुद्धयोनि वाले होते हैं वहाँ 'योनिवैर' कहलाता है, जैसे किसी एक का जन्म नक्षत्र 'अश्विनी' है जिस की योनि 'घोडा' है और दूसरे का जन्म नक्षत्र 'हस्त' है जिस की योनि 'भसा' है तो इन दो नक्षत्र-वाली व्यक्तियों में योनिवैर होने की वजह से योनि की अपेक्षा से सम्बन्ध अनुकूल नहीं कहलावेगा।

### २ गण—

नक्षत्रों के गण अर्थात् विभाग ३ हैं—देवगण, मानवगण और राक्षसगण।

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु आदि ९ नक्षत्रों का समुदाय, द्रवगण, भरणी आदि ९ नक्षत्रों का मानवगण और कृत्तिका आदि नक्षत्रों का राक्षसगण ।

दोनों व्यक्तियों के नक्षत्रों का एक गण होना अच्छा है, एक का देव दूसरे का मानवगण हो रहा तब भी साधारणतया ठीक है, परन्तु एक का देव दूसरे का राक्षस होना फलहकारी है और एक का मानव दूसरे का राक्षस गण मृत्युकारी होता है । जैसे अश्विनी नक्षत्र वाले का द्रवगण है और कृत्तिका नक्षत्रवाले का राक्षस जो फलहकारी है । इस लिये इन में गण-मेल नहीं कहा जायगा । इस कारण अश्विनी और कृत्तिका नक्षत्रवालों का सवन्त्र गण की अपेक्षा से अच्छा नहीं है ।

### ३ राशि

राशि का तात्पर्य नक्षत्रों के समुदाय से है । कुल २७ नक्षत्र हैं और १२ राशि, अतः एक राशि सवा दो नक्षत्रों का एक राशि होगा । जैसे १ अश्विनी २ भरणी और कृत्तिका का प्रथम एक चरण मिलकर पहला मेष राशि होता है, इसी प्रकार सवा दो दो नक्षत्रों का एक एक राशि गिनने से २७ नक्षत्रों के १२ राशि होते हैं ।

इन राशियों में से एक व्यक्ति के राशि से दूसरे व्यक्ति का राशि दूसरा या सारहवाँ नौवा या पाचवाँ छठा या आठवाँ हो तो वह शुभ नहीं गिना जाता, इन को क्रमशः दूआ बारह

नव पंचम और षट्ष्टक राशि कूट कहते हैं। जिस एक व्यक्ति का राशि मेघ है और दूसरे का वृष तो यह 'दूआ मारह' हुआ, क्योंकि मेघ से वृष दूसरा है और वृष से मेघ मारहगा। इसी प्रकार नव पंचम और षट्ष्टक के उदाहरण स्वयं समझ लेना चाहिये।

### ४ नाडीवेध—

मर्पाकार चक्र बना कर ऊपर गीच में नीचे, नीचे गीच में ऊपर, ऊपर गीच में नीचे इस क्रम से अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्र लिखे जाते हैं जिन में से ९ ऊपर ९ गीच में और ९ ही नीचे आते हैं इन्हीं उपरली निचली और निचली लाइनो का नाम क्रमशः आद्य मध्य और अन्त्यनाटी है।

इन में ऊपर गीचे या नीचे की एक ही लाइन में दोनों नक्षत्रों का आना नाडीवेध कहलाता है। वध और वर जिनमित्र और बिम्बकारक आदि का नाडीवेध उज्जित किया है, तब कहीं कहीं नाडीवेध को उत्तम भी माना है।

### ५ वर्ग—

वर्ग का तात्पर्य वर्णमाला के वर्णवर्गों से है, अर्थात् १ अवर्ग २ कवर्ग ३ चवर्ग ४ टवर्ग ५ तवर्ग ६ पवर्ग ७ यवर्ग और ८ शवर्ग ये आठ वर्ग हैं। इन में से किसी भी वर्ग से पाचरा वर्ग शुरु रहलाता है। जैसे एक व्यक्ति का वर्ग

हैं और दूसरे का 'त' तो इन दोनों में वर्गसम्बन्धी बैर रहला  
यगा जो रजना चाहिये ।

६ लभ्य-दय—

लभ्य-दय को लोक प्रसिद्धि में लेना दनी भी कहते हैं।

दो व्यक्तियों में से कौन जिम का लेनदार है और कौन  
दनदार यह देखने की प्राचीन रीति यह है—दोनों व्यक्तियों  
क नाम के पहले अक्षरों के वर्ग के अक्षर निश्चित कर दोना  
अक्षर आगे पीछे लिखना और जो सरया बने उस को ८ का  
भाग देना, शेष उचे उसका आधा करना, जो सरया आवे  
उतने विश्वा आगे के वर्गवाला पिछले वर्गवाले का देनदार है।

उन्हीं दो वर्गों को दूसरी बार पहले से विपरीत लि-  
खना और उसी तरह भाग द कर शेष का आधा कर देखना  
दोनों में से एक दूसरे का एक दूसरे में क्या लेना है और क्या  
देना सो मालूम हो जायगा। दोना का लेन देन चुकाने के  
बाद जिम का विश्वा बंधेगा वह दूसरे से उतने का लेनदार है।

अगर दोनों व्यक्तियों का वर्गांक एक हो तो उस वर्ग  
के वर्गों का अक्षर ले कर ऊपर मुजब लेन दन देखना चाहिये।

उदाहरण के तौर पर ईश्वरलाल और चपालाल के आपस  
में लेन देन क्या है ? यह प्रश्न है। उत्तर—ईश्वरलाल का  
वर्गांक १ है, क्योंकि 'इ' अर्गस अक्षर है और चम्पालाल का  
वर्गांक ३ है। इन दोनों अक्षरों को आगे पीछे लिखने से क्रमशः

१३ और ३१ की सरया होगी । १३ को ८ का भाग देने पर शेष ५ बचे, इन का आधा २॥ हुए । इस से प्रात हुआ कि चम्पालाल ईश्वरलाल से २॥ विश्वा मागता है । विपरीत अरु जोड़ने पर ३१ की सरया हुई इसको ८ का भाग देने पर शेष ७ बचे इनका आधा ३॥ साढ़ तीन हुए इन में से २॥ विश्वा चम्पालाल के लेने में गये शेष १ विश्वा ईश्वरलाल का चम्पालाल में लेना रहा, इसलिये चम्पालाल ईश्वरलाल का ऋणी रहा जायगा और ईश्वरलाल चम्पालाल का धनी । दूसरा उदाहरण—राम और लक्ष्मण में कौन ऋणी धनी है ? उत्तर—राम लक्ष्मण का वर्ग एक ही है इस ग्रास्ते इन के गणा का एक लिया जायगा 'राम' का नामाक्षर 'यवर्ग' का द्वितीय वर्ण है इसलिये अक्षर २ आया और लक्ष्मण का 'ल' उसी वर्ग का तृतीय वर्ण होने से ३ अक्षर लिया । साथ लिखने पर २३ की सरया हुई इस को ८ का भाग देने पर शेष ७ बचे इस का आधा ३॥ साढ़ तीन विश्वा राम में लक्ष्मण के लेने हैं । अब वही अक्षर विपरीत क्रमसे लिखा तो ३२ हुए, इस सरयाको ८ का भाग देने पर शेष कुछ नहीं बचा । इस से सिद्ध हुआ कि लक्ष्मण के पास राम कुछ भी नहीं मागते पर लक्ष्मण राम में साढ़ तीन विश्वा मागते हैं ।

उपर्युक्त योनि, गण, राशि और नाडीवेध ये चार बातें तो जन्म के ऊपर से देखी जाती हैं परन्तु लेन प्रथम अधर के ऊपर से

है। यदि किसीका जन्म नक्षत्र मालूम न हो तो मभी बात उस क प्रसिद्ध नाम से दखी जाती है ।

तीवकर भगवान् की नवीन मूर्ति बनवा कर जजनशलाका प्रतिष्ठा करने म भी उपर्युक्त छ ही बातों का विचार किया जाता है ।

यदि कोई व्यक्ति अपनी तरफ से मूर्ति बनवा कर प्रतिष्ठित कराता है तो उस के नाम और तीवकर भगवान् के नाम स उक्त छ बातें दखी जाती हैं और सघ की तरफ से मूर्ति की प्रतिष्ठा होती है तो उस गात्र क नाम से उक्त बाता का मेल जोल दखा जाता है ।

उपर हमने जिन छ बातों की शुद्धि होने की बात कही ह उन में से योनि, गण, राशि और वर्ग इन चार बातों में कुछ अपवाद भी कह हुए हैं, जो अरुश्य जानने और ध्यान में

१ तत्र यस्य धनिकस्य जिनस्येव जन्मनक्षत्रं प्रापते तस्य जन्मनक्षत्रेण धानिगणराशय एव नादिवेधश्च विलोप्यो न तु वगलभ्यः । वगयोरितरेतरचमत्त्र मित्यो लभ्य दय च निनस्येव तस्यापि प्रसिध्धेनैव नाम्ना विलोप्यम् । जन्मनक्षत्राऽ परिज्ञाने तु तस्य धान्याद्यपि सर्व प्रसिध्धेनैव नाम्ना विलोप्यम् ।”

( धारणागतियन्त्राम्नाये )

२ धानिगण-राशिमेव लभ्य वगश्च नादिवेधश्च ।

नूतनरिम्बविधाने, पद्धिधमेतद्विलोप्य द्वे ॥ १ ॥”

( धारणागतियन्त्राम्नाये )



रखने योग्य है। वे अपवाद नीचे मुजब हैं जिन से योनि पैरादि होते हुए भी नामाजोडा निटोप माना जाता है।

### योनिचैर मे अपवाद

वनिक (मूर्ति फराने वाला) और दब (जिस तीर्थंकर की मूर्ति है) के नक्षत्रों की योनि में परस्पर वैरभाव होने पर भी अगर धनिक नक्षत्र की योनि से जिन नक्षत्र की योनि कमजोर हो तो वहा नामाजोडा शुद्ध माना जाता है। जैसे केरलचद के जन्म नक्षत्र 'पुनर्वसु' की योनि चिल्ली (माजरी) है और सुमतिनाथ के जन्म नक्षत्र 'मघा' की योनि मूपर (उदर), यहा यद्यपि चिल्ली और उदर के आपस में वैर होने से केरलचद और सुमतिनाथ के नामाजोडा में योनिचैर है, परंतु यह योनिचैर दोषरूप नहीं। क्योंकि धनिक केरलचद जो सुमतिनाथ से कमजोर है उसकी योनि बलवान् है और देव सुमतिनाथ जो बलवान् है उन की योनि केरलचद की योनि से निर्मल है, इस कारण यहा योनिचैर का कुछ असर नहीं होता।

इसी प्रकार सर्वत्र धनिक की योनि दब की योनिसे बलवान् होने पर योनिचैर का दोष नहीं माना जाता।

१ 'उयो-यग-उया-वनिकस्य योनिगणवगा बलिष्ठा मन्तीति, अथ भाव — अल्पबलेन बलिष्ठो न पराभूयते इत्यभिप्रायेण धनिकस्य माजारादिबलिष्ठो देवस्य चोदुरादिरयं गृहाताऽस्तीति'।

यदि द्रव और धनिक म योनिवर हो और द्रव की योनि भी चलवान् हो तथापि उहा जातिवर न हो तो उह र भी अश्य वर्जनीय नहीं है, क्यारि योनिवर जातिवर रूप होन पर ही अश्य वर्जनीय ह' ।

### गणवैर मे अपवाद

इसी प्रकार रनिर और देर के नजरा में गणवैर होने पर भा धनिक का गण चलवान् और 'द्रव' का गण निर्मल होने पर गणवैर का असर नहीं रहता' । उदाहरण-सुरत का गण 'राभम' है और जाडिनाथ तथा अजितनाथ का गण 'मानर' । यद्यपि मानर राहम का भक्ष्य है तथापि मानरगण माल गक्षसगण वाले से चलवान् हइस कारण यहा गणविरोध हानिकारक नहीं हो सकता ।

### राशिवैर मे अपवाद

राशिकूट में हम लिख आये ह कि द्रव धनिक क अन्योन्य नव पचम, पडएक और दूसरा वारहवा राशि हो तो वर्जनीय ह, परन्तु इन दोनों राशिया क स्वामिया म परस्पर मित्रभाव हो तो ये राशिकूट दूषित नहीं है' ।

१ धनिकस्य यानियगा अगला पर नाय विनाय दोष, जातिवैराभावात् । शायेषु च योनिस्त्वस्य जातिवैरस्यैव xxxरजनात् । ( धारणागतियत्र आम्नाये )

२ दक्षो पूर्वक पृष्ठमें टिप्पण नजर ? ।

३ 'यत्र तु पडएक-द्विर्द्वादश-नवपचमेपु न राशिमैत्री तानि स्वामिमत्रथा ग्राथाणीति ।' ( धारणा म य आम्नाये )

उदाहरण—सुरत क माय सुपार्श्वनाथ का नामाजोडा मिलता है या नहीं इस की जांच करने पर मालूम हुआ कि सुरत का राशि कुम्भ है और सुपार्श्वनाथ का तुला। कुम्भराशि से तुलाराशि नौरा है और तुला से कुम्भ पाचरा इस लिए सुरत और सुपार्श्वनाथ के परस्पर नवपचम राशिदृष्ट है, परन्तु यह नवपचम दूषित नहीं है, क्योंकि कुम्भराशि—स्वामी शनि और तुलाराशि—पति शुक के आपस में मैत्री है। इस राशि—स्वामी—मैत्री से राशिदृष्ट नव पचम का कुछ दोष नहीं। सुरत गुराणा या अन्य किसी भी ऐसे गाम या व्यक्ति के साथ जिसके नाम का प्रथम अक्षर 'म, मि, सु' इनमें से कोई भी अक्षर हो सुपार्श्वनाथ का नामाजोडा शुद्ध मिलता है यही रहना चाहिये।

### वर्गचर मे अपवाद

ऊपर कहा गया है कि वर्गचर रजना चाहिये परन्तु वैर अन्योन्य पचमरग सम्बन्धी हो तभी वर्जित है सामान्य नहीं। अन्योन्य पचमरग विषयक वैर होने पर भी यदि धनिक का वर्ग बलवान् हो और देवरा निर्मल तो वहा वर्गचर आपत्ति जनक नहीं है। उदाहरण—गोल का वर्ग चिल्ली है और पार्श्व-

१ 'वर्गवर्गस्येतरैतरणश्चमन्वरूपस्यैव वर्चनात्'।

(धारणागतियन्त्राभ्यासे)

२ 'धनिकजिननामवर्गव्याख्येतरैतरणश्चमन्वरूपस्यैव वर्चनात्'।

नाथ का वर्ग उदर । चिह्नो उदर में यद्यपि रैर है परन्तु यहा निर्वल का र्ग मबल और मबल का वर्ग निर्वल होने म वर्ग रैर सरन्वी हुठ भी दोषापत्ति नहीं है ।

ऊपर लिखे मुजय योनि, गण, राशि और र्ग विषयक दोषों का तो परिहार है परन्तु नार्दीवेय और लेनादनी क विषय में हुठ भी अपवाद नहीं है इसलिये नार्दीवेघ अरश्य र्जना चाहिये और लेना दनी के विचार में थोडा बहुत भी दन का धनिक लेनदार होना चाहिये न कि देनदार ।

ऊपर नामा जोडा देखने मबन्धी छ बातों और उन के अपवादों का जो दिग्दर्शन कराया है उसको समझ कर ध्यान में रखना चाहिये । और इन सभी बातों को दृष्टि में रख कर किसी भी ग्राम नगर या व्यक्ति क माथ जिन बिब का नामा जोडा देखना चाहिये । ऐसा करने वाले कभी धोखा नहीं खायेंगे ।

आज कल श्रावक लोगों में ज्ञान जनज्ञान की परीक्षा न होने से अथवा दृष्टिराग क कारण व हर किसी को ये बातें पृष्ठ बैठते हैं और अर्धदग्ध भिव्याभिमानी माधु और यति यदि धनिको मार्जार स्याज्जिनस्योदुर स्यात्तदा न दापो विषयये तु दोष । पवमयत्रापि भाव्यम् ।'

( धारणागतियत्राम्नाये )

१ नार्दीवेधश्चात्र सबध टालित पव । "

( धारणा ग म ज्ञाम्नाये )

लोग विषय के जानकार न होते हुए भी अभिमान के वश जत्रता छिपाने के लिये कुछ न कुछ जडबड उत्तर द ही दते हैं, वे यह तो जानते ही नहीं कि इस विषय में कुछ अपवाद और परिहार भी होते हैं, मरिफ राशि या र्ग आदि गिन कर रह दते हैं कि तुम्हारे लिये अमुक अमुक भगवान की मूर्ति अनुकूल है और वे पूछने वाले जष्टि गग से या तो खोटी प्रमिद्धि के वश अंधे हो कर उम जम य रात को भी सत्य मान लेते हैं । यदि पूछने वाले किसी धारणागतियत्र-वेत्ता विद्वान् के पास पूछ कर जाये हैं और रहते हैं कि अमुक महा राज ने तो ये ये नाम अनुकूल माना है तो वे अर्धदग्ध तुरत पचाग टटोलने लगते हैं और बताये हुए नामों के साथ वही प्रीतिनयचम, प्रीतिपडष्टक या प्रीति दूआगरह जैसा होता है तो रह बैठते हैं—दखो हम म फला फला दोष है । हम उम अर्धदग्ध की बात से लोगों के दिल में शका उत्पन्न हो जाती है और यदि मूर्ति ले जाय है तब तो वे निरर्थक पश्चात्ताप करते हैं और मूर्ति लानी होती है तो वे अनेकों के पाम खाकर छानते फिरते हैं और तरह तरह की बातें सुन कर सशयाकुल होते हैं । उस इन खराबिया को दूर करने और अर्धदग्धों को समझ देने के लिये ही यह लेख लिखना पड़ा है ।

मु लेटा, (मारवाड)

ता १२-१०-३४

}

मुनि कल्याणविजय

(५) घर कहा और कैसा बनाना चाहिये ?

जैन श्रावण को जिस जगह कैसी जमीन में और कैसा घर बनाना चाहिये इसका कुछ नियम नीचे दिया जाता है।

गृहस्थ को चाहिये कि अपने रहने का घर ऐसी जगह बनाय जहा कम अव और कम इन तीनों की सामना होती रह, जहा जैनमंदिर का योग हो, जहा मुनि महाराजा का दर्शन का और व्याख्यान सुनने का लाभ प्राप्त होता हो, जहा समस्त श्रावकों की वसती भरपूर हो, आसपास के पड़ोसी लोग सदाचारी हों और जहा भी श्रावणवा अच्छी हो।

अच्छे गांव में रहने से दिन बदिन घर की और कुटुम्ब की आशादी और उन्नति होती रहती है। कुग्राम में निवास करने से शर्मा मनुष्य की जीदगी खराब हालत को पहुँच जाती है, बुद्धि और विचार भी मलिन बन जाते हैं, इस दशा में न इस लोक का साधन होता है न परलोक का। व्यर्थ गृहस्थ जीवन नष्ट हो जाता है। एक नीतिज्ञाने कहा है कि—

“यदि बाह्यसि मूर्खत्वं, ग्रामे वस दिनत्रयम् ।

अपूर्वस्यागमो नास्ति, पूर्वाधीत च नश्यति ॥ १ ॥”

ह विचारशील सज्जन ! अगर तू सुख होना चाहता है तो अविवेकी गांव में तीन दिन निवास कर, कारण के उस गांव में नवीन ज्ञान की प्राप्ति नहीं है और पहले का पढ़ा हुआ नष्ट हो जाता है।

इस लिये अच्छे गांव में धर्मप्रमी श्रावण के नजदीक में घर बनाना श्रावण के लिये लाभकारी है ।

### योग्य जमीन की परीक्षा

जिस जमीन पर इमारत खड़ी करनी हो वहां पहले खुदवाना चाहिये, ऐसा करने में वहां से खराब अपभागलिक चीजें निकल जाती हैं ।

जिस जमीन में हड्डी न हो, गांव न हो, जहां डाम उगता हो, बर्ण और गंध मिट्टी का अच्छा हो, जहां से मीठा जल निकलता हो वह जमीन अच्छी है ।

जो भूमि शीतकाल (सर्दियां) में उष्णस्पर्श वाली हो याने होने से गरमी मालूम दती हो और ग्रीष्म ऋतु (उन्हाला) में शीतस्पर्श वाली याने होने से ठंडक मालूम दती हो वह बहुत ही उत्तम जमीन है । तथा एक हाथ प्रमाण जमीन खोद कर फिर उसी मिट्टी में लुहा भर दवे, भग्ने पर अगर मिट्टी अधिक रह तो वह जमीन श्रेष्ठ है, अगर मिट्टी बराबर रह तो मध्यम भूमि समझना और मिट्टी कम मालूम दवे याने उस से गड्ढा न भरे तो वह जमीन अशुभ है । अथवा हाथ प्रमाण समचोरम और गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दे अगर साठ रुदम तक चले तबने समय में एक अगुल जल सूखे तो वह जमीन शुभ जानना, दो अगुल जितना जल सूख जाय तो मध्यम और तीन अगुल जल सूख जाय तो वह भूमि अधम अर्थात् अशुभ है ऐसा समझना चाहिये ।

जिन भूमि में त्रीहि (चारल) गोया गया तीन दिन के बाद उम उमको उत्तम, पाच दिन के बाद उम उमको मध्यम और सात दिन पीछे उम उसको हीन याने बिलकुल खराब समझा ।

पोली जमीन पर घर बनाव तो निर्धन (रूगाल) बन जाता है और मनुष्य की हड्डी या कगाली जमीन पर घर बनाव तो वहा मनुष्य की जावादी घटती जाता है ।

जमीन में गंध भी हड्डी या जोर खोइ अमयन हो तो राना भी तर्फ से भय होता है, रुचे की हड्डी हो तो बालक मर जाता है, नालक की हड्डी हो तो घर का मालिक निदेश में ही गुजर जाता है, गाय की हड्डी हो तो उस घर में गाय का बिनाग हो मनुष्य की खोपरी केश या भस्म हो तो मरण होता है ।

ऐसे दोष रहित जमीन देख कर घर मकान बनाय ।

घर ऐसे स्थान में बनाना चाहिये कि जहा दिन के दूसरे और तीसर पहर में किसी वृक्ष की या मंदिर के ध्वज (बजा) की छाया न पडती हो । दूसर तीसर पहर में मंदिर की ध्वजा की छाया का घर पर पडना अच्छा नहा, वैसे मंदिर के शिखर की छाया भी घर पर न पडनी चाहिये ।

जेन मन्दिर के पीछे, सूर्य तथा शिवमंदिर के सामने और विष्णुमंदिर के दाये भाग में (डाव भाग में) घर बनाना अच्छा नहा ।



ब्रह्मा का मंदिर चारों दिशा में और चंडिका का मंदिर  
सर्प दिशाओं में छोड़ना चाहिये ।

जिन मंदिर के सामने और दाहिनी (जीमणी) तर्फ और  
शिवमन्दिर के पीछे या बाएँ भाग में रहना कल्याणकारी है ।


गाव क ईशान होने में घर बनाना अच्छा नहीं, बनावे  
तो गृहस्थ को बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं ।

घर बनाते या लेते वक्त बहा क पड़ौसी से किसी तरह  
का टटा या तक्रार करना न चाहिये ।

निनमंदिर की ईंट पत्थर बिगैरह कुछ भी चीज घर में  
न डालनी चाहिये, तथा दूसरे भी किसी दवस्थान की, कृए  
री, गाय री, मठ की, स्मशान की और राजमंदिर की ईंट  
पत्थर या लकड़ी कोई भी चीज घर में न डाले, कारण वे  
चीजें घर में विरोध उत्पन्न करती हैं ।

पत्थर के घर में लकड़े का धमा और लकड़ के घर में  
पत्थर का धमा लगाना अच्छा नहीं ।

गिलहल हलका लकड़ा, कोल्हु का (घाणीका) लकड़ा,  
गाटीका, जरहटका, चरखे का, काटेवाले वृक्ष का, पाच  
उदुनर (उमरा) का और बोहर का लकड़ा घर में न लगावे ।

घर में बीजोरा, केला, दाडिम, चोरडी, जरीरी, हलड,  
इमली और धतूरा न होना चाहिये, ये ही वृक्ष पड़ोस में लगेहों  
और उन की जड़ अपने घर नीचे आवे तो भी अशुभ समझनी  
चाहिय । तथा  लाया भी पड़े तो बुल का नाश करे ।

पूर्व दिशा में घर ऊँचा हो तो धन का नाश करता है, दक्षिण में या पश्चिम में घर ऊँचा हो तो धन की वृद्धि करता है और उत्तर में उँचा हो तो घर उजाड़ हो जाता है।

घर की शरल गोल हो, वह एक कोने वाला, दो कोने वाला, तीन कोने वाला अथवा चार कोने वाला हो और दक्षिण में या पश्चिम में लंबा हो ऐसा घर अशुभ है। उस में रहना ठीक नहीं। जिस घर के चारों ओर अपने आप खुल जाय तो वह घर भी अशुभ है।

घर के द्वार पर कलस स्वस्तिक आदि चित्र हों तो शुभ है, परन्तु घर के भीतर या बाहर नाच, खेल, महाभारत और रामायण के युद्ध के, राजाओं के युद्ध के, साधु सन्यासी के या देवता के चित्र हों तो अशुभ है।

फलता हुआ वृक्ष (दरखत), फुली हुई बेल, सरस्वती देवी, लक्ष्मी देवी, नननिधान, यज्ञ का धर्म, वर्धमान, १४ स्वप्न ये चित्र कराना शुभ है।

घर में खजूर, दाड़िम, कला, कोहला, बीजोरा ये वृक्ष नहीं लगाना, कारण उन से घर का विनाश होता है, मनुष्य का घाटा आ जाता है।

बड़ वृक्ष घर में उगे तो लक्ष्मी का नाश करता है, काटों वाला वृक्ष हो तो दुश्मन का भय रहता है, बड़ फल वाला वृक्ष उगे तो सत्त्व का नाश करता है, ऐसे वृक्ष का काट भी छोड़ देना चाहिये। कितनेक कहते हैं कि घर के पूर्व दिशाभाग

में उड़वृक्ष हो तो अच्छा है, दक्षिण तर्फ उदुनर (उवरा) वृक्ष शुभ है, पश्चिम भाग में पीपला और उत्तर में प्लक्ष (पारस पीपला) वृक्ष अच्छा है।

घर में पूर्व दिशा में लक्ष्मी का स्थान, पश्चिम में भोजन का स्थान, उत्तर में जल रखने का पानिहारा, दक्षिण में सोने की जगह, अग्नि कोन में रसोडा, नैर्ऋत में शस्त्रशाला (शस्त्र रखने का स्थान), वायु कोन में अनाज की गराय और ईशान कोण में देवमंदिर बनवावे।

यहां पर पूर्वादि दिशाओं का हिसाब घरक दरवाजे की अपेक्षासे समझना चाहिये सूर्य की अपेक्षासे नहीं।

घर के अनेक खिडकियां नहीं होनी चाहियें, खिडकी के किवाड मजबूत और आसानी से खोले जावे वैसे बनवाने चाहियें।

इस के मित्राय ओर भी अच्छे अच्छे लक्षण हों वे शिल्प शास्त्र के जानने वाले से पूछ कर कराने चाहिये, निम से भविष्य में हर तरह से यह घर हरा भरा रहे और दिन दिन उस की तरक्की होती रहे।

## (६) सूतक विचार

### जन्म सबन्धी सूतक

पुत्र का जन्म हो तो दस दिन का और पुत्री का जन्म हो तो ग्यारह दिन का सूतक लगता है। बारहवें दिन न्दाने धोने का रात वह हो जाता है।

शास्त्रानुसार बारहवें दिन घर के अन्य मनुष्य भगवान् की पूजा कर सकते हैं ।

सूतक माल घर से अलग रह कर भोजन करते हों तो दूसरे के घर से जल लाकर उस से स्नान कर सदा पूजा हो सकती है, शरण कि सूतक जहा जन्म हुआ है वहा गिना जाता है अन्यत्र नहीं । हा इस में इतना जरूर है कि जन्म हुए बालक का पिता अगर अलग रसोई जीमता हो तो भी उस को पांच दिन का सूतक अवश्य पालना पडता है और शामिल रह तो ग्याग्रह दिन का सूतक है ही ।

जन्म देने वाली स्त्री १ महीना तक जिनमदिरका दर्शन नहीं कर सकती, तथा ४० दिन तक भगवान् की पूजा नहीं करती । तथा ४० दिन तक उस के हाथ का बना हुआ भोजन मुनि को लेना न रूप

गोत्री के लिये जो पांच दिन का सूतक कहा जाता है उस का मतलब यह है कि पुराने जमाने में एक कपाउड वाले घर में एक पछीत गाले भिन्न भिन्न कमरों में सारा कुटुन रहता था, निम्नलने का दरवाजा एक ही होता था जिस से वहा गोत्री-जना को पांच दिन का सूतक पालना पडता था । आज कल सब कुटुमी लोग अलग घरां म रहते हैं, एक कपाउड वाला घर नजर नहा जाता इस लिये गोत्री के मास्ते पांच दिन का हिसाब नहीं गिना जाता । अगर उही पर आज भी वैसे घर

हो तो बहा रहने वालों को पाच दिन का सूतक पालना चाहिये ।

सूतक वाले घर से मिला हुआ आस पास किसी का घर हो, मिर्क नीच में आड़ी दिवार ( भीत ) हो परंतु सूतक वाले घर में जाना जाना न होता हो तो उम पड़ोमी में सूतक नहीं लगता । वह दर्शन पूजा विगेरह कर सकता है । उस क घर का आहार मुनिराज ले सकते हैं ।

प्रसूति वाली क खान पान रसोई आदि की सरभरा करने वाली स्त्री के सिर्फ ग्यारह दिन का ही सूतक है, इतने दिन तक सामायिक प्रतिक्रमण द्रवदर्शन आदि नहीं कर सकती । कितनेक लोग उम के लिए सत्ताइस दिन का पर हेज करना कहते हैं सो व्यापहारिक रुढि है, इस रुढि को मान कर ही कितनीक जगह मुनिराज सूतक वाले क घर से सत्ताइस दिन तक आहार पानी नहीं लेते हैं, इस का भी कारण देखा जाय तो यही है कि विशेष सफाई नहीं रहती इस लिये २७ दिन की रुढि चलाते हैं, जहा स्त्रिया सफाई अच्छी रखती हा वहा १२ दिन के बाद आहार पानी लेने में कुछ दोष नहीं है । गुजरात म रुढि नहीं ऐसा रिवाज भी है । मगर उस में देखना यह चाहिये कि बारह दिन के बाद भी जन्म देने वाली स्त्री पनेहरे को छूती न हो अथवा रसोई बनाती न हो । तात्पर्य यह है कि रसोई दूसरी स्त्री करती हो और प्रसूती वाली स्त्री जल तथा रसोई घर में न जाती हो तो बारहदिन के बाद आहार लेना कल्पे, अन्यथा २७ दिन के बाद ।

यहा पर कितनेक लोगो का खयाल है कि सुआवड वाली स्त्री को रसोइ कर खिलाने वाली पर तेले (अट्टम) का दड आता है यह टीका नहा है, यह जो तेले का दड शास्त्र में लिखा है यह नाल उठना स्नान कराना आदि दाई का काम करने वाली क लिये है।

कितनेक यह भी कहते हैं कि जिस घर म जन्म हुआ हो उस के आम पास के तीन तीन घर छोड कर साधु को जाहार पानी लेना चाहिये, मगर यह भी गलत है। तीन तीन घर छोडने का मूल तात्पर्य यह है कि किसी घर में कोई मर गया हो और जब तक मुडदा बहा पडा हो तब तक दोनों तफ के तीन तीन घरों में पठन पाठन नहीं हो सक्ता।

व्यग्रहार नामक छेद सूत्र की टीका में दश दिन के सिंगाय अधिक सूतक नहीं बतलाया, लेकिन लोगो में बराबर आचार रिचार गुड न रहने लगा तब पिछले पुस्तो ने समय देख कर सूतक मे रूमी वेशी की है, उस मुताबिक रिवेकी पुरख पालन करते रह।

अपने घर में दाम दासी जो अपने आधार पर रहे हुए हों तो उन का सूतक सिर्फ चोदम पहर का है। चोदम पहर के बाद देव दर्शन पूजा सामायिक आदि हो सक्ता है।

गाय, भैस, ऊटनी, घोटी घर में ग्रसवे तो दो दिन का सूतक और बाहर ग्रसवे तो दिन १ का सूतक होता है।

भैंस का दूध दही घी १५ दिन के बाद, गाय का दूध दही घी विगैरह तथा उटणी मा दूध प्रसव से दश दिन के बाद काम आता है और बम्सी घेंटी का ८ दिन के बाद । अर्थात् प्रसव से इतने दिनों के बाद दूध घी विगैरह खाने लायक होते हैं, पहले नहीं । पहले खाय तो पूजा प्रतिक्रमणादि नहीं कर सकते, सिर्फ बाहर से दशन में विशेष प्रतिबन्ध (हर्ज) नहीं है ।

### रजस्थला (कारणवाली) स्त्री का सूतक

कारण वाली स्त्री तीन दिन तक घर में रहती आदिशो नहीं छ मरती, दर्शन सामायिक, प्रतिक्रमण नहीं कर मरती, लेकिन तपस्वा करे वह गिनती में आ सकती है । दिन ४ के बाद जिन पूजा कर सकती है, रोग के कारण स्पष्ट धोने के बाद अशुद्धि नजर आवे उस का हर्ज नहीं, शुद्धि पूर्वक दर्शन हो सकता है । मुनिरान को दान द सकती है, मगर भगवान् की अंगपूजा न कर सके ।

कारण वाली स्त्री को चाहिये कि तीन दिन तक इलाहिद कमरे में बैठे, घर में पनेहरा रसोडा या जहा घर के दूसरे मनुष्यों के सोने बैठने की जगह हो वहासे दूर रहे ।

वई जगह देखा जाता है कि ऋतुवती स्त्रिया पूरा खयाल नहीं रखती, सारे घर में इतर उधर फिरने लग जाती है, यहां तक कि रसोड का भी पूरा परहज नहीं रखती, यह कितनी

अज्ञानता है ?। कई जगह ऐसा भी अफसर देखा गया है कि कारण वाली स्त्री गोबर ला कर घर में लीपणे का काम करती है अगर बुद्धि से विचार किया जाय तो घर में लीपना शुद्धि के मास्ते है और जब यह स्त्री तो मुद अशुद्ध हालत में है तो फिर उसके हाथ का लीपना किस काम का ? , यह तो उल्टा ज्यादा अशुद्ध हुआ । इस लिये इस विषय में कारणवाली स्त्रियां को बहुत मोच विचार कर चलना चाहिये ।

### मरण सत्रथी सूतक

घर का जोई मनुष्य गुजर जाय तो १२ दिन का सूतक होता है, १२ दिन तक उस के घर से मुनिराज आहार पानी नहीं ले सकते, उसके घर के जल से जिनपूजा नहीं हो सकती ऐसा निग्रीथचूर्ण में कहा है । तथा १२ दिन तक उस घर वाला पूजा सामायिक प्रतिक्रमण नहीं कर सकता, पुस्तक और माला के हाथ नहीं लगा सकता, माला गिनने का नियम हां तो होठ हिलाये बिना मन में नवकार मंत्र गिने और मंदिर दर्शन भी बाहर से ही करे ।

निग्रीथ ग्रन्थ के सोलहवें उद्देशे में जन्म और मरण का घर दुगठनिक (अशुद्ध) कहा है ।

मृत्यु वाले के पास सुवेतो दिन ३ पूजा नहीं हो सकती ।

खाधिया या मुठदे को छूने वाला दिन ३ पूजा शडिक-मणादि नहीं कर सकता मगर मन में नवकार गिने तो जोई हर्ज नहा ।



मुड्ड को स्पर्श न किया हो और मिलकुल निराला रहा हो यहा तक कि श्मशान का धूआ तक न लगा हो तो स्नान करने पर शुद्ध है ।

खाधिये के सिवा दूसरा कोई मुद् न स्पर्श कर तो सोलह पहर पूजा पडिकुमणादि नहीं कर सक्ता ।

जिस के घर जन्म या मरण हुआ हो वहा भोजन करने वाले दिन १२ तक पूजा नहीं कर सक्ते ।

वेप बदलने वाले याने मरने की खबर सुन स्नान कर क कपडे बदलने वालो को ८ पहर का सूतक लगता है ।

बच्चा जन्मे उसी दिन मर जाय अथवा निदेश में मरण हो तो दिन १ का सूतक, तथा माधु यति मरे तो भी दिन १ का सूतक है ।

८ वर्ष तक की उमर का बालक मरे तो दिन ८ का सूतक है, परंतु जो बच्चा दूधमुहा हो अनाज न खाता हो तो सिर्फ ३ दिन का सूतक है । ८ वर्ष के ऊपर हो तो दिन १२ गिने जाते हैं ।

गाय भैंस आदि मर जाय तो उनका कलेवर घर से बाहर ले जाने के बाद १ दिन का सूतक और किसी दूसरे पशु पक्षी का कलेवर पडा हो तो वह जब तक न हटाया जाय तब तक सूतक लगता है वहा से बाहर ले जाने के बाद नहीं ।

कोई दास दासी अपने घर में गुजर जाय तो सिर्फ तीन दिन का सूतक माना गया है ।

जितने महीने का गर्भ गिरे उतने दिन का मृतक समझना, परदश में गये हुए का मरण समाचार सुने तो १ अथवा २ दिनका मृतक लगे ऐसा कल्पभाष्य का लेख है।

गोमूत्र में २४ पहर के बाद समूर्णितम जीव उत्पन्न होते हैं। भस क मूत्र में १६ पहर बाद जीव उत्पत्ति, गाडर गधी तथा घोड़ी क मूत्र में ८ पहर बाद जीव उत्पत्ति और मनुष्य के मूत्र में ४ पहर बाद समूर्णितम जीव उत्पन्न होते हैं।

### (७) रोगी-मृत्युज्ञान।

रोगीमृत्युनायक त्रिनाडीचक्र पहला।

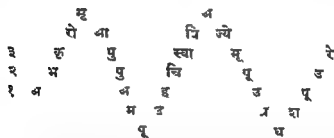
इस चक्रका नाम 'त्रिनाडीचक्र' है। इसका दूसरा नाम 'धृजग चक्र' भी है। इसके बनाने का विधान नीचे के प्राचीन पद्य में दिया है—

'आश्चवाह धरेवि भुनगह पनरस माहि ठवेविणु अगह।  
गरम गहिरि तस्स य विज्जह जीविय-मरण कुड जाणिज्जह॥'

अर्थात् प्रथम आदिनाडी में रवि नक्षत्र लिखना फिर मध्य और अत्य नाडी में अनुक्रम से उसके बाद का एक एक नक्षत्र लिखना उसके बाद तीन नक्षत्र अत्यनाडी के ऊपर बाहर लिख कर फिर अत्यनाडी से शुरू करके आदिनाडी तक तीन नक्षत्र लिखे, बादमें आगे तीन नक्षत्र आदि नाडी के नीचे बाहर लिखे और फिर आदि मध्य अत्य नाडियों में क्रमशः तान नक्षत्र लिख कर अत्यनाडी के ऊपर तीन नक्षत्र लि

खे, वाद म अत्य मध्य आदि नाडियों में तीन नक्षत्र लिख-  
कर आदि नाडी के नीचे बाहर तीन नक्षत्र लिखे और फिर  
आदि नाडी से लेकर अत्यनाडी तक में तीन नक्षत्र लिख दें।  
इस प्रकार एक एक नाडी के ५-५-नक्षत्र मिलकर कुल १५  
नक्षत्र तीन नाडियों में आवेंगे, अत्य नाडी के ऊपर दो ज  
गह लिखे हुए ३-३-नक्षत्र और आदिनाडी के नीचे बाहर  
दो जगह लिखे हुए ३-३-नक्षत्र मिलकर कुल १२ नक्षत्र ना  
डियों के बाहर आवेंगे।

### चक्र की स्थापना—



इस चक्र में रवि नक्षत्र से लिखने का प्रारम्भ करना चाहिये। यद्वा पर अधिनी से प्रारम्भ करके कुल नक्षत्र लिखे हैं, क्योंकि अधिनी को ही यद्वा कल्पना से रवि नक्षत्र मान लिया है। देखने के समय रोगी जिस समय बीमार पड़ा उस समय सूर्य किस नक्षत्र पर था इस बात का निश्चय पचाग में देखकर कर लेना चाहिये और फिर उस नक्षत्र को आदि ना-

डी में प्रथम लिख कर फिर ऊपर लिखे क्रम से नाडी के तमाम नक्षत्र लिख लेना चाहिये । "

इस प्रकार तत्कालीन चक्र तैयार होजाने के बाद उसमें रोगी के जन्म नक्षत्र को देखें कि वह किस नाडी में पड़ा है, अगर आदि नाडी में रोगी का जन्मनक्षत्र पड़ा हो तो रोगी की मृत्यु होने का समय जानना चाहिये। रोगी का जन्म नक्षत्र मध्य नाडी में पड़ा हो तो दीर्घपीडा कहना और रोगी का नक्षत्र अन्त्यनाडी में जाया हो तो अल्प कष्ट कहना । रोगी का जन्म नक्षत्र जो नाडी चक्र कबाहर के नक्षत्रों में पड़ा हो तो समझना चाहिये कि नाम मात्र का कष्ट देखकर रोगी अच्छा हो जायगा ।

रोगी मृत्युज्ञानार्थ त्रिनाडी चक्र दूसरा—



इस चक्र के लिखने की रीति भी पूर्वोक्त पहले चक्र के जैसी ही है, फरक मात्र इतनाही है कि पहले चक्रमें रवि नक्षत्र से नक्षत्र लिखने की शुरुआत होती है और इसमें आर्द्रा नक्षत्र से ।

“भाद्राचि पञ्चदशमिस्त्रीणि धीष्यन्तरा त्यजन् ।  
त्रिनाडीचक्र चट्टाक-जन्मप्रेषे ॥ जीवति ॥”

अर्थात् नीच म तीन तीन नक्षत्रों को छोड़ते हुए आर्द्रा-  
दि पंद्रह नक्षत्रों से त्रिनाडीचक्र बनाना। इसमें चन्द्रनक्षत्र ध-  
र्यनक्षत्र और रोगीना जन्म नक्षत्र ये तीनों नक्षत्र एक नाडी  
में हों उस समय रीमार पड़ने वाला रोगी मर जाता है।

सूर्य नक्षत्र और रोगिनक्षत्र एक नाडी में हों तो अधि-  
क कष्ट और सूर्य नक्षत्र रोगीनक्षत्र चंद्र नक्षत्र ये तीनों भिन्न  
भिन्न नाडियों में हों तो स्वल्प कष्ट भोग कर अच्छा हो  
जाता है।

रोगिमृत्युज्ञानार्थ त्रिनाडी चक्र तीसरा—

३	पु	अ	वि	स्था	पू	उ	उ	रे	मृ
२	पु	म	ह	धि	मू	श्र	पू	अ	रो
१	आ	पू	उ	अ	ज्ये	ध	श	भ	ह

इस तीसरे नाडीचक्र में भी आर्द्रा से ही नक्षत्र लिखे  
जाते हैं, परन्तु ऊपर के दो चक्रों में तीन तीन के बाद तीन  
तीन नक्षत्र ऊपर नीचे ग्राह्य लिखे जाते हैं वैसे इसमें नहीं  
लिखे जाते, इसमें तो आर्द्रा पुनर्वसु और पुष्य आदि मध्य  
और अत्यनाडी में लिखकर फिर आश्लेषा मघा और पूर्वाषा-  
ल्गुनी अत्य मध्य आदि नाडी में लिखना, इसी प्रकार  
नीचे से ऊपर नीचे लिखत हुए २७ नक्षत्र तीन

नाडियां म लिख दिये जाते हैं। इस चक्र की विज्ञान गाथा नीचे मुजब है—

‘साईं जहा मिग बते मज्झे मूल परद्विज ।  
रसोदुज्जम्भनपयन तिचिद्धो न हु जीवति॥’

अर्थात् आदि में आर्द्रा जत में मृगशिरा और मध्य में मूलको रखना इनके जगले पिछले नखत्र आगे पीछे तीनों नाडियां में लिखना, फिर रोगोत्पत्ति समय के सूर्य नक्षत्र की चंद्र नक्षत्र की और रोगी के जन्म नक्षत्र की तलाश करना, अगर तीनों नक्षत्र एक ही नाडी में पड़ हों तो रोगी का जीना कठिन है। सूर्य नखत्र और रोगी नक्षत्र एक नाडी में हों तो अधिक कष्ट भोग कर रोगी अच्छा होगा, रोगी नक्षत्र और चंद्रनक्षत्र एक नाडी में हो अथवा तीनों नक्षत्र भिन्न भिन्न नाडियों में हों तो जल्द कष्ट भोगने के बाद रोगी अच्छा होगा।

नाडी चक्रों के विषय में विशेष विधान—

ग्रहान्तर में इन नाडीचक्रों में विशेष विज्ञान भी है जो नीचे के श्लोकों से व्यक्त होगा—

‘रोगिणो जन्मरक्षस्य, पक्कनात्वा यदा रवि ।  
यावदस्थ रवेमोग्य, तात्कष्टपरम्परा ॥  
रोगिणो जन्मरक्षस्य पक्कनात्वा यदा शशी ।  
तदा पीडा विजानीया-दष्टप्राहरिकी ध्रुवम् ॥  
भूरप्रहास्तदये तु, यदि तत्रैव सस्थिता ।  
तदा माले भवेमृगु सत्यमीशानभाषितम् ॥’

अर्थात् रोगी का जन्म नक्षत्र और चंद्र नक्षत्र एक नाडी में हो तो जब तक सूर्य उन नक्षत्र पर रहेगा तब तक रोगी को कुछ भोगना पड़ेगा ।

रोगी का जन्म नक्षत्र और चंद्र नक्षत्र एक नाडी में हो तो रोगी को आठ पहर याने एक दिन-रात्रि का कुछ कहना चाहिये ।

अगर सूर्य अथवा चंद्र के अतिवृत्ति स्थान भी दूर उम वक्त उम नाडी पर बैठे हों तो रोगी का मरण हो ।

तात्पर्य यह है कि रोगी नक्षत्र और सूर्य नक्षत्र दोनों एक नाडी में हो और दूसरे भी मुख्यतः उस नाडी में हो तो रोगी का बचना कठिन है ।

उपर का विशेष विधान तीना नाडी चक्रों के दिनों ममान है ।

### सुलासा—

त्रिनाडी चक्र देखना कुछ भी मुश्किल नहीं है, इसके लिये २७ नक्षत्रों के नाम जान लेना जरूरी है ।

सूर्य जिस नक्षत्र पर होता है वह रावि नक्षत्र अथवा 'रविपा नक्षत्र' कहलाता है । सूर्य प्रायः १३-१४-दिन एक नक्षत्र पर रहता है । जिस समय सूर्य किस नक्षत्र पर है यह ५ में लिखा रहता है ।

चंद्रमा जिस नक्षत्र नक्षत्र भी रहता है,

नक्षत्र है इसी से इस

काल ६० घटी का होता है। पचागा म गार कवाद जो नक्षत्र लिखा रहता है वही चद्रनक्षत्र है।

रोगी मनुष्य का जिस चद्रनक्षत्र में जन्म हुआ हो वह उस का जन्म नक्षत्र है। अगर रोगी का जन्म नक्षत्र न मालूम हो तो उस क प्रसिद्ध नाम से जो नक्षत्र बनता हो रही उस का जन्मनक्षत्र मान लेना चाहिये।

ऊपर जो तीन त्रिनाडी चक्र लिखे हैं उन में जो कि अधिक जगह विरोध नहीं जाता, तथापि यही यही ऐसा भी प्रसंग आ जाता है कि एक चक्र क अनुसार मृत्युयोग मालूम होता है तब दूसरे क विधानानुसार दीर्घपीडा और तीमर क विधान से स्वल्पभ्रष्ट। ऐसे स्थाना में परीक्षकों को बहुत सोच विचारक भविष्य रहना चाहिये, अन्यथा वे झूठे पड़ेंगे, सिर्फ एक ही चक्र क अनुसार मृत्युयोग बनता हो लेनिन् रोगोत्पत्ति यदि शुद्ध पक्ष में हुई हो और उस समय रोगी का जन्म चद्र हो अपना आठमा चद्र हो और अन्य भी एक दो क्रूर ग्रह उस नाडी में पड़ हों तो रोगी का बचना कठिन ही समझना चाहिये। इसी प्रकार रोगोत्पत्ति कृष्ण पक्ष में हुई हो और उस समय—३-५ ७-३ तारा में से कोई एक तारा हो और सूर्य और रोगी क नक्षत्र वाली नाडी में अन्य भी क्रूरग्रह वर्तमान हों तो भी रोगी का बचना कठिन है, इस के विपरीत त्रिवेध होने पर भी रोगोत्पत्ति क समय तारा अनुकूल होगी और अन्य



मृतग्रह उम नाडी पर नहीं होगा तो रोगी के जीने की कुछ आशा की जा सकती है ।

इन नाडीचक्रों के अवलोकन के माथ ही रोगी को किस नक्षत्र तिथि और मार में रोग उत्पन्न हुआ है यह भी देखना जरूरी है । नाडीचक्र और नक्षत्र-तिथि-वार योग इन दोनों के क्रम से यदि रोगी का मृत्युयोग बनता हो तो वह रोगी अभी नहीं बचेगा यह निश्चय कर लेना ।

जैसे नाडीचक्रों से मृत्युज्ञान का विज्ञान ज्योतिष ग्रन्थ-कारों ने किया है वैसे नक्षत्र-तिथि-वार सम्बन्धा योग से भी रोगी के मरण-जीवन का ज्ञान उन्होंने बताया है, और यह विधान उक्त नाडीचक्रों से भी बहुत सुगम है । जिज्ञासुओं के अवलोकनाय हम वह योग नीचे दत है—

### नक्षत्र-तिथि-वार का मृत्युकारी योग—

भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, ज्येष्ठा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, शतभिषक और पूर्वाभाद्रपद इन नक्षत्रों में से कोई भी एक नक्षत्र हो, चतुर्थी पण्ठी नवमी द्वादशी और चतुर्दशी इन तिथियों में से कोई भी एक तिथि हो और रवि मंगल और शनि इन मारों में से कोई भी एक मार हो तो रोगिमृत्युयोग बनता है । उस समय में जिस को रोगोत्पत्ति हुई हो वह गाय करके मृत्यु पाता है । इस योग में भी चन्द्र या तारा की ... हो तो कुछ बचने की आशा की जा

मरता है, इस क पिपरीत जो चंद्र और तारा प्रतिकूल हा तो रोगी क वचन की आगा छोड दनी चाहिये ।

उपर क मृत्युयोग क समय यदि चंद्र रोगी की जन्म राशि का जन्मगणि मे जाठरी राशि का हो, अथवा ज म लग्न की राशि का हो, अथवा किसी भी राशि का होते हुए भी रागोत्पत्ति की लग्नकुंडली में वह-२-८-१२ वें घुन में पठा हो तो रोगी की अस्थि मृ यु रहनी चाहिये ।

उपर त्रिक योग दिया है उस म नक्षत्र ११ लिय गय ह, परंतु नीचे लिखे ७ नक्षत्र अकेले ही मृत्युदायक रह गय ह । यदि इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में मनुष्य मर पडा हो और उस समय चंद्र अथवा तारा प्रतिकूल हो तो रोगी का वचना रुठिन हो जाता है । वे मात मृत्युकारक नक्षत्र नीचे मुजब ह—

आर्द्रा, ज्येष्ठा, पूरवाण्णुनी, स्वाति, ज्येष्ठा, पूरवाण्णु और पूरवाण्णुपद ये मात नक्षत्र रोगी के प्राणघातक हैं । इन में जिस से रोग उत्पन्न होता है वह घडा कष्ट पाता है और चंद्रादि की प्रतिकूलता म प्राणमुक्त ही हो जाता है ।

नक्षत्रों से रोगी का कष्टकाल प्रमाण—

रुष्ट से रोगनिवृत्ति—

अनुवाधा और रमती इन नक्षत्रों में रोगोत्पत्ति हुड हो

तो बहुत समय तक रोग बना रहता है और बड़े ऋष्ट से रोग  
भी निवृत्ति होती है ।

### १ मास पीछे रोग निवृत्ति—

मृगशिरा और उत्तराषाढा में रोग उत्पन्न हुआ हो तो  
१ मास में रोगी नीरोग हो ।

### २० दिन के बाद रोग निवृत्ति—

यदि रोग मघा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो तो बीस दिन  
के बाद मिटे ।

### १५ दिन के बाद रोग निवृत्ति—

हस्त, विशाखा, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ रोग  
१५ दिनों के बाद मिटता है ।

### ११ दिन पीछे रोग निवृत्ति—

भरणी, चित्रा, श्रवण और शततारका इन नक्षत्रों में  
उत्पन्न हुआ रोग ११ दिन के बाद मिटता है ।

### ९ दिन के बाद रोगनिवृत्ति—

श्रविणी, कृत्तिमा और मूल में रोग उत्पन्न हुआ हो तो  
९ दिन पीछे मिटे ।

### ७ दिन में रोग निवृत्ति—

रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्र-  
पद इन नक्षत्रों में होने वाला रोग ७ दिन में अच्छा होता है ।

## विशेष खुलासा

उपर जो नक्षत्रों के आधार से वृष्ट का कालमान बतलाया है वह चंद्र और तारा अनुकूल प्रतिकूल न होने की दशा में समझना चाहिये ।

यदि चंद्र अपना तारा अनुकूल हो तो इस काल से कुछ पहले भी रोगनिवृत्ति हो सकती है, इसी तरह चंद्र तारा के प्रतिकूल होने पर लिखे हुए मान से कुछ अधिक दिन तक भी वृष्ट भोगना पड़ता है ।

मुनि कल्याणविजय

इति श्रीजनेश्वर-गुणसंग्रह प्रथम खण्ड समाप्त ।



# श्रीजैनज्ञान-गुणसंग्रह

## द्वितीय खण्ड

चैत्यवदन १ स्तुति संग्रह २, स्तवन ३ और स्वाध्याय ४।  
पद ५ य द्वितीयखण्डम्, यह पंच अध्याय ॥१॥

### १ चैत्यवदनसंग्रह

मुनि श्रीकल्याणनिजयविरचिता  
चैत्यवदनचतुर्विंशतिम्

श्री ऋषभदेवजिनचैत्यवदनम् ।

( रसन्ततिलकाऽपरनामक उद्धृष्टिणी वृत्तम् )

श्रीनाभिराजकुलनन्दनकल्पवृक्ष ,

संग्राह्यसर्वसुरपूज्यतमत्रयपथ ।

उल्लासयन् रतिरिगाद्विसरोजखण्ड,

दिश्यात्स शर्म वृषभो भवतामखण्डम् ॥१॥

त्रैलोक्यलोकचलनेत्रचरोरचन्द्र,  
वैराग्यरङ्गरमभङ्गमथान्ततन्द्रम् ।

समारसिधुतरणाय सुयानपात्र,  
दय नमामि रूपम प्रपत्रिगात्रम् ॥२॥

येन प्रदक्षितमशेषकलापलाप,  
दुग्धोघजातदरितौघक्रतापलापम् ।  
स्मृत्वाऽधुनापि जनता निजकार्यजन्मा-  
दुर्द्धापिणीतिहरणोऽस्तु स नाभिनन्मा ॥३॥  
श्रीअजितनाथजिनचैत्यचन्दनम् ।

( तोटक वृत्तम् )

अजित विदिताग्विलस्तुगण, सगुण वरमुक्तिवधूरमणम् ।  
रमणीरजनीचरिरावियुत, प्रणुत प्रणताखिलसिद्धिकृतम् ॥१॥  
प्रपतन्तमवित्तिभर मनुज,-मनुजन्म करन्तमदृष्टरुम् ।  
जनमानममानसहससम, समदृष्टितम प्रणमाम्यसमम् ॥२॥  
विहितामरदानयसनक, कनसोज्ज्वलनिमलनिग्रहरम् ।  
भयतोटक ! तोटय मे दुरित, समयोदितकर्मरजोमिलितम् ॥३॥  
श्रीसभचजिनचैत्यचन्दनम् ।

( उपजातिवृत्तम् )

श्रीमभवो निर्दलितारिमभवो, विसभव ग्रास्तप्रिकारमभव ।  
सशभवश्रीद्वजितारिसभव, क्षिणोतु त योऽस्ति गणोरिमभव ॥१॥  
धृष्य मन्वे विदुषा नु भारती, यया न त प्रक्रियते धृष्य स्तुति ।  
कि कल्पद्वधोऽपि फलान्निर्जित, फलैपिभिर्नो निवृधैवितजित ॥२॥

न मग्धरावृत्तमुग्धरापि स्वयं, सदैव साद्व्यभिचारेण कृति ।  
लभेत सत्कीर्तिभरं यथा स्तुतुम्, भवत्तमन्यैरुपनातिवृत्तम् ॥३॥

श्रीअभिनन्दनजिनचैत्यवन्दनम् ।

( रथोद्धता वृत्तम् )

मवराज्यनराजनन्दन, दवराजविहिताभिनन्दनम् ।  
रमदानजनताभिनन्दन, भक्तितोऽस्मि प्रिनतोऽभिनन्दनम् ॥१॥  
भो जना ! विषयलुप्तचेतनैः,—भाजनादिमुखमिषयत जन ।  
तद्वदत्र भवतापपीडितैः,—त्रानमायनमर्मा निषव्यते ॥२॥  
सपनेन मतत जिनशितुः,—गाहगानमदनां प्रणेशतु ।  
मन्त्रुणा भवतु वोऽपि तद्गता, तद्भट्टालिरनुर्गारयोद्धता ॥३॥

श्रीसुमतिना रजिनचैत्यवन्दनम् ।

( द्रुतविलम्बितवृत्तम् )

सुकृतपल्लुरिषर्धनवारिः,—प्रममनल्पगुणस्य तगरिद ।  
वचनमर्तिहर भगितारक, भवतु मेऽपहर विगताङ्गम् ॥१॥  
सुमतिमेधनरन्द्रममुद्भव !, मिहितमर्चसुरासुरमुद्भव ! ।  
अथ भवेद्भि भगान्मम तारण , मज्जति चेद्भगवन् ! ममतारण । २ ।  
द्रुतविलम्बितममरणक्रम,—मविरत विदये मगुणक्रम ।  
यदि गतिर्हि भवेद्भवदा गये, पुनर्गति भगवन् ! नु तदाश्रय । ३ ।

श्रीपद्मप्रभजिनचैत्यवन्दनम् ।

( इन्द्रजालावृत्तम् )

पद्मप्रभेऽम्भोचनिशालनेत्रे, पद्मप्रभे सो दधता मुभक्तिम् ।  
ये न - ॥१॥, यन प्रनष्टा ननु तेऽपि दोषा ॥१॥

नाथ ! त्वया चे क्रियते जनोऽन्यो, धर्मापदार्थैर्ननु मुक्तराग ।  
 त्व रागयुक्तोऽसि रथ नु यद्वा, माहात्म्यमेतत्खलु सविच्य । २।  
 एकाकिनापि प्रहतास्तयेद्वा, मोहादय र्मबलिष्ठयोधा ।  
 स्यादिन्द्रजालाहतिरकिमापि, नाशाय मौले कुलपयनाटे ॥३॥

श्रीमुपार्धजिनचैत्यचन्दनम् ।

( प्रहपिणीवृत्तम् )

प्रत्वीज शिवपुरसा ग्राहनाथ, चक्राण प्रवलमनोभयप्रमाथम् ।  
 दुःखाण स्तुतिलगोचर सुनाथ,

दुःख स्व निजगुणलालमामनाथम् ।

दवन्द्रे, प्रसूतितभक्तिरागमारं समार पुरुषवर हि मन्यमानै ।  
 यो नेमे निरलग्णैश्च यद्वरागै, -र्यानिमऽनिरतगत स सरुणधु । २।  
 मप्राप्ते पुरमपुनर्भारयमीश, निनाया निरहनिपातिता प्ररामम् ।  
 नो चेत्तस्मृतसमदर्शन प्रविश्य, नो नून श्रुति जनता प्रहपि  
 णीयम् ॥३॥

श्रीचन्द्रप्रभजिनचैत्यचन्दनम् ।

( ललितावृत्तम् )

चन्द्रप्रभ जनिविपूतसज्जन, चन्द्रप्रभ जनितदृष्टिमज्जनम् ।  
 दयाधिदयविनत स्रगक्तितो, दयाधिदयमभिनौमि भक्तित । १।  
 तज प्रपन्नरतिरूपरोचन, धेत सरोजदलने निरोचन ।  
 दयामति निनपति सतामर, यस्या जनुविभवनिर्जितामरम् । २।  
 लोको जहर्ष तत्र दर्शनाभभाज, -दानमर्कपललिताजिनागमात् ।  
 विना दृजातमहसे न नन्दन, -मीश ! धमेशमहसेननन्दन ! । ३।



## श्रीसुविधिनाथचैत्यवन्दनम् ।

( सुमुखी वृत्तम् )

कुतुहमिदं ननु पश्यत भो, सुवि जनचित्तमरोजमिदम् ।  
 सुविधिजिनस्य मुखेन्दुरय, कुण्डलयाम्दं पिण्डीकृप्ते ॥१॥  
 भवति न यस्य मनो रमते, भवति नरस्य न तस्य रति ।  
 स्मिन् सुरपादपपादभिनि, शम्भुदयमेति कृत्वाप्यमिदि ॥२॥  
 तत्र चरणाम्बुजमदरति,—गणधर्यन्मनुज सुमति ।  
 सुवि जनतासु—मुखी भवति, भयमयतश्च जनानवति ॥३॥

## श्रीशीतलजिनचैत्यवन्दनम् ।

( चन्द्रवर्त्मवृत्तम् )

शीतल जिनपतिं नम जनते !, सगृहाण परपुण्यमननते ।  
 एतदधममरा अपि सतत, पूजनं प्रदधते दिशि मततम् ॥१॥  
 पूजयन्ति जिनर्दयतचरणा,—नायलोऽप्यधनिमित्तचरणा ।  
 प्राणिनो विधिवदादरसहित, मन्वते च भुरि तत्त्वलु महितम् ॥२॥  
 चन्द्रकान्तममशीततनुजिन,—चन्द्र ! वर्त्म सुगतेर्दददमलम् ।  
 मामनल्पमतिरहितमशरण, नाथ ! रक्ष दुग्तितादनिशरणम् ॥३॥

## श्रीश्रेयासजिनचैत्यवन्दनम् ।

( शालिनीवृत्तम् )

सृर्जत्कान्तिघ्नस्तससारतान्ति,—

श्चच्छीलं प्रोज्झिताऽगस्तलील ।

श्रीश्रेयाम सचितान्तश्शमाय ,

कुर्यात्सौख्यं देवयोऽस्तमाय ॥१॥

प्रियागृहीतधने वारिगाह ,

त्रैलयाध्यप्रापणे शस्तगाह ।

म त्रेयाम श्रेयसा य सुरानि ,

स त्रेयान् य सविधत्ता मुखानि ॥२॥

प्रत्यादश त्रेयमो दयतस्य,

उध्य चित्त येन पाप न तस्य ।

प्र पाधान सविधत्ते नरस्य,

यस्मात् श्रेय शालिनी भक्तिरस्य ॥३॥

श्रीगान्धुपूज्यजिनचैत्यवन्दनम् ।

( स्वागतावृत्तम् )

गान्धुपूज्य ! कृतपुण्यकृतान्त, हलया मिजितरागकृतान्त ! ।

योगिनोऽपि विनमन्ति भवन्त, कृत्यजेयुस्थवा शुभमन्तम् ॥१॥

या चचाल निजनिबलभागात्, योगिनाथततिरप्यविभागात् ।

यद्वा विजयिन हरिस्त्रु, त जधान वसुपूज्यसुत्रु ॥२॥

स्वागताप्रभृतिरद्वनिमन्धै, - स्त्वा स्तुवन्ति वयः शुचिमधै ।

नो तवापि गुणवर्णनकृत्य, पारयन्ति तव वणनकृत्ये ॥३॥

श्रीचिमलजिनचैत्यवन्दनम् ।

( मन्दारान्तावृत्तम् )

श्यामाग्नौ ! तव वरवच श्रेणिपीयूषधारा, -

तृप्तात्मानः प्रकृतिमुभगा मानवा मानधारा ।

उत्पद्यते विरुधभुजनेपूतमेपूतमास्ते,

यत्रानदयनलहरीप्रोद्धमत्प्रौख्यमास्त ॥१॥

हयाहयप्रकटनविधौ रत्नलक्ष्यो नितान्त,  
 ज्ञानोद्घोतश्चैत्रि भविजन मोधयन् योनितान्तम् ।  
 निर्मुक्तान्मा शिवसुखरति कर्मरोगैरपीडय ,  
 सर्वत्रोऽमौ जयतु विमल सबदरपीडय ॥२॥  
 मसागम्भोनिधिनयतरी दुष्टमर्निरभस्याऽ,—  
 मन्दाक्रान्ता शमरमभरैर्दुर्मतागैरलक्ष्या ।  
 दत्तानन्दा भुवि जययशोविस्फुरद्वैजयन्ती,  
 मौरय मूर्ति सुभग! मवर्ता यन् उताद्वै जयन्ती ॥३॥

श्रीअनन्तजिनचैत्यवन्दनम् ।

( भुजगप्रयातवृत्तम् )

अनन्त जिन पुण्यवन्त ससन्त, क्षिपन्त कुरुमाधमार्ति हरन्तम् ।  
 जनान् रञ्जयन्त रिपून् सञ्जयन्त, नमामीश्वर त उर मुक्तिकान्तम् ।  
 मदा मिद्धिमौरयप्रियध्येयरूप, जितानङ्गरूप त्रिया जातरूपम् ।  
 मुनित्रातभूषणमापाररूप, नमस्याम्यनन्त जिन योगिरूपम् । २।  
 भुजगप्रयाताऽध्वमुक्त सुसुक्त, जराजन्महीन महानन्दलीनम् ।  
 हतप्रीतिनाथ कृताऽध्वप्रमाध, श्रयेऽनन्तदय सुपुण्याध्यसेवम् । ३।

श्रीधर्मनाथजिनचैत्यवन्दनम् ।

( सगिणीवृत्तम् )

धर्मनाथ स्तुत प्रौढबुध्यन्वित,—दवराजाचित यस्य पादद्वयम् ।  
 मव्यहसै त्रित पुण्यगन्धात्रित, राजते पद्मशोभा परिहासयत् । १।  
 धर्मनाथ 'त्ययोदिष्टम कृत,—वर्तना र्त्तनायोत्कटद्वेषिणाम् ।  
 स्युर्जना सव्यसे त्व तत् स्वाधिभि,—दवसानामुरै केवलस्वार्थिभि

मृगिणी भक्तचेतस्तम-परिका, परिका स्वर्गनि श्रेयसा सम्बदाम्  
मृत्तगरिषा त यश्च माधिरा, दीयता भद्रमानन्दरागाधिका ३  
श्रीशान्तिनाथजिनचैत्यचन्दनम् ।

( मालिनीवृत्तम् )

शिवपदसुखफारी कर्मरिद्वेषिणारी,  
मदनमदविभेदी विश्वउस्त्वमदी ।  
भरजलधिविशोषी पापराग्रमोषी,  
निशुतु कुण्डलीश शान्तिनाथो मुनीश ॥१॥  
स्वहृदि धृतभयन्त प्राप्तरागा भवन्तः,  
तव नतिगुभयन्तस्ते नरा पुण्यरन्त ।  
अतिशयमुत्सार केरलालोरमार,  
परमपदमुदार यान्ति भव्या मुदाऽरम् ॥२॥  
प्रद्युम्नमनिपुष्टा नाशिताशेषदुष्टा,  
जगति जनितचित्रा पुण्यपोषै परित्रा ।  
महिमञ्जितसमुद्रा मालिनी यस्य मुद्रा,  
॥ त्रयति जिनशान्तिनिर्जितस्वर्णरान्ति ॥३॥

श्रीकुण्डुनाथजिनचैत्यचन्दनम् ।

( रामप्रीडावृत्तम् )

समृत्तार विष्वक्सार श्रीदातार धातार,  
चञ्चल्लोभारम्य गम्य योगीशानामीशानाम् ।  
ससाराम्भोरान्ति तीर्णं सौग्यामीर्णं त्रिस्तीर्णं,  
चन्द दय कृत्यासय कुन्दु भावं सर्वत्रम् ॥१॥

त्यक्तासार ज्ञानोदार विश्वोद्धार विद्यार,  
 स्फूर्जद्योग मुक्तोद्योग भामा चन्द्र नित्तन्द्रम् ।  
 सरयावन्त पुण्योदन्त कीर्त्या कान्त सशान्त,  
 मन्द दम दत्तासेन सौममशे ममेधे ॥२॥  
 आयुर्विद्युद्घोताभ स्वलीला कीलाभामन्त,  
 विज्ञा विज्ञायाशु ग्रीडा वामक्रीडा मप्रोज्झ्य ।  
 दुःखोद्रेक-उदन्त-छक भर युद्रक विभ्राणा,  
 देवा सेना यस्याऽङ्गुणं कुन्तु कुर्यात्कल्याणम् ॥२॥  
 श्रीअरना रजिनचैत्यवन्दनम् ।

( हरिणीवृत्तम् )

जनितजनतानन्द मन्द महोदयसीन्धा,-  
 मभिरतिरतिप्रीतिप्रौढिप्रमुक्तमगुग्गुग ।  
 यममशरणा लब्धोत्पणा शरण्यमनिन्दित,  
 स दिशतु शिखरद्वीपनुर्भवान्तमनिन्दितम् ॥१॥  
 अतुलजवना चन्द्रस्पन्दा सुरासुरनायका,  
 यदभिगमने लब्धोत्पन्ता भवन्त्यभिनायका ।  
 अराजिनपत पादद्वन्द्व सरोजरिकुस्वर,  
 दलयतुतरा पापद्वन्द्व प्रभाजितभास्वरम् ॥२॥  
 शुभमतिजनस्वान्तध्यानप्रणाशनभास्वर,  
 निदलितदरद्वेषाऽज्ञान निरागसमादरम्  
 हृदयहरणैर्हार्ति ध्रुव्येतर हरिणीदृशा,  
 हृदयममल दवीपनोत्तनोतु सुख विशाम् ॥३॥



नयानयादिराजिता, ऽगमैर्गमैगरीयसी ।

प्रमाप्रमाणपूरिता, महर्षिहर्षिणी मदा ॥ २ ॥

दयोदयोज्ज्वला सदा,—ऽक्षयाऽत्यामिनी निशाम् ।

धियोऽधियोगसारिणी, भियोऽभियोगनाशिनी ॥ ३ ॥

यदीदृशी सस्मृती, न रोचन मरस्वती ।

जनाय न मुत्रणिता, जगदशासुत्रणिता ॥ ४ ॥

नम ! नमे प्रमाणिता, नरस्य वीस्तदीदृश ।

मत मत रिपर्यय-प्रसादन नु धीदृश ॥ ५ ॥

श्रीनेमिनाथजिनचैत्यवन्दनम् ।

( पञ्चचामरवृत्तम् )

क्षण निगीक्ष्य गीधर्णे प्रतिक्षण नयान्वित,

क्षण यदप्रतीकित क्षमेशमण्डलं भितां ।

असारससृद्भुभगतिमीतिभागजनो यमा,—

नयेद्विताय भक्तितस्तमानवोऽस्मि नमिनम् ॥ १ ॥

कुरङ्गरङ्गभङ्गभीरुताभराभारित !,

निदर्शनीभवन् दयालुताजुषा निशा धुरि ।

निनाहवाहनाहनागरुद्वराज्यहायक !,

भनन्तमीदृश दयालुमाश्रितोऽस्मि रथ माय् ॥ २ ॥

जयाभिलाषिनाजिराजिराजिराजराजिताऽ-

प्रपञ्च ! चामरालिशोभिपार्श्व ! पार्श्वगावन ! ।

यदूज्ज्वलान्वयाम्बुराशिभासनाऽञ्जनामुर !,

विधेहि मा भवाम्बुधेस्तटानुयायिन निमो ! ॥ ३ ॥





यस्माद्दुर्गुणसततिर्गतवर्ता यस्य प्रपूत वचो,  
यस्मिन् पङ्कजकामले जन्मनो भृङ्गोपम लीयते ॥ २ ॥  
स श्रीश्रीरविशुभंरत्नसुसहस्र दैवत सधरे,  
तेनाऽस्मि प्रभुणा मनाधगणनस्तस्मै नति मदधे ।  
तस्मान्नास्ति परं प्रभादिनकरस्तस्याद्घ्रिगुग्म स्तुवे,  
तस्मिन्नेव च कर्मदन्तिदलने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ३ ॥  
अङ्गपित्तभूरपे, पादलिप्तपुरे वरे ।  
रुल्याणविजयेनेय, चतुर्विंशतिरा कृता ॥ १ ॥  
इति मुनिवर्यश्रीरुल्याणविजयविरचिता चैत्यवन्दनचतु  
विंशतिका नमाम्हा ॥

## २ स्तुति-संग्रह

मुनिरात्रश्रीरुल्याणविजयादिविरचितः ।

श्रीआदिजिनस्तुति

( शौक्सेन्याम् )

द्रुतगिलम्बितधृतम्

पुत्रवपुष्णभराद् समञ्जिय, नरभय विभवचिदमदिर ।

निजहिद जदि इच्छध मानया, नमय नागिसुद जिननायक ॥१॥

१ छाया—पुत्रवपुष्णभरान् समञ्ज, नरभय विभवचिदमन्दिरम् ।

निजहित यदि इच्छय मानया !, नमत नागिसुत जिननायकम् ॥

दलितदुःखभग समदादरा, निरदिवम्पसाहणतप्परा ।  
 जिणपरा जणपकनभक्खरा, सुगदिदा मम होन्तु सदक्खरा । २।  
 गमगहीरतलो नयसोहिदो, निनिहभगनियारनिराहदो ।  
 चतुरपुद्धिगिगाहिदमज्झगो, सुमदिदो मम भोदु जिगागमो । ३।  
 रुद्धय धोरउयद्वयणामण, जणमण रुद्धिण पिरुस्सर ।  
 दुण्ढि जो जिणणाधमदुब्बदि, हरदु सो दुरिद मम गोमुहो ॥४॥

श्री शान्तिनाथजिनस्तुति

( मागध्याम् )

मालिनीवृत्तम्

दुल्लिदयणिदरुस्त दुस्तिदि दुक्खवेग्य,  
 बुणदि गल्लिदसत्त ये नलाण वलाण ।  
 यणिदभुवणशती दुस्तिदाशेषभती,  
 दिशदु यणदिद शे शतिनाथे अणाथे ॥१॥

दलितदुःखभरा समतादरा, विरतिधर्मप्रसाधनतप्परा ॥  
 निनपरा जनपकनभाक्खरा, सुमतिदा मम भवन्तु सदक्खरा ॥  
 गमगभारतलो नयशोभितो, विरिधमद्गविचारविरानित ।  
 चतुरपुद्धिगिगाहितमध्यरु सुमतिदो मम भवन्तु जिनागम ॥  
 रुद्ध्या धोरोपयद्रवनाशन जनमन रुद्ध्या चिरुस्सरम् ।  
 फराति या जिननाथमतोघ्रति, हरन्तु स दुरित मम गोमुख ॥  
 १ छाया—रुद्धि ननितरुष्ट दु स्थितिं दु रूपेणा,  
 रुद्धेति गलितसत्त्वा यो नराणां धराणाम् ।  
 अनितभुवनशान्तिं कुट्टिताशेषशान्तिं  
 दिशन्तु जनहितं स

शेददम्भलयाशुचिगगचेदा लमा शा,  
 अरलमिलयाशाभावमावोहभाणी ।  
 चलणम्भलमाल येमिमाणन्दशाल,  
 शरणमधिगता ते दिन्तु मुक्ख पिणिदा ॥२॥  
 पलिमिदनियतेया जाइणत पयाश,  
 पलिरुलिय तदस्स पस्तिदा सोमशूला ।  
 अणहिगदतदस्ता जन्तलिःके भमति,  
 दिशदु विमलविग्य आगमो जे पिणाण ॥३॥  
 म्पिणमदशाले शक्तिभत्तेगशाले,  
 गयवलगदिशाले धत्तविग्घप्पयाल ।  
 पिणचलणशुलोव भिगभाज भयते,  
 हल्लदु विमलमत्ती पारग वमसती ॥४॥

- १ छाया—सततकमन्त्रासोद्विग्नचेता रमा सा,  
 अपरविमलयासाभावमारोधमाना ।  
 चरणकमन्त्रमाला येयमानन्दशाला,  
 शरणमधिगता ते ददता मोक्ष जिनन्दा ॥  
 परिमितनिजतेजसो यस्याऽनन्त प्रकाश,  
 परिमन्त्रय्य तदर्थं प्रन्थितो सोमसूतो ।  
 अनधिगततदर्थो अन्तरिक्ष भ्रमत  
 दिशन्तु विमलविद्यामागम स निनानाम् ॥  
 इतजिनमनसार शक्तिमत्तैकपाल ,

## श्री नेमिनाथजिनस्तुति

(पञ्चान्याम्)

उपजातिवृत्तम्

तूरातु तत्थून पशुपुष्कार, तयालतापोसनप्रद्विचो ।  
 गेन्हीअ यो तिवस्वमभग्गशीलो, सुखाय सो नेमिजिनो जनान्,  
 अज्जानअधीअत्तलोचनान, विवेकहीनान सता जनान ।  
 भयानवे ये वरयानतुल्ला, छित्तु ते तुक्खभर जिनिता ॥२॥  
 ससारगेह वस्तीपराभो महसिन झत्ति पित्तिण्णलाभो ।  
 अपुब्बतत्तोघविमालतेहो, जिनागमो मवरहितो जयेज्जा ॥३॥  
 नेमीसझानातु सुपत्ततेव-भया भवारण्यविलघनत्थ ।  
 जिनिततेव परिसेवमानी, विवक्किन होतु सुखाय अया ॥४॥

भजवरगनिसारो अस्तविघ्नप्रचार ।  
 जिनचरणसरोजं भृगभाय भजन्,  
 हरतु विमलकांति पापक ग्रहशान्ति ॥

१ छाया-दूरात् दृष्ट्वा पशुप्रकार, दयालतापोपणयद्विचिन्त ।  
 भयहीन् यो दीक्षामभग्गशील, सुखाय सु नेमिजिनो जनानाम् ॥  
 भद्रानाधीहृतलोचनाना विवेकहीनाना सदा जनानाम् ।  
 भयानवे ये वरयानतुल्या, छिन्दन्तु ते दुःखभर जिनेन्द्रा ॥  
 ससारगेहे वस्तीपराभो महर्षिणा झगिति पित्तीणलाभ ।  
 अपूवतत्तोघविमालदहो जिनागम सवदिता जयतात् ॥  
 नेमीशध्यानात् सुप्राप्तदेवभया, भवारण्यविलघनाथम् ।  
 जिनेन्द्रदेव परिसेवमाना, विवेकिना भवतु सुखाय अया ॥

श्री पार्श्वनाभजिनस्तुति.

( चूलिफापैशाच्याम् )

वसन्ततिलकावृत्तम्

नैफाभिराचथरानितविमालचित्त-  
भूमिप्ररुठपरफचित्तानिकुचे ।  
राहीअ नो चलनपत्थमनोमरालो,  
यस्माफिलापमपि सो विचयाय पामो ॥१॥  
तारित्तताअपरितद्वमरीरलोक,  
सपूरितासखनवृद्धिनिफिन्नताप ।  
सपातितून समधम्मसमातरा ये,  
तिक्खफचन्ति मिअता मम ते चिन्तिता ॥२॥  
मुत्थोतनस्स तनयस्स मत न रम्म,  
एक्कतनासविसयो न हु वत्थु लोक ।

१ छाया—नागाधिराजधरणे द्रविशालचित्त  
भूमिप्ररुठपरभत्तिलतानिकुञ्ज ।  
अकार्यात् ना चरणयद्वमनोमरालो,  
यस्याभिलापमपि स चित्रयाय पार्श्व ॥  
दारिद्र्यदाअपरिदग्धशरीरलोफ,  
सपूरिताश्वनवृष्टिविभिन्नताप, ।  
सपाद्य शमधर्मसमादरा ये,  
दीक्षा भजन्ति शिवदा मम ते जिनेन्द्रा ॥  
शुद्धोदनस्य तनयस्य मत न रम्म,  
एकान्तनाशविषयो न सल्लुचस्तु लोके ।

एकतृच्यविसयोपि न साधुयातो,  
 तम्हा नमामि सियवातमर्त चिनान ॥३॥  
 हुनरानातपरिष्ठापिततुष्टवेरो,  
 हत्थत्थमप्यपरितामितविकस्वमूसो ।  
 पासपसाततस्लत्थसतानिगसो,  
 सुकखाय भोतु सतत मम पासयक्खो ॥४॥

श्रीवर्धमानजिनस्तुति  
 ( जपभ्रञ्जभाषायाम् )

पञ्चचामरवृत्तम्

कमोवल्ले अभव्यसगमस्तु भागिसामले,  
 सुपत्तु जस्सु धीरदासुगणु जाउ उज्जलु ।  
 सुरिदचकवागगासराहिणाधु सो जिणु,  
 मभत्तिह मणुस्सह सुहाय णादनदणु ॥१॥

एकातधोयनिपयोऽपि न साधुयाव,  
 तस्माद्रमामि स्याद्वादमत जिनानाम् ॥  
 हुनरानादपरिष्ठापिततुष्टवेरो,  
 हस्तस्थसर्पपरिष्ठासितविघ्नमूपक ।  
 पाश्चप्रसादतस्लत्थसतानिगस  
 सौख्याय भयनु सतत मम पाश्चयक्ष ॥

१ छाया— कमोपले अभव्यसगमस्य भागिदयामले,  
 सुप्राप्त यस्य धीरता सुवर्णं जातमुज्ज्वलम् ।  
 सुरेन्द्रचक्रवाक्यासराधिनाथ स जिन,  
 सभक्तिकाना मनुष्याणा सुखाय दातनन्दन ॥

सकम्मगेगहि पपीलिया पवद्धवेयणा,  
 मलीणवामणागुला अपत्थसेवणापरा ।  
 रुद्धं नु हत माणवा न हत भूतले जइ,  
 परोरगारत्तद्धनम्मधम्मविज्जगा जिणा ॥२॥  
 विमुत्तिमगगदसणग्गवत्तु विग्घरज्जित्त,  
 दुरन्तदुग्गदिप्पवेसरोहलोहजग्गलु ।  
 जपप्पयासु सामि जोगवेमराग्गुत्तमु,  
 करउ नद्धुक्खजालु मो मइ जिणागमु ॥३॥  
 सुयणग्गवण्णदइकतिभारभासिजरा,  
 पकामकामियत्थमत्थदाणि अप्पतारणी ।  
 निणस्सु वीरहो सुभत्तिमत्तित्तिचिरज्जिआ,  
 सिरिद्ध मिद्धवि दउ भज्जइ सुमगलु ॥४॥

स्वकमरागं प्रपादितं धनुदधना  
 मलिनवासनाकुला अपत्थसेवनादरा ।  
 कः न्यमधिष्यन् मानयानाऽभविष्यन् भूतले यदि,  
 परोपकारलब्धजमधमप्रेयका जिना ॥  
 विमुक्तिमार्गदत्तनाप्रकार विघ्नजित्त,  
 दुरन्तदुगतिप्रवशरोधलोहागला ।  
 जगत्प्रकाशस्वामी योगक्षमकारसोत्तम,  
 परोतु नष्टदुःखजालं स मा जिनागम ॥  
 सुयणवणदहशक्तिभारभासिताम्यरा  
 प्रकामकामिताथसाधदाने अप्रतारणी ।  
 जिनस्य वीरस्य सुभक्तिसन्नित्तित्तिजिता  
 धोद्धा सिद्धादेवा ददातु भज्याना सुमगलम् ॥

## श्रीदीपमालास्तुति\*

( शिखरिणीवृत्तम् )

गतो मावोद्घोत परमग्निमलज्योतिरधुना,  
 ततो द्रव्योद्घोत श्रुति वितनुमस्तस्य विरह ।  
 इति श्रावैरष्टादशभिरञ्जनीजानिभिरहो,  
 कृता दीपालीयं जयति जयदा वीरजपतः ॥१॥  
 न मे कामैरर्थं परमसुलभैरर्थानि करैः,  
 कृत राज्येनाऽल सृतममरलोकधिनिभैः ।  
 जनाप्ता ससारभ्रमणमतिभिर्मानसगणैः—  
 र्लभेय दुष्पापा जिनपदपद्मेषु वसतिम् ॥२॥  
 मृते श्रोत्रानन्द परममनुभूतेऽघातेनयो,  
 मन शुद्धिर्ध्याति निमलयचनो यत्र पठिते ।  
 भवेत्सेवायोग्यो विहितवरसेवे च मनुजः—  
 स्तमानन्दोद्घोष जिनपतिकृतान्त प्रणमत ॥३॥  
 पृतश्रद्धा सधे विहितविनया वीरविभवे,  
 भव मौख्य दात्री जिनपरचचोवद्दमनसाम् ।  
 परा सम्यग्दृष्टि सुमतिजनसत्तापञ्चमनी,  
 सदा सिद्धादवी भवतु भविनां दुःखदमनी ॥४॥

## श्री वीरजिनस्तुति

( आर्या छन्दः )

सो जयत जगण्णदो, वीरजिनो सयलगुणगणालीदो ।



जस्स विलीणा सन्वे, रागदोसदिजो दोसा ॥ १ ॥  
 अन्नाणतमणिणासण, -रिक्खे कप्पस्सत्तुल्लरे ।  
 अज्झप्पधम्मसुसले, जिणचन्दे वदिमो सिरसा ॥ २ ॥  
 तिहुअणगिहगयवत्तु, -प्पयासपवणो कुमारुआगम्भो ।  
 एगतसलहदाहो, जिणागमो दीपजो जयउ ॥ ३ ॥  
 मिरिरीरभत्तिभाया, गयपाया दलियविग्घमन्भावा ।  
 वल्लाणमग्गलाम्भ, जणस्स सिद्धाइआ कुणउ ॥ ४ ॥

इति मुनिर्य श्रीरल्याणप्रिजयविरचित स्तुतिसंग्रह समाप्तः ।

## विनिधस्तुतियो

श्री रूप नदेव जिन स्तुति

प्रह उठी नदु ऋपमदन गुणवत्,  
 प्रभु वेठा मोह समवमरण भगवत् ।  
 व्रण छत्र विराने चामर दाले इद,  
 जिनना गुण गाव सुरनरनारीना वृद ॥ १ ॥  
 धार परखदा वेसे इद्र इद्राणी राय,  
 नन कमल ग्वे सुर जिहा ठनिया प्रभु पाय ।  
 देव दुदुभि वाने वृसुम वृष्टि चहु झूत,  
 एग जिन चोवीसे पूजो भवि एरु चित्त ॥ २ ॥  
 जिण जोजन भूमि वाणीनो विस्तार,

प्रभु अरथ प्रसाशे रचना गणधर सार ।  
 सो जागम सुणता उदीजे गति चार,  
 जिन वचन वखाणी लहिय भवनो पार ॥ ३ ॥  
 यक्ष गोमुरा गिरुओ जिननी भक्ति करेय,  
 तिहा देरी चक्रेसरी विधन कोड हरय ।  
 श्री तपगच्छ नायक निनयसेनसरिराय,  
 तस केरो थायक रूपमदास गुण गाय ॥ ४ ॥

### श्री शानिनाथ जिन स्तुति

शाति जिनेसर समरिये जैनी अचिरा माय,  
 निथसेन कुल उपन्या मृगलछन पाय ।  
 गजपुर नयरीना धणी कचन वरणी ठे काय,  
 धनुष चालीसनी देहडी लाख वरसनु आय ॥ १ ॥  
 शाति जिनेसर सोलमा चक्री पचम जाणु,  
 कुथुनाय चक्री कुट्टा अरनाथ वखाणु ।  
 ए ठणे चक्री ~~कुटी~~ देरी आणदु,  
 सजम लह मुखाया नित्य उठीने वदु ॥ २ ॥  
 शाति जिनेसर केवली बेसी धर्म प्रसाशे,  
 दान शीयल तप भायना नर सोय अभ्यासे ।  
 एह वचन जिनजी तणा जेणे हियड धरिया,  
 सुणता समकित निर्मला निथय केवल वरिया ॥ ३ ॥  
 समेत शिखर गिरि उपरे जेणे अणसण कीधा,

काउस्सग ध्यानमुद्रा रही जेणे मोक्ष ज सीध्या ।  
जक्ष गरुड समरु मदा देवी निर्माणी,  
भक्तिक जीव तमे साभलो ऋषभदासनी राणी ॥ ४ ॥

### गिरनार नेमिजिनस्तुति

सुर असुर वदित पापपञ्च मयणमल्ल अक्षोभित,  
घन मघन श्यामशरीरमुदर शख लठन शोभितम् ।  
शिखादेनि नदन त्रिजगवदन भक्तिक कमल दिनेश्वर,  
गिरनार गिरिनार शिखर उद् नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥

अष्टापदे श्री आदिजिनार वीर पाया पुरिनार,  
चपापुरी श्रीरामपूज्यजी नेमि रण्यगिरिनारम् ।  
सम्मेत शिखरे वीस जिनार मुक्ति पहोता मुनिार,  
चोवीस जिनार तेह बद् सयल मघ सुहकरम् ॥ २ ॥

अग्यार अग उपाग वारे दश पयन्ना जाणिये,  
छेद ग्रव पसत्थअत्था चार मूल रत्नाणिये ।  
अनुयोगद्वार उदार नदीध्वज जिनमत गाइये,  
शुचि चूरणि सूत्र आगम पच चालीश ध्याइये ॥ ३ ॥

पिडु दिशि बालक दोय जेहने सदा भक्तियण मुखर,  
दुख हरे अवालुनि सुदर दुरिय दोहग अपहर ।  
गिरनारमण नेमिजिनार चरणपङ्कज भयहर,  
श्रीसय भगल करे जगद्वी ठवे शुभ वरम् ॥ ४ ॥

### श्रीपार्श्वनाथजिनस्तुति

पास जिणदा वामानदा जय गरमे फली,  
 सुपना दरे अर्ध निशेपे रुह मघया मली ।  
 जिनवर जाया मुर हुलसाया हुआ रमणीप्रिये,  
 नेमिरानी चित्त निराजी विलोचित त्रत लिये ॥ १ ॥  
 वीर एसाही चार हजारे दीक्षा धुर जिनपति,  
 पाम ने मल्लि त्रयमत साये बीजा सहसे त्ती ।  
 पद्मात साये सज्जम धस्ता वासुपूज्य जगधणी,  
 अनुपम लीला ज्ञानरसीला दजो मुजने घणी ॥ २ ॥  
 जिनमुख टीठी बाणी मीठी सुरतरु बेलडी,  
 द्राख निहासे गइ वनगासे पीले रम सेलडी ।  
 साकर सेती तरणा लेती मुखे पगु चारती,  
 अमृत मीठु स्वगे दीठु सुरमधू गारती ॥ ३ ॥  
 गजमुखदक्षो वामन जक्षो मस्तके फणावली,  
 चार त बाही कठपगाही साया जस शामली ।  
 चउरर प्रांग नागाह्वा दरी पदमावती,  
 सोनन काति प्रभुगुण गाती वीर धरे आरती ॥ ४ ॥

### श्रीपार्श्वनाथजिनस्तुति

ट्रेँ ट्रेँ कि उप मप धु धु मि धो धो धसकि धर धप बोख,  
 दो दों कि दो दो द्रागददि द्रागददिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवम् ।  
 क्षक्षि क्षेँकि क्षेँ क्षेँ क्षणण रण रण निजकि निज जनरजन,

# धार्जनान—गुणसंग्रह

सुरशैलशिवरे भयतु सुख पार्थजिनपतिमजनम् ॥१॥  
 कट रंगिनि धागिनि रुटिति गिगट्टा धु धु कि घुट नट पाटव,  
 गुण गुणण गुण गण रणकि णे णे गुणण गुण गण गौरवम् ।  
 झझि झे कि झे झे झणण रण रण निजकि निज जन सज्जना,  
 कलयति कमला रलित कलिललमलमीग्रमह जना ॥२॥  
 व्रकि व्रकि व्र व्र ठहिं ठहिं ठहिं पट्टा ताडयते,  
 तल लाकि लो लो रेखि रेखिनि डेखि टेरिनि वाद्यते ।  
 ॐ ॐ कि ॐ ॐ कथुगि कथुगिनि धांगि धांगिनि कलरवे,  
 जितमतमनत महिमतनुता नमत सुरननमुत्सव ॥३॥  
 सु दाखि सुदा सुगुहदि सुदा सुगुहदि दो तें अररे,  
 चाचपट चच पट रणकि णे णे डणण डे डे डर ।  
 तिहा सरगमपधुनि—निधपमगरम ममममम सुर सेवता,  
 जिननाटयरगे कुशलमनिश दिशतु शासन देवता ॥४॥

## अध्यात्मगर्भित महावीरजिनस्तुति

उठि सबेरे सामायिक लीधु पिण गारणु नपि दीधुजी,  
 कालो कूतरो घरमाहे पठो धी सघटु तेणे पीधुजी ।  
 उठो ने बहुर आलम मूकी ए घर आप मभालोजी,  
 निजपति ने रुहो वीरजिन पूजी ममस्मित ने अनुशालोजी  
 चले पिलाडे झडप जपारी उमेरडि सवि फोडीजी,  
 चचल छैया गायो न रहे गाय भागी माल त्रोडीजी ।  
 तेह पिणा रेटियो नपि चाले मौनमलु कोने कहियेजी

ઋષભાદિક ચઠ્ઠીસ તીવર જપિય તો સુખ લહિયજી ॥૨॥

ઘર પામીદુ કરોને ગદુર ટાલો જોજીમાલુજી,  
ચોરટો એક કર છે હરો જોગડ ઘોને તાલુની ।

લગ્નયા શાશુણા ચાર આવ છે તે ઝખા નાંચિ રાલોજી,  
શિવપદ સુર જનતુ લહિય જો જિન વાર્ષી ચાલોજી ॥૩॥

ઘરનો ગૂણો ફોલ સ્વને છે વહુ તુમ મનમા લાગોજી,  
પોટ્ટે પલગે પ્રીતમ પોદયો પ્રેમ ધરીને જગાગોજી ।

માયપ્રભ સૂરિ કહ નહાં એ કથલો અધ્યાતમ ઉપયોગીજી,  
સિદ્ધાચિન દગી સાનિધ્ય થાયે તે શિવપદ ભોગીજી ॥૪॥

### સીમધરજિનસ્તુતિ

સીમધર જિન રર આતમના આગર,

પ્રધુ ત્રિગડ વેઠા ભાગે અર્થ ચિચાર ।

વહુ ભવ્યજનોને તાર્યા દીન દયાલ,

સૌભાગ્યવિજયની દૂર કરો વજાલ ॥૧॥

### શ્રીસિદ્ધાચલસ્તુતિ

શુભગ ગિરિ તીરથ મોટુ આદીશ્વર ત્રિહા સોહજી,

દહરા ઉચા ગગને અડિયા યોગીશ્વર મન મોહજી ।

ભવ જલ તરંગ માનુ પ્રવહન ભાગ્યુ શ્રવ મહારાજો,

પ્રાત ઉઠીને વદન કરીયે સૌભાગ્યવિજય સુખ સાગજી ॥૧॥

### સીમધરજિન સ્તુતિ

શ્રીસીમર મુવને વાલા આવ મલુ મુપિહાણુજી,

त्रिगडें तेने तपता जिनवर मुख मूखा हु जाणुनी ।  
 केवल कमला केलि करता हुलमडग कुलदीपोजी,  
 लाग्य चोराणी पूर्य आयु रुमिणी वर घणु जीपोजी ॥१॥  
 मप्रति सले वीर्य तीर्यर उदया अभिनय चढावा,  
 केइ रुमली केइ सलक परण्या केइ महीपति सुखराजी ।  
 श्रीसीमधर आदि अनोपम महारिंदेह जिंगटाची,  
 गुर नर कोढामोडी मिली तिहा जोव मुख जरिंदाजी ॥२॥  
 श्रीसीमधर त्रिगडो जोवा हु अलजापो राणी जी,  
 जाडा दुग जावी न शकु राट रिपम अरु पाणी जी ।  
 इण क्षेत्रे रही पाय हु लागु घन अर्थ मन जाणीजी,  
 अमृत रसवी अधिक वखाणी नीरदया पटराणीजी ॥३॥  
 पचागुली में प्रत्यक्ष दीठी जाणु हु जगमाताजी,  
 पहरण चरणा चोली पटोली अघर अनोपम राताजी ।  
 स्वर्गध्वन मिहासण गठी तूहीज देरी निग्याताजी,  
 सीमधरदासनरखमाली शक्तिगुलसुगदाताजी ॥४॥

### बीज की स्तुति

महीमदण पुष्पसोवण्णदेह,  
 जणानदण केवलनाणगेह ।  
 महानदलच्छी-बहुमुद्रिणय,  
 मुसंगमि सीमधर तित्तराय ॥१॥  
 पुरा वारणा ने य बीजान जाया,

भविस्मैति जे मन्वभन्वाण ताया ।  
 तहा सपय जे जिणा वड्डमाणा,  
 सुह दित्तु म न तिलोयप्पहाणा ॥२॥  
 दुरुत्तारसमारकुन्नास्पोय,  
 फलसालीपरपक्खालतोय ।  
 मणો રહિયસ્વેસુ મદારકપ,  
 जिणिदागम रदिमो सुमहप्प ॥३॥  
 વિકોસે જિણિદાણણમોજલીણા,  
 फलारूप-लारण्ण-सोहमार्पीया ।  
 વહતસ્ત ચિત્તમિ નિચ્ચપિ જ્ઞાણ,  
 मिरी भास्व दहि मे मुद्रनाण ॥४॥

### બીજ ક્રી સ્તુતિ

જનૂદીપે ઝહોનિશ દીપ દોય સૂર્ય દોય ચદા જી,  
 તામ વિમાને શ્રીરૂપભાદિક શાશ્વત નામ જિણદા જી ।  
 તેહ મળી ઉગત શશી નિરસી પ્રણમે મરિજનવૃદા જો,  
 વીત જારોપો ધર્મતુ વીને પૂજી શાંતિ જિણદા જી ॥૧॥  
 દ્રવ્ય ભાવ દોય મેદ પૂજો ચોરીસે તિનચદા જી,  
 વધન દોય દૂર કરીને પામ્યા પરમાણદા જી ।  
 દુષ્ટ ધ્યાન દોય મત્ત મતગજ મેદન મત્તમયદા જી,  
 વીતતણે દિન જે આરાધે તે જગમા ચિરનદા જી ॥૨॥  
 દ્વિરિય ધમ જિનરાજ પ્રમાણે નમત્તસરણ મહાણે જી,



निश्चय ने व्यग्रहार वैदुसु जागम मधुरी बाणे जी ।  
 नरक तिर्यंच गति दोष न होवे बीजने जे आराधे जी,  
 द्विविध दया उस धार करी करता शिखर साधे जी ॥३॥  
 चीज चद परे भूषण भूषित दीप निलयद चदा जी,  
 गरुड यश नारी सुखकारी निगानी सुखरुदा जी ।  
 चीज तणो तप करता भविने समकित सानिध्यकारी जी,  
 धारमिल शिष्य कह नय सपना गिन निगारी जी ॥४॥

### पचमी की स्तुति

पाचमने दिन चोमठ इंद्रे नेमिजिन महोत्सव कीधो जी,  
 रूपे रभा सानीमतीने छडी चारित्र लीधो जी ।  
 जननरत्नसम काया दीपे शम्भ लउन सुप्रमिद जी,  
 केवल पामी मुक्ति पहोता सघला कारज सिद्ध जी ॥१॥  
 आयु अष्टाद ने तारगा शत्रुजय गिरि मोह जी,  
 राणरूपुरने पार्श्व शखेश्वर गिरनार मन मोहे जी ।  
 सम्मेतशिखर ने बली बभारगिरि गोडी अंभण वदो जी,  
 पचमीने दिन पूजा करता अशुभ कर्म निरुदो जी ॥२॥  
 नेमि जिनेधर त्रिगडे पेठा पचमी महिमा बोले जी,  
 बीजा तप जप छे अति रहोला रही कोइ पचमी तोले जी ।  
 पाटी पोथी ठवणी कपली नोकरपाली सारी जी,  
 पचमीनु उजमणू करता लहिये शिखरधू प्यारी जी ॥३॥

शासनदरी सानिध्यकारी जाराधे अति दीपे जी,  
 काने कुडल सुगर्ण चूड़ी रूप रमझम दीपे जी ।  
 जयिका दरी विघ्न हरेजी शासन सानिध्यकारी जी,  
 पडित हतप्रिय जयकारी जिन जप जयकारी जी ॥४॥

### मौन एकादशी की स्तुति

मृगशिर गुद एकादशी ए भाखी नेमिजिणद तो,  
 मुक्ति बध्नी माडवो ए आदरे कृष्ण नरिद तो ।  
 रप अग्यार आगधिय ए एकादश वली मास तो,  
 जावजीय लगि जे कर ए पामे शिरपुर वास तो ॥ १ ॥  
 कल्याणक कक्षा एह तिथि ए नेउजिनना जाण तो,  
 ग्रीश चौविसी तिहा थकी ए पच पच गिणती जाण तो ।  
 भरतादिक दश क्षेत्रना ए जिनर सघला जाण तो,  
 त्रणे काल मिली घ्यावता ए पामे पद कल्याण तो ॥ २ ॥  
 जग अग्यार जे भणे ए पडिमा तप अग्यार तो,  
 सुव्रत शैठ तणी पर ए सुर पदवी लहे सार तो ।  
 अग्यार अग्यार प्रकाशनी ए पामे पसिगल ऋद्ध तो,  
 आगमने आराधता ए भवियण पामे सिद्ध तो ॥ ३ ॥  
 नेमिनाथ जिनर कहे ए एकादशी अधिकार तो,  
 पूछे कृष्ण नरेशरु ए निशुणे परपदा वार तो ।  
 शुभी अनुमोदे जादरे ए मायव परे जग सार तो,  
 शासन दवी सुसकरु ए कीर्तिचद्र हितकार तो ॥ ४ ॥

## रोहिणी तप की स्तुति

रोहिणी तप रगे करो प्राणी, सकल सुमग-

कारण जानी, लाभ लहो गुणखाणी ।

अजित जिनद नो जन्म ते जानी, आगे

इद्र अने इद्राणी, भाग अधिक मन आणी ॥ १ ॥

जतीत अनागत ने वर्तमान, व्यसन जन्म

दीक्षा गुणखाण, कवल भुक्ति कल्याण ।

दश क्षेत्रे दाग्या जिन भाण, नक्षत्र रोहि-

णी छे गुणखाण, आदरो भवि शुभजाण ॥ २ ॥

पद्मप्रभुनी एहज वाणी, सुगंधकुमारे

साची जानी, पर्यदा हर्ष भराणी ।

तप तरी काया निर्मल सीधी, जवरामर

पदवी जेणे लीधी, शिवरमणी वश कीधी ॥ ३ ॥

शासन दही मोले बखाण, जग उद्योत कर

जिन भाण, आप बुद्धि विद्याण ।

रोहिणी राणी ए तप कीधो, भग श्रीने सवि

कारज सीधो, कीर्तिचन्द्र जस लीधो ॥ ४ ॥

## श्री पर्युपणापर्व की स्तुति

सत्तर १०० जिन पूजा रचीने स्नात्र महोच्छ्रय कीजे  
दोल १०० नफेरी सल्लरी नाद सुणीने जी

गौरदिन जागड भाता भास भाताभरा एउ लीउ बी,  
 परवज्जगा पूर पुन बान्ता एम बापीन जा ॥ १ ॥  
 माग वाम रग दगम दूगमम वनादि भट्ट बीन जा,  
 उपर रली दग दोष वीन दिन वलीन पूमी ॥ बी ॥  
 रडा सन्यनो छठ बी ॥ गौर बाँले गुर्गावे बी,  
 एडर १ दिन कम महोच्छा भरल मगल रनाडे बी ॥ २ ॥  
 आठ दिना लम भमर वनासे भट्टमनो तर बीन जा,  
 नागस्तुनी पर वरल नदिर जो गुन भाव गरिब बी ॥  
 लापर दिन मम उल्लयाक मजपर वाद वदीन बी,  
 वाम नमीपर अनर बीन मजम पागि गुर्गावे बी ॥ ३ ॥  
 बारमे गुथ न मामागरी मरच्छा पटिरमि ॥ बी,  
 धीय प्रसादी विधिगु छान मरल जन्तुने रमी ॥ बी ॥  
 वासनादि दिन माहमीरच्छा बीन अधिक रदाइ बी,  
 भागविनय फड मरल मनोस्थ पूरे दबी निदाइ बी ॥ ४ ॥

इति स्तुति-प्रकरण ।



## ३ अथ स्तवनसंग्रह

### श्री रूप भद्रवज्रिनस्तवन

बालपणे आपण ससनेही, रमता नर नर वेशे । जान  
तमे पाम्या प्रभुताई, अमे तो ससारनिवेशे हो प्रभुजी ओलभडे  
मत स्वीजो ॥१॥

जो तुम ध्याता शिवमुख लहीये, तो तुमने केइ ध्यावे ।  
पण भवस्थिति परिपाक क्या विण, कोइ न मुक्ति जावे हो  
प्रभुजी ओलभडे० ॥२॥

सिद्ध निगास लहे भवसिद्धि, तेमा शो पाड तुमारो ।  
तो उपगार तुमारो वहिये, अभवसिद्धिने तारो हो प्रभुजी  
ओलभडे० ॥३॥

ज्ञानरतन पामी एकाते, यइ वेठा मेवासी । ते माहेलो एक  
जश जो आपो, त वाते शाबासी हो प्रभुजी ओलभडे० ॥४॥

अक्षय पद देता भविजनने, सकीर्णता नवि धाय । शिव-  
पद देवा जो समरथ छो, तो जश लेता शु जाय हो प्रभुजी  
ओलभडे० ॥५॥

सेवागुण रज्या भविजनने, जो तुमे करो वडभागी । तो  
तुमे स्वामी-केसू कहेवाजो, निर्मम ने नीरागी ॥६॥

नाभिनदन जगद्दन प्यारो, जगगुरु जग जयकारी ।  
 पवित्रधनो मोहन पमणे वृषभलछन बलिहारी हो प्रभुजी  
 सोलभडे० ॥ ७ ॥

### श्रीआदिजिनस्तवन

आदि जिणद प्रभु अरजी लीजे, शिपरमणी सुख दीजे रे ।  
 गुम नजर करी साहिव मुजने, दरिमन बेल्हा दीजे रे ॥  
 साहिव प्यारो रे, साहिव प्यारो मुजने तारो, भगोदधिपार  
 रतासे रे । साहिव प्यारो रे ॥ आकणी ॥१॥

पावे जाठे मृचने पीडगे, नरुं निगोद नचायो रे । काल  
 प्रनादि कुमति मगे, जन्म मरण दुख पायो रे । साहिव० ॥२॥  
 मोहराजानो मन्त्री मलियो सोल सगाते भलीयो रे ।  
 उष्णा तरुणी आणी मेली, काम कीचढम क्लीयोरे ॥ साहिव॥३॥

तेरे शरीस तेत्तीस टाली, सत्तावन छटकायारे । दश  
 चोराली दूर करीने, नाभिनदन ध्यापारे ॥ साहिव० ॥४॥

पारठापुरम ऋषभ जिनेश्वर, भेट्या मन शुद्ध भावे रे ।  
 आदिजिननु ममरण करता, कीर्तिचद्र सुख पावे रे ॥  
 साहिव० ॥५॥

### श्री आदिजिनस्तवन

प्रथम जिनेश्वर प्रणमिये, जास सुगधी रे काय ।  
 कल्पवृक्ष परे तास इद्राणी नयन जे, भृग परे लपटाय ॥१॥

रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे जाखाद ।  
 तेहथी प्रतिहत तह मानु कोइ नवि करे, जगमा तुमशु रे पाद । ७।  
 बगर धोइ तुज निर्मली काया कचनमान ।  
 नही भस्वेद लगार तार तु तेहने, ने धर ताहरु ध्यान ॥३॥  
 राग गयो तुज मन वकी, तहमा चित्र न कोय ।  
 रुधिर जामिपयी राग गयो तुज जन्म सी, दूर सहोदर होय ॥४॥  
 आसोआस कमल समो, तुज लोसोत्तर वात ।  
 देखे न आहार नीहार चमचभु घणा, एहवा तुज अवदात ॥५॥  
 चार अतिशय मूलयी, ओगणीस दवना कीध ।  
 कम खप्पायी अग्यार चोत्रीस इम अतिशया, ममगायागे  
 प्रसिद्ध ॥६॥  
 जिन उत्तम गुण गावता, गुण आवे निज अग ।  
 पञ्चविजय कह एह समय प्रभु पालजो, जिम थाउ अखय  
 अभग ॥७॥

### श्री आदिजिनस्तवन

आज जानद अपार, हमार आज आनद अपार ।  
 मरुदवीनदन कर्म निरुदन, निररघा नाभिकुमार, हमारे ॥१॥  
 अजर अमर अकलरु जिनेश्वर,  
 रूपमरूप भटार हमार ॥२॥  
 अञ्जराण गरण करण जगनायक,





# केशरीयाजी का स्तवन

( केशरीया ध्यातु श्रुत यह राग )

केशरिया प्यारा मनहु मोक्षु र तारा रूप म,  
सावरीया भाग दिल लोभाणु रे तारा रूपम ।  
नगर धुलेया शोभतो र, मंदिर है गुलजार  
पावन जिनालय माह बिसाने, केशरिया मरुतार र

केशरीया प्यारा ॥१॥

ग्राम वरण तू मोहनगारो, करुणा राम भडार,  
सध सरल दर्शन कु आव, कर पूजन सुखसार रे केश ॥२॥  
परिकर सारा है रुपरी, अगीया श्लाकमाल ।  
काने कूडल शिर पर सोह, मुगट ने फूलमाल रे केश ॥३॥  
रग रूपालो है लटमालो, मुख मुदर है भारी ।

नरनारी सन मोहि रखार, जाउ तुज बलिहारी रे केश ॥४॥  
उगणीसे बीआमी बों, उदि चौदम पोष भास ।  
तखतगढ़ के सध साथ, याया करी तुम खास र केश ॥५॥

रूपवृक्ष चितामणि प्यारो, केशरीया महाराज ।  
सौभाग्यविजय स नेण मिलायो, करो सरल मुख राज रे

केशरीया० ॥६॥

## श्रीरूपभदेव जिन स्तवन

( राग माद )

प्रभु छो जविसारा, भुवन आधार, ऋषभ प्रभु भगवान ।  
 दिल हरनारा, मोहनगारा, लागो छो प्यारा रूपभ प्रभु भगवान ॥४॥  
 अति उपगारी नाथ हमारा, भर भय भजनहार ।  
 हाथ जोडी तुम पायमा र, पडीयें भ्यामी निहार र, प्रभु  
 दिल हरनारा ॥१॥

जानि पिता नृप आदि छो र, आदि गुरु आदिदर ।  
 सकल कला तुमने दर्शाई, नमिये दवाधिद्व र, प्रभु० ॥२॥  
 केवल ज्ञान जे ताहरु र, चमके तेज अनत ।  
 विश्व माहि ते सघळे छवायु, नाथ नमो गुणरत र, प्रभु० ॥३॥  
 देव देवी मली जप्सरा र, ठम ठम ठमके पाय ।  
 आनंद रस भर नाच करती, तुम गुण रगे गाय र, प्रभु० ॥४॥  
 सरण मधुरु आपनु रे, कष्ट सह्य हरनार ।  
 एम जाणी तुम पाय पडे छे, हरखे सकल सत्तार रे, प्रभु० ॥५॥  
 सन गुणी अरिहत छो र, वाछित फल दातार ।  
 विजयसौभाग्यना कष्ट निवारी, आपो शांति अपार रे ।  
 प्रभु दिल हरनारा० ॥६॥

## ऋषभदेव स्तवन

( दाम परे दया लावो रे यह राग )

आदि प्रभु मने तारो रे, दयाल स्वामी जादि प्रभु मने तारो जा० ।  
 इन्द्रादि पूजत पाया, इन्द्रनार मन म ध्याया ।  
 आशा प्रभु मारी पुरो पुरो रे, दयाल स्वामी० ॥१॥  
 मिथ्यात्व जघारु मारु, आज भाग्यु मनजु सारु ।  
 देखी छत्री तारी रूडी रूडी र, दयाल० ॥२॥  
 ससारजाल धारी, नाव वार पल में मारी ।  
 जाव भन भन ना फरा फेरा रे, दयाल० ॥३॥  
 सभाल ले नाथ मारी, स्नेह छुद्ध दिल म धारी ।  
 वीनति करु शिर नामी र, दयाल० ॥४॥  
 सौभाग्य बाछित पूगे, कर्म फद सघन चूरो ।  
 जापो शिवरमणी प्यारी प्यारी रे, दयाल० ॥५॥

## आहोर ऋषभदेव स्तवन

( जै जै सुख कर दुख हर० यह चाल )

ॐॐ जगपति अक्षरण शरण नाव प्रभु जाउ बलिहारी ॐ ।  
 मूरति कैसी मोहनगारी, नाव तुमारी अति सुखकारी ।  
 देखत हम मन लग रही प्यारी, ॐॐ ॥१॥  
 काने कुडल शिर पर मोह, ताज सोनेरी अति मन मोहे ।

रुठ नयसर द्वार ही सोह, ॐॐ ० ॥२॥  
 सुंदर तेरा अचरिज क़ारी, रूप दिखाता है अचिकारी ।  
 मैं नहीं समझत ना मति मेरी, ॐॐ ० ॥३॥  
 हे जगनायक दीन दयालो, भव्य जना के दुख सर टालो ।  
 अंतर हम कर दो उजियालो, ॐॐ ० ॥४॥  
 आहोर नगर आदि जिनदा, भेट लिया है परमानदा ।  
 विजय मौभाग्य क मिट गया कदा ॐॐ ० ॥५॥

### आदि प्रभु गायन

भर लावो र चगेरी फूलन की,  
 आगी रचावो नाभिनदन की, भर लावो रे० ॥१॥  
 चपो चवेली मरवो मोगरो,  
 धीच में कलिया गुलाबन की, भर० ॥२॥  
 चुन चुन कलियां अगियां बनारो,  
 खून छबी खुली हासन की, भर० ॥३॥  
 गेंद गुलानको हीवडे विराजे,  
 चंद्रमुखी मूर्ति मोहन की, भर० ॥४॥  
 सुर सुरियामे जिनसर पूज्या,  
 माख मुणो रायपसेणी की, भर० ॥५॥  
 द्रव्य भाव से पूजा र करता,  
 निर्मल ज्योत समकित की ।  
 भर लावो रे चगेरी० ॥६॥

आजोजी आजो, आदिनाथ क गुण गाने वाले ।  
चरनन क चाहने वाले, दरिमन क पानेवाले, तान मान ताल  
से निन मंदिर से गनाने वाले । आजो जी० ॥१॥  
समस्तित से धारन वाले, त्रिपदी पद पालन वाले, चउ  
गुन क जान, आतम ज्ञान के बढ़ाने वाल । आजोजी० ॥२॥  
पर जीव के जानन वाले, रणा क मानन वाल, भक्षाभउ दिल  
में लक्ष क लगाने वाले । आजोजी० ॥३॥  
आनक प्रव धरने वाल, एरु अठ से डरने वाले,  
तरने भन पार सुदृढ नाव क चलाने वाल । आजोजी० ॥४॥  
जिन वच रस पीने वाल, धन धन जग जीने वाले, गिरत  
भन रूप में निज प्राण क बचाने वाले । आजोजी० ॥५॥

### श्री अजितनाथ जिन स्तवन

श्रीवलडी उघाणी रे अजित जिणदसु,  
काइ प्रभु पाखे वण एरु मन न मुहाय जो ।  
ध्यान नी ताली र लागी नेहसु,  
जलदघटा जिम शिसुवनाहन दाय जो, श्रीव० ॥१॥  
नेहघलु मन माहरु र, प्रभु जलने रह,  
तन बन मन ए कारणधी प्रभु मुह जो ।

मार तो आधार र माहिव सगलो,  
 जतगत नु प्रभु आगल कहु मझ जो, प्री० ॥२॥  
 साहब ने साचो र जगमा जाणिय,  
 सेवकना जे सहज सुधार काज जो ।  
 णहवे र आरणे केम करीने रहु,  
 विरुद तमारु तरण तारण जहाज जो । प्री० ॥३॥  
 तारकता तुन माह र श्रवणे सामली,  
 ते भणी हु जाव्यो तु दीनदयाल जो ।  
 तुज करुणानी लहर र मुन कारज सर,  
 शु घणु फहीये जाण आगल ठुवाल जो, प्री० ॥४॥  
 करुणादिकु कीधी र सरक ऊपरे,  
 भयभय भायठ भागी भक्ति प्रमद्य जो ।  
 मन बाजित फलियार जिन आलयने,  
 कर जोडीन मोहन कह मन रग जो, प्री० ॥५॥

### श्री अजितनाथ जिन स्तवन

अजित जिगदगु प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो सग क ।  
 मालती फूले मोदीयो, किम रेसे हो बायल तरु भृग क, अ० ॥१॥  
 गंगा जल मा जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के ।  
 सरोवर जलधर जल बिना, नत्रि चाह हो जल चातक बाल  
 क, अ० ॥२॥

मोहिल कल वृजित कर, पामी मजरी हो पजरी महकार क।  
 जोछातरर नपि गमे, गिरुआशु हो होय गुगनो प्यार के, अ० ॥३॥  
 कमलिनी दिनरर रर ग्रह, वली कुमुदिनी हो घर चदसु प्रीतक।  
 गौरी गिरिश गिरधर विना, नवि चाह हो कमला निज चित्त  
 के अ० ॥४॥  
 तिम प्रभुगु मुज मन रम्यु, बीजासु हो नपि जाव दाय क।  
 श्रीनयनिजयनिनु मतणो, राचरुनस हो नित नित गुण गाय  
 क, अ० ॥५॥

### श्री सभच जिन स्तवन

सभच जिनर वीनति,  
 जमधारो गुण ज्ञाता र।  
 खामी नही मुन खिजमते,  
 कदीय होशो फल दाता रे, सभच० ॥१॥  
 कर जोडी ऊभो रह,  
 रात दिवस तुम ध्याने रे।  
 नो मन मा जाणो नही,  
 तो शु कहिय छाने रे, सभच० ॥२॥  
 खोट खनाने सो नही,  
 दीजिय वाछित दानोरे।  
 करुणा नजर प्रभुनी तणी,  
 बाधे सेनरु वानो रे, सभच० ॥३॥

काल लब्धि नहीं मति गणो,  
 भाव लब्धि तुम हावे रे ।  
 लडधडतु पण गययचु,  
 गाने गयवर सावे रे, सभर० ॥४॥  
 दस्रो तो तुमहीज भलु,  
 बीजा तो नरि जाचु रे ।  
 पाचकजन यह साइशु,  
 फलशे एह मुन साचु रे, सभर० ॥५॥

### श्री सभय जिन स्तवन

( अतरजामी सुण अलवेमर यह चाल )

ममकित दाता समकित आपो, मन माग यह धीठु ।  
 छति वस्तु देता गु शोचो, मीठु छे सहुए दीठु ।  
 प्यारा प्राणधरि छो राज, सभय जिनर मुजने । आ० ॥१॥  
 इम जाणो जे आपे लहिय, त लाघु शु लेषु ।  
 पण परमारय ग्रीछी आपे, तेहज कहिय दउ, प्यारा० ॥२॥  
 अर्थी हु तू अर्थ समर्पक, इम मत करजो हांसु ।  
 प्रकट न हतु तुमने पण पहिला, ए दासानुपासु, प्यारा० ॥३॥  
 परम पुरुष तुमैं प्रथम भजीने, पाम्या ए प्रभुताई ।  
 तिण रूपें तुमने इम भनिये, तिणें तुम हाथ बडाइ, प्या० ॥४॥



तुमे म्यामी हु सेराकामी, मुजगे स्वामी निवाजे ।  
 नही तो हठ माडी मागता, विण मित्र सेवरु लाजे प्या० ॥५॥  
 ज्योते ज्योति मिले मत ग्रीछो, कुण लहेशे कुण भजगे ।  
 साची भक्ति ते हस तर्णी परे, खीर नीर मय रुशे, प्या० ॥६॥  
 उलग कीधी जे लेखे आची, चरण मेट प्रभु दीधी ।  
 रूपविबुधनो मोहन पभणें, रसना पावन कीधी प्या० ॥७॥

### श्री अभिनन्दनजिन स्तवन

टीठी हो प्रभु दीठी जग गुरु तुस,  
 मूरति हो प्रभु मूरति मोहन वेलडी जी ।  
 मीठी हो प्रभु मीठी ताहरी राणी,  
 लागे हो प्रभु लागे जेसी सेलडी जी ॥१॥  
 जाणु हो प्रभु जाणु जन्म स्वयं,  
 नो हु हो प्रभु जो हु तुम माये मिल्यो जी ।  
 सुरमणि हो प्रभु सुरमणि पाम्यो हव्य,  
 आगणे हो प्रभु जागणे मुझ सुखरु फल्यो जी ॥२॥  
 जाग्या हो प्रभु जाग्या पुण्य अकर,  
 माग्या हो प्रभु मुह माग्या पाशा डल्या जी ।  
 वूठा हो प्रभु वूठा अमीरस मेह,  
 नाठा हो प्रभु नाठा अशुभ शुभ दिन बल्या जी ॥३॥

भूख्या हो प्रभु भूख्या मल्या घृतपूर,  
 तरइया हो प्रभु तरइया दिव्य उदरु मल्या जी ।  
 याक्या हो प्रभु थाक्या मिल्या मुखपाल,  
 चाहता हो प्रभु चाहता सजन हेते मल्या जी ॥४॥  
 दीयो हो प्रभु दीयो निशा वन गेह,  
 माधी हो प्रभु सायी थले जले नौरा मिली जी ।  
 कलिजुगे हो प्रभु कलिजुगे दुखहो तुझ,  
 दरिसन हो प्रभु दरिसन लयो जाशा फली जी ॥५॥  
 वाचरु हो प्रभु वाचक जस तुम दास,  
 वीनवे हो प्रभु वीनव अभिनन्दन सुणो जी ।  
 कहिये हो प्रभु कहिये म देजो छेद,  
 देजो हो प्रभु दजो मुख दरिसणतणो जी ॥६॥

### श्री अभिनन्दनजिन-वाणी महिमा स्तवन

तुम जोजो जोजो रे वाणीनो प्रकाश तुमे जोजो जोजो रे ।  
 उठे छे अखड घनि जोजने समलाय ।  
 नर तिरप देव आपणी, सहु भाषाये समजाय, तुमे० ॥१॥  
 द्रव्यादिक दखी करीने, नयनिक्षेपे जुच ।  
 भग वणी रचना घणी काइ, जाणे सहु अद्भुत, तुमे० ॥  
 पय सुधा ने श्नुवारि हारी जाये सर्व ।  
 पाखडी जन मामलीने मूकी दिये गर्व, तुमे० ॥३॥

गुण पायीसे जलकरी साड, अभिनन्दनजिनवाण ।  
मशय छेद मनवणा प्रभु, केवल ज्ञाने जाण, तुमे० ॥४॥  
चाणी जे जन साभले ते, जाणे द्रव्य ने भाव ।  
निश्चय ने व्यवहार जाणे, जाणे निज पर भाव, तुमे ॥५॥  
माध्य साधन भेद जाणे, ज्ञान ने जाचार ।  
हय ज्ञेय उपादेय जाणे, तत्त्वातत्त्व विचार, तुमे० ॥६॥  
नरक स्वर्ग अपर्ग जाणे, धिर व्ययने उत्पाद ।  
राग द्वेष अनुग्रह जाणे, उत्तर्ग न अपराध, तुमे० ॥७॥  
निज स्वरूपन जोलखीने, जलव स्वरूप ।  
चिदानन्दधन आत्मा ते, धाव निजगुणभूष, तुमे० ॥८॥  
चाणी श्री जिन उत्तम केरा, अलव पदपद्म ।  
नियमा त परमाव तर्जने, पाम शिवपुर मन्त्र, तुमे० ॥९॥

### श्री मुमतिनाथ स्तवन

मुमतिनाथ गुणशु मिली जी, बाधे मुन मन ग्रीति ।  
तेल विद्रु जिम निस्तरे जी, जलमाह भली रीति ।  
सोभागी जिनशु लागो जगिहड रंग, आ० ॥१॥  
सज्जनशु जे ग्रीतडी जा, छानी त न रखाय ।  
परिमल कस्तूरीतणो जी, महिमाह महजाय, मोभागी० ॥२॥  
आगलिये नमि मेरु दहाये ठागडिये रमि तज ।  
जजलिमा जिम रंग न भाये, मुज मन विम प्रभु हेज सो० ॥३॥

हुजो छिपे नहीं अगर अरुण, जिम खाता पान सुरग ।  
 पीयत भर भर प्रभु गुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभग, सो० ॥४॥  
 ताकी इक्षु पलालगु जी, न रह लही बिस्तार ।  
 बाचरु जस रह प्रभुतणो जी, तिम मुज प्रेम प्रकार, सो० ॥५॥

सीनोर गाम सुमति जिन स्तवन

( गम बलिहारी की )

सुखशरी सुखकारी मुरकारी कृपानाथ हो  
 जाउ गरी सुमति जिन सुमति सेवरु दीजीये जी ।  
 दरिमन दन दीजे, कुमति को दूर कीजे ।  
 यही मागु हु हे दातारी, कृपानाथ हो० ॥१॥  
 कुमति ने कामण किया, मुझ को भरमाय दिया ।  
 इन से जुडा दो ह सरदारी कृपानाथ हो० ॥२॥  
 पचम अरतार लिया, दुनिया को तार दिया ।  
 आग पुरो रहु हु पुकारी, कृपानाथ हो० ॥३॥  
 निरादर नाहीं कीजे, विरुद सभाल लीजे ।  
 तरण तारण हो हे अधिशारी, कृपानाथ हो० ॥४॥  
 सीनोरमडण नामी, सुमति जिनेश्वर स्वामी ।  
 उडी उतारो प्रभुजी हमारी, कृपानाथ हो० ॥५॥  
 निधि रम निधि चदा, सबत् हे सुखवदा ।  
 वीरविजयतु आनदकारी, कृपानाथ हो० ॥६॥

श्री पद्मप्रभ जिन स्तवन

( देशी श्रवणदे की )

श्री पद्मप्रभजिन सेरिये रे, शिखसुदरीभरतार कमल  
दल आखडिया । मोहनगु मन मोही ग्यु रे, रूपतणो नही पार  
ममुहधनु बाकडिया ॥१॥

अरुणकमलसम दहडी रे, जगजीवन जिनराय, वयण  
रस सेलडिया । त्रीम पूरन लख आउगु रे मारे राछित राज  
मोहन सुरवलडिया ॥२॥

महियरो सवि टोले मिली रे, शोले सजी श्रवणार मिली  
मखि शेरडीया । गुण गाती घुमरी दिय रे, करी चूडी रल-  
नार, कमलमुख गोरडीया ॥३॥

मात सुसीमा उरे धर्यो रे, भुज दिलडामाह देव, वस्यो  
दिन रातडीया । कोसनी नयरीतणो रे नाथ नमो नित्यमेव,  
सुणो सखि रातडीया ॥४॥

धनुष अहीशय शोभती रे, उचपणे जगदीश, नमो साहे-  
लडिया । रामविजय प्रभु सेरता रे, लहिये मयल जगीश रधे  
मुखवेलडिया ॥५॥

## श्री पद्मप्रभ स्तवन

( रखता या कवाली )

पद्म प्रभु प्राण से प्यारा, डुडारो कर्म की घारा ।

कमफट तोटना घोरी, प्रभुजी से जर्ज है मोरी,

पद्म प्रभु० ॥१॥

लघुमय एक बे जीया, मुक्ति म वाय तुम किया ।

न जानी पीड व मोरी, प्रभु अर खेंच ल दोरी ।

पद्म प्रभु० ॥२॥

त्रिपय सुख मानी मां मन में, गया सर काल गफलत में ।

नरक दुख पेदना भारी, निकलना ना रही बारी ।

पद्म प्रभु० ॥३॥

परवश दानता झीनी, पापकी पोट सिर लीनी ।

भक्ति नही चाणी तुम करी, रहा निश दिन दुख घेरी ।

पद्म प्रभु० ॥४॥

इण त्रिव जीनती तोरी, करूँ मैं दोष कर जोरी ।

आत्म आनद मुज दीजो, गीर का नाम मच कीजो ।

पद्म प्रभु० ॥५॥

## श्री सुपार्श्वजिन स्तवन

( देशी आछेलाल )

श्रीसुपास जिनराज, तू त्रिभुवन शिरताज ।  
 आज हो छाने रे ठडुराई प्रभु तुज पदतणी जी ॥१॥  
 अतिशय सहजना च्यार, कर्म स्वप्नायी अग्यार ।  
 आज हो कीधा र जोगणीम सुरगण भासुर जी ॥२॥  
 बाणी गुण पात्रीम, प्रतिहारज जगदीश ।  
 आज हो राजे रे दीवाजे छाजे आठशु जी ॥३॥  
 दिव्यध्वनि सुरफूल, चामर छत्र अमूल ।  
 आज हो राजे र भामडल गाजे दूदुभि जी ॥४॥  
 सिद्धामन अशोरु, बेठा मोहे लोरु ।  
 आज हो स्वामी रे शिरगामी वाचकचम धुण्यो जी ॥५॥

## श्री चन्द्रप्रभजिन स्तवन

श्री चन्द्रप्रभजिन साहिबा रे, तुमे छो चतुरसुजाण, मनना मान्या ।  
 सेवा जाणो दासनी रे, देशो पद निर्वाण, मनना मान्या ।  
 आगो आगो र चतुर मुख भोगी, कीने बात एकात  
 अभोगी गुण गोठे प्रगटे प्रेम मनना० ॥१॥

ओठु अधिकु पण कह रे, आसगायत जेह, मनना मान्या ।  
 आप फल जे अणकह रे, गिरुओ साहिन तेह, मनना मान्या ॥

દીન ઝલા ત્રિણ દાનથી રે, દાતાની વાધે મામ, મનના  
માન્યા । જલ દિયે ચાતક સ્વીતરી રે, મેઘ દુઆ તિળે શ્યામ,  
મનના માન્યા ॥૩॥

પિયુ પિયુ કરી તુમને જપુ રે હુ ચાતક તુમે મેહ, મનના  
માન્યા । ણક લહરમા દુત્ત હરો રે, ગાધે યમળો નેહ, મનના  
માન્યા ॥૪॥

મોડુ વહલુ આપતુ રે, તો શી ટીલ ઝાપ, મનના માન્યા ।  
રાવક જસ રહે જગધણી રે, તુમ તૂઠ સુખ વાય, મનના  
માન્યા ॥૫॥

### શ્રી સુવિધિનાથ સ્તવન

( સાહિબા મોતીડો હમારો યહ દશી )  
અરજ સુળો ણક સુવિધિ જિનેસર,  
પરમ કૃપાનિધિ તુમે પરમેસર । સાહિબા  
સુઝાની જોગો તો વાત છે માન્યાની । જા૦ ।  
વહગાજો પવન ચરણના મારી,  
કિમ આદરી અથની અસગારી । સા૦ ॥૧॥  
છો ત્યાગી શિવ વાસ વસો છો,  
દરદરમુત રે કેમ વસો છો ॥સા૦॥  
જાગી પ્રમુગ્ધ પરિગ્રહમા જો પડ્યો,  
હરિહરાન્કન ત્રિણ વિધ નડ્યો, મા૦ ॥૨॥



धुरवी सरल समार निवार्यो,  
त्रिम करी द्रव्यव्यादिक धार्यो, सा० ।

तर्जी सयम ने गच्छो गृहवासी,  
कुण आशावना तजज चोरासी, मा० ॥३॥

समस्ति मिथ्यामतिमें निरतर,  
इम रिम भाजजे प्रशुजी अतर, मा० ।

लोह तो देखजे तेहनु रुहजे,  
इम त्रिनता तुम रिण गिर रहजे, मा० ॥४॥

पण हव शास्त्रगते मति पहोची,  
तेहथी जोयु में उट् आलोची, मा० ।

इम कीध तुम प्रभुताइ न घट,  
साहमो इम अनुभर गुण प्रस्ट, मा० ॥५॥

हय गय यद्यपि तू आरोपाए,  
तो पण सिद्धपणु न लोपाए, सा० ।

त्रिम मुकुटादिक भूषण कहमाए,  
पण कचननी रुचनता न जाए, सा० ॥६॥

भक्तनी करणीये दोष न तुमने,  
अघटित नहुनु अजुक्त ते अमन, मा० ।

लोपाए नहा तू कोइथी स्वामी,  
मोहनरिचय कहे गिर नामी, सा० ॥७॥

## श्री शीतल जिन स्तवन

श्री शीतलजिन भेटिय, करी चोरु भक्के चित्त हो ।  
तइयी कहो छानु किस्यु, जेहने सोंप्या तन मन वित्त हो ।  
श्री शीतल० ॥१॥

दायक नाम छे घणा, पण तू सायर ते कूप हो । ते बहु  
खजुवा तग तगे, तू दिनकर तेजसरूप हो । श्री शी० ॥२॥  
मोहोहो जाणी जादर्या, दारिद्र भाजो जगतात हो ।  
तू करुणावतशिरोमणि, हु करुणापात्र विरयात हो ।  
श्री शी० ॥३॥

अतरनामी सवि लहो, अम मननी जे छे वात हो ।  
मा जागल मोशालना, शा वरणववा अवदात हो ।  
श्री शी० ॥४॥

जाणो तो ताणो किस्यु, सेवा फल दीजें देव हो ।  
वाचक जस कहे ढीलनी, ए न गमे मुज मन टेव हो ।  
श्री शी० ॥५॥

## श्री श्रेयासजिन स्तवन

( कर्म न छूटे रे प्राणिया यह चाल )

तुमे बहु मैत्री रे साहिवा, मारे तो मन एक ।  
तुम विण बीजो रे नवि गमे, ए मुज मोटीरे टेक ।  
श्री श्रेयास कृपा करो ॥१॥

मन राखो तुम मरि तणा, पण मिहा एरु मलि जाओ ।  
ललचावो रख लोम्ने, साध महज न धाओ ।

श्री त्रेयास० ॥२॥

रागभरे जनमन रहो, पण तिहुकाल पैराग ।  
चित्त तुमारो र समुद्रनो, सोय न पाम ताग ।

श्री त्रेयास० ॥३॥

एहयासु चित्त मलव्यु, कलव्यु पहला न काइ ।  
सेरु निपट अरुह उ, नियहयो तुम ताइ ।

श्री त्रेयाम० ॥४॥

नीरागीसु र मिम मिने, पिण मिलानो एसाव ।  
वाचक जम रह युन मिल्यो, भक्ते रामण तत ।

श्री त्रेयाम० ॥५॥

श्री रामपूज्यजिन स्तवन

(साहना मोतीढो हमारो यह दर्शी)

स्वामी तुम ताइ रामण मीधु, चिनड अमारु चोरी लीधु ।  
साहना रामपूज्य जिणदा, मोहना रामपूज्य ॥आ०॥  
अमे पण तुमसु कामण करु, भक्ति ग्रही मनघरमा धरु ।

साहना० ॥१॥

मनघरमा धरिया घर शोभा, दखत गित्य रहसु विर घोभा ।  
मन पैरुठ अडुठिन भक्ते, योगी भाखे अनुभव युक्ते ।

साहना० ॥२॥

हेशे वासित मन समार, हेशे रहित मन ते भय पार ।  
जो निशुद्ध मनघर तुमे आव्या, प्रभु तो अमे नरनिधि ऋद्धि  
पाव्या । सा० ॥३॥

सात राज अलगा जइ पठा, पण भगत अम मनमा पठा ।  
अलगा ने उलगा जे रहधु, ते भाणाखडखड दुख महधु ।  
सा० ॥४॥

ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करधु हवे टके ।  
खीर नीर पर तुमसु मलधु, वायक जग कह हजे हलधु ।  
सा० ॥५॥

### श्री वासुपूज्य गाथन

( राग माढ )

वासुपूज्य विलासी, चपाना गामी, पूरो हमारी आश ।  
फर पूजा हू खासी, केसर घामी, पुष्प सुगामी, पूरो हमारी  
आश० ॥

चैत्यवदन करु चित्तधी प्रभुनी, गावु गीत रमाल ।  
एम पूना करी विनति करु तु, आपो मोक्ष निशाल ।  
दीयो कर्मने फासी, काढो कुगामी, जेम जाय नाशी,  
पूरो हमारी आश । वासु० ॥१॥

आ मसार घोरमहोदधियों, काढो अमने बहार ।  
स्वारथना सहु कोइ सगा छे, मात पिता परिवार रे ।  
बालमित्र उलामी, विजयविलासी, अरजी खासी,  
पूरो हमारी आश । वासुपूज्य विलासी० ॥२॥

## श्री विमलनाथ स्तवन

( नमो रे नमो श्री शत्रुञ्जय गिरिनर यह दशी )

सेरो भनिया विमल जिनेसर, दुलहा सञ्जनसगा जी ।

एहजा प्रभुनु दरिमाण लेउ, ते आलसमाहे गगा जी ।

सेवो० ॥१॥

अमर पामी आलम करशे, त मूरतमा पहलो जी ।

भूरपान जेम घेअर देता, हाथ न माड घलो जी । सेवो० ॥२॥

भव अनतमा दर्शन दीठु, प्रभु एहवा दरगड जी ।

विरटप्रथि जे पोलि पोलियो, कर्मविअर उघाड जी ।

सेवो० ॥३॥

तत्त्वप्रीति करी पारणी पाए, विमलालोक आनी जी ।

लोयण गुरु परमाच्च दिये तय, भय नाखे सवि भाजी जी ।

सेरो० ॥४॥

मर्म भागो तव प्रभुमु प्रेमे, वात करु मन खोली जी ।

सरल तणे जे हइड जावे, तेह जणावे खोली जी । सेरो० ॥५॥

श्री नयविजयनिघुषपयसेअरु, राचकनम कह साचु जी ।

कोडि रुपट जो कोइ दिखावे, तो प्रभु विग नही राचु जी ।

सेरो० ॥६॥

## श्री विमलनाथ जिन स्तवन

(गजल कपाली)

विना दर्शन किये तेरा, नहीं दिल को करारी है ।  
 चुग कर ले गई मन को, प्रभु सरत तुम्हारी है । विना० ॥१॥  
 न कलपाजो दया लाजो, हमें निज पास बुलाजो ।  
 म्हा जाता नहीं अर तो, प्रिय का चोख भारी है । विना ॥२॥  
 ज्ञान से ध्यान से तेरा, न सानी रूप दुनिया में ।  
 फिदा हो प्रेममें तरे, उमर सारी गुजारी है । विना० ॥३॥  
 दया पूरन कष्ट चूरन, करो अर आश्रु मम पूरन ।  
 मेहेर की एक ही दृष्टि, हमें दृष्टि तुम्हारी है ॥ विना० ॥४॥  
 विमल है नाम प्रभु तेरा, विमल कर नाथ मन मेरा ।  
 चरण में आप के डेरा, तिलक भवभय स्त्रिकारी है । विना० ॥५॥

## श्री अनन्तनाथ जिन स्तवन

(देशी ऋद्धि की)

धार तरंगानी सोहिली दोहिली,  
 चउदमा जिनतणी चरण सेवा ।  
 धार पर नाचता दख राजीगरा,  
 सेयना धार पर रह न दवा । धार० ॥१॥  
 एक ऋद्धि सेविय विविध मिरिया करी,  
 फल अनेजात लोचन न दखे ।

फल अनेमात मिरिया रुरी रापडा,  
 रडवड चार गतिमाहि लेखे । धार० ॥२॥  
 गच्छना भेद बहु नपण निहालता,  
 तत्त्वनी धान करता न लाणे ।  
 उदरभरणादि निवृत्त करता वरा,  
 मोहनडिया कलिकाल राजे । धार० ॥२॥  
 वचननिरपेक्ष व्यवहार श्रुतो कसो,  
 वचनसापक्ष व्यवहार माचो ।  
 वचननिरपेक्ष व्यवहार समारफल,  
 साभली आदरी काइ राचो । धार० ॥४॥  
 दप गुरु धर्मनी गुद्धि कहो केम रहे,  
 केम रह शुद्ध श्रदान जाणो ।  
 गुद्ध श्रदान मिण सर्व मिरिया मरी,  
 छार पर लीपणु तेह जाणो । धार० ॥५॥  
 पाप नही कोइ उत्सूत्र मापण जिस्त्यु,  
 अर्म नही कोइ जग मूत्र सरिग्यो ।  
 मूत्र अनुसार जे भणिक मिरिया कर,  
 तेदनु गुद्ध चारित्र परसो । धार० ॥६॥  
 एह उपदेशनो सार सक्षेपणी,  
 जे नरा चित्तमें नित्य ध्याव ।  
 ते नरा दिव्य बहुमाल मुक्क अनुभवी,  
 निमत न पावे । धार० ॥७॥

## श्री धर्मनाथ जिन स्तवन

यम जिनेसर गाउ रगसु,  
 भग म पटओ हो ग्रीव जिनेसर ।  
 बीजो मनमदिर आणु नही,  
 ए जम कुलपट रीत जिनेसर । धम० ॥१॥  
 धरम धरम करतो जग सट्टु फिरे,  
 धम न जाणे हो मम जिनेसर ।  
 धर्म जिनेसर चरण ग्रह्या पडी,  
 कोइ न बाध हो र्म जिनेसर । धर्म० ॥२॥  
 प्रयचन-जजन जो मदगुरु कर,  
 दखे परम निधान निनसर ।  
 हृदयनयण निहाले जग धणी,  
 महिमामेरुममान जिनेसर । धर्म० ॥३॥  
 दोडत दोडत दोडत दोडियो,  
 जेती मननी र दोड जिनेसर ।  
 प्रेम प्रतीत विचारो दूकटी,  
 गुरुगम लजो रे जोड जिनेसर । र्म० ॥४॥  
 एक परसी किम प्रीति परगड,  
 उभय मिल्या होय मधि जिनेसर ।  
 हु रागी हु मोहे फदियो,  
 तू नीरागी निरग्य जिनेसर । धम० ॥५॥



परमनिधान प्रगट मुख आगडे  
जगत उलथी हो जाय जिनेन्द्र ।  
जोति विना जुओ जगदीश्वरी,  
अधो अध पलाय जिनेसर । ५२० ॥  
निर्मलगुणमणिरोहणभूषण,  
मुनिजनमानसहस जिनेसर ।  
धन ते नगरी धन वेला घट  
मात पिता कुल वध जिनेन्द्र । ५२१ ॥  
मनमधुकर वर कर जोडी हरे,  
पदरुजनिष्ठ निवास जिनेन्द्र ।  
घननामी आनदघन सानन्दे,  
ए सेवक अरदास जिनेन्द्र । ५२२ ॥

### श्री शातिनाथ

सुदर शातिजिणदनी, इत्ये ॥ ५२३ ॥  
प्रभु गगाजलगभीरु, इत्ये ॥ ५२४ ॥  
गजपुर नगर सोहानन्द, इत्ये ॥ ५२५ ॥  
विश्वसेननरिन्दनो न, इत्ये ॥ ५२६ ॥  
उर नये सगरे ॥  
अचरित, इत्ये ॥ ५२७ ॥

प्रभु लाख राम चोये भागे, तत लीधु ठे ।  
 प्रभु पाम्या केनल ज्ञान, कारज सीधु छे ॥४॥  
 गनुष चालीसनु इशनु, तनु सोह ठे,  
 प्रभु देशना धनि वरसत, भनि पडिवोहे छे ॥५॥  
 भक्तगत्सल महिमानिधि, जन तार छे ।  
 बुडता मयजलमाह, पार उतार ठ ॥६॥  
 सुमतिविजय गुरु नामयी, दुख नागे ठे ।  
 कह रामविजय जिनध्यान, नगविधि पासे छे ॥७॥

### श्री शातिनाथ स्तवन

तुणो शातिजिगद सोभागी, हु तो थयो तु तुम गुण  
 रागी । तुमे नीरागी भगवत, जोता किम मलझे तत । सुणो० ॥१॥

हु तो क्रोव कपायनो भरियो, तु तो उपशम रसनो  
 दरियो । हु तो अज्ञाने आगरियो, तु तो केनल कमला गरियो ।  
 सु० ॥२॥

हु तो त्रिपयारसनो आशी, त तो विषया कीधी निराशी ।  
 हु तो कर्मने भारे भाया, तें तो प्रभु भार उतार्या । सु० ॥३॥

हु तो मोहवणे वश पडियो, तु तो सघला मोहने नडि-  
 यो । हु तो भयसमुद्रमां गुतो, तु तो श्रिमदिरमा पदोतो ।  
 सु० ॥४॥

मारे जन्म-मरणनो जोरो, ते तो तोड्यो तेहनो दोरो ।  
 मारो पामो न मेलें राग, तुमे प्रभुजी थया वीतराग । सु० ॥५॥  
 मने मायाण मूक्यो पार्शी, तु तो निरवघन जमिनाशी ।  
 हु तो समफिनयी अपूरो, तु तो सरल पदारथे पूरो । सु० ॥६॥  
 ग्हारे छो तू ही प्रभु एरु, त्हारे भुज मरिखा छे अनेरु । हु  
 तो मनयी न मूड मान, तु तो मानगदित भगवान । सु० ॥७॥  
 मारु कीधु ते गु वाय, तु तो रक्ने कर गय । एरु करो  
 भुज महरवानी, ग्हारो भुजरो लेजो मानी । सु० ॥८॥  
 एरु गार जो नजरें निरसो, तो करो भुजन तुम मरिखो ।  
 जो सेरु तुम मरिखो याये, तो गुग तुमारा गाये । सु० ॥९॥  
 भयोमव तुज चरणनी सेवा, हु तो मागु देवाधिदेवा ।  
 सामु जुजोने सेरु जाणी, एहवी उदयरननी राणी ॥ सु० ॥११॥

### श्री शातिनाथ स्तवन

धुण धुण साभरो शाति सद्गुण,  
 ध्यान भुवन जिनराज परगा, धुण० आ ।  
 शातिजिगद के नाम अमीसे,  
 उलसित होत हम गोम वपुना धुण० ।  
 भव ~ ~ ~ फिहते पायो,  
 छोडत ~ ~ ~ प्रभुना । धुण० ॥१॥

छिछरमें रति कबहु न पावे,  
जे झीले जल गंगा यमुना ।

तुम सम हम शिर नाथ न थासे,  
कर्म अधुना दूना धूना । धृण० ॥२॥

मोहलडाईमें तेरी सहाई,  
तो खिणमें छिन्न छिन्न कदुना ।

नाही घटे प्रभु आना कुना,  
अचिरामुत पति मोक्षवधूना । धृण० ॥३॥

ओरफी पासमें आश्र न करते,  
चार अनत पसाय करुना ।

क्यों कर मागत पास धतूरे,  
युगलिक याचक कल्पतरुना । धृण० ॥४॥

ध्यान खडग वर तेरे आसगे,  
मोह डरे सारी भीक भरुना ।

ध्यान अरूपी तो सोई अरूपी,  
भक्ते ध्यावत ताना तूना । धृण० ॥५॥

अनुभय रग वध्यो उपयोगे,  
ध्यानमुपान में काथा चूना ।

चिदानंद झकझोल घटासे,  
श्री शुभवीरविजय पडिपुछा । धृण० ॥६॥

श्रीजैनज्ञान—गुणसंग्रह

श्री शातिनाथस्तवन

( गजल कवाली )

अजब है शातिजिन दर्शन, हमारा होत मन परसन ।  
आकणी ।

मूरत क्या मोहनी प्यारी, भरी समतारसे भारी ।  
जिगर में प्रेमरस भरती, हमारे पाप मल हरती ।  
अजब है० ॥१॥

पड़ा ससारबधन में, गई थी सुख दुख मेरी ।  
छरत तेरी निहाली मैं, छूटा हूँ ना लगी देरी ।  
अजब है० ॥२॥

कमल पर ज्यु लगा भमरा, लुभाया तेरी छरत में ।  
बिठा ले चरण में अपने, सुनी ले अर्ज भी दिल में ।  
अजब है० ॥३॥

छपाट्टि अहा कीनी, रूतारसे दयाभीनी ।  
विजय सोभाग्य को तारो, दुखों के फंद सर टारो ।  
अजब है० ॥४॥

## श्री शातिनाथ गायन

(वीरा वेश्याना यारी यह देखी)

श्री शाति तुमारी, छे बलिहारी, जग विषे जिनराज ।  
 पूरो जाशा अमारी, दड सुखकारी, छे बलिहारी जग विषे जिन-  
 राज ॥जा०॥

कुसुमरासित आसन सुंदर, धूपधूमादिनी धूम । उड़ी  
 रहीं अलपेला स्वामी, नाचु छनक छुम । भार अंतर धारी, ज्ञान  
 सुधारी, छे बलिहारी, जगविष जिनराज । श्री शाति० ॥१॥

रोग शोक पियोग विदारी देजो दर्शन दान । गाजता  
 गर्मीर मृदग साथे, नित्य लगावु तान । प्रभु भक्ति बधारी,  
 जय जय करी, छे बलिहारी जग विषे० ॥२॥

मुकुट मडल फाने कुडल, चमके झाक झमाल । शाति  
 सधमा शाति फेलायी, करजो मंगलमाल । मागे 'नान' विचारी,  
 विनयधारी, छे बलिहारी, जगविषे जिनराज । श्री शाति० ॥३॥

## श्री कृष्णनाथ स्तवन

(आग्रक तो हो चुका हू यह चाल)

कृष्णजिनद प्यारा, नमता हू नाथ तुम को । जा० ।  
 शक्ति अनंत भरिया, समतासुधा का दरिया ।  
 मुक्तिबधू को गरिया, नमता हू नाथ तुम को । कृष्ण० ॥१॥

नृप सरजी के नदा, टालो जी कर्मफदा ।  
 देवो विशुद्धानदा, नमता हूँ ॥२॥  
 चारों गति का फेरा, गारो जी नाथ मेरा ।  
 कर लो पदाति तेरा, नमता हूँ ॥३॥  
 ममता गई है मेरी, मूर्ति निहाल तेरी ।  
 छटकी भयों की फेरा, नमता हूँ ॥४॥  
 जपते ही नाम तेरा, बिनमा है मोह मेरा ।  
 मिलिया त्रिवेक डेरा, नमता हूँ ॥५॥  
 करुणा से दाम तारो, कुगति के द्वार ठारो ।  
 कर्मन् के बध वारो, नमता हूँ ॥६॥  
 मन की उपाधि चूरो, सिद्धि सुखा को पूरो ।  
 रर लो मोभाग शूरो, नमता हूँ ॥७॥

श्री अरनाथजिनस्तवन

(आमणरा जोगी यह देशी)

श्री जरजिन भगवलनो तारु, मुज मन लागे वारु रे,  
 मनमोहन स्वामी । चाह ग्रहीए भविजन तारे, आपे शिवपुर  
 आरे रे, मनमोहन स्वामी ॥१॥  
 तप जप मोह महातोफाने, नाथ न चाले माने र, मन  
 मो० । पण नपि भय मुज हाथो हाथे, तारे ते छे साथे रे  
 मनमो० ॥२॥

भगतने स्वर्ग स्वर्गवी अधिकु, ज्ञानीने फल जोइ रे,  
मन० । काया कष्ट विना फल लहिये, मनमा ध्यान धरेइ रे,  
मन० ॥३॥

ज उपाय बहुविधनी रचना, योगमाया ते जाणो रे, मन० ।  
शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दिये प्रभु सपराणो रे,  
मन० ॥४॥

प्रभुपद बलग्या ते रक्षा साजा, अलगा अंग न साजा रे,  
मन । वाचक जस कहे अवर न ध्याउ, ए प्रभुना गुण गाउ  
रे, मन० ॥५॥

### श्री मछिनाथजिनस्तवन

मनमोहन मछिनाथ को जस बोलेंगे,  
शिवरमणी को रग घुघट पट खोलेंगे, आ ।  
मोक्षो मन घन मोरज्यु जस बोलेंगे,  
अब जोर न चाहु सग, घुघट पट० ॥१॥  
चित्तामणि को पाय के जस०,  
कोण सचे काचे काच, घुघट० ।  
को चाहे खरकेलिकु जस०,  
तजी मुरकुमरीको नाच, घुघट० म० ॥२॥  
बावलकु सेवे नहीं जस०,  
तजी मधुकर भालतीफूल, घुघट० ।



कोमल शय्या छोड़ के जस०,  
 कुण बैठे धरिके शूल, घुघट० । म० ॥३॥  
 प्रभुकी मूर्ति मेरे मन बसी जस०,  
 सो तो बिमराई निसरे न, घुघट० ।  
 दर्शन प्रभुमुख देख के जम०,  
 हम पावन कीने नेन, घुघट० । मनमोहन० ॥४॥  
 जन्म कृतारथ मैं कर्यो जम०,  
 जब पायो ऐमो ईश घुघट० ।  
 निमलविजय उवझाय को जस०,  
 एम राम कह शुभ श्रीस घुघटपट खोलेंगे,  
 मनमोहन मल्लिनाथ को जस खोलेंगे ॥५॥

### श्री मुनिसुव्रतजिनस्तवन

(इडर आवा आगली रे यह देखी)

मुनिसुव्रत कीजे मया रे, मनमाने धरी महर । महेर  
 बिहूणा मानवी रे, कठिन जणाये कहर जिनेसर तु जगनायक  
 देव, तुज जगदित करवा टेव, जिने० ॥

अरहट क्षेत्रनी भूमिकारे, सिंची कृतारथ होय । धाराधर  
 सधली धरा रे, उद्धरवा सज्ज जोय, जिनेसर० ॥२॥

ते माटे अथ उपरे रे, आणी मनमा महेर । आपे आग्या  
 आफणी रे, बोधया मरुअच्छ अहर, जिनेसर० ॥३॥

अणप्रार्थता उद्धर्या र, आप करिय उपाय । प्रारयता  
रह मिलउतार, ए कुण कहिये न्याय, जिनेसर० ॥४॥

समथ पण तुज मुज निचे रे, स्वामी-सेवकभाव । मान  
कह हवे महेरनो रे, न रखो अजर प्रस्ताव, जिनेसर० ॥५॥

### श्री नमिनाथजिन स्तवन

(आसणारा जोगी यह दश्री)

आज नमिजिन राजने रहिये, मीठे वचने प्रभुमन  
लहिये र । सुखकारी साहियजी । प्रभु छे निपट निसनेही  
नगीना, अमे छु सेवक जाधीना रे, सुख० ॥१॥

सुनजर करशो तो घरशो बडाई, सुकहिशे प्रभुने लडाइ  
रे, सुख० । तुमे अमने करशो महोदो, कुण कहशे तुने प्रभु  
खोटो रे, सुख० ॥२॥

नि शक थइ शुभ रचन कहशो, जगशोभा अधिकी लेशो  
रे, सुख० । अम तो रक्षा छु तुमने राची, रखे आप रहो मन  
खाची र, सुख० ॥३॥

अमे तो किस्सु अतर नबि राखु, जे होवे हृदय कही दारु रे, सु०  
गुणियल आगल गुण कहवाए, ज्यारे प्रीत प्रमाणे थाये रे,  
सु० ॥४॥

विपधर ईश हृदय लपटाणो, तेहवो अमने मिल्यो छे टाणो रे, सु०  
निरवहेशो जो प्रीत हमारी, कलि कीरत धाये तुमारी र, सु० ॥५॥

धृताई चित्ते नवि धरशो, काइ अरलो विचार न करशो र, सु.  
निम विम जाणी सेरु जाणोजो, अरसर लही सुधी लेजोर,

॥६॥

आमगे कहिये तें तुमने, प्रभु दीने दिलासो अमने रे, सु  
मोहनविजय सदा मन रगे, चित्त लाग्यु प्रभुने सगे र, सु ॥७॥

### श्री नेमिनाथ स्तवन

(अजित जिणदसु प्रीतडी यह चाल)

परमात्म पूरण उला, पूरण गुण हो पूरण जन आश्र ।  
पूरण इष्टि निहालिय, चित्त धरिये हो अमची अरदाम, पर॥१॥  
मर्व देश घाती सह, अघाती हो करी घात दयाल ।  
राम कियो शिखरदिर, मोह विमरी हो भमतो जगजाल, पर॥२॥  
जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपरार्थी अपार ।  
तात कहो मोहे तारता, किम कीनी हो इण अवसर पार, पर॥३॥  
मोह महामद छाकधी, हु ठकियो हो नहीं शुद्धि लगार ।  
उचित सही इण अवमरे, सेरुनी हो करवी सभाल, पर॥४॥  
मोह गया जो तारशो, तिण बेला हो किहा तुम उपमार ।  
सुखवला सज्जन घणा, दु खवेला हो मिरला ससार, पर॥५॥  
पण तुम दरिसणजोगथी, ययो हृदये हो अनुभयप्रसाश्र ।  
अनुभय अभ्यासी कर, दुखदायी हो सहु कर्मविनाश्र, पर॥६॥  
कमकलरु निशारी ने, निजरूप हो रमे रमता राम ।

लहत अपूर्य भावनी, इण रीत हो तुम पद विश्राम, पर ॥४॥  
 त्रिकरण जोगे वीनबु, सुखदायी हो शिवादेरीनंद ।  
 चिदानंद मनम सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद, पर० ॥५॥

### श्री नेमिनाथ स्तवन

(तर्ज जिनमत का डका०)

आनंद का डका दुनिया म, बजरा दिया नेमि लालेने ।  
 नक्षत्र्य पराक्रम यादव म, बतला दिया नेमि लालेने ॥  
 प्रभु आयुधशाला म जा करके, पचावन शस्त्र को पूर दिया ।  
 सुनते ही गिरधर जान खड़े, बजरा दिया नेमि० ॥आ०॥१॥  
 श्री नेमिक चलकों देखन को, श्रीकृष्णने लगा हाथ किया ।  
 गोपीवन के सन्मुख गिरिधर को, शर्मा दिया नेमि० ॥आ०॥२॥  
 फिर जान चरी आडबर से, तोरण से रथको फेर दिया ०  
 पशुअन के कारण राजुल को, छटका दिया नेमि० ॥आ०॥३॥  
 दीक्षा का अयसर जान प्रभु, निच मात पितादिक को समझाया ।  
 एक वर्ष लगे दान काचन का, दिला दिया नेमि० ॥आ०॥४॥  
 एक सहस्र पुरुष संग सजम ले, सर्वज्ञ पद को प्राप्त किया ।  
 कर्मों का लश्कर जीत लिया, शिवपद का नेमि० ॥आ०॥५॥  
 पृथ्वी तल को पारन कर प्रभु, आश्वत सुख को प्राप्त किया ।  
 पर तिरिया परधन नहीं लेना, फर्मा दिया नेमि० ॥  
 आनंद का० ॥६॥

श्री नेमिनाथस्तवन

हा नेम मने लागे प्यारो, शाम वरण मोहनगारो रे  
नेम मने० आंकणी ।

समुद्रविजय शिवादेवी को जायो,  
नगरी द्वारिका जनम लहायो ।  
तीन लोरु म हुआ उजियारो रे, नेम मने० ॥१॥  
जान लइ प्रभु परणवा जावे,  
उग्रसेन के घर जन आवे ।

सुणी पुकार पशु रथ पाछो फिरावे रे, नेम० ॥२॥  
बालपने से हुए ब्रह्मचारी,  
तजी रूपाली राजुल नारी ।

ससार मोहनी दूर निगारी रे, नेम० ॥३॥  
भरी जुगानी सजम लीनो,

शुक्ल ध्यान सहसावन कीनो ।  
केवलज्ञान जहा प्रभु लीनो रे, नेम० ॥४॥

मोक्ष गये गिरनार स्वामी,  
जन्म मरण से हुए विसरामी ।  
सौभाग्यविजय शिरनामी रे, नेम

## श्री नेमिनाथस्तवन

( धन धन वो जग में नरनार यह चाल )

नमु नेमनाथ महाराज, सावरीया प्रीत लगाने वाले,  
 जाकणी ।

तेरी मूरत मोहनगार, मेरी अखियनको सुखकार ।  
 तुम दर्श किया जानद अपार, प्रभु मोसे प्रीत लगाने वाले,  
 नमु नेमनाथ० ॥१॥

किया पशुजनका उपकार, मुज पर क्यु न लगार ।  
 तुम दास करो उद्धार, प्रभु भगपार कराने वाले, नमु० ॥२॥  
 कर महमावनम ध्यान, दिन पचापने परमाण ।  
 लियो कयल शुभ नान, नाथ गिरनार दिवाने वाले, नमु० ॥३॥  
 धावीसमा जिनचद, प्रभु शिरादवी क है नद,  
 सौभाग्यविजय सब फद डरो, हम नाथ कहाने वाले,  
 नमु नेमनाथ० ॥४॥

## नेमि राजुल पद

राजुल पुकारे नेम, पिया ऐसी क्या करी ।  
 मुझे छोडक चले, चूक हम से क्या परी ॥  
 राजुल पुकार० ॥१॥

हुइ आश की निराम, उदासीनता धरी ।

प्यारा घस नहीं हसैरा, ग्रीतम पीडमें परी ॥

राजुल पुकारे० ॥२॥

हम से खो न जाय, ग्रीतम तुम निना घरी ।

सग लीजिये दयाल, दया दिल में घरी ॥

राजुल पुकारे० ॥३॥

निशदिन तुमारा नाम, लेते ज्ञान की झगी ॥

राजुल पुकारे० ॥४॥

### श्री नेमिनाथ गायन

मुझे चपलासी चमक उठाव गयो रे, मुझे ।

महल चढी जोड़ हियो हरमायो,

नैना को नेह लगाव गयो रे, मुझे० ॥१॥

कोड छपन जादव सग लायो,

नहीं पूरे खातो गनाव गयो रे, मुझे चपला० ॥२॥

समुद्रविजय शिवादेवीनदन,

निरखी पशु पलताव गयो रे । मुझे चपला० ॥३॥

तोरणसे फिर गिरनारी गयो,

मजम दिलम रचाव गयो रे । मुझे चपला० ॥४॥

नेम राजुल मिली रम रसायो,

अचल अगवड पताव गयो रे । मुझे चपलामी० ॥५॥

## श्री पार्श्वनाथजिनस्तवन

राता जेरा फूलडाने शामल जेवो रग ।  
 आज तारी आगी नो काइ रूडो बन्यो छे रग,  
 प्यारा पासजी हो लाल, दीनदयाल मुने नयणे निहाल ॥  
 जोगी बाडे जागतो ने मातो धिंगणमछ ।  
 शामलो सोहामणो काइ, जीत्या आठे मछ । प्या० ॥२॥  
 तू छे भारो साहिबो ने, हु तु तारो दास ।  
 जाय पूरो दासनी काइ सामली अरदास । प्या० ॥३॥  
 देव सघला दीठा तेमा, एक तू अगछ ।  
 लाखेणो छे लटको ताहरो दखी रीझे दिछ । प्या० ॥४॥  
 कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम ।  
 उदयरत्न कहे प्रभु, मारे तुमसु काम । प्या० ॥५॥

## श्री पार्श्वनाथस्तवन

पारस तेरी निरखण दो असवारी, अरजी सुणो प्रभु  
 म्हारी ॥ पारस ०॥आ०॥

काशी देश बाणारसी नयरी, दिन दशमी जयकारी ।  
 वामाराणी कूखथी प्रभुजी, जन्म लियो मुखकारी । पारस ०॥१॥  
 छप्पन दिक्कुमरी हुलराया, हिये हर्ष अतिभारी ।  
 चोसठ इद्र करे बली महोच्छव, करवा भवजल पारी ॥  
 पारस ०॥२॥



एक मोड साठ लाख सोहे छे, कलस महामनुहारी ।  
चार जोवन पहोला पट, पचीस जोवन उचा धारी ॥

पारस० ॥३॥

नीचा उचा जोवन पहोला, निर्मल भरीयो वारी ।  
फूल चगेरी बायना चदन, कदर न धनसारी ॥पारस० ॥४॥

इणि परे जोछन सुरपति कीनो, जोइजो धन सभारी ।  
सुरगिरि ऊपर पाइरुन न, पाइशिला अतिप्यारी ॥

पारस० ॥५॥

अश्वसेनराय जोछन कीनो, दान दियो दिल धारी ।  
शहरनी थैष्ठवा जोव जुके, रेठा गोखमहारी ॥ पा० ॥६॥

लोक महु पूजापो लइने, कमठक पूजनकारी ।  
प्रभुजी पधार्या दखण काने, नाग जल तिण वारी ॥पा० ॥७॥

काष्ठ फडावी नाग निकाल्यो, सभलाभ्यो मत्र भारी ।  
समकित लेइने सुरपति हुवा, धरणेन्द्र एकामतारी ॥ पा० ॥८॥

उगणीसे इगतालीस उपे, पोष दशम रहीपाली ।  
आहोर नगरमें जोछन कीनो, सघ सकल बलिहारी ॥पा० ॥९॥

सुंदरमूर्ति प्रभुनी बिताने, भविजनक मुखकारी ।  
कीर्तिचद्रसम शोभे जगमें केशरनिजय जयकारी ॥ पा० ॥१०॥

## पचासरा पार्श्वनाथ स्तवन

(प्रथम जिनेश्वर प्रणामिये—यह चाल)

परमात्म परमेश्वर जगदीश्वर जिनराज ।

जगदधर जगभाण बलिहारी तुमतणी, ।

भगजलधिमा र जहाज ॥ परमा० ॥१॥

तारक धारक मोहनो, धारक निजगुण श्रद्धि ।

अतिशयवत भदत रुपाली शिववधू,

परणी लही निजमिद्वि ॥परमा० ॥२॥

ज्ञान दर्शन अनत छे, बली तुज चरण अनत ।

एम दानादि अनत क्षायिक भाव थया,

गुण त अनता अनत ॥परमा० ॥३॥

प्रतीस वरण समाय छे, एकज श्लोकमझार ।

एक वर्ण प्रभु तुज न माये जगतमा,

केम करी गुणिये उदार ॥परमा० ॥४॥

तुज गुण कोण गणी श्रके जो पण केवल होय ।

आनिर्भावे तुज सयल गुण माहरे,

प्रच्छन्नभाववी जोय ॥ परमा० ॥५॥

श्री पचासरा पासजी, अरज करु एक तुज ।

आनिर्भावी धाय दयाल कृपानिधि,

करुणा कीजे जी गुज ॥परमा० ॥६॥

श्री जिन उच्चम ताहरी, जाक्षा अधिक महाराज ।  
पद्मविजय कहे एम लहु श्रियनगरीनु,

अक्षय अनिचलराज ॥परमा० ॥७॥

## पार्श्वनाथजिनस्तवन

( राग काफ़ी )

जिनराज नाम तेरा, रागु हमार घटम ।  
जागे प्रभाव मेरा, अज्ञान का अधेरा ।  
भाग्या भया उजारा, रागु हमारे० ॥१॥  
मुद्रा प्रमोद कारी, प्रभु पामजी तिहारी ।  
मोह लगज है प्यारी, रागु हमारे० ॥२॥  
सुख तेरी रागे, देख्या निभाव त्यागे ।  
अध्यात्म रूप जागे, रागु हमार० ॥३॥  
त्रिलोकी नाथ तुम ही, मैं हूँ अनाथ गुनही ।  
परिये सनाथ हम ही, रागु हमारे० ॥४॥  
जिनजी तिहारी साखे, जिनहपसरि भाखे ।  
दिलमें हि याही राखे, रागु हमारे घट में ।

जिनराज० ॥५॥

## नवकोटा पार्श्वनाथ स्तवन

( माढ राग )

नवकोटा स्वामी अतरजामी तारो दीनदयाल ॥

अश्वसेन जी क लाडला रे, वामादवी भाय ।

नगर बनारसी जन्म लियो प्रभु, नील वरण छे कायरे ॥

नवकोटा० ॥१॥

पार्श्वनाथप्रभाव जगतमें, पूजे सुर नर इन्द ।

श्याम मूर्त सुदर जिनजी को, मुखडो छे पूनमचद रे ॥

नवकोटा० ॥२॥

अरज सुणीजो दर्शन दीजो, मुजरो लीजो मान ।

जन्म मरण दुःख टालो जिनजी, अरज करे छे कान र ॥

नवकोटा० ॥३॥

## श्री पार्श्वनाथ स्तवन

( नाथ कैसे गजको घघ ठुढायो-यह चाल )

नाथ मेरी धीनतडी अग्रधारो,

मोए जैसे बने ऐसे तारो, नाथ मेरी० । आ ।

अश्वसेन वामाजीको नदन, नागकु तारणहारो । करल  
ज्ञान लही जगभूषण, शिखर समत शृणगारो, नाथ मेरी० ॥१॥

सुर नर नरक निगोद तणा दुरग, कहेवा न जावे पारो ।

अनतमाल मोह भटकरत चीत्थो, तुमसे आन पुरारो  
नाथ० ॥२॥

ऐसा कोण दयाल जगतमें, जासे रुदिये तारो । अनेक  
जीव भयजलसे तारे, मुजकु क्यु न सभारो । नाथ० ॥३॥

मिथ्यामत तम दूर करन रु, महससरिण अपतारो । सम  
कित गुद ज्ञान निज दे के भयजल पार उतारो । नाथ० ॥४॥

वीम अधिक जोगणीम सातमें, माघ शुक्ल सोमवारो ।  
वनारसीमें जोछन होवे, श्री सय जयजयकारो । नाथ० ॥५॥

रामघाट प्रभु पाम चिराणे, ममसरण मनोहारो । हाथ  
जोड के अरज करत है, मोहन दास तुमारो ॥ नाथ मेरी  
वीनतडी जवधारो० ॥६॥

### श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(हुड फिरा जग सारा० यह चाल)

पार्श्वनाथ सुखकारा सुखमारा, जिनपति पूजो प्रेमसे । आ०

ज्ञान जनतक है प्रभु धारी, कर्म रोग सब दूर निगारी,

सूरज परे तज गारा तज वारा, जिनपति० ॥१॥

भयसमुद्रमें पडते बचावे, मोक्षमार्ग प्रभुजी दिखलावे,

कर जगत उपगारा उपगारा, जिनपति० ॥२॥

कमठ हठीमो दूर निगारा, जलती आगसे सर्प उगारा

अहो दयाक प्रभु धारा प्रभु वारा, जिनपति० ॥३॥

पार्थिवक्षसे पूजित पाया, पद्मावती-घरणेंद्रको भाया ।  
 वदो ऐसे प्रभु प्यारा प्रभु प्यारा, जिनपति० ॥४॥  
 एक ही चित्ते नाथ पूजनसे, बार बार फिर ध्यान करनेसे,  
 होये करम गुटकारा गुटकारा, जिनपति० ॥५॥  
 महाप्रभारी है हम जुगमें, पूरे मनोरथ मारे छिनमें,  
 वदे सौभाग्य दिल धारा दिल धारा, जि० ॥६॥

### श्रीमहारीर जिन स्तवन

(राग कडसेंकी)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी,  
 जगतमा एटलु मुजस लीजे ।  
 दास जनगुण भया जाणी पोता तणो,  
 दयानिधि दीन पर दया कीजे । तारहो० ॥१॥  
 राग-द्वेष भया मोह बैरी नडयो,  
 लोकरनी रीतिमा घणुये रातो ।  
 क्रोधवश घमघम्यो शुद्ध गुण नवि रम्यो,  
 भम्यो भयमाहि हु विषयमातो । तार० ॥२॥  
 आदर्यु आचरण लोभउपचारवी,  
 शास्त्र अम्यास पण कांइ कीघो ।  
 शुद्ध श्रद्धान उली आत्म अलनन प्रिनु,  
 तेहनो कार्य तिणे को न सीघो । तार० ॥३॥

स्वामीदरिगण समो निमित्त लही निर्मलो,  
जो उपादान ए शुचि न वाशे ।  
दोष को वस्तुनो अधवा उद्यम तणो,  
स्वामीसेवा सही निवट लाशे । तार० ॥४॥  
स्वामोगुण ओलखी स्वामिने जे भने,  
दरिसणशुद्धता तेह पामे ।  
ज्ञान चारिन तप वीर्य उल्लामयी,  
कर्म क्षीपी वसे मुक्ति वामे । तार हो० ॥५॥  
जगतवत्सल महावीर निनर सुणी,  
चित्त प्रभुचरणने शरण वामो ।  
तारजो आपजी निरुद निन राखरा,  
दासनी सेवना रखे जोशो । तार० ॥६॥  
चीनती मानजो शक्ति ए आपजो,  
भानस्याद्वादता शुद्ध भासे ।  
साध्य साधक दशा मिदता अनुभरी,  
दवचद्र विमल प्रभुता प्रकाशे । तार० ॥७॥

### श्रीमहावीरस्तवन

( आजो आनो पासजी० यह देखी )

चाला प्रभु गीरजी मुखकारा र, मारा प्राणधकी छो प्यारा ।  
वाला० आ० ।

तात मिद्वारय राया र, माता प्रिशलाना प्रभु जाया रे ।  
 काचनवरणी छे जस काया । वाला० ॥१॥  
 बालपणायी छो नलधारी रे, परण्या यशोदा नारी र ।  
 रद्या तीम बरस घरपारी । वाला० ॥२॥  
 लेइ सजम मनमा बसिया र, बार बरस लगै तप रसियारे,  
 पाम्या कवल भयदम्ब खमिया । वाला० ॥ प्रभु० ॥३॥  
 प्रभु तार्या मेघकुमारा र, कर्पा चंडमोक्षिक उद्धारा र ।  
 तारो मुजने प्रभु हितकारा । वाला० ॥४॥  
 शरणे आव्यो प्रभु ताहरे र, चरणकमल बद्ध तुमार रे,  
 मौभाग्यमिजय दिल प्यारे । वाला० ॥ प्रभु० ॥५॥

### श्रीमहार्चिरस्तन

मने तो मलियो मारो नाथ, पूरना पुण्य प्रभावे र ।  
 मने तो मलियो० ॥  
 प्रीति अनादिनी, भूली गया छो स्वामी ।  
 हवे नही छोडू तारो साय, नही छोडू कदापि र ।  
 मने तो मलियो० ॥१॥  
 काल जनादिनो, हु रस्वड छु प्रभु जी,  
 भ्रमण करु तु गति चार, दुखबहु तेथी पाछु र ।  
 मने तो मलियो० ॥२॥  
 हवे तुमे मलिया स्वामी, दुख अमार्ग रूपो ।



आपो ने शिवरमणीनी माध, आपो ग्रीत करीने रे ।

मने तो मलियो० ॥३॥

सुलसादिक नयने आप, जिनपद दीजु बहाला ।

चदनमालानु काप्यु दुख, तेम अमारु आपो रे ।

मने तो मलियो० ॥४॥

त्रिदलाना नदन जिननी, गीनति जगारो बहाला ।

प्रीतेयी सैची ल्योने हाथ, नाथ मै तमने धाया रे ।

मने तो मलियो० ॥५॥

शामनी कह छे बहाला, गीर प्रभुना गुणनी रागि ।

गाथाधी तरिवे आ समार, बात छे तहज साची रे ।

मने तो मलियो० ॥६॥

### श्रीमहावीरस्तवन

बाला वीर जिनेवर जन्म-जरा निगारजो रे,

प्यारा प्रभुजी प्रीते मुज शिर पर कर आपजो रे वा० ॥

तीन रतन आपो प्रभु मुजने,

खोट खजाने को नहीं तुजने ।

अरुनी उर धरी कर्मकटक सहाजो रे । बाला० ॥१॥

वृमति टारुण पलगी मुजने,

नमी नमी बीनजु ह प्रभु तुजने ।

ए दुखयी दूर करवा बहाला जायजो रे । बाला० ॥२॥

जा जटरीमा भूलो पडियो,  
 तू साहिय साचो मने मलियो ।  
 सेनरुने शिवपुरनी सटक देखाडजो रे । वाला० ॥३॥  
 अरजी उचरीने जिन आगे,  
 महावीरमडल प्रभुपद मागे ।  
 महर करी महाराज प्राण ने तारजो र ।  
 वाला वीरजिनेधर० ॥४॥

### श्रीमहावीरस्तवन

(राग-इंद्रमधका)

महावीर महावीर मैं जपु, और नित्य करु प्रणाम ।  
 प्रभुजी तुमार मुखहु देखी, मफल हुआ सब काम ॥१॥  
 तेरे अंग पर पुष्प चढ़ावु, भात भात के जात ।  
 गुलान चपेली जागुद डमरो, मालती मोगर साथ ॥२॥  
 हीरे जडेलो मस्तके मुगट, कानमें कुडल सार ।  
 बांह बालुनद नेरखा, ओर गले मोतिनको हार ॥३॥  
 ऐसी अंगी महावीर प्रभुकी, दर्शन करे नरनार ।  
 प्रभु तोरा चरणकमल पसायसे, भविजन पामे भरपार ।  
 महावीर० ॥४॥  
 श्री लघुआदिजैनगोष्ठी, गावे गीत रसाल ।  
 सेनरु पर करुणा करी, प्रभु दजो सुख निशाल ।  
 महावीर० ॥५॥

## श्रीमहावीरजिनस्तवन

(राग-कानूडा तारी कामण०)

वीरजी तारी पावनरनारी, मनमा आखलडी लागी ।  
 मीठी चली सेवकमनग्ररनारी, मनमा० ॥  
 भयभय हरनारी तुम सुणवा, वाणी सुखरारी ।  
 हू चाहू हू चाहू जिनगर यइने हुसियारी, मनमा ॥१॥  
 दर्शन नर नारी तुम ररया, आवे दिल धारी ।  
 तू दाता तू दाता शिरसुग्व थइने शिवचारी, मनमा० ॥२॥  
 जघहर उपकारी प्रभु तुम छो, आतमहितरारी ।  
 हू मागु हू मागु सुखर वल्लभ भय पारी,  
 मनमा आखलडी लागी० ॥३॥

## श्री चौवीसजिनस्तवन

ऊठ प्रभाते आदिजिननु, चेतन समरण कीजे रे । दिन  
 दिन जानद मंगल वाधे, जगमा जस गहु लीने रे ॥ऊठ०॥१॥  
 ऋषभ अजित सभय अभिनदन, सुमतिनी सेवा कीने  
 रे । पद्म सुपार्थ प्रभुता आपो, चद्रप्रभु सुख दीजे रे ॥  
 ऊठ० ॥२॥  
 सुरिधि शीतल श्रेयास ध्यावो, वासुपूज्य निरयाता र ।  
 विमल जनत धर्मजिन शक्ति, अनुभव सुखना दाता र ॥  
 ऊठ० ॥३॥

कुण्ड अर मल्लि मुनिसुत्रत, नमि नैमि जयकारी रे । पार्श्व  
वीरप्रभु समरण करता, आपो शिवप्रभू सारी रे ॥ ऊठ० ॥४॥

पुडरीक पशुदा मुनिवर वदू, गुणग्रता ऋषिराज रे । सोल  
सतीना नमरण करता, सीधे बलित काज रे ॥ ऊठ० ॥५॥

धारर जगम तीरथ जगमें, जे वद नरनारी रे । कीर्ति-  
कमला ते भजि पामे, मोक्षतणा अधिकारी रे ॥ ऊठ० ॥६॥

### श्री सीमधरजिनस्तवन

श्रीसीमधर साहिना, हु किम आतु तुम पान हो मुनिद ।  
दूर निचे जतर घणो, मुने मिलवानी घणी आश हो मुनिद ॥  
श्रीसीमधर० ॥१॥

हु इण भरतने छेहड, तुम प्रभु विदहमसार हो मुनिद ।  
इगर पली नदियाघर्णा, तिहा कोय तो कइ हजार हो मुनिद ।  
श्रीसी० ॥२॥

प्रभुजी दत्ता होशो देशना, राई सांभले जिहाना लोग हो  
मुनिद । धन्य ते गाम नगर पुरी, ज्या वर्त पुन्यसयोग हो  
मुनिद । श्रीसी० ॥३॥

धन्य ते श्रावक श्राविका, काइ निरखे प्रभु मुखचद हो मु-  
निद । मुन मनोरथ मनतणा, काइ फलश्रे भाग्य अमद हो मु-  
निद । श्रीसी० ॥४॥

वस्तारो वस्ती रह्यो, साइ जोशी माडगु लगन्न हो मुर्णि-  
द । कह सीमर कद भेटगु, मुज मन लागी लगन्न हो मुर्णिद ।  
श्रीसी० ॥५॥

पिण जोशी नही एहनो, काड भाजे मननी आत हो मुर्णिद ।  
णइ भन वात कृपा करी, मुन आण मिलाओ एसात हो मुर्णिद ।  
श्रीसी० ॥६॥

बीतराग भाव सदा तुमे, वतो छो जगनाथ हो मुर्णिद ।  
मै जाण्यु तुम कंडवी, इन हु ययो स्वामी सनाथ हो मुर्णिद  
श्रीसी० ॥७॥

पुक्खलनइनिजया वस, साइ नयरी पुडरिणिणी स्वाम  
हो मुर्णिद । सत्यनीनदन वदना, साइ जगधरो गुणना वाम  
हो मुर्णिद । श्रीमी० ॥८॥

राय त्रेयासकुलचढलो, राणी ररुमणीर्रो कत हो मु-  
र्णिद । वाचरु रामनिजय कहे, तुम ध्याने हुवो मुज चित्त हो  
मुर्णिद । श्रीसी० ॥९॥

### श्रीयुगमघर जिनस्नवन

काया पामी जतिहूटी, पाख नहीं जातु ऊडी, लब्धि  
नहीं कोय रूडी र । श्रीयुगमघरने कहजो, दधिसुत बीनतडी  
सुणनो रे । श्री युग० ॥१॥

तुम सेगामाह सुरकोडी, ते इहा आवे इरु दोडी, आश  
फले पातरु मोडी रे । श्री० ॥२॥

दुष्पम समयमा ढण भरते, अतिशयनाणी कोइ ननि  
वरते, ऋहीये रुहो कोण सामलते र । श्री० ॥३॥

अरणो सुखिया तुम नामे, नयणा दर्शन ननि पामे, एतो  
झगडाने ठामे र । श्री० ॥४॥

चार जागल अतर रहेउ, शोरलडांनी परे दुख सहउ,  
प्रभु जिना कोण जागल कहउ र । श्री० ॥५॥

महोटा महर ररी आप, बहुनो ताल करी आप, मजन  
जम जगमा व्याप र । श्री० ॥६॥

बेहुनो एरुमतो आप, कवल नाणजुगल पाये, तो सनि  
वात रनी जाये रे । श्री० ॥७॥

गजलाछन गनगतिगामी, विचरे विप्राविजय स्वामी,  
नयरी विजया गुणधामी र । श्री० ॥८॥

मात सुताराये जायो, दृष्टवनस्पतिहुल आयो, पडित  
जिनविनये गायो रे । श्री० ॥९॥

### श्री चद्राननजिनस्तवन

चद्रानन जिन, सामलीये अरदाम रे ।

मुज सेवरु भणी, छे प्रभुनो जिमासो रे । चद्रा० ॥१॥

भरत क्षत्र मानउपणो रे, लाधो दुष्पमफाल ।

जिन पूरुमधर निरहधी र, दुलहो सावन चालो र ।

चद्रानन० ॥२॥

द्रव्यक्रियारुचि जीवडा र, भाउघरमरुचिहीन ।

उपदेशरु पण तेहना रे, शु कर जीव नयीन र । च ॥३॥

तत्प्रागम जाणम तजी र, बहु जन सम्मत जेह ।

मूढ हटी जन आदर्यो रे, सुगुरु रुहाव तेह रे । च० ॥४॥

जाणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो र धर्म ।

दमण नाण चारित्रनो रे, मूल न जाण्यो भर्म रे । च० ॥५॥

गच्छरुदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रमिद ।

आतमगुण अरुपायता रे, भर्म न जाणे शुद्ध र । च० ॥६॥

तत्परसिक जन थोडला रे, बहुलो जनमसाद ।

जाणो छो विनराजजी रे, सयलो एह विनोद रे । च० ॥७॥

नाथचरणनदनतणो रे, मनमा घणो उमग ।

पुण्य विना केम पामिये रे, प्रभु सेवननो मग र । च० ॥८॥

जगताररु प्रभु वदिय रे, महानिदहमज्ञार ।

वस्तुधर्म स्पादादता रे, सुणि करिये निरधार रे । च० ॥९॥

तुज करुणा सहु उपरे रे, सरस्ती छे महाराय ।

पण अगिराररु जीवने रे, कारण मफलो पाय र । च० ॥१०॥

एहना पण जग जीवने रे, दन भगति आगार ।

प्रभु समरण वी पामिये र, दवचद्र पद सार रे । च० ॥११॥

## श्री आदिशातिनाथजिनस्तवन

मैं अरज रू शिरनामी, प्रभु कर जोड़ जोड़ जोड़ ॥  
 मैं भरन म जा फमिया, बहा राल अनता वसिया ।  
 मुझे लोभ सर्प आ डसिया, जखिया खोल खोल खोल ।  
 मैं अरज० ॥१॥

श्रीवानलने जतिनाला, मरा जग पड़ गया काला ।  
 मुझे पिला द प्रेमरस प्याला, अमृत घोल घोल घोल ।  
 मैं अरज० ॥२॥

मान जगगर मुझ को खावे, मेरा प्राण पलक में जावे ।  
 जड़ी जीवन कौन पिलावे, वनमें घोल घोल घोल ।  
 मैं अरज० ॥३॥

तुम नाम मंत्र से माना, कतु हो गया प्रभु ताजा ।  
 फठोरगाम महाराना, जाया डोल डोल डोल ।  
 मैं अरज० ॥४॥

श्री आदि शातिनिन स्वामी, हमो माग शिरनामी ।  
 गुण मुक्ताफल दो धामी, प्रभु निन मोल मोल मोल ।  
 मैं अरज० ॥५॥



## सामान्य जिन स्तवन

(राग ऋगली)

गतास्ते दृ स्वमयदिवमा, गता मा दीनता मृष्टा ।  
 समाप्ताज्जादिभययाया, गतोऽस्मि स्व पदं कुञ्जली ॥१॥  
 अहो ससारकान्तारे, मयाऽद्य भ्राम्यताऽदृष्टि ।  
 जगद्धितरारिसद्गुप्ति, -जिनारय सावपतिरेष ॥२॥  
 जलोक्याऽऽलोचनाऽपूत, ममेद दृष्टियुगमद्य ।  
 परित्रीभायमापन्नं, जिनेश्वर दर्शनाद् भवत. ॥३॥  
 त्वदीया भक्तिरल्पापि, विधत्ते पातक विफलम् ।  
 यथा बहेलरो ढारु, -क्षय क्षणमात्रतो दहति ॥४॥  
 भय दाताऽधरा कृपण, -स्तथापि मे त्रमयामि ।  
 तयाग्रे सत्यमिति भाषे, कदानिन्नैव याचेऽन्यम् ॥५॥  
 न मेऽर्थो वैशुधैर्लार्भि, -न वा भूपालभोगाद्यै ।  
 इदं तु याच्यते भगवन् ! तसेमम मानसे सततम् ॥६॥  
 यदि तन्नामदीपोऽय, मदीय द्योतयद् हृदयम् ।  
 तदा निजरूपसंसिद्धे, -भवेत्कल्याणपदगमनम् ॥७॥

## सामान्य जिन स्तवन

जय तो मधुजी म लेलो शरन, लेलो शरन  
 प्यारे लेलो शरन । अवतो ०॥

उत्तम कुल जाति,

मानव भव अत्र पायो रत्न । अबतो ० ॥१॥

द्रव्य भार स पूजा प्रभुकी,  
महानिशी ५ जिनभरचन । अबतो ० ॥२॥

गृही को पूजा दोनों ही सुदर,  
भार पूजामे साधु लगन । अबतो ० ॥३॥

अष्ट द्रव्य से द्रव्य पूजा है,  
भार पूजा करो प्रभु नमन । अब तो ० ॥४॥

जिनप्रतिमा जिन मरखी मानो,  
जातम गच्छम तारन तरन ।

अब तो प्रभुजी का ० ॥५॥

### श्री परमात्मस्तयन

सफल समता सुगलतानो, तूही अनोपम कद रे ।

तूही कृपारम कनक कुमो, तूही जिणद मुण्डिद रे ॥१॥

प्रभु तूही तूही तूही तूही तूही करता ध्यान रे ।

तुज स्वरूपी जे थया, तणे लब्ध ताहक तान रे । प्रभु० ॥२॥

तूही जलगो भव रसी पण, भविक ताहर नाम रे ।

पार भवनो तह पावे, एह जचस्ति ठाम रे । प्रभु० ॥३॥

जन्म पावन जान माहरो, निरग्वियो तुज नूर रे ।

भरो भव अनुमोदना जी हुआ आप हजूर रे । प्रभु० ॥४॥

एह माहरे जखय जातम असरयात प्रदेश रे ।  
 ताहरा गुण जे अनता क्रिम करु तास निवेश रे । प्रभु० ॥५॥  
 एरु एरु प्रदेश ताहर गुण जनतनो वास र ।  
 एम करी तुज महज मीलत हुए ज्ञान प्रफास र । प्रभु ॥६॥  
 ध्यान ध्याता ध्येय एरु एसीभाय होय एम रे ।  
 एम करता सेव्य सेवक भाय होए क्षेम र । प्रभु० ॥७॥  
 शुध्य सेना ताहरी जे होय जचल स्वभाय र ।  
 ज्ञाननिमल सुर्गद प्रभुता, होय मुजस जमाय र । प्रभु० ॥८॥

### जिन-स्तवन

(तर्ज-ह प्रभु आनद दाता०)

छोड जिनार को, दुनीसे दिल लगा कर क्या करू ।  
 हाथ हीरा मिल गया, करार को ले कर क्या करू ॥आ०॥  
 भगार्णव के ताप से, जलता फिरू रुइ कालसे ।  
 कल्पछाया मिल गई, छाते को सिर पर क्या धरू ॥१॥  
 मोह अधेरी रैन मे, चलते ही ग्वाई ठोकरें ।  
 जान दिनकर दख फिर, बत्ती जलाकर क्या करू ॥२॥  
 माल अनादि कर्म के हू, रोग से पीडित दूजा ।  
 धर्म घृणी मिल गई, बंधो स मिल कर क्या करू ॥३॥  
 देव दवी सेन से, जलता रहा ससार म ।  
 मोक्ष दाता जन मिला, पर की पूजा कर क्या करू ॥४॥

गा रहा हू प्रेम से, प्रभु गुण प्रभु के सामने ।

‘प्राण’ ही होवे सुखी, जोरों को रिल्ला कर क्या करू ॥५॥

छोड़ जिनार को॥

### जिन-स्तवन

हूँ जगत में नाम ये रोशन, सदा तेरा प्रभु ।

तारते उसने सदा जो, ले शरण तेरा प्रभु ॥

लाख चौरासी में घरा, कमाने मारा मुझे ।

ले बचा अब तो सहारा, हूँ मुझे तेरा प्रभु । है० ॥१॥

सैरुडों की तारत हो, मेहर की करके नजर ।

क्यों नहीं तारा मुझे है, क्या गुना मेरा प्रभु ॥

हूँ जगत में० ॥२॥

हाल जो तन का हुआ है, आप विन किसको कहूँ ।

मोहराजाने मुझे, चारों तरफ घेरा प्रभु ॥

हूँ जगत में० ॥३॥

आप से हरदम तिलक की, तो यही अस्दाम हूँ ।

आप चरणाँ में रह, मेरा सदा डेरा प्रभु ॥

हूँ जगत में० ॥४॥

# जैनधर्मकी महत्ता पर स्तवन

(तर्ज—कमली गाले ने)

सब धर्मों में यह आला है,  
 आला है जैन निगला है ।  
 सब चुन चुन कर लेय रहे,  
 तत्त्वों का यही मसाला है ॥आ०॥  
 ऐसे हैं जिनवर देव जिन्हें,  
 नहीं पक्षपात से चारा है ।  
 जाठा कर्मों को दूर किया,  
 शिवपुर में घर कर डाला है ॥सब०॥१॥  
 गुरु जैनी हैं मत्परादी ये,  
 नहीं पाप अधिक या रागी है ।  
 वचन कामिनी को त्याग सदा,  
 महा पाच व्रतों को पाला है ॥सब०॥२॥  
 नहीं दुर्गति में गिरने दवे,  
 सद् रस्ता धर्म बताता यह ।  
 सम्यक् दर्शन और ज्ञान क्रिया से,  
 'धीरज' जैन उजाला है ॥सब०॥३॥

### प्रभु पूजा गायन

भर लामो र कटोरा केसर का,  
 नय जग पूजो परमेश्वर का । भर०॥  
 जमल कस्मीरी केसर मगाया,  
 कीच रनाया कीस्तूरी का । भर० ॥१॥  
 मती द्रौपदी चरण चण्या,  
 घान सुणो घन जाता रा । भर० ॥२॥  
 नर नारी मिल मिल क पूजो,  
 ज्यु मुख पायो मुक्ति रा । भर० ॥३॥  
 आन आनद मोण इर्ष रभावो,  
 घान चाकर प्रभु चरणा का ।  
 भर लामो रे कटोरा कमर का ॥४॥

### प्रभु भक्ति उपदेश पद

ध्यान म जिन के सदा, लयलीन होना चाहिये ।  
 ज्ञान गुन ज्ञान झेली, परवीन होना चाहिये । ध्यान०॥  
 राह समय भी पकड़, कल्याण भी मुरत मिले ।  
 काल गफलत में सज्जन, नाहक न खोना चाहिये ।

ध्यान म० ॥१॥

धर्म खेती किया चाह, जमीन कु साफ रख ।

धीज समकित का हृदय में, रुचि से बोना चाहिये ।

ध्यान में० ॥२॥

रामना मन की मफल, जानद से पूगन भई ।

अर तो समतामेज ऊपर, सुख मे सोना चाहिये ।

ध्यान में० ॥३॥

दाम चूनी अपने घर, जानद से फुलंगा कल्प ।

भयस्थिति परने मे, मुगताफल मही लेना चाहिये ।

ध्यान में० ॥४॥

### प्रभु प्रार्थना पद

साहब तेरी उदगी मैं भूलता नहीं,

भूलता नहीं मैं विमरता नहा । माहर०॥

अष्टादश दोष रहित देव है मही,

अन्य दश अफरादि मानता नहा । माहर० ॥१॥

मुनि है निर्ग्रन्थ सद्गुरु है मही,

अन्य गुरु वेशधारी मानता नहीं । माहर० ॥२॥

दान शीयल तप भाग धरम है सही,

अन्य धर्म विषय को मैं मानता नहीं । साहब० ॥३॥

मुक्ति रूप सिद्धि सुख वाछता सही,

सगार दुख जाल रूप वाचता नहीं । सा० ॥४॥

रह मुनि मीतियान तारिये सही,

जायागमन भयभ्रमण का मेटिये मही । साहब० ॥५॥

## प्रभु गुण गायन

मुसगी मुसगी मुसगी प्रभु मिल गये,  
सफल भये मोर नैन । मुसगी० ॥१॥

एक तो मैं दरिसन, मैं दरिसन, मैं दरिसन प्यासी,  
दरिसन विना नहीं चैन । मुसगी प्रभु० ॥२॥

एक तो मैं पापी, मैं पापी, मैं पापी हूँ प्राणी ।  
तारण वाले भगवान् । मुसगी० ॥३॥

एक तो मैं माया, मैं माया, मैं माया का लोभी,  
झूठी माया मेरी जान । मुसगी प्रभु० ॥४॥

एक तो मैं आया, मैं आया, मैं जाया तोरे चरणे,  
जैनमढली गुण गाय । मुसगी प्रभु मिल गये ॥५॥

## जिनप्रतिमास्थापनास्तवन

श्री जिनप्रतिमा हो जिनमरररी कही, दीठा आणद अग ।  
ममकित बिगड हो सका कीजता, निम अमृत रिप सग

श्री० ॥१॥

आज नहीं कोई तीर्थकर इहा, नहीं कोई अतिशयवत । जिन-  
प्रतिमानो हो एक आधार छे, आपे मुक्ति एवत । श्री० ॥२॥

सुर सिद्धात हो तर्क व्याकरण भण्ण्य, पढित पण कहे लोरु ।



चिनप्रतिमाने हो जे माने नहीं, तेहनो सघलो फोरु ।  
श्री० ॥३॥

प्रतिमाने आगे हो नमुत्पुण रुहे, पूजा सत्तर प्रभार ।  
फल पिण मोल्या हो हित सुख मोक्षना, द्रौपदीने अधिभार ।  
श्री० ॥४॥

रायपसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीनाभिगमादिमाज्ञ ।  
ए सूर मान हो प्रतिमा माने नहीं, माहरी माय ने वाझ ।  
श्री० ॥५॥

माधुने मोल्यो हो भायस्तर भलो, आवरु ने द्रव्य भाय ।  
ए बेहु करणी हो करता निस्तरे, श्रीजिनप्रतिमा प्रभाय ।  
श्री० ॥६॥

पारमनाथ हो तुज प्रसादयी, सदहणा मुज एह ।  
भव भय हो जो हो समयसुत्र रुह, श्रीजिनप्रतिमासु नेह ।  
श्री० ॥७॥

### धीवाली वीरप्रभु स्तवन

मार्ग देशरु मोक्षनो र, केवल ज्ञान निधान ।  
माय दया सागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो र ।  
धीर प्रभु मिद धया, सघ सकल आधारो रे,  
हवे इण भरतमा, कोण करये उपगारो र । वीर० ॥१॥

नाथविद्गुण सैन्य ज्यु रे, गीरगिद्गुणो रे सघ ।

साधे कोण जाधारथी र, परमानंद अभगो र । वीर० ॥२॥

मातगिद्गुणो माल ज्यु रे, अरहो परहो जधडाय ।

वीरगिद्गुणा जीयटा र, आकुल व्याकुल धाय रे । वीर० ॥३॥

सशयछेदक वीरनो रे, विरहो केम समाय ।

जे दीठे सुरा उपने र, ते विण केम रहवाय रे ।

वीर० ॥४॥

निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भय-जडगी-सखग्राह ।

ते परमेश्वर विण मले र, केम राधे उत्साहो रे ।

वीर० ॥५॥

वीर थरा पण श्रुततणो र, इतो परम आवार ।

हये इहा श्रुत आवार छे रे, अहो जिनमुद्रा सार रे ।

वीर० ॥६॥

ग्रण काले सति जीयने रे, आगमवी जाणद ।

सेवो ध्यागो भविचना रे, जिनपडिमा मुखरुदो र ।

वीर० ॥७॥

गणधर आचारन मुनि रे, सहुने इणि पर सिद्ध ।

भय भव जागम सगवी र, दवचद्र पद लीय रे

वीर० ॥८॥

## दीयाली महावीरजिन स्तवन

મ્હારે દીવાલી યહ જાજ, નિનમુલ્લ જોગને ॥૩૫૦॥  
 મહાવીર સ્વામી મુગતે પહોતા, મૌતમ કૈાલ નાન રે ।  
 એન ઝમાયમ દીવાલી મ્હાર, ચીર પ્રશુ નિર્મામ ।

जिनमुख० ॥१॥

चाग्रि पाली निरमलु ने, टाली पिपय ऋणाय रे ।  
 एहया मुनिने यादिये तो, उतार भयपार । जिन० ॥२॥  
 बाहुला गहोराया गीरजीने, तारी चदन गाला र ।  
 केवल लहीने मुगत पहोता, याम्या भयनो पार । जिन० ॥३॥  
 एहया मुनिने यादिये, जे पचम नानन धरता र ।  
 समयमरण दइ दशना, प्रभु ताया नर न नार । जिन० ॥४॥  
 घोषीममा जिनवरु ने, मुक्ति तणा दातार र ।  
 कर जोडी कवि इम भणे, प्रभु भयनो फरो टाल । जिन ॥५॥

## श्री पर्युषणा स्तवन

(आखडीने में आज शेरुजो दीठा र यह चाल)

મુળજો સાનન સત પજૂમણ જાવ્યાં રે ।  
 તુમે પુણ્ય કરો પુણ્યવત, મરિય મન માવ્યા રે । આ૦ ।  
 શીર જિણેમર યતિ અલવેગર, ગાલા મોરા પરમેશ્વર એમ થોલે ર ।  
 પર્વ માહ પજૂસણ મોટા, જર ન જાવ થોલે રે । પજૂ૦ ॥૧॥

चोपगमाहे जेम केशरी मोटो, वाला मोरासगमा गरुड ते कहिय रे ।

नदीमाह जेम गंगा मोटी, नगमा मेरु लहिय रे । पजू० ॥२॥

भूपतिमा भरतेश्वर भाख्यो, वा० देव माह मुर इद्र र ।

सफल तीरथ माह शत्रुजो दारयो, ग्रहगणमा जेम चद्र रे

पजू० ॥३॥

दशरा दीनाली ने वली होली, रा० आखातीज दिवासो र ।

घलेय प्रमुख बहुला छे बीजा, पण ण मुक्तिनो वासो रे ।

पजू० ॥४॥

ते माटे अमार पलागो, अट्टाइ महोच्छय कीने रे ।

जडूम तप अधिपादये करीने, नर भन लाहो लीजे रे ।

पजू० ॥५॥

ढोल दुदुभि मेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र जगावे रे ।

झाझरनो झमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवे रे ।

पजू० ॥६॥

सौना रूपाने फूलडे वगावी, वा० कल्पसूत्र ने पूने रे ।

नम वखाण विधिण सांभलता, पाप भवासी धूने रे । पजू० ॥७॥

ए अट्टाहिनी महोच्छय करता, वा० बहु जगजन उदर्या रे ।

त्रिबुध विनीत वरसेनक एहथी, नवनिधि रुद्रि सिद्धि वर्या रे ।

पजू० ॥८॥

## श्री सिद्धाचल स्तवन

(तीरधनी आशातना नमि० यह दशी)

विमल गिग्नि भेटता सुख पायो, हार सुख पायो र  
सुख पायो, हारे जानद धनो दिल छायो, हारे नमता गिरि-  
राज । विमल० । आ० ।

मूल मंदिर प्रभु रूपमनी अतिप्यारी, हार सोह मूरत  
मोहनगारी । हार जस महिमा छे अतिभारी, हारे मानु मोह-  
नबेल । विमल० ॥१॥

आस पास जिन जिनने दिल धरिये, हारे रायण पगला  
न रिसरिये । हार पुडरीक गणार गुण बरिये, रुरिये जन्म  
पतिन । विमल० ॥२॥

रूपम प्रभुजी आविया दिल धारी, हारे इहा पूर्व नगणु  
गारी । हार मुनि ध्यान रूप अतिभारी, तीर्थ नष्ट गुणग्याण ।  
विमल० ॥३॥

पुडरीकाचल नामयी जोलखायो, हारे ज्ञाताग्रमें तीर्थ  
बतायो । सीमधरजिन मुख से गनायो, नाम लिया दुख  
जाय । विमल० ॥४॥

तीर्थ प्रतापी भेटायो मनुहारो, हारे रुढो देय सोरठ  
गणगाने । सौभाग्यविजय दिल प्यारो, नमिये बार बार ।

विमल० ॥५॥

## श्री सिद्धाचल स्तवन

जिनदा तोर चरण कमलमी र,  
 हु चाहु सेवा प्यारी, तौ नाशे र्म कठागी,  
 भय भ्राति मिट गई मारी । जिनदा० ॥१॥

विमलगिरि राने र, महिमा अति गाजे र ।  
 बाजे जग डर्रा तरा, तू सचा साहिय मरा ।  
 हु मालक बेग तरा । जिनदा० ॥२॥

करुणा कर स्वामी र, तू अतरजामी र ।  
 नाभि जग पूनमचदा, नू अजर अमर मुखरुदा ।  
 तू नाभिरायकुल नदा । जिनदा० ॥३॥

इणगिरि सिद्धा र मुनि अनत प्रसिद्धा रे ।  
 श्री पुडरीक गणधारी, पुडरीकगिरि रहारी,  
 ए सहु महिमा तारी । जिनदा ॥४॥

तारक जग पीठा र, पाप परु सहु निटा रे ।  
 इन्डा मो मन में भारी, म कीधी सेवा तारी ।  
 हु मास रही शुभ चारी । जि० ॥५॥

विरुद निहारो र, अय मोह तारो र ।  
 तीय जिनवर तो भेटी, जन्म जरा दु ख भेटी ।  
 हु पायो गुणनी पेटी । जिनदा० ॥६॥

त्राभिड वारिभिछा रे, दश मोडि मुनि मिछा रे ।  
हुआ भक्ति रमणी भरताग, सानिक पूनम दिन सारा ।  
जिनगामन जग जयफारा । जि० ॥७॥

सयत शणि चारा र, निधि इट्ट उदारा रे ।  
आतम को आनदहारी, जिनशामन की बलिहारी ।  
पाम्या भरजल पारी । जिनदा० ॥८॥

### श्री शत्रुजय स्तवन

शेनुजानो यामी प्यारो लागे मोरा राजिदा,  
लाग मोरा राजिदा जी लागे मोरा० ॥

इण नुगरीयारी जीभी जीणी सोरणी,  
उपर शिखर निराने मोरा राजिदा । शेनु० ॥१॥

चोमुख बिन अनुपम निराने,  
जदभुत दीठा दुस भागे मोरा राजिदा० । शे० ॥२॥

चुमा चढन जोर जरघना,  
कशर तिलक निराने मोरा राजिदा० । शे० ॥३॥

मस्तके मुष्ट मान में कुडल,  
चाह नाजुन्द छाजे मोरा राजिदा० । शे० ॥४॥

ज्ञान निमल प्रभु इणि परे मोले,  
जामव पार उतारो मोरा राजिदा० शे० ॥५॥





## गहुली

आज हमारे रे मंगल रंग वधाई, जय जय श्रीमहाश्रीरजिनेश्वर  
जगगुरु जगहितकारी, तुम आसन जममा जयवतु  
चरते मंगलकारी । आज हमारे रं मंगल रंग वधाई ॥१॥

स्यामि सुगर्म गणीश-परपर-नदत्तवन सुरशास्त्री ।  
जगच्चद्रसूरीश्वरराजे, तपगच्छ कीर्ति दास्त्री । आ० ॥२॥

श्रीरविजयधुरि जगहीरो, जेणे अवपय प्रतिरोध्यो ।  
अद्भुतशक्ति-कलापरिचययी, अरुण भूपति बोध्यो ।

जा० ॥३॥

तास परपर गुणमणिरोहण, मणिविजय गुरुराया ।  
शमदम त्यागवृत्तिधरी दुष्कर, सध सकल मनभाया । आ० ॥४॥

तास शिष्य श्रीसिद्धिविजयगणि, शिष्यगणे परिवरिया ।  
सधतणा शुभ आग्रहवन्धी, महेशाणे पाउधरिया । आ० ॥५॥

अद्भुत तपगुण अद्भुत जपगुण, अद्भुत शमगुण परग्यो ।  
शास्त्रबोध पण अद्भुत निरखी, सध मकल रह हारग्यो ।

आ० ॥६॥

देशदशातर कुहुमपत्री, मोरली सध तेडाव  
धुरिपद दवाने कारण, होश धणी मन लाव । आ० ॥७॥

दशदशातरयी आरीने, सध चतुर्गिध मलियो ।  
आसनशोभा अग विचारी, जिनसम गुणमणिकलियो । आ० ॥८॥



चार डरणीं धोड जलमाह, तेह पिड खाइ जल पीवो ।  
एहवो तप गुणता जीव रूप, उन धन धारो जीवो हो ॥घना०  
॥४॥

चउद सहम मुनीश्वर माह, आपने वीरजी उखाण्या ।  
दरिगुन नितप्रत पुण्यरत पाव, जमे पण आज पिछाण्या हो  
गना० ॥५॥

नव माम लगे भजम पाली, सर्गवसिद्धिमें जाय ।  
राम रह ऐसे मुनीश्वर, निधे मुक्ति पद पाय हो ॥गना० ॥६॥

### सद्गुणसदुपदेशसञ्ज्ञाय

इम सद्गुरु जीउने समझावे, नरभय अथिर देखावे रे ।  
मो तो माचा सेंण कहाव, जे जिनधर्म शुगाव रे ॥ इम० ॥१॥

हुती ते कुकुमवरणी दही, उपमा दीजे कही रे । ब्हाला  
मिलिया सगा स्नेही, बाले घोचा दइ रे ॥ इम० ॥२॥

कैना राका ने कैनी राकी, राइ म जाणे राकी रे ।  
स्वारथ रिण सहू जावे घाकी, भगवन् इग परे भार्खी रे ॥  
इम० ॥३॥

पहरण मलिया कडा ने मोती, वाग वेम न धोती रे ।  
घणी ज मेली आयी न पोयी, धम रिना सहू बोयी रे ॥  
इम० ॥४॥

आव साल फिर यम दोला, हुब मितागा खोला र ।  
नाडया तूट काटे यम डोला, जीपडो खाप हिलोला रे ॥  
इम० ॥५॥

महु मिलि अपणो रोणो रोय, नेहनी गति हुग जोव रे ।  
जो स्वारथ पूग्यो नयि होव, तो पूठ ही गिगोव र ॥ इम० ॥६॥

म्हारो म्हारो करी गयो पलो, जग म्हारथनो मेलो रे ।  
उठी चलेंगो हम अकेलो, मिछड्या मिलयो दोहलो रे ॥  
इम० ॥७॥

धन मपद गढल जिम छाया, चदने चरची काया र ।  
एह ससारनी राची माया, छोडीने श्रिमपद पाया रे ॥  
इम० ॥८॥

रम तणो शरणो ले मोटो, छोड द मारग खोटो रे ।  
दया धमनो ले तू ओटो, पदी न आय गोटो रे ॥ इम० ॥९॥

राजा चक्रवर्ती महामलिया, काल अनता गलिया र ।  
कमज तूट श्रिवसुख मलिया, अवर समार म रलिया रे ॥  
इम० ॥१०॥

रात दिगस जिनजी सम ध्यावे, मन गछित फल पावे रे ।  
प्रेम ने राज सदा सुख पावे, निजयस्तन गुण गाव रे ॥  
इम० ॥११॥

## समकितभेद भावनारूप सज्ज्ञाय

चाखो नर समकित सखडली, दु ख भूखडली भाजे रे ।  
 चार सहणा सर्वैया लाडु, तीन लिंग फीणा छाजे रे ॥  
 चाखो० ॥१॥

दशविष विनय दोठा मीठा, प्रण शुद्धि सरसर मुहाली रे ।  
 आठ प्रभावक जनने रागी, बली दोपे रूरी टाली रे ॥  
 चाखो० ॥२॥

भूषण पांच जलेची कूली, छत्रिहजयणा स्वाजारे । लक्षण  
 पांच मनोहर घेवर, उठाण गुदगडा ताजारे ॥ चाखो० ॥३॥

छ आगार नागोरी पेंडा, छ भायना पण पूडी रे । मत  
 सठ भेद ए नम नवी याणी, समकित सखडी रूडी रे ॥  
 चाखो० ॥४॥

श्री जिनशासन चोवटे माडी, मिद्रात धाली सारी रे ।  
 ए चाखे अजरामर बावे, शिष्य सुदर्शन प्यारी रे । चाखो० ॥५॥

## मुनिगुणसज्ज्ञाय

ऐसे मुनिजन देखे वनम, ए तो समतारस लीननमें ।  
 ऐसे मुनिजन० ॥१॥

भूप महे शिखरन के ऊपर, मगन रहे ज्ञानन में । ऐसे० ॥२॥

### मरुदेवी माता की मन्त्राय

तुन साथे नहीं गेलु ऋषभ जी, त मुजने विगारी जी ।  
अनन्तवाननी तु प्रब्धि पाम्यो, तो अननी न सभारी जी ।  
तुज० ॥१॥

मुजन मोह हतो तुज ऊपर, ऋषभ ऋषभ रूी जपती जी ।  
अन उदरु मुजने नहि रुचतु, तुन मुख जोरान तपति नी ।  
तुन० ॥२॥

तु पटो शिर उग्र धावे, सेरे मुर नर नारी जी । तो  
जननी ने केम सभार, जाणी जाणी प्रीति ताहरी जी ।  
तुन० ॥३॥

तु केहनो ने हु गली केहनी, न री रहा कोइ केहनु जी ।  
ममता मोह धरे जे मनमा, मूर्ख पणु सहि तहनु जी ।  
तुन० ॥४॥

अनित्य भावनाए चढ्या मरुदेवा, रठां गयर खधो  
जी । अन्तगड कपली धइ गया मुक्ते, ऋषभने मन आणदो  
जी । तुन० ॥५॥

### रहनेमि की सज्ज्ञाय

काउसग्य ध्याने मुनि रहनेमि नामे,  
रखा छे गुह्यमा शुभपरिणाम रे ।

द्वरिया मुनिअर ध्यानमा रहजो,  
ध्यानथफी होय भजनो पार रे, द्वरिया० । आ० ॥

वरसाद भीना चीअर मोरुला करमा,  
राजुल आव्या तणे ठाम र, द्वरिया० ॥१॥

रूप रति र उम्मे वरजित बाला,  
देखी खोभाणो तणे काम र, द्वरिया० ।

दिलहु खोभाणु जाणी राजुल भापे,  
राखो विर मन गुगना वाम र, द्वरिया० ॥२॥

जाइनकुलमा जिनजी नेम नगीना,  
वमन करी छे भुजने तण र, द्वरिया० ।

घन तेहना तुमे शिवादवी जाया,  
एनडो पटन्तर कारण रुण र, द्वरिया० ॥३॥

परदारा सेवी प्राणी नरकमा जावे,  
दुर्लभ मोवि प्राय होय रे, द्वरिया० ।

सायरी सावे जे पाप न बाधे,  
तेहनो छुटारो कदीय न वाय र, द्व० ॥४॥

अशुचि काया र मलमूत्रनी क्यारी,  
तमने कम लागी एनडी प्यारी र, द्व० ।

हु रे सयती तुमे महाअत वारी,  
कामे छे हारी रे, द्व० ॥५॥

भोग यम्या र मुनि मनर्था न इच्छे,  
 नाग अगधन कुलना नम र, द२० ।  
 धिरु कुल नीचा बह नहर्था निहाले,  
 न रह सज्जम गोभा षम र, दररिया० ॥६॥  
 एवा रसीला गजुल यमग मुणीने,  
 नृद्वया रहनेमि प्रभुजीपाम र, द२० ।  
 पाप जालोइ फी सज्जम लीधु,  
 अनुक्रमे पाम्या शिरगाम र, दररि० ॥७॥  
 धन्य अन्य जे नर नारी स्त्रीयलने पाले,  
 ममुद्रतयामम प्रत छ एह र, द२० ।  
 रूप कह तेहना नामभी होय,  
 अम मन निमल सुन्दर दह र, द२० ॥८॥

### अरणिक मुनि सज्ज्ञाय

अरणिक मुनिर चाल्या गोचरी, तडक दास्ये सीसोजी ।  
 पाय जलपाणो र वेलु परनल, तनमुकुमाल मुनीशो जी ।  
 अर० ॥१॥

मुख कमलाणु रे भालती फूल ज्युं, उभा गोखनी हटो  
 जी । खरी बपोर र दीटा एरुला, मोही मानिनी ठेटो जी ।  
 अर० ॥२॥



नयणरंगीली रे नयणे वीघीया, मुनि वभ्या तेणे ठाणो  
जी । दासीने कह जा रे उतावली, मुनि तेडी पर जाणो जी ।  
अर० ॥३॥

पावन रीजे रे मुज घर जागणु, बहोरो मोदक मारो जी ।  
नयनौवनरस फाया क्यु दहो, सफल करो अन्तारो जी ।  
अर० ॥४॥

चन्द्रवदनीए चारित्र चूकव्यु, सुख मिलसे दिन रातो  
जी । एक दिन रमता रे गोखे सोगठे, तर दीठी निज मातो  
जी । अर० ॥५॥

अरणिक अरणिक करती मा फिरे, गलिए गलिए मझारो  
जी । कहो कोणे दीठो र मारो अरणिलो, पूडे लोफ हजारो  
जी । अर० ॥६॥

हु कायर छु रे मारी मानडी, चारित्र खाडानी धारो जी ।  
धिरु धिरु विषया रे मारा जीवन, में कीघो अविचारो जी ।  
अर० ॥७॥

गोखयी उतरी रे जननीपाय पढथो, मनसु लाज्यो  
अपारो जी । वछ तुज न घटे रे चारित्र चूमतु, जेहथी शिव  
मुख सारो जी । अर० ॥८॥

एम समजात्री रे पाछो गालियो, आप्यो गुरुनी पामो  
जी । सद्गुरु दिथे रे शीख भली परे, वैराग मन बामो जी ।  
अर०

અગ્નિ ધમ્મતી રે ગિલા ઉપર અગ્નિકુ અગમગ સીધો  
જી । રૂપવિનય રહ ધમ્મ ત મુનિસ્સ, નણ મનસાહિત ફલ  
લીધો જી । અર૦ ॥૧૦॥

### શ્રી સ્થૂલભદ્ર સંજ્ઞાયા

શ્રીસ્થૂલભદ્ર મુનિગમમા ગિરદાર જા,  
ચોમાસુ ગ્રામ્યા મોગા ગાગાર જો ।  
ચિત્રામણશાલાળ તપ જપ ગાદ્યાં જો ॥૧॥  
ગાદરિયા ગ્રન ગ્રામ્યા છો ગ્રમ મેહ જો,  
મુન્દરી મુન્દર ચપગરણી દહ જાં ।  
હમ તુમ મરિયો મેલો આ સમાગમા જો ॥૨॥  
સગારે મેં જોયુ મરુલ સ્વરૂપ જો,  
દર્પણની છાયામા નેહતુ સ્વ જો ।  
સ્વપનાની મુગ્ધડલી ભૂસ્વ ભાગ નહીં જો ॥૩॥  
ના કહ્યો તો નાટક ક્રમુ થાવ તો,  
વાર વરસની માયા છે મુનિરાત જો ।  
ત છોડી હુ ગાઉ કમ ગાથાભરી જો ॥૪॥  
ગાથા મરિજો ચેતન કાલ ગનાદિ જો,  
મમ્યો ધમ્મને હીગ વયો પરમાદી જો ।  
ન ગાળી મ મુખની કરુણી ગાગની જો ॥૫॥

जोगी तो जङ्गलमा वासो वसियु  
 वेइयाने मदिरिये भोचनरमिया व  
 तुमने दीठा एहना सयम साधना :  
 सावगु सयम इच्छारोध त्रिचा व  
 कूर्मापुत्र थया नाणी घरना जौ।  
 पाणीमाह सोरु पङ्कज चाणिय जौ।  
 चाणिये तो सघळी तमारी गंत जौ,  
 मेरा मीठाइ रमयता गहुभात जौ।  
 अगर भूषण नय नयली भात लम्हा व  
 लायता तो तु दती आदरमान जौ,  
 काया जाणु पतगरग ममान जौ।  
 ठालीने छी करनी एहवी श्रमिछा जौ।  
 प्रीतलडी करता ते रमभर सज्ज  
 रमता ने दस्वादता घणु इज्ज जौ।  
 रीसाणी मनानी मुचन मार्ग जौ।  
 साभरे तो मुनिनर मनन जौ द  
 दाक्यो अग्नि उघाडयो सज्ज न।  
 सजममाह ए छे दूषण कर्म जौ।  
 मोटकु तो जान्यु तु नन्दन जौ,  
 जाता न वह काद वसावत जौ।  
 मे त नन्दन कोल अम श्रम जौ

मोकल्या तो मागमाढ मलिया जो,  
सभृति आचारन पाने चलिया तो ।  
सयम त्रीधु समस्ति तेणे श्रीखव्यु जो ॥१३॥

श्रीखव्यु तो कही दयाडो जमने जो,  
धम रुन्ता पुण्य उडरु तमने जो ।  
समतान घर आगी वंद्या इम रुडजो ॥१४॥

रुह मुनीश्वर शराने पगिहार जो  
समस्ति मूले आवरना प्रत पार जो ।  
प्राणानिपातादिक स्थूलची उचर जो ॥१५॥

उचरे तो वीत्यु छे चोमाम जो,  
आणा लहने आव्या गुरुनी पाम जो ।  
श्रुतनाणी रुहणा चांद पूरती जो ॥१६॥

पूरती वडने ताया प्राणी शेरु जो,  
उज्ज्वलध्याने त गया दुलोरु जो  
काम रुह नित्य तहने करिय उदना जो ॥१७॥

### आत्मप्रबोध-सज्जाय

पूरव पुण्यसयोग पामी, नरभर उत्तम जात ।  
शुद्ध दन गुरु धर्म लहीने, म करो प्रमादनी बात र प्राणी,  
आत्म मायन कीने ॥१॥

एह ससार अमार दुम्बागर,  
 श्री जिनधर्म भजीने रे प्राणी, आतमसाग्न कीने ।  
 तन यौवन जाउखो दिन दिन, अजलि जल विमछीने ।  
 तू निश्चित थइ रह्यो भोला, तुज ऊपर जम साजे रे, । प्राणी ।  
 आतम० ॥२॥

मात पिता सुत भाइ भगिनी, कातादिक परिवार । आप  
 स्मरण खागने कारण, मलियो छे निरगार र प्राणा । आ० ॥३॥

पाप करी नहु घन तू मेले, खासी सघलोइ माथ । पाप  
 तणा फल तू भोगउखे, दुर्गति एख्यो अनाथ र प्राणा । आ० ॥४॥

क्रोध मान मद मत्सर मातो, जातो काल न जाण्ये । सत  
 साधुनी निदा करता, हियडे शका न आप र प्राणी ।  
 आ० ॥५॥

इद्र अनुप जिम जलपरपोने, जह्यो सध्यानो राग ।  
 जिम चंचल सौदामिनी झवरो, तिम घन भौवन लाग रे ।  
 प्राणी । आ० ॥६॥

म्हारु म्हारु तु करी रह्यो भोला, त्हारु शरीर न होइ ।  
 आयो एकिलो ने जाये एकिलो, ज्ञान दष्टि करी जोइ रे प्राणी ।  
 आ० ॥७॥

थोडिसी शक्ति मुख आगल दया, उठ्यो कर अभिमान ।  
 जे मुरपति ज्या जेहने हुता, उखीय तत्त्व विमान रे प्राणी ।  
 आ० ॥८॥

लाख चोरामी हय गय रव जस, महस चोमठतस राणी ।  
नय निधि चौद रयण जम भदिर, लोप न को तस चाणी र  
प्राणी । आ० ॥९॥

महस बत्तीस नप सेरा ररता, पायक छिन्नु मोड । ते  
चक्रवर्ता इण भूमि ममाणा, जा जग महोटी खोड रे प्राणी ।  
आ० ॥१०॥

त्रण से माठ सग्राम शूरा, पूरा जस घर भोग । ते वामु  
दव देवगति हुआ, मूझी उर सुख जोग र प्राणी । आ० ॥११॥

तीन सुवनमाह रटनी हुतो, नामयी उरता दया । ते  
रायण राना पूठ, मोह न रतो जल दया र प्राणी ।  
आ० ॥१२॥

रिहा ते गम रिहा नलदया, पाच पाडव रिहा दस ।  
रिहा त नल कौरव वर्णादिक, ए सहु हुआ कथादाय रे  
प्राणी । आ० ॥१३॥

जिण घर कनक तोलाता बहुला, कनक तरु तिहा वाग ।  
निण घर रमणी रमती हरिणाधी, हरिण चर तिहा घास रे  
प्राणी । आ० ॥१४॥

जिण घर मणि माणक मुखानो, तिल भर न होतो माग ।  
ते घर हुआ रान बरोबर, वसे घुहड वाग रे प्राणी । आ० ॥१५॥

एह ससार स्वरूप विचारी, सारी अकल करीजे । जेणे  
प्राणी यावे सुखियो, सो विवि मनमें धरीजे रे प्राणी ।  
आ० ॥१६॥

जो गछो मुख फीति इण भर, पर भर शिवपुर वाम ।  
दान शीयल तप भावना भेटे, करो जिनधर्म उह्यास रे प्राणी ।  
आ० ॥१७॥

गचरुवर श्री सुमतिविजय गुरु, नेमनिनय शिशु भाखे ।  
सो जिनधर्म करो मन शुद्धे, दुर्गति पडता राखे रे प्राणी ।  
आ० ॥१८॥

### श्रीमेतारज मुनि सज्झाय

(सोना रूपा क सोगठ यह दर्शी)

धन धन मेतारज मुनि, जेणे सयम लीघो ।  
जीवदयान कारणे, तेणे रोप न कीवो । धन० ॥१॥

भामखमणने पारणे, गोचरीने जाय ।  
सोयनफार तणे धरे, पहोता मुनिराय । धन० ॥२॥

सोवन जय श्रेणिफना, ऋषि पासे मुक्ती ।  
घर भीतर त नर गयो, एरु याव न चुप्ती । धन० ॥३॥

जव सघला पखी गल, मुनिवर ते देखे ।  
तव मोनी घर आयियो, जय तिहा नही देखे । धन० ॥४॥

रहो मुनिर जय स्या गया, रहो ने रुणे लीधा ।  
 मुनि उत्तर आप नही, तब चपटा दीधा । धन० ॥५॥  
 मुनिर उपशमरमभया, पर्या नाम न भाष ।  
 सोप ररीन इम रह, जय छे तुम पास । धन० ॥६॥  
 जय चोया राजातणा, नू नो मोटो चोर ।  
 जाला चर्मतणो ररी, बाघ्यो मस्तरु दोर । धन० ॥७॥  
 नेत्रयुगलतणी वेदना, निरुलीया नतराल ।  
 केवलान ते निर्मलु, पामी कीधो काल । धन० ॥८॥  
 शिव नगरी ते जइ चढ्यो, ण्हवो साधु मुनाण ।  
 गुणवतना गुण जे जप, तम घर मोड रल्याग । धन० ॥९॥  
 नय कन्या तणे तजी, तनी रुचन कोडी ।  
 नय पूरधर पीरना, प्रणमु कर जोडी । धन० ॥१०॥  
 सिंहतणी पर जादरी, सिंहनी परे शूरो ।  
 समय पाली शिव लही, अस जगमें पूरो । धन० ॥११॥  
 भारी फाटतणी तिहा, उचेवी नाखे ।  
 धडरी परी जय वम्पा, ते दखी आखे । धन० ॥१२॥  
 तय सोनी मन चितव, कीधु खोडु काम ।  
 वात राजा जो जाणजे, तो टालज ठाम । धन० ॥१३॥  
 तय ते मनमा चितवे, भयधी निजहाये ।  
 सोमनसार दीक्षा लिये, निज बुटव सघात । धन० ॥१४॥  
 श्रीरुनरुमिजय वाचस्वरु, शिष्य बोले राम ।  
 साधुतणा गुण गारता, लहिये उत्तम ठाम । धन० ॥१५॥



श्री स्मृतिभद्र सज्जाय १

( दश्री आछेलाल )

घोली गयो मुत्त बोल, चार घडीनो बोल,  
 आछेलाल हर्जाय न आब्यो बालहो जी ।  
 देइ गयो दस्वदाह, पाछो नाब्यो नाह,  
 आछेलाल के सही केणे भोल्ब्यो जी ॥१॥  
 रह तो नही अण एक, रे दामी सुविवर,  
 आछेलाल जाइ जुजो दशे दिशाजी ।  
 एम बोलती बाल, एहनी उत्तम बाल,  
 आछेलाल डेल गयो मुज छेत्ती जी ॥२॥  
 उलस बालम धाय, अंग चबालो राय,  
 आछेलाल नयणे नावे नींदडी जी ।  
 चोखा चपकशरीर, नणदलना हो बी,  
 आछेलाल नयणे में दीठा नही जी ॥३॥  
 जेम बँपया मेह, मच्छने बलमु नह,  
 आछेलाल भमराने मन कूसी जी ।  
 चम्बो चाहे चद, इद्राणी मन इह,  
 इह तमन बोलमु जी ॥४॥

तुम मिंग घडीए छ माम, ते मुज नाखी पाम ।

जाहेलाल निदुरपणु नर ते कयुं जी ।

भारो मोदक दोष मूरी मननो रोष,

आहेलाल झटक तो करुणा करो जी ॥५॥

हु निराधार नार, गेली गयो भरतार

जाहेलाल उभी करु आलोचना जी ।

एम बलवर्ती मोक्ष, दर्ती करमनो दोष,

आहेलाल दासी आरी र दोडती जी ॥६॥

साभल स्वामीनी ज्ञान, लालिलदनो ज्ञान,

आहेलाल सुलिभद्र जाच्यो र जागण जी ।

बनिता माभली पात, हियड हरण न मात ।

जाहेलाल प्रीति पावन प्रभु ते री जी ॥७॥

पशरो घर मुज, मुनि भाएयो मरि मुज,

जाहेलाल उठ हाथ अलगी रह जी ।

माता आगे मुमाल, तिम मुज आगल ख्याल ।

आहेलाल एह प्रपंच रिद्धा भण्या जी ॥८॥

चित्रशाली चोमास, निहाली मुख तम,

जाहेलाल बनिता मिधिसु आलोचवे जी ।

मादल ताल कमाल, भुगल भेरी रसाल,

आहेलाल गावे नय नय रागमु जी ॥९॥

घाले विधिमु जग, फरती फुदडी चग,  
 जाछेलाल हार भाव बहु हत्तु जी ।  
 सांभल स्वामीनी बात, सिंहने घाले घात,  
 आछेलाल राडनो पाड राते गयो जी ॥१०॥

सो घालरु साये रोइ, पानइयाने पानी न होय,  
 जाछेलाल पथ्थर फाटयो त किम मलेजी ।  
 समुद्र मीठो न धाय, पृथ्वी रमातल जाय,  
 आछेलाल घुस जगे पत्रिमदिशे जी ॥११॥

प्रतिमोवी इम कोश, छोडी रागने रोष,  
 जाछेलाल द्वादश जतने उचरे जी ।  
 पूरण कीधो चोमास, जाब्या श्री गुरुपाम,  
 जाछेलाल दुकर दुकर तू मही जी ॥१२॥

ग्रीम वरम घर बास, पुरी सहुनी आश्र,  
 जाछेलाल पञ्च महाव्रत पालता जी ।  
 धन्य मात अन्य तात, नागर न्याति रुहात,  
 जाछेलाल बारु रश्न दिपावियो जी ॥१३॥

जे नर नारी गाय, तम घर लच्छी सवाय,  
 आछेलाल पभणे शांति मयाधकी जी ॥१४॥

## श्रीस्थूलभद्र सज्जाय २

( दशी-भेष र उतारो राजा० )

वेष स्वामी जोड़ आपनो, लागी मारा तनडामा लाय जी ।

अणघायुं रे स्वामी जा नु रयुं, लाजे सुन्दर काय जी ।

कोणे र घुतारे तमने भोलव्या ॥१॥

आरी खबर जो होत तो, जाना दंत नही नाथ जी ।

छेतरा छेह दीधो मने, पण छोडु नही साथ जी ।

कोणे रे घुतारे० ॥२॥

बोध सुणी सुगुरु तणो, लीधो सज्जमभार जी ।

मात पिता परिवार सह, श्रुठो आल पपाल जी ।

नथी र घुतारे मने भोलव्यो ॥३॥

एहडु जाणी कोड्या सुन्दरी, धया साधु नो वेष जी ।

आव्यो गुरुनी आछा लई, दया तने उपदेश जी ।

नथी रे घुतारे० ॥४॥

काले सवार भेगा रही, लीधा मुख अपार जी ।

ते मने बोध दवा आनिया, जोग धरीने जा गार जी ।

जोग रे स्वामी जी अही नही रहे ॥५॥

कपट करीने मने छोड्या, आव्या तमे निरधार जी ।

पण छोडु नही कदी नाथ जी, नथी नारी गमार जी ।

जो २० ॥६॥

छोड्या मास पिता बली, छोड्यो महु परिवार जी ।  
 श्रद्धि सिद्धि र मैं तो तजी दीधी, मानी सखलु अमार जी ।  
 छेटी रही र रर बात नू ॥७॥

जोग धयो र अम साधुनो, छोड्यो सखलानो प्यार जी ।  
 मात समान गणु तने, मत्प रुहु निरभार जी ।  
 छेटी रही० ॥८॥

भार बरमनी प्रीतडी, पलमा तूटी जाय जी ।  
 पस्ताबो पाजलथी धजे, रुहु लगाने पाय जी ।  
 जोग र० ॥९॥

नारीचरित्र जोइ नाथ जी, तुरत छोड्यो जोग जी ।  
 माट चेतो प्रथम तमे, पछी हसये लोक जी ।  
 जोग र० ॥१०॥

बाला जोइ तारा सुन्दरी, डगु नही हु लगार जी ।  
 काम शुनु कनने कयो, ज्ञानी पाप अपार जी ।  
 छेटी रही र गमे ते करो ॥११॥

छेटी रही रे गमे त करो, मारा माटे उपाय जी ।  
 पण तारा मामु हु जोड नही, शाने कर छे हाय जी ।  
 छेटी रही रे० ॥१२॥

नदीमाह निशु दिन रह पण, पापागपणु नवि जाय ।  
 लोहधातु टरुण नो लागे, अग्नि तुरत क्षराय । मू० ॥५॥  
 कागरुण्ठमा मुक्ताफलनी, माला ते न ागय ।  
 चन्दन चञ्चित अग करीने, गदभ गाय न ाय । मू० ॥६॥  
 सिंह चरम कोइ सियालसुतने, गारे वेष बनाय ।  
 सियालसुत पण सिंह न होय, मियाल्पणु नही जाय । मू० ॥७॥  
 त माट मूरखवी अलगा, रह त सुरखीया थाय ।  
 उत्तर भूमि बीज न होवे, उलटु बीज त जाय । मूरखने० ॥८॥  
 समकितवारीसग करीने, भयभयभ्राति मिटाय ।  
 मयाविनय सद्गुरु सेवावी, गोधिबीन सुख पाय । मूर० ॥९॥

### लोभ की सञ्ज्ञाय

लोभ न करिवे प्राणीया र, लोभ बूरो सत्तार । लोभ  
 समो जगमा नही र, दुर्गतिनो दातार भविकुजन, लोभ बूरो  
 समार । करजो तुमे निरगार भवि० जिम पामो भयपार ।  
 भवि० ॥१॥

अतिलोभे लक्ष्मीपति रे, मागर नेामे जेठ । पूरपयोनि  
 धिमा पढ्यो र, जइ जेठो ॥२॥  
 सोयनमृगना लो०

सीता नारी गमार्जने रे, भमियो ठामो ठाम । भविरु० ॥३॥

दशमा गुणठाणा लगे र, लोभतणु छे जोर ।

शिवपुर जाता जीवने रे, एहज महोटो चोर । भविरु० ॥४॥

क्रोध मान माया लोभथी र, दुर्गति पामे जीव ।

परमेश पडियो रापडो र, अहोनिश पाड रीव । भविरु० ॥५॥

परिग्रहना परिहारथी रे, लहिजे शिवमुख मार ।

देव दानव नरपति बड र, जाशे मुक्ति मझार । भविरु० ॥६॥

भारमागर पडित भणे र, वीरमागरनुय णिप्य ।

लोभतणे त्यागे रूरी र, पहोने सयल जगीश ।

भविरुजन० ॥७॥

### देवानन्दा की सज्ज्ञाय ।

जिनवरूप देखी मन हरखी, स्तनमें दूध झराया । तब  
गौतमहु भया र अचभा, प्रश्न करनकु आया हो गौतम । यो  
तो हमेरी अम्मा ॥१॥

तम कूसे तुम साहु न बमिया, कृष्ण क्रिया इणे कम्मा ।  
तब श्री वीर जिणदइम बोले, एह क्रिया इणे कम्मा, हो गौतम०॥

मिशलाद देराणी हुती, देवानदा जेठाणी । निपयलोभ  
करी साइ न जाण्यो, कष्ट रात मन आणी हो, गौतम० ॥३॥

देराणीभी स्तनडाण्डी, बटुला रतन चुराया । शगडो करता न्याय हुआ जग, तब फटु नाणा पाया, हो गौतम० ॥४॥

ऐमा शराप दिया दराणी, तुम सतान न होजो । कर्म जागल कोइनु नहि चाले, इद्र चक्रवर्ती जोजो, हो गौतम० ॥५॥

भरतराय जग रूपमने पूछे, एहमा कोह जिणदा । मरीचि पुत्र त्रिदण्डी तरो, चोरीसमो जिनचदा हो, गौतम० ॥६॥

कुलनो गर्व कियो मैं गौतम, भरतराय जग वाधा । मन वचन सायाए करीने, हरग्यो जति आणदा, हो गौतम० ॥७॥

कर्मसयोगे मिलुककुल पाम्यो, जन्म न होवे फनु । इद्रे जगधे जोता अपहरियो, दन भुजगमगाहु, हो गौतम० ॥८॥

व्यासी दिन हु तिहा रूपे रमीयो, हरिणिगमैपी जग आया । सिद्धारथ त्रिशलादराणी, तम कूखे छटकाया, हो गौतम० ॥९॥

रूपभदत्त ने दवानदा, लेशे सयम भारा । तब गौतम ए मुक्ते जाये, भगवती धूम निगारा, हो गौतम० ॥१०॥

सिद्धारथ त्रिशलाद राणी, अच्युत दमलोह जाये । गीजे खधे आचारामे, एह बात कहनाये, हो गौतम० ॥११॥

तपगच्छ ग्री हीरनिजयधरि, दियो मनोरथ चाणी । सकलचद प्रभु गौतम पूछे, उलट मनमा आणी, हो गौतम० ॥१२॥



## जम्बूस्वामी का चोढालिया

दुहा—

सरस्वती पदपङ्कज नमी, पामी सुगुरुपमाय ।  
गुण गाता जम्बूस्वामीना, मुज मन हर्ष न माय ॥१॥  
यौवनयय व्रत आदरी, पाले निरतिचार ।  
मन वच कया शुद्धसु, जाउ तस बलिहार ॥२॥

ढाल पङ्कली—

राजगृही नगरी भली रे लाल, धार जोजन पिस्तार रे  
भविकजन । श्रेणिक नामे नरसरु रे लाल, मन्त्री जमयडुमार  
रे भविकजन, भाव धरी नित्य साभलो र लाल ॥१॥

ऋषभदत्त व्यवहारियो रे लाल, वसे तिहा जनन्त रे  
भविकजन । धारणी तेहनी भारिया रे लाल, झीलादिक गुण-  
वन्त रे भविकजन । भाव धरी० ॥२॥

सुख ससारना बिलसता रे लाल, गर्भ रक्षो शुभ दिन  
रे भवि० । सुपन लही जम्बूवृषनु रे लाल, जन्म्यो पुत्र  
रतन रे भविकजन, भाव० ॥३॥

जम्बूकृमर नाम बापियु रे लाल, सुपनतणे अनुसार रे  
भवि० । अनुक्रमे यौवन पामियो रे लाल, हुओ गुणभण्डार  
रे भविक०, भाव० ॥४॥

ग्रामानुग्रामे विचरता रे लाल, आव्या मोहमस्त्राम रे भवि० । पुरनन रादण आनिया रे लाल, सावे जम्बू गुणधाम रे, भविक०, भा० ॥५॥

भविकजनना हित भणी रे लाल, दिये देशना गणशर रे भवि० । चारित्र चितामणिसारिरु र लाल, भवदुखभञ्जन हार र भविक०, भा० ॥६॥

देशना सुणी जम्बू रीक्षिया र लाल, गुप्ते कह कर जोड र भवि० । अनुमति लेइ मात तातनी रे लाल, सयम लेउ मन कोड रे भवि०, भा० ॥७॥

### दाल दूसरी—

गुरु वादी घर आनिया र, पामी मन बैराग । मात पिता प्रते वीनवे र, करसु ससारनो त्याग माताजी अनुमति द्यो मुज आज, जिम सीझे वछित कान माताजी । अनुमति० ॥१॥

चारित्र पन्थ छे दोहिलो र, त्रत छे खाडानी धार । लघु वय छे वत्स तुम तणु र, किम पले पञ्चाचार कुमरजी, त्रतनी म करो वात, ॥ मुन एक अगजात कुमरजी, त्रतनी म करो वात ॥२॥

एकलविहार विचरतु र, रहेतु वन उद्यान । भूमि सथार पोढतु रे, धरतु धर्मनु ध्यान । कुमरजी, त्रत नी० ॥३॥

પાય જલવાણે ચાલતુ ર, ફરતુ દશ ત્રિદશ । નીરમ  
પાહાર લેયો સદારે, પરીમહ કેમ મહીય, કુમરજી, વ્રતની૦ ॥૪॥

કુમર કહે માતા વ્રત ર, એ સમાર જસાર । તન ધન  
યૌવન સારિમા રે, જાતા ન લાગે વાર, માતાજી, અનુમતિ૦ ॥૫॥

માતા કહે આલ્હાદધી ર, વત્સ પરણો શુભ નાર । જીવન  
વય સુખ ભોગરી ર, પડે લેજો સજમભાર, કુમરજી, વ્રત  
ની૦ ॥૬॥

માત પિતાએ આગ્રહ કરી ર, પરણારી આઠે નાર । જલ-  
ધી કમલ જિમ ભિન્ન રહે રે, તિમ રહે જમ્જુમાર, કુમરજી  
વ્રતની૦ ॥૭॥

### દાલ તૌસરી—

પ્રીતમને કહે રામિની કામિની, સુણો સ્વામી જરદામ  
સુગુણિજન મામલો । સનેહી જમૃતસ્યાદ મૂઝી કરી મૂઝી  
કરી, રહો કોણ પીવ છામ, સુગુ૦ ॥૧॥

મનેહી કામફલારમ કલયો ફેલયો, મૂઝો જી વ્રતનો  
ધન્ય, સુગુ૦ । સનેહી પરણીને શુ પરિહગે પગિહરો, હાથ મે  
લ્યાનો સવન્ધ, સુગુ૦ ॥૨॥

સનેહી ચારિત્ર વેલુચ્ચલ જિસ્યુ ખલ જિસ્યુ, તેમા ત્રિસ્યો  
છે સવાદ, સુગુ૦ । સનેહી ભોગ મામગ્રી પામી કરી પામી કરી,  
ભોગયો ભોગ આલ્હાદ, સુગુણિ૦ ॥૩॥

સનેહી ભોગ તે રોગ અનાદિનો અનાદિનો, પીડે છે આતમ  
જઙ્ગ, સુ૦ । સનેહી તે રોગને શમાય્યા શમાય્યા, ચારિત્ર છ  
રે રસાગ, સુ૦ ॥૪॥

સનેહી કૃપારૂફલ અતિ ફૂટરા ફૂટરા, સ્વાતા લાગે મિષ્ટ  
સુ૦ । સનેહી ત્રિપ પસર જ્યાર જઙ્ગમા અઙ્ગમા, ત્યારે હોવ  
અનિષ્ટ, સુ૦ ॥૫॥

સનેહી દીપગ્રહી નિજ હાથમા હાથમા, કોણ ક્ષપાવ  
કૃપ સુ૦ । સનેહી નારી ત ત્રિપવેલડી વેલડી, ત્રિપફલ ત્રિપય  
વિરૂપ, સુ૦ ॥૬॥

સનેહી જો મુજસુ તુમ સ્નેહ છે સ્નેહ છે, તો ત્રવ લ્યો  
થઈ ઝજમાલ, સુ૦ । સનેહી એહતુ જાણીને પરિહરો પરિહરો,  
સસાર માયાનાલ, સુ૦ ॥૭॥

### ઢાલ ચોર્થી—

એહવે પ્રમતો આવિયો, પાચસે ચોરની સાથ રે । વિદ્યાએ  
તાલા ઉઘાડિયા, બન લેવાને ઝમઙ્ગ રે, નમો નમો શ્રી જમ્બૂ-  
સ્વામીને ॥૧॥

જમ્બૂએ નમપદધ્યાનથી, થમ્યા તે સવિ ચોર રે । થમ  
તળી પરે થિર રહ્યા, પ્રમતો પામ્યો અચમ્ચ રે । નમો  
નમો ॥૨॥

प्रभवो कहे जम्बू प्रते, दो विद्या मुख एह रे । कुमार कहे  
ए गुरुकने, छे विद्यानु मेह रे । नमो नमो० ॥३॥

पाच से चोर ते बुझवी, बुझव्या माय ने ताय रे । सासु  
ससरा नारी बूझवी, सजम लेवाने जाय रे, नमो नमो० ॥४॥

पाच से सत्तावीससु, परिय्यों जम्बूकुमार रे सोहम  
गणधरने कने, लीये चारित्र उदार रे, नमो० ॥५॥

धीरधी धीसम बयें, बया युगप्रगन रे । चौद पूरव  
अगगाहीने, पाम्या कवलत्रान र, नमो० ॥६॥

वरस चोसठ पदवी भोगरी, यापी प्रभव स्वामी रे । अष्ट  
चरमनो धय फरी, धया शिवगति गामी र, नमो नमो० ॥७॥

वरस अठार तेरोत्तरे, रक्षा पाटण चोमास रे । चरमकैरली  
ने गायतां, होय लील विलाम रे, नमो नमो० ॥८॥

महिमाभागर सद्गुरु, ताम तणे सुपमाय रे । जम्बू  
स्वामी गुण गाइया, सौभाग्ये शरिय उच्छाह रे, नमो नमो० ॥९॥

### आठ मद की सज्जाय

मद आठ महामुनि वारिये, जे दुर्गतिना दातारो रे ।

श्री वीर जिणेश्वर उपदिशे, भाखे सोहम गणधारो रे ।

मद आठ० ॥१॥

हाजी नातिनो मद पहन्यो रम्यो, पूर हरिश्छाए श्रीधो रे ।  
चण्डास्तणे कल उपन्यो, तपधी मरि अगज मीधो रे ।

मद० ॥२॥

हाजी हुल्मद गीजो दागिया, मसीमिव ईधो  
प्राणी रे । मोठा मोठीसागर भर भम्पो, मद म करो णम  
मन जाणी रे । मद० ॥३॥

हाजी बलमदधी दुर पामिया, धरिक वसुभूति जीयो  
रे । जइ भोगव्या दुर नरकना, सुर पाडता नित रीयो  
रे । मद० ॥४॥

हाजी मनतटुमार नरमरु, सुर आगल रूप वखायु रे ।  
रोम रोम राया बिगडी गइ, मद चोधानु ए टाणु रे ।  
मद० ॥५॥

हाजी मुनिर सयम पालतां, तपनो मद मनमाहि  
आयो रे । थया हुरगडु ऋषि राजिया, पाम्या तपनो अतरायो  
रे । मद० ॥६॥

हाजी दश दशारणनो धर्णी, राय दशार्णभद्र अभिमानी  
रे । इन्द्रनी ऋद्धि दखी घुसीयो, मगार तजी वयो ज्ञानी रे ।  
मद० ॥७॥

हाजी स्थूलिभद्र निवानो क्यो, मद सातमो जे दुखदारी  
रे । भुत पूरण अर्थ न पामिया, जुओ मानतणी अधिमाइ रे ।  
मद० ॥८॥

राय सुभूम पदखडनो धणी, लाभनो मद कीधो अपारो  
र । हय राय रथ सवि सायर गयु, गयो सातमी नरक भझारो  
रे । मद० ॥९॥

इम तन धन जीवन राजनो, म धरो मनमा अहकारो  
रे । एह अथिर असत्य सवि कारमु, विणसे धणमां बहुनारो  
र । मद० ॥१०॥

मद जाठ निगारो उत्तधारी, पालो सयम सुखफारा र ।  
कहे मानमिनय ते पामये, अविचल पदवी नरनारी रे ।  
मद० ॥११॥

### चाहुवली की सज्जाय

राततणा अतिलोभिया, भगत चाहुवली जूझे रे । सुठी  
उपाडी भारया, चाहुवली प्रतिपूझे रे ॥१॥

वीरा मोरा गजयसी उतरो, गन चढे केवल न होय रे ।  
श्रवभ जिनेसर मोकली, चाहुवलीनी पास रे । वीरा मोरा  
गजयसी उतरो ब्राह्मी सुन्दरी इम भाषे रे । वीरा० ॥२॥

लोच करी चारित्र लियो, बली आयो अमिमानो रे ।  
लघु बन्धन चादु नहीं, काउस्मग्ग रक्षा शुभ ध्यानो र ।  
वीरा० ॥३॥

वरम दिअम काउस्मग्ग रक्षा, घेलडीये रीटाणा र । पखीये  
माला घालिया, तापशीते स्रकाणा रे । वीरा० ॥४॥

साधनी रान गुणी कूनी, तमन्याग्नि मन्त्रां र । इय  
गय रघ महुपरिहया चली आच्यो जह्मरौ र । वीरा० ॥१॥

पैगम रिग गालियो, मूसा निज अभिमान र । पग  
उपाडगो वादगा, उपन्यु ररञ्जान र, वीरा मोरा० ॥२॥

पहोता ररली परसदा, बाहुपत्नी अपिरापो र । अनरानर  
पदवी लही, ममयसुन्दर चड पागो र । वीरा० ॥३॥

### मायासज्झाण

माया कारमी रे, माया म रौ रतुर सुजाण ।

आरणी ।

माया बाझा जगत् विलुद्धो, दुर्गीयो धाय अजाण ।  
जे नर मायाए मोही रौ तणे, स्वप्ने नहीं मुख टाण ।

माया कारमी र० ॥१॥

नाना मोटा नरने माया, नारीने अधिकरी ।  
यली विशेषे अतिषणी व्याप, घरडान झासेरी ।

माया कार० ॥२॥

जोगी जती तपमी संयामी, नग्न चड परिवारिया ।  
उधे मत्तक अग्नि घसन्ती, मायावी न उगरिया ।

माया कार० ॥३॥



माया मेली करी बहु मेली, लोमे लक्षण जाय ।

भयथी धन धरतीमा गाडे, उपर निपधर घाय । मा० ॥४॥

माया कारण दूर देशातर, अटवी मनमा जाय ।

जाह्न वेसीने द्वीप द्वीपान्तर, जइ सायर सपलाय । मा० ॥५॥

शिवभूति सरस्वो सत्यनादी, सत्यघोष रुद्राय ।

रतन दरखी तहनु मन चलियु, मरीने दुर्गति जाय । मा० ॥६॥

लब्धिदत्त मायाए नडियो, पडियो समुद्र मझार ।

मुख माखणीयो वहने मरियो, पडियो त नरक दुवार । मा० ॥७॥

इद्रे तो सिंहासन बापी, सभूये माया राखी ।

नेमीसर तो माया मेली, मुक्तिमा थया नाखी । मा० ॥८॥

मन वचन कायाए माया, मेली मनमा तार ।

वन्य धन्य तेइ मुनीश्वर जेहना, तीन हान गुन गाय ।

माया० ॥९॥

एहनु जाणी ने मनि प्राणी, माया मूढे रूखी ।

समयमुन्दर कह सार छे जगमा, धर्म रक्षु सगरी ।

श्रीसामी रे० ॥१०॥

## चयररामी सज्जाग

सांभलचो तुम अरुवत रातो, चयररुमर मुनिवस्ती  
र ॥१०॥

परमहिनाना गुप्फोलीमां, जाये केर्ती करता र ।  
तीन परमना मायरी मृगवी अल्ल अग्यार नजता र । सां० ॥१॥

राचमभाभां नदी धोभाणा, मानगुवडली दस्ती र ।  
गुरुण दीधो जोधो मृदपत्ति, लीधो मय उरवी र । मा० ॥२॥

गुरु सपात विहार कर मुनि, पाले गुद जातार रे । बाल-  
पगारी महाउपयोगी, मयगी गिरदार र । सां० ॥३॥

सोलापाक ने घरर निआ, दोष टाम नरि लीधी रे ।  
गगनगामिनी वैक्रिय लब्धि, दर नेहने मीधी र ।  
माभलजो० ॥४॥

दश पूरा भणीया न मुनिर, भद्रगुप्तगुरुपासे र ।  
धीराभयप्रमुख जे लब्धि, परगट जास मकाशे रे ।  
सा० ॥५॥

फोडी मॅकडा घनने सयय, कन्या रुक्मिणी नामे रे ।  
शेठ धनावह दिय पण न लिण, वघत गुमपरिणाम र ।  
साम० ॥६॥

दइ उपदेश ने रुक्मिणी नारी, तारी दीक्षा आपी रे। युग-  
प्रधान जे विचरे जगमा, सरजतेजप्रतापी रे। सा० ॥७॥

समकित शीयल तुम्ह घरी ररमा, मोहसागर कर्यो  
छोटो रे। ते केम बूडे नारीनदीमा, एतो मुनिर महोटो  
रे। सा० ॥८॥

जेणे दुर्भिक्षे सब लइ ने, भूम्यो नगर मुकाल रे। शामन  
शोभा उन्नति कारण, पुष्पपत्र विशाल रे। सा० ॥९॥

मोदरायने पण प्रतिजोध्यो, बीधो शासनरागी रे।  
शामन शोभा जययताका, अनरजइने लागी रे। सा० ॥१०॥

त्रिमर्यो शुठ गाठिजो फान, आश्रयकल जाण्यो रे।  
मिसरे नही पण एह विमरीयो, जायु अल्प पिछान्यो रे।  
सा० ॥११॥

लास सोनैवे हाडी चढे जेने, बीजे दिन मुकाल रे। इम  
समलानी वज्रसेनने, आणी अणमण-काल रे। सा० ॥१२॥

स्थानर्त गिरि जइ अगमण कीधु, सोदम हरि तिहा जाव  
रे। प्रदक्षिणा पर्यंतने दइने, मुनिर वन्दे भावे रे।  
सा० ॥१३॥

धन सिंहगिरि सूरि उत्तम, तेहना ए पटधारी रे। पद्य  
विजय रह मुनिपदपङ्कज, नित नभीरे नरनारी रे। सा० ॥१४॥

## नन्दिनेण मुनिमग्नाय

ढाल पहत्ती—

राजगृही नगरीनो तामी,  
धेनिकनो सुत सुखिलामी हो, मुनिर वैसागी ।

तन्दीपेण दग्ना मुगी नीनो,  
ना ना कहतां यत रीनो हो, मुनिर० ॥१॥

धारिप्र नित्य चोसु पाल,  
संजम-रमणीय महाल हो, मुनिर० ।

एक दिन जिनपाय लागी,  
गोचरीनी आरा मागी हो, मुनिर० ॥२॥

पांगरियो मुनि वेसा,  
धुया षदनी कर्म हरेसा हो, मुनिर० ।

उच नीच मध्यम उल यहोटा,  
अटतो सञ्जमरम लोटा हो, मुनिर० ॥३॥

एऊ उचो धरल घर दखी,  
मुनिर पठो पुद्गवेषी हो, मुनिर० ।

तिहा जइ दीधो धर्मलाभ,  
वेष्या कहे यहा अधलाभ हो, मुनिर० ॥४॥

मुनि मन अभिमान आणी,  
खड करी नारयो तरणु ताणी हो, मुनिवर० ।

सोवन दृष्टि हुड मार कोटी,  
वेदया वनिता कह कर जोटी हो, मुनिवर० ॥५॥

### ढाल दूसरी


ये तो उभा रहीने अरज, अमारी सामलो माधुजी ।  
ये तो ग्होटा कुलना जाणी, मूरी घो आमलो साधुनी ॥१॥

ये तो लइ जाजो सोवन रोड, गाढा उटे भरी साधुजी,  
धा रे कैसरीय कसरीने कपडे, मोही रही साधु जी ।

धारी मूर्ति मोहनगारी, जगतमा सोही रही सा०,  
धारी आखडीयारो नीको, पाणी लागणो सा० ॥२॥

धारो नयलो चोवन वेप, त्रिरहदुखभाजणो सा०,  
ए तो जत्र जटित रुपाट, कुची मे कर गही सा० ।

मुनि बलमा लागो जाम, के आडी उभी रही सा०,  
मे तो जोछी खीनी जात, मति कही पाछली सा०,  
ये तो सुगुणा चतुर मुजाण, विचारो आगली । सा०-॥३॥

ये तो  ह पण मुदरी । सा०,  
ये तो वेप, घरेणा जरतरी । सा० ।

मणि मुक्ताफल मुगट, गिराने हमना । मा०,  
 अमे सजीव सोल श्रमगार, क पिउरम जद्धना । सा० ॥४॥  
 जे होय चतुर सुपाण के, कर्दीय व पूरगे मा०,  
 एहयो अरमर साहिय, रक्षीय न श्रायग सा० ।  
 इम चिते चित्त मझार, नन्दीगेण राहलो मा०,  
 रहना गणिकाने धाम क, यइने नाहलो मा० ॥५॥

### ढाल तीमरी—

भोगरम उदय तस आच्यो,  
 शासन दरीय सभलाच्यो, हो मुनिर वरागी ।

रहो नार राम तस जागस,  
 वग मेच्यो एरुगपासे, हो मुनिर० ॥१॥

दश नर प्रतिदिन प्रतिपूजे,  
 दिन एक मूरख ननि पूजे, हो मुनि० ।

पूझता हुई बहु बेला,  
 भोजन नी थइ जवला हो मुनिर० ॥२॥

कह बेइया उठो स्वामी,  
 ण्ह दशमी न पूजे रामी, हो मुनिर० ।

बेइया वनिता कह धमममती,  
 आज दशमा तुम ही ज हसती, हो मुनि० ॥३॥

एह वयण सुणीने चाल्यो,  
फरी सनमसु मन वाल्यो, हो मुनि० ।

फरी सजम लियो उछासे,  
वेप लेह गयो जिनपासे, हो मुनि० ॥४॥

चारित्र नित चोगु पाली,  
देवलोक गयो दड ताली, हो मुनि० ।

तप जप सयम किरिया साधी,  
घणा जीवने प्रतिबोधी, हो मुनिर० ॥५॥

जयत्रिनयगुरुमीम,  
तस हरख नमे निशदीस, हो मुनि० ।

मेरनिजय इम बोले,  
एहना गुरुने कुण तोले, हो मुनिर० ॥६॥

### प्रमन्नचन्द्र मुनिसंज्ञाय

प्रणमु तुमारा पाय प्रमचचन्द प्रणमु तुमारा रे पाय । आ० ।

राज छोडी रलीयामणु रे, जाणी अधिर समार ।

चैरागे मन वालीयु रे, लीघो सजममार प्रमच० ॥१॥

शमसाने काउस्सग रही र, पग उपर पग चढाय ।

वाहु नेउ उचा करी रे, धरजसामी दृष्टि लगाय प्रस० ॥२॥

दुर्मुखदूत यवन मुणी र, कोप चढ्यो तनराल ।  
 मनसु सग्राम माठीयो र, जीय पड्यो जनाल । प्र० ॥३॥  
 श्रेणिक प्रश्न पूछ तिहा र, एहनी कृण गति आय ।  
 भगरन्त कह हमणा चर तो, मातमी नरक जाय । प्र० ॥४॥  
 क्षण एक अन्तरे पछियु रे, सर्वायमिद रिमान ।  
 पाजी दयनी दुन्दुभिर, मुनि पाम्या करलजान । प्र० ॥५॥  
 प्रसन्नचन्द मुनि मुगने गया र, श्री महावीरना शिष्य ।  
 रूपविनय कह धन्य धन्य छ एहने, मै तो नाया  
 यत्र प्रत्यक्ष प्रसन्न० ॥६॥

### श्री दशवैकालिक सञ्ज्ञाय

धम्मो मङ्गल महिमानिलो, धर्मममो नही कोय ।  
 धर्मे सानिद दवता, धम गियमुख होय । धम्मो० ॥१॥  
 जीवदया नित पालिय, सजम मत्तरप्रकार ।  
 बारे भेद तप तपो, धर्मतणो ए सार । धम्मो० ॥२॥  
 जिम तरुवरने फूलड, भमरो रस ले जाय ।  
 तिम सतोपे आत्मा, जिम फूल पीडा न धाय । धम्मो० ॥३॥  
 इण विधि विचरे गोचरी, लेवे शुद्ध आहार ।  
 ऊच नीच मध्यम डुले, धन धन ते अणगार । धम्मो० ॥४॥



मुनिवर मधुसर सम मद्धा, नहीं निश्रा नहीं दोष ।  
 लाधे भाडो देहने, जणलाधे सन्तोष । धम्मो० ॥५॥  
 अध्ययन पहिले दुमपुण्फे, मखरा अर्थ विचार ।  
 पुण्यकलशशिष्य जेतसी, धरमे जय जयकार । धम्मो० ॥६॥

## पञ्चमी की सज्ज्ञाय

### ढाल पहली

श्री वासुपूज्यजिनेश्वरवयणथी र, रूपकुम्भ कञ्चन कुम्भ  
 मुनि दोष । रोहिणीमन्दिरसुन्दर जागिया रे, नमी भव पूछे  
 दम्पती सोय, चउनाणी त्रयणे र दम्पती मोहिया रे ॥१॥

राजा राणी निज सुत आठनो र, तप फल निजभव  
 धारी सम्बन्ध । विनय करी पूछे महाराजने रे, चार सुताना  
 भवप्रयन्त्र । चउ० ॥२॥

रूपवती शीलवती ने गुणवती रे, सरस्वती ज्ञानकला  
 भण्डार । जन्मथी रोग शोग दीठो नहीं रे, कुण पुण्ये लीघो  
 एह अवतार । चउ० ॥३॥

### ढाल दूसरी

गुरु कह बैताढ्य गिग्विरू रे पुत्री निद्यापरी चार ।  
 निज आयु ज्ञानीते पृच्छियो रे, करवा सफल अवतार, अव-  
 धारो अम वीनती रे ॥१॥

गुरु रुह ज्ञान उपयोगवी रे, एकदिससनु जाय । एहना  
उचन श्रवण सुण्या रे, मनमा त्रिमामण थाय । अ० ॥२॥

योढामा कार्य धमना रे, क्रिम रुखिरे मुनिरान । गुरु  
रुह जोग असग्य छे रे, ज्ञानपचमी तुन जान । अ० ॥३॥

क्षण आराधे मवि अघ टले रे, दूर परिणामे माध्य ।  
रुल्याणक नर निनतणा र, पचमीदिससे आराय । अ० ॥४॥

### ढाल तीसरी

चैत्रवदि पचमी दिने, सुण प्राणिजी र ।

चरिया चद्रप्रभ स्वाम, लह सुखठाम । सुण प्रा० । आ० ।

अजित सभर अनतजी, सुण प्राणिजी र, पचमी शुदि  
शियपाम शुभपरिणाम । सुण० ॥१॥

रैशाखसुदि पचमी दिने, सुण०, सजम लिने कुगुनाथ  
पहुनर साध, सुण० । जेठसुदि पचमीदिने, सुण०, सुगति  
पाम्या वमनाथ, शिवपुरीमाथ, सुण प्राणि० ॥२॥

श्रावण सुदि पचमी दिने सुण०, जन्म्या नेगि सुरग  
अतिउछरग, सु० । मगमरादि पचमी दिने, सु०, सुविधि  
जन्म शुभसग पुण्य अभग । सु० ॥३॥

भातिकरादि पचमी तिथि सु०, सभरकलनान करो  
बहुमान, सु० । दशहेरे नेउजिणदना सु०, पचमीदिनना  
कल्याण सुखना निधान । सुण प्राणिनी र ॥४॥

## ढाल चोथी

हार मार ज्ञानीगुरुना प्रयग सुणी हितमार्ग जो,  
चार विद्यापरी पचमी विधिमु जादरे र लो । आ । ॥१॥

हार मारे शासनद्वय पञ्चज्ञानमनोहार जो,  
दाली र जाग्रातना देवउदन मदा रे लो ॥२॥

हार मारे तप पूरणथी उजमणानो भाव जो,  
एहव निद्युत् योगे मुस्पदवी बर्या रे लो ॥३॥

हार मारे धर्म मनोरथ जालम तजता होय जो,  
वन्य ते जातम अगलनी कारज कुर्या रे लो ॥४॥

हा र मारे देवकी तुम कूखे लियो जवतार जो,  
भाबल रोहिणी ज्ञान जाराधन फल घणा र लो ॥५॥

हार मार चारे चतुरा प्रिय विवरु विचार जो,  
गुण कृता आलखिये तुम पुत्री तणार लो ॥६॥

## ढाल पाचमी

ज्ञानीना प्रयणथी चारो बहनी,  
जातिस्मरण पामी रे । ज्ञानी गुणप्रता ।

रीजा भवमा धारण कीधी,  
सीध्या मनना कामो र । ज्ञानी गुणप्रता ॥१॥

श्री जिनमदिर पच मनोहर,  
पचयर्ण जिनपडिमा रे । ज्ञानी० ।

जिनवर आगमना अनुसार,  
करिये उजमणानो महिमा रे । ज्ञानी० ॥२॥

पचमी आराधनधी पचम,  
केवलघ्नान त थाय रे । ज्ञानी० ।

निजयलक्ष्मीधरि अनुभव नाणे,  
सथ सफल सुखदाय रे । ज्ञानी० ॥३॥

### नागिला की सञ्ज्ञाय

भवदेव भाइ धरे आविया रे,  
प्रतिगोयवा मुनिराज रे ।  
हाथमा त दीधु घृतनु पातरु रे,  
भाइ मने आषरो बलाव रे,  
नवी रे पण्णी ते गोरी नागिला रे ॥१॥

इम करी गुरुजी पासे आगिया रे,  
गुरुजी पूले दीधानो काइ भाव रे ।  
लाजे नागरो तेणे ननि कर्यो रे,  
दीक्षा लीधी भाइनी पास रे, नवी रे० ॥२॥

घार वरस सजममा रखा रे,  
हैंये धरता नागिलानु ध्यान रे ।  
हु मूरख में जा शु कर्यु रे,  
नागिला तजी जीवनप्राण रे, नवी रे० ॥३॥

मात पिता एने नही रे,  
एकली अघला नार रे ।  
तास उपर करुणा करी रे,  
हवे तेनी करवी समाल रे, नवी रे० ॥४॥

शशिरयणी भृगलोयणी रे,  
चलउलती मेली घरनी नार रे ।  
सोल वरसनी मा सुदरी रे,  
सुदरतनु सुकृमार रे, नवी रे० ॥५॥

उमर पाकेल ग्रत जे कर रे,  
हरखे ग्रही करमाहि रे ।  
पाम्या ते शुभमति जेहनी रे,  
हु तो पढीयो दुख अचाल रे, नवी रे० ॥६॥

भवदव भागे चित्ते आपियो रे,  
अणओलखी पूछे घरनी नार रे ।  
कोइए दीठी ते गोसी नागिला रे,  
अमे लीये ग्रत छोडणहार रे, नवी रे० ॥७॥

नारी कह सुणो साधुजी रे,  
बम्बो न लीए कोइ जाहार रे ।

हस्ती चढीने खर पर कोण चढे रे,  
तमे छो जाइ जानना भडार रे, नवी रे० ॥८॥

एढकीए बम्बो जाहार जे करे रे,  
ते नवि मानव आचार रे,

जे तमे घर घरणी तज्या रे,  
हवे तनी करो शी सभाल रे, नरी रे० ॥९॥

धन्य बाहुवली शालिभद्रजी रे,  
वन्य धन्य मेघकुमार रे ।

स्त्री तजीने सजम जिणे लियो रे,  
धन्य वन्य तेह अणगार रे, नरी रे० ॥१०॥

देवफी मुलसा सुत सागरूर,  
नेमतणी सुणी वाणि रे ।

वत्तीम वत्तीस प्रिया तणा र,  
परिहर्या भोगमिलास र, नरी रे० ॥११॥

अबुशयश गज आणीयो र,  
राजुलमति रहनेम र ।

चचन जकुये तिहा वारियो र,  
जागिला भवदर तेम र, नरी र० ॥१२॥

जारी न नरफनी खाण छे रे,  
नरकनी देवणहार र ।

ते तमे तजो मुनिराजजी रे,  
जिम पामो भगजल पार रे, नरी र० ॥१३॥

जागिलाए नाथने नमजाणियार,  
पछी लीघो सजम भार रे ।

रुर्म खपायी मुगत गया रे,  
हुमा हुमा शिव भरतार र, नरी रे० ॥१४॥

पाचमे भवे जनु स्वामी जी रे,  
परण्या पदमिणी नार रे ।

नौड नगणु कचन लागिया र,  
रुपखत्र माहि अधिकार रे, नरी रे० ॥१५॥

प्रभर नाथ चोर पांचसे र,  
पदमणी जाठे नार र ।

कर्म खपायी मुगति गया रे,  
समय सुदर मुखरार रे, नरी र० ॥१६॥

## सामायिक के बत्तीस दोष की सज्जाय

### चोपाई—

शुभ गुरु चरणे नामी सीस, मामायिकना दोष बत्तीस ।  
कहीसु त्या मना दश दोष, दुश्मन देखी धरतो सेष ॥१॥

सामायिक अग्निवेके कर, अर्ब विचार न हट्टे धरे । मन  
उठेग हट्टे यश घणो, न कर निनय वडेरा तणो ॥२॥

भय आणे चिते व्यापार, फल सशय नियाणा सार । हवे  
वचनना दोष निगार, कुवचन बोले करे तूकार ॥३॥

लड कुची जा घर उघाड, मुखे लवी करतो वढगाड ।  
आयो आयो बोले गाल, मोह करी झुलरावे बाल ॥४॥

करे रिकुधाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना चार ।  
काया केरा दूषण वार, चपलासन जीवे दिशि चार ॥५॥

सानघ काम कर सघात, आलस मोडे उचे हाथ । पग  
लावे वेसे अग्निनीत, ओठिगण ले थाभो भीत ॥६॥

मेल उतार स्वर्ज खणाय, पग उपर चढावे पाय । अति उघाड  
मेले जग, दाके तेम वली जग उपाग ॥७॥

निद्राए रस फल निर्गमे, करहा कटक तरुये भमे । ए बत्तीसे  
दोष निगार, सामायिक करजो नर नार ॥८॥

समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर झुओ कवली ।  
श्रीगुभवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥९॥



## मन भमरा की सज्जाय

भूल्यो मन भमरा तू क्या भम्यो, भम्यो दिखस ने रात ।  
 मायानो माध्यो प्राणियो, भमे परिमल जात ॥ भूल्यो० ॥१॥  
 दुम्भ काचो रे काया कारमी, तेनो करो रे जतन ।  
 निणमता धार लागे नहीं, निर्मल राखो र मन ॥ भू० ॥२॥  
 केना छोरु ने कना वाछरु, कना माय ने वाप ।  
 अन्त समय जासी एम्हो, साथ पुण्य ने पाप ॥ भू० ॥३॥  
 आशा तो दुगर जेगडी, मरबु पगलार डेट ।  
 धन सची सची काइ करो, करो दवनी बैठ ॥ भू० ॥४॥  
 धन्यो करी जन जोडियो, लाखा उपर कोड ।  
 मरतानी बेला मानरी, लीधो रुन्दोरो छोड ॥ भूल्यो० ॥५॥  
 मूरख कह धन माहरो, धोरु जन न ग्वाय ।  
 बल्ल निना जइ पोदनु, लखपति लाकडा माय ॥ भू० ॥६॥  
 भयसागर दु खजले भर्यो, तरबो छे रे तेह ।  
 वचमा मय सनलो थयो, कर्म वायरो ने मेह ॥ भू० ॥७॥  
 लखपति उत्रपति सब गया, गया लाग बं लाख ।  
 गर्न करी गोखे बेसता, गर्न थया बली राख ॥ भू० ॥८॥  
 धमण धखन्ती रही गद, वृक्ष गई लाल अझार ।  
 एरण को ठपरो मटयो, उठ चलयो र लुझार ॥ भू० ॥९॥

उठ मारग चालता, जातु पले र पार ।

जागल हाट न धाणीयो, अचल लेजो रे सार ॥ भू० ॥१०॥

परदंगी परदशमे, कुमसु करो रे सनेह ।

जाया कागल उठ चल्यो, न गणे आधी ने मेह ॥ भू० ॥११॥

केइ चाट्या ने चालग्र, रेइ चालणहार ।

रुइ गठा र जुडा बापडा, जाये नरकमहार ॥ भू० ॥१२॥

जिणघर नोयत बाजती, धाता छत्तीम राग ।

ग्वण्डर धइ ग्वाली पड्या, बेठण लाग्ता छे काग ॥ भू० ॥१३॥

भमरो जायो र कमलमा, लया कमलनु नूर ।

कमलनी बाडाए माह रसो, निम जायमते सर ॥ भू० ॥१४॥

सद्गुरु कह उस्तु गहोरिय, जे कोइ आवे र साथ ।

जापणो लान उगारिये, लेखु साहिब हाथ ॥ भू० ॥१५॥



## ५ पद-संग्रह

### लघुता भावना पद

लघुता मेरे मन मानी, लही गुल्मम ज्ञान निशानी ।  
मद आठ जिन्होने बार, ते दुर्गति गये निचार ।  
दखो जगत में शार्णी, दूख लहत अधिक अभिमानी ॥  
लघुता मेर० ॥१॥

शुद्धी सरज गडे कहावे, ते राहु के यश आव ।  
तागगण लघुताधारी, स्वर्भानुभीति निगारी । लघुता० ॥२॥  
छोटी अति चोचनगन्धी, लह पद्मसस्वाद सुगन्धि ।  
करटी मोटाई धारे, त ऊर शीश निन डार ॥ लघु० ॥३॥  
जय बालचन्द होइ जाये, तन सहु जन दग्गण राव ।  
पूनम दिन गडा कहावे, तन धीणकला होइ जाय । लघु० ॥४॥  
गुरुनाइ मनमें बढ, नृप शरण नामिका छेद ।  
अन्नमाह लघु कहावे, त मारण चरण पूजाव । लघु० ॥५॥  
शिशु राजघाममें जाये, मखि हिल मिल गोद खिलाये ।  
बडा होय जाण नबिपाव, जावेतो सीम कटावे । लघु० ॥६॥  
अन्तर मदभाव रहावे, तन त्रिभुवननाथ रुदाव ।  
इह चिदानन्द यह गावे, रहणी विरला कोउ पावे । लघु० ॥७॥

## रहेणी कहेणी स्वरूप पद

कथनी कवे सन कोइ, रहणी अति दुर्लभ होइ ।  
 गुरु रामको नाम उखाणे, नवि परमारथ तस जाणे ।  
 या विध भणी वेद सुणावे, पण अरुल कला नवि पावे । क० ॥१॥  
 छत्तीस प्रकार श्मोइ, मुख गिणता वृत्ति न होइ ।  
 शिगु नाम नही तस लेव, रस स्वादत मुख अति लेवे । क० ॥२॥  
 घन्दी जन कडखा गाव, गुणी छरा सीस कटावे ।  
 जन रुण्ड मुण्डता भासे, सहु आगल चारण नाशे । क० ॥३॥  
 कहणी तो जगत मजूरी, रहणी है वन्दी हजूरी ।  
 कथनी सारर सम मीठी, रहणी अति लागे अनीठी । क० ॥४॥  
 जब रहणीका घर पाव, तन कथनी गिनती जावे ।  
 चिदानन्द हम जोइ, रहणी की सेज रहे सोइ । कथ० ॥५॥

## भिन्न भिन्न मत स्वरूप पद

मारग साचा को न बतावे ।

जामु जाय पूछिये त तो, अपनी अपनी गावे । मारग० ।  
 मतवारा मतपाद वाद घर, थापत निन मत नीका ।  
 स्वादवाद अनुभव विन ठाका, कथन लगत मोह फीका ।  
 मारग साचा० ॥१॥

मत वेदात ब्रह्मपद घ्यावत, निश्चय पख उर घारी ।

मीमांसक तो कम वदे ते, उदय भाग अनुमारी ।

भारग साचा० ॥२॥

कहत बौद्ध ते बुद्ध देव भम, धुणिक रूप दरसाव ।

नैयायिक नयनाद ग्रही ते, करता कोउ ठेरावे ।

भारग साचा० ॥३॥

चारनाक निज मन कल्पना, शून्यवाद कोउ ठाणे ।

तिनमें भये अनेक भेद ते, अपनी अपनी ताणे ।

भारग साचा० ॥४॥

नय सरवग साग्ना जामें, ते सरवग कहावे ।

चिदानंद ऐमा जिन भारग, खोजी होय मो पावे ।

भारग साचा० ॥५॥

जैनस्वरूप पद

( राग धन्याश्री )

परमगुरु जैन कहो क्यु होवे,

गुरुउपदेश विना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे ।

परमगुरु० ॥१॥

कहत कृपानिधि शमरस ह्रीले, कर्म मेल जे धोत्रे ।

बहुलपापमल अग न धोव, शुद्ध रूप निज जोवे ।

परमगुरु० ॥२॥

स्याद्वाद पूरन जो जाणै, नयगांभित जम गाचा ।

गुण पयाय द्रव्य जो दूझे, सोइ जैन है माचा । परमगुरु० ॥३॥

क्रियामूढमति जो ज्ञानी, चालत चाल अपूर्ती ।

जैन दशा उनमें ही नाहीं, कहूँ सो नर ही ब्रूती । परम० ॥४॥

परपरणति अपनी रर माने, मिरियागरे घड़िलो ।

उनहु जैन रहो रहु रहिय, सो भूखमें पहिलो ।

परमगुरु० ॥५॥

ज्ञान भावज्ञान मगमाही, शिख माधन मदहिय ।

नाम भेषसे काम न मीझ, भार उदास रहिय । परमगुरु० ॥६॥

ज्ञान मरुलनयमाधन साधो, क्रिया जानसी दामी ।

क्रिया करत धरत है ममता, याही गले में कामी ।

परमगुरु० ॥७॥

क्रिया बिना ज्ञान नहीं रहहु, क्रिया ज्ञान बिना नाही ।

क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहत है,

ज्या जलरस जलमाहि । परमगुरु० ॥८॥

क्रिया-मगनता बाहिर दीसत, ज्ञानशक्ति जम भांचे ।

सद्गुरु शीख सुने नहा कहहु, सो जन जनतें लांचे ।

परमगुरु० ॥९॥

तत्त्वबुद्धि चिनसी परिणति है, मरुलमयसी कुची ।

जग जमवाद बढ उन ही सो, जैन दशा जम उची ।

परमगुरु० ॥१०॥

# चेतन उपदेश पद

( राग धन्या ग्री )

चेतन जो तू ज्ञान अभ्यासी, आप ही गावे आप ही छोडे,  
निनमति शक्ति विशासी । चेतन० ॥१॥

जो तू आप स्वभावे खेले, आशा छोड़ी उग्रासी ।  
सुर-नर-किन्नर-नायकसपत्ति, तो तुज घरनी दासी ।  
चेतन० ॥२॥

मोहचोर जनगुण धन लूट, दत्त जास गन फासी ।  
आगा छोड उदाम रह जो, मो उत्तम सन्यासी । चेतन० ॥३॥  
जोग लइ पर आश धरत है, याही जगमें हामी ।

तू जाने मैं गुणतु सचु, गुण तो जाव नाशी । चेतन० ॥४॥  
पुद्गल की तू आश धरत है, सो तो मर ही निनाशी ।  
तू तो भिन्न रूप है उन से, चिदानन्द जविनाशी । चेतन० ॥५॥

धन खरचे नर गहुत गुमाने, भरत लेव फासी ।  
तो भी दु ख जो अत न आव, जो आशा नहीं घासी । चेतन० ॥६॥  
सुख जल विषमविषय तप्या, होत मूढमति प्यासी ।

विभ्रम-भूमि भई पर जासी, तू तो सहज गिलासी ।  
चेतन० ॥७॥

याको पिता मोह दु ख आता, होत विषयरति भासी ।  
भय सुत भरता जगिस्त पानी, मिथ्यामति है हामी ।

चेतन० ॥८॥

आशा छोड़ रह जो जोगी, मो होये शिखासी ।

उनको मुजम बखाने ज्ञाता, अतरदृष्टि प्रकासी । चेतन० ॥९॥

### उपशम पर पद

( राग धन्याश्री )

जग लगे उपशम नाही रति, तज लगे जोग धर क्या होवे,  
नाम बराये जति । जग लगे० ॥१॥

रूपट कर तू बहुरिज भाते, क्रोधे जले छति । ताको  
फल तू क्या पायेगो, ग्यान जिना नाही बति । जग लगे० ॥२॥

भूख तरस और धूप सहतु है, कह तू त्रध्वप्रती । कपट  
केलने माया मड, मनमें भर रती । जग लगे० ॥३॥

भस्म लगावत ठाडो रहवत, कहत है हू बसती । जग मग  
जडी नूटी भेषन, लोभमग मूढमति । जग लगे० ॥४॥

पडे बडे बहु पूरगारी, जिनम शक्ति हता । सो भी  
उपशम छोडी रिचार, पाये नरक गति । जग लगे० ॥५॥

कोउ गृहस्थ कोउ वैरागी, जोगी जगत जति, अध्यात्म  
भावे उदासी रहगो, पावेगो तरही मुगति । जग लगे० ॥६॥

श्री नयविजय विबुधवर राचे, जाने जगरो रति ।

श्री जसविजय उवज्ज्ञापमाये, हमप्रभु सुख सतति ।

जबलगे० ॥७॥



## शरीररथपर पद

( राग आशावरी )

पांचो घोडे एक रथ जूता, साहिब उसका भीतर सूता ।  
खेडू उसका मदमत्तगारा, घोडेडु दोरागनहारा । पांचो घोडे० ॥१॥

घोडे झूठे जोर ओर चाहे, रथकु फिरि फिरि उतर गाह ।  
विपम पन्थ चिहु ओर अधियारा, तो भी न जागे साहिब प्यारा ।  
पांचो घो० ॥२॥

खेडू रथकु दूर दोरावे, बंखवर साहिब दुख पावे । रथ  
जङ्गलमा जाय अमृते, साहिब सोचा कहुन न बूझे । पांचो  
घोडे० ॥३॥

चोर ठगोरे बहा मली जाये, दोनुकु मद प्याला पाये ।  
रथ जङ्गलमें जीरण कीना, मालगनीका उदारी लीना ।  
पांचो० ॥४॥

धनी जग्या तब खेडू धाध्या, रामी पराना ले सिर सा  
ध्या । चोर भगे रथ मारग लाया, अपना राज विनय जित  
पाया । पांचो घोडे० ॥५॥

## कायामन्दिर पर पद

( राग ठुमरी )

मन्दिर एक बनाया हमने । मन्दिर० ॥१॥

निम मन्दिरक दृष्ट दरवाजा, एक पुन्दरी माया रे ।  
नानो परखी जाके अन्दर, राज कर चिन लाया र । मन्दिर  
एक० ॥१॥

हाड माम जाके नहीं दीसे, रूप रङ्ग नहीं जाया र ।  
पह न दीसे कैसे पिछानु, परम भोगी भाया र । मन्दिर  
एक० ॥२॥

जातो जातो नहीं मोह दगे, नहीं मोह रूप उताव रे ।  
सन जग खाया तो पण भूखो, वृत्ति कहीं न पावे र ।  
मन्दिर एक० ॥३॥

जालम परखी तालम मन्दिर, पाठी कोन उताने रे ।  
उस परखी सो नो कोइ जाने, मो ज्ञानानन्दनिधि पाने र ।  
मन्दिर एक० ॥४॥

## उपदेश पद

( काम छे दुष्ट प्रकारी० यह राग )

मस्त भयो तन धनमें । मुमाफिर मस्त भयो तन धन  
में । उठ जाना एक छिनमें । मुमाफर० । जा० ॥

इम तन डेरा छोड चलेगा, हसा परभववनमें । मुमा० ।  
 मट्टीसा मठ फुट दियेगा, मनसी रहगी मनमें ॥ मु० ॥१॥  
 जम्हाड फरहाड मूछ मरोडत, ताम पडावत जनमें । मु० ।  
 पर्णकुटी जालवता आखर, गिर पडेगी परनमें । मु० ॥२॥  
 तन धन वैभय सुपना जैसा, सध्या रग गगन में । मु० ।  
 पलकी खबर नहीं प्राणीने, रात्र कर होय छिन में ॥ मु० ॥३॥  
 क्या अभिमान कर मन मरुट, साकलचन्द सज्जन में ।  
 तन धन अर्पण कर परमारध, मन धर प्रभु के भजन में ॥  
 मुमाकर० ॥४॥

## समय की दुर्लभता पर पद

( राग-नाथ कैसे गन को रन्ध० )

रदी नहीं समय गयो फरि मलये,  
 भय भ्रमण रय शु रलये, कदी नहीं० आ० ॥  
 जा राया छे राचनो कृपो, तटक दइने तटक ।  
 पाणीना परपोटा मरखी, फटक दइने फटक । कदी० ॥१॥  
 धूर कषाय मूरतागरी, पाप रूपमें पटके ।  
 आ भयमागर पार उत्तरता, जघनच जाता जटक ॥  
 कदी नहीं० ॥२॥

मारु तारु करी शु मोह पामे, धणमा मरी जनु मटके ।  
 चर्म चुय शु चतुर बनीने, चतुरा केर नटके ॥  
 कदी नहीं० ॥३॥

आ मानवतन चितामणि सम, त कयम व्यर्थ गुमावे ।  
 राल अचानक जावी लेंगे, तो पछी नहीं काइ फावे ॥  
 रूनी नहीं० ॥४॥

ममकित सुन्दर धारी धरामा, र्मनु माधन फरजे ।  
 जिनपर नाम जपी ममतामा, महन गुणे तू ठरजे ॥  
 कदी नहीं० ॥५॥

करी निर्जरा तपधी सारी, कम जालने हरने ।  
 आश्रय दूर करी अनुरधी, शिरपद सहने ररजे ॥  
 कदी नहीं० ॥६॥

### चेतन उपदेश पद

( गाफिल तू शोच दिल में )

चेतन तू चेत जलदी, कर ले सुगार अपना ।  
 दिसता नहीं है तुज को, इस जीदगी का घटना ॥  
 चेतन तू० ॥१॥

माता पिता को भाइ, निनस्गाथ के हैं सारे ।  
 छिनमें मिठोड तुजको, होत है सर्व न्यार । चेतन० ॥२॥

लक्ष्मी है बीजघपला, यौवन भी दिन चारा ।  
 क्षणनाशी जिदगानी, रर देह का सुधारा । चेतन० ॥३॥  
 सुदर महल गाडी, गाडी तुरग हाथी ।  
 आखिर रे छोड जाना, नहीं होय कोई साथी । चेतन० ॥४॥  
 मोटर घोडकी गाडी, लाडी बहोत प्यारी ।  
 सत्र शौक की ये चीजे, छिनमें मिनाशहारी । चे० ॥५॥  
 फलवन्त चक्रवर्ती, राने प्रसिद्ध नामी ।  
 सब राज पाट छोडी, परलोक पथ गामी । चे० ॥६॥  
 दुनिया का मोह छोडो, लेखो प्रभु का शरणा ।  
 पिनशे ज्यु कर्म फदा, पावो सौभाग्य शरणा ।  
 चेतन तू चेत० ॥७॥

## उपदेश पद

( देवी भर्तृहरि की )

भार नहीं है ससारमां, फरो मनमा विचार जी ।  
 नेत्र उचाडी जोइये, करिये आत्मसुधार जी ।  
 सार नहीं है० ॥१॥  
 जाग जाग भवि प्राणिया, आयु झटपट जाय जी ।  
 चखत मये फरी नाशे, कारज कइय न याय जी ।  
 सार नहीं है० ॥२॥

दण्ड दृष्टान्ते नोदिलो, पामी नर अरतार जी ।  
 दण्ड गुरु जोग पामी ने, करि जन्मसुखार जी ।

सार नहीं है० ॥३॥

मार मार करी जीव तू, परियो सफल टाग जी ।  
 जाग कली नहीं क्याइय, पाम्यो दुखनी राण नी ।

सार नहीं है० ॥४॥

मात पिता मुत राघवा, चढती गमे आव पाग जी ।  
 पडती गमे जोइ नहि रह, दसो स्वाय विनाम जी ।

सार नहीं है० ॥५॥

रागण मरग्यो र राजगी, लखापति जे रहाय जी ।  
 तीन चगत में गावतो, मन अभिमान धराय जी ।

सार नहीं है० ॥६॥

अन्त समये मयो लखलो, नहीं गपु जोइ तम साथ जी ।  
 एम जाणी धम सेरीये, रहये परमन साथ जी ।

सार नहीं है० ॥७॥

मोहनिद्रावी जागीने, करो धमसु प्रेम जी ।  
 विजयसौभाग्यनी जाणीने, धारो मन धरि प्रेम जी ।

सार नहीं है० ॥८॥

आत्म उपदेश पद

( अथ एमा ज्ञान विचारी—यह दखी )

अथ आत्मरूप पिछानो, जामे तीनजगतमुख मानो ।

अथ आत्म० ॥

पुद्गल के सग पडक चेतन, दुख अनन्ते पाया ।

तष्णा पिशाचिन के बन्ध पडके, सार बार अड्डाया ।

अथ आत्म० ॥१॥

सुमति मुहागण छोडके प्यार, कुमतिसे प्रेम लगाया ।

दास बना कर अपना तुजरो, बहुत ही नाच नचाया ।

अथ आत्म० ॥२॥

परवशता दु ख है अतिभारी, चेतन उमरो निरासे ।

दीपकरपश दखो पतझा, छिनम प्राण रिडारो । अ० ॥३॥

आश्वापाशमे जरुडा चेतन, मवदिशामे फिरायो ।

काजसिद्धि कहु नार्ही पावत, निष्फल जन्म गुमायो ।

अथ आत्म० ॥४॥

शुद्धस्वरूपी तू है सदा स, गुण अनन्ते धारी ।

पर परभावदशा को धरके, करि निज रुद्धि मुवारी । अ० ॥५॥

घाह वस्तु मव नेह निगारी, हो निजभावविलासी ।

मौभाग्यविजय कह मुनो मेर मन्तो, छिनमे शिवपुरवामी ।

अथ आत्म० ॥६॥

## आशात्याग पर पद

( दशी-मान मायाना करनास रे० )

दुखकारी सतत दुखकारी रे, चित्त ! आशा तजो दुखकारी,  
समेशानतणी हरनारी । चित्त० ॥

आशावश परपरमा रहीने,

राम कर्पुं चहुयारा ।

मान रहित त्या भोजन मीधु,

कारु परे शरु धारा रे । चित्त आशा० ॥१॥

द्रव्यनी आशा दिलमाहि घारी,

नित्य सुणी छठवाणी ।

जी जी करीने आजीजी कीधी,

अन्ते दुई मानहाणी रे । चित्त आशा० ॥२॥

श्रीमन्तपासे नित्य रहीने,

सेवा करी कर जोडी ।

शेठ कहीं कंठ सुरायो,

एक कोडी रे । चित्त आशा० ॥३॥

स्वामी विसारी,



जास आगल देखो वानर ज्यु नाचे,  
आशातणे परभावे रे । चित्त आशा० ॥४॥

बाहिरमाया छण्डी ने केई,  
योगीतणा त्रत धारा ।

शरर ! शरर ! शब्द सो ध्याया,  
आशा नहीं पण टारा रे । चित्त आशा० ॥५॥

कलमा कुराननी मणीने सारी,  
साइ पन्या केइ भारी ।  
अछा जछा करी फाल गुमायो,  
आशा नहीं पण वारी र । चित्त आशा० ॥६॥

वेद पुराण ने आगम जाणी,  
त्यागी बन्या जग नामी ।  
ते पण आश तजी न मनधी,  
अन्ते रही तस स्वामी रे । चित्त आशा० ॥७॥

आशा तजे जे सर्वप्रकारे,  
ईश सदा मन धारा ।

पूज्य धइ त जगमाह गाजें,  
अपारा रे । चित्त आशा० ॥

## गुरु उपदेश पद

सद्गुरु ने मोए भाग पिलाई, मोरी जखियोंमें जागई  
लाली, सद्गुरु० ॥

भाय की भाग मरम की मिरचां,  
शीयल की माफ़ी रनाइ । सद्गुरु ने० ॥१॥  
क्रिया की कुण्डी ज्ञान का घोट्टा,  
घुटनवाला मेरा साइ । सद्गुरु ने० ॥२॥  
ऐसी भांग पीवत सुघर नर,  
जजर अनर होइ जाइ । सद्गुरु० ॥३॥  
सद्गुरु रहत मेल मन ममता,  
मोक्ष महा निधि पाई । सद्गुरु ने० ॥४॥

## प्राणिप्रार्थना

गौ—रोगनिरुद्धनरनेहारा दूध अनोपम मैं दती,  
बल्लड बल्लडी सतति मेरी जिसपर निर्भर है खेती ।  
मरने पर भी चमडा मेरा तुम चरणाका है प्राता,  
फिर मुझ गोनातिकारक्षण क्या नहीं करते हे भ्राता ॥१॥  
वज्रवासी वह कानरुनैया या प्यास हम पालनहार,  
माणसे भी गौमा प्राता या दिलीपधनिय सरदार ।

उनसे पुरखा कहनेवाले बुवा तुम्हारा दोर दमाम,  
धय जाता है यश हमारा तुम करते एगो-जाराम ॥२॥

धररी—नदीनालोखा पानी पीकर हटी हम चरती जगल,  
दूध माल उच्चे देखर हम मयमा ररती है मगल ।  
फिर भी प्यारे पुत्र हमार हाथ रुमाइया क जाते,  
तनिक लोभ क स्वातिर दगो रर मौतका दुख पाते ॥३॥

धररा—माता है जय जगदया तब हम भी इमक पूत हुए,  
मामा है सयका यह तब हम यररभी भानन हुए ।  
ये रसे सारंग हमरी लोगो! तुम कुछ गौर ररो,  
रामपरियोंकी भ्रमगास तुम हमसे क्यों रर्यार करो  
॥४॥

धररी—इरकुट नाम चगतमें मग कालवानी रुहलाता हू,  
जधेरी घादलियों में भी ठीक समय रतलाता हू ।  
बुदरतकी मैं घडी बना हू मुझ जीवनकी रुदर ररो,  
पैसकी ररगादी जिनसे उन घडिया को दूर ररो ॥५॥

मयसाध—सतजुगमें राजा ये ररक अर ये मशक हुए रुहर,  
इनस नहीं जीवनकी जाशा ये तो हैं हमही पर शूर ।  
तुम अर्जी हम पगुपनीजी मुनकर ह लक्ष्मी क पूत !,  
दया धर्मराज्ञान जगतको दगो ज्या मागे जमदूत  
॥६॥

## रायण के प्रति सीता का राख्य

॥ रायण तू धमकी दिसावा किम  
 मुझे मरने का रोक गतर ही नहीं ।  
 मुझे मारना क्या अपनी रंग मना,  
 तुझ होने की अपन राखर ही नहीं ॥ अ० ॥

क्या तू माने की लंका का मान रर,  
 मेर आगे यह मिट्टी का पर ही नहीं ।  
 मेर मन का गुमरु हिलगा नहीं,  
 मेर मन म किमी का भी डर ही नहीं ॥ अ० ॥ १ ॥

तूने महम अठारा जो रानी री,  
 हाथ उन प भी तुज को सपर ही नहीं ।  
 परतिरिया प तूने जो ध्यान दिया,  
 क्या निगोदो नरक का गतर ही नहीं । अ० ॥ २ ॥

जाय इद्र नरद्र जो मिलरु मभी,  
 क्या मजाल जो शीलमे मर हर ।  
 तेरी हस्ती है क्या शिखर सम पिया,  
 मेरी नजरों में कोइ नश्वर हा नहीं । अ० ॥ ३ ॥

क्यों ना जीव स्वयंवर तू लाया मुझे,  
मेरी चाह थी मनमें जो तेर वसी ।  
या तू कौन शहर मुझे दे तो बता,  
क्या स्वयंवर की पहोची खर ही नहीं । अ० ॥४॥

हुवा तो तो हुआ अत्र मान रहा,  
मुझे रामप जलदीसे दे तू पठा ।  
फहे न्यामत अगर न तू देखेगा रह,  
तरे मर की कम तेरा मिर ही नहीं ॥

अरे रागण तू० ॥५॥



है। जल यहाँ का मीठा और तदुन्मूर्ति की चढ़ानेवाला है। गाँव के आमपात्र हैं, रात्र, रहता की बहुतायत होने से यहाँ जल की स्त्री स्त्री समय नहा मादूम होती।

यहाँ पर गाँव में सीमा जोनसाल के दो भी घर हैं। ये सब सपत्निय और नमानधर्मी हैं। मय मूर्तिपूजक पुद्गलनातन चार पुद्गल मानन गाल जैन हैं। उन का रहन रहन गीत समम रिलहल सादा है। मनुष्यों की वज्र-भूषा भी ज्यादातर स्वदगी खादामय है। फगुन से ३ अपन पान तक नहा फटसन दत। रिलहल प्राचीन पद्धति की मान दन में ही व अपनी इज्जत ममज्ञत है। धधा रोजगार अधिरात्र में यहाँ पर ही लेन दन (धीर धार) का है, परन्तु अभी अभी उनमें से कुछ भाग पद्गल म मद्राम तक पहुँच गया है और अच्छा द्रव्योपाजन कर रहा है। बाललग्न, वृद्धविवाह और स्न्याविक्रय का प्रकार यहाँ बहुत ही कम नजर आता है निम से इन लोगो की शारीरिक संपत्ति मदा उत्तम चली रहती है। हर प्रकार से इन का जीवन सदागरी और निदाय है।

यहाँ पर दो जिन मंदिर हैं। एक पुराना ऋषभदेव भगवान का और दूसरा पार्थनाथ का, जो नवीन है। दो जैन चेतान्तर धर्मशालाएँ हैं जिनमें एक हाल ही में चली है। पुराना एक उपाश्रय भी है जो दोना जैनमंदिरों के बीच में जाया हुआ है। यहाँ पहले अच्छे जठ प्रतिष्ठित तपागठ के यति हो

गये ह। प० यति श्री भक्तिसोमजी भी जो अभी थोडा ही समय पर स्वर्गवासी हो गये ह अन्ते तरस्वी यति थे। इस समय यहा भक्तिसोमजी के गिण्य सुमत्तिसोमजी यति रहते ह।

## २ पार्थना का मन्दिर

यो तो गोल म भगवान् ऋषभदेव का मन्दिर भी बडा है परन्तु पार्थनाय का मन्दिर जो 'नयामन्दिर' के नाम से प्रसिद्ध है बडा आलीशान है। द्वार पर झोखा, भीतर मण्डप, दूसरे खण्ड पर चौमुखनी और चारों तरफ विशाल जगती की बजह से मन्दिर की शोभा अधिक बढ़ गयी है।

इस मन्दिर की नींव विक्रमसंवत् १०५३ ई. साल में पड़ी थी और सन् १९७५ में यह सपूर्ण भी हो गया था, परन्तु प्रतिष्ठा जल्दी करान का विचार होत हुए भी अनुकूल संयोग न मिलने से बातें करत करते १५ वर्ष व्यतीत हो गये। सच कहा है—

“वृक्ष फलति कालेन, फले गान्य च जायत” अर्थात् ‘समय जाने पर वृक्ष फलता है और समय पर ही गान्य होता है’। जाखिर गोल क मन्दिर की प्रतिष्ठा का समय भी आ पहुचा। भादुआ महावीरजी यात्रा जात हुए पन्यास श्री  
पहुने और असेसे तैयार

मंदिर की प्रतिष्ठा उस दिन की थापकों की प्रेरणा की। प्रतिष्ठा कराना निश्चित हुआ और इस कार्य के लिये मुहूर्त और विज्ञप्ति करने को मुनि महाशय श्रीरत्नगिरिनयजी मोभाषयित्र-परी के पास तुलार ज्ञान के लिये पत्र भूरि भूरि ।

### ३ तुलार के लिये पत्रों का प्रयाण

स० १९९० का महाराज साहब का वर्षा चौमासा तुलार (मारवाड) में था, जो गोलस करीब पन्नाम कोम दूर था। महाराज अभी वहीं निवास में थे। पंच गोलस खाने हो कर भिगमर शुद्धि १३ को तुलार पहुँचे और सब वृत्तान्त निवेदन पूरक विनति की कि 'आप हमें मंदिरजी की प्रतिष्ठा का मुहूर्त निश्चित कर फरमायें और गोल पधारने की विनति स्वीकार कर उतर विहार करों की कृपा करें।' महाराज साहब ने कहा—'क्या यह निश्चय कर लिया है कि प्रतिष्ठा अवश्य ही करायेंगे ?' पंच ने उत्तर दिया—'अब हमारा हृदय निश्चय है कि प्रतिष्ठा अवश्य करानी।'।

इस के बाद महाराजश्रीन पंचाङ्ग देखकर स १९९१ के द्वितीय वैशाख शुद्धि ५ का शुभ मुहूर्त बताया।

इस के बाद पंच ने अर्ज की कि 'शुरुद्वय ! हमलोगों की इच्छा अजनशलाका कराने की है सो आज्ञा फरमाइये और



फ़िन फ़िन भगवान् जी फ़िम प्रमाण की मूर्तियाँ की हमारे जरूरत हैं सो भी बतायें ता कि उन क़वनाने का ऑर्डर द दिया जाय ! '

इस पर महाराजश्रीने कहा—'आप लोगों की भावना अच्छी है परन्तु मेरी रायमें तो प्राचीन मूर्तियों को कहीं से प्राप्त कर प्रतिष्ठा कराना ही अच्छा है । क्या कि नवीन मूर्तियाँ की अपेक्षा प्राचीन मूर्तियाँ कई कारणों से अच्छी हैं ।'

उत्तर में पचों ने कहा—'हम को कुल ११ मूर्तियों की जरूरत है जो मनपसंद मिलनी कठिन है, इसलिये हमारी इच्छा तो नवीन चित्र भगवा कर जवनशलाका कराने की ही है फिर तो जैसी आप की आज्ञा ।'

महाराज ने कहा—'ठीक है, एक बार आप मूर्तियाँ की तलाश में कहीं बाहर तो जाय । इस पर भी पता न लगेगा तो फिर देखा जायगा ।'

पचों ने महाराज साहब की मलाह मज़ूर जी और गोल की तरफ जल्दी बिहार करने की प्रार्थना की ।

महाराज ने फर्माया—'आगामी माघ शुदि ५ से यहाँ पर उपधान होने वाले हैं और यह काम भी हमारे आधार पर उठाया गया है इमवास्ते उपधान की समाप्ति तक उधर बिहार नहीं हो सकेगा । इस कार्य को समाप्त होते करीब आधा

चंद्र यहा पूरा हो जायगा, फिर यहा से गोल की तरफ बिहार करेंगे ।'

मिगसिर शुदि १५ पूर्णिमा के प्रभात समय में पंच वायम गोल के लिये रवाने हुए और सोय यदि ६ के दिन मुनिमहाराज भी कुछ समय के लिये लुगाया से वाली की तरफ बिहार कर गये । वाली में करीब १७ वर्ष स जैनसंघ में बड़ा भारी ह्वेय चल रहा था सो महाराज साहजन के पुण्य प्रभात स तीन ही दिन में उस का अंत आ गया और संप हो गया । यहा से जाय खुडाला, मांडेराय, दूनाना, उलाना होते हुए तखतगढ़ पधारे ।

### ४ अजनशालाका का निश्चय

जो कि मुनिमहाराजने पंचो को प्राचीन मूर्तियों की तलाश करने के लिये कहा था परंतु गोल के श्रीसंघने तो दृढनिश्चय कर लिया था कि गोल में अजनशालाका डी करायेंगे । महाराज तखतगढ़ पधारे उस वक्त फिर गोल के पंच सूत्रधार सोमपुरा धानजी कमीरजी हरजीशाले को साथ में लेकर तखतगढ़ गये और मूर्तियों के नाम और परिमाण देने की प्रार्थना की । महाराज साहजन इस वक्त भी प्राचीन मूर्तियांकी खोज में जाने को कहा परन्तु आने हुए सज्जनोंने कहा कि हमार गांववालो का निश्चय अजनशालाका कराने का ही है

इमरास्ते आप आज्ञा फरमावें । तब महाराजश्रीने धारणागति-  
यत्रानुसार गोल के लिये मूलनायक पार्थनाथ भगवान् तथा  
अन्य मूर्तियां के नामों का लिस्ट करके दिया । वहासे दो जने  
गजधर मोमपुग के साथ जयपुर मूर्तियों का ओर्डर देने गये  
और दो जने गाव चादराईवाल मिन्नी दानाजी लोहार को  
नाथ ले सुमरपुर दंड कलशों का मामान लने गये ।

महाराज साहब तखतगढ़ में कुछ समय तक ठहर कर  
फिर वहा से बिहार कर पौष शुदि ४ लुणाव पधारे ।

५ महाराज साहब का लुणावा से गोल के लिये बिहार

चैत्रदि में उपधान की माला के उत्तम पर फिर गोल  
के पश्चा लुणाव गये और वहां से जल्दी बिहार कर पश्चा के  
साथ पधारे की प्रार्थना की, जिसके उत्तर में महाराजश्री ने  
फरमाया कि 'हमारे साथ किमी के रहने की जरूरत नहीं है ।  
हम चैत्रदि अमास्या तक यहा से बिहार नहीं करेंगे । चैत्रशुदि  
१ के दिन यहा से बिहार होगा और चैत्रशुदि १० को गोल  
पहुंचेंगे और उमी दिन नोकराभियों के चढ़ाव बोले जायेंगे ।'

शांतिपूर्वक उपधान की समाप्ति चैत्रदि में हो गयी ।  
चैत्रशुदि १ के दिन दोनों मुनिमहाराजों ने लुणावा से बिहार  
रिया और बीमलपुर, सुमेरपुर, वाकली, पायटा, अमली,  
आहोरा, लेटा, नालौर और पित्रोपुग इन गांवों में एक-एक

दिन की स्थिरता थी । चैत्रशुदि ९ मी से गोल में महाराज साहब की अगमानी थी तैयारिया हो रही थीं । चैत्रशुदि १० के प्रातः समय महाराज साहब ने पिंजोपुरा से गोल के लिये विहार किया ।

जालोर से पिंजोपुरा तक जालोर का श्रावस्ममुदाय और पिंजोपुरा से रुमरणा तक पिंजोपुरा तथा कैमरणा के श्रावक तो साथ में थे ही परन्तु कैमरणा के नजदीक पहुचते पहुचते गोल के भी बहुत से श्रावक सामने आ मिले । कैमरणा के मन्दिरजी में दर्शन कर श्रावक को माङ्गलिक सुना महाराज ने आगे विहार किया । अब तक सरूडा मनुष्यों का मेला जम चुका था और कैमरणा तथा गोल के बीच भारिक मनुष्यों का खासा ताता सा लग गया था ।

लगभग आठ बने मुनिमहाराज गोल पहुँचे । जैनसभ तो क्या सारा गाव ही महाराजसाहब के दर्शनार्थ बाहर निकल आया था । बड़ ठाठ और उत्सवपूर्ण नगरप्रवेश हुआ । नवीनधर्मशाला में मुद्राभ क्रिया और माङ्गलिक सुन कर सभा विसर्जन हुई ।

### ६ मुहूर्त विषयक शका-निराकरण

जब गोल के पंच लुणावा से मुहूर्त पूछ कर अपने स्थान गोल जाये और आगामी द्वितीयशेखाखण्ड ५ मी का मुहूर्त

जाहिर किया तो मारा गात्र शानदित हुआ, परन्तु यह धार्मिक कार्य भी रुतिष्य ईर्षालुओं को पसन्द नहीं आया। गोल क चोमामी प० भक्तिसोमजी प्रतिष्ठा कराने का निश्चय हुआ उस समय पालिताणे में वे, पक्षो ने चिट्ठी देकर उन से भी गोल बुलाया। परन्तु विघ्नसतोषी ईर्षालु लोगों ने उन से भी बहसाया कि द्वितीय वैशाखशुदि ५ का मुहूर्त अच्छा नहीं है। यतिनी सरलस्वभावी थे, उन में स्वयं मच झूठ की परीक्षा करने का सामर्थ्य नहीं था अतएव लोगों की बातें सुन कर शरकाकुल हो गये, मुहूर्तविषयक अपना अभिप्राय उन्होंने गोल क आपको को भी दर्शाया, परन्तु आपक महाराज पर बड़ श्रद्धालु और विश्वासी थे, उन्होंने उत्तर दिया 'मुनिमहाराज कल्याणविजयजीने अगर काली अमावस्या का दिन भी बताया होता तो हमको मजूर था।' आपको की यह दृढ़ता देख रातें बनानेवाले चुप हो जाते थे।

महाराज गोल पहुँचे उसी दिन दो पहर को प भक्ति सोमजी को अपने पास बुलाया और पूछा कि क्या मुहूर्त के विषय में आप से कुछ शरा है ?

भक्तिसोमजी—हा मेर विचार में वैशाख शुदि ३ अथवा ६ के दिन ठीक जचन है।

महाराज—शुदि ५ में क्या कमी है और ३ तथा ६ में विशेषता से बताया।

भक्तिमोमर्जा-त्राय ही जाया हो तो प गौरीशरर्ज  
का पुत्रता है ?

महागन—सुर्गी स बुलगाइर और किराी अन्य विद्या  
पर उदा हो तो आप उम को भी बुला सकते हैं । इस प  
पठित गौरीशरर्जा नामाली पुत्रों गय जो १० मिनट  
ही जा गय । जोषाकी कुछ ज्योतिष की पुस्तकें भी साथ  
आय य ।

महाराज श्रीन पूछा—कहिये पठितजी ! प्रतिष्ठासम्पन्न  
मुहूर्त क विषय में आप का क्या मत है ?

पठितजी—पंचमी स पष्ठी का दिन मुस्त टीक जचत  
है, क्योंकि उस दिन 'रवियोग' है और रास्तुचक्र (कलश  
चक्र) भी मिलता है ।

महाराज—प्रतिष्ठा के मुहूर्तमें रवियोग अवश्य होना ही  
चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है । कलशचक्र के सपन्थमें  
भी एशान्त नहीं है कि उमक मिरा प्रतिष्ठा हो ही न सके ।  
कलशचक्र एक नम्रयोग है, और कल नक्षत्रफल पर ही  
प्रवशादिसार्थ कस्त समय इस का होना जरूरी माना गया है ।  
जहाँ पत्रागनुदि की गवेषणा की जाती है, वहाँ कलशचक्र  
पर आशर नहीं रहता । इसी कारण प्राचीन ज्योतिषशास्त्रोंमें  
कलशचक्र की चर्चा ही नहीं है ।

पंडितजी—‘अच्छा, इस में क्या लिखा है पढ़िये तो’ यह कहते हुए उन्होंने पुस्तकमें से नोट किन हुए एक दो श्लोक महाराज के हाथ में दिये ।

महाराज—इस में पंचम रनियोगात्मक उपग्रह का फल लिखा है और यह ठीक भी है, परंतु यह दोष सर्वत्र वर्जना ही चाहिये ऐसा एकान्त नियम नहीं है ।

पंडितजी—आप इस का परिहार बतायेंगे तो मेरी शरा दूर हो जायगी । इस पर महाराजने आरभसिद्धिवातिक और मुहूर्तचिन्तामणि की पीठपत्रा टीका में से श्लोक उता कर कहा देखो इस में स्पष्ट लिखा है कि ‘उपग्रह’ का दूषण ‘कुहू’ और ‘नाल्हीकू’ दश में ही माना है (उपग्रह स्यात्कुरुना-ल्लिहेषु) अन्यत्र उपग्रह शुभ है (अन्यत्र शुभमत्र)

ऊपर का गुलामा सुन कर पंडितजी रोले—अब मेरे मन में कोई शरा नहीं रही । अब मैं निस्मरोचभाव से स्वीकार करता हूँ कि पंचमी का दिन श्रेष्ठ है । उस में दोष की भूल जो शरा थी वह निकल गयी ।

इस प्रकार पं. भक्तिसोमजी और पंडित गौरीशंकरजी जो कि मुहूर्त विषयमें शकाशील थे, दो ही घंटा में निश्चक हो गये, इस घटना से श्रावस्सथ भी आश्चर्यचकित हुआ कि दो ही घंटी में महाराजने क्या जादू कर दिया कि मुहूर्त के सव-

नम रिन्दू बातें करने वाले भी सहमत और अनुमूल  
दा गये ।

### ७ अजनशलाका कान करा सकता है ?

मुहूर्तकी ही तरह इर्षालु लोगोंने यह भी शक खड़ी  
कर रखी थी कि 'अजनशलाका आचार्य ही कर सकते हैं,  
तो मुनि सन्याणविजयजी यह कार्य कैसे करग ।' गोल के  
गारमों से इस बात का कोई जिक्र करता तो वे तो यही  
उत्तर देते कि 'यह बात महाराज को पूछो, हम को तो इस में  
कुछ शक ही नहीं है, क्योंकि उनको करने का अधिकार  
होगा तभी व अजनशलाका का कार्य करना स्वीकार करते हैं' ।  
इर्षालु लोग इस विषय में तरह तरह की गप्पें हाकते थे,  
परन्तु पूज्य मुनिमहाराज के मामले आकर पूछने की किमी की  
हिम्मत नहीं होती थी । और तो क्या, सुनने मुजब तपगच्छ  
क प्रसिद्ध आचार्य श्रीविजयनेमिस्वरिजी तक यह कहते थे कि  
आचार्य क सिवा दूसरा अजनशलाका नहीं कर सकता, परन्तु  
मुनिराज की निद्वचा और बहुश्रुतता सभी को मालूम थी, इस  
से उन को पूछने का किमी को साहस नहीं होता था ।

गुरा साहब व भक्तिसोमजी क दिल में भी यह शक  
हो रही थी कि महाराज स्वय आचार्य न होत हुए अजनश-  
लाका करने की जवाबदारी अपने ऊपर कैसे लेते हैं, परन्तु



उनका भी महाराज के सामने पूछने का साहम नहीं होता था, परन्तु इस लोकचर्चा में महाराज भी अनजान नहीं थे, इस संबन्ध में आप कहा करते थे कि 'क्या ही अच्छा हो कि लोग हम से स्वरूप मिल कर इस विषय की शका दूर कर दें।' परन्तु जब इस विषय में आप को कोई पूछने वाला नहीं मिला तब आपने स्वयं पं. भक्तिसोमजी के पास यह चर्चा छोड़ी कि क्या जवनशलाका करने के अधिकारी के विषयमें भी आप को कुछ शका है ? । इस पर यतिजीन कहा—हां लोगों की बातें सुनने से मैं इस विषयमें संशयग्रस्त हूँ और आप से पूछना चाहता था परन्तु पूछने का साहम नहीं हुआ, आज आपही ने प्रसंग छोड़ा है तब मैं भी आप से इस विषय का खुलासा चाहता हूँ कि जो यह बात कही जाती है कि आचार्य के बिना जवनशलाका हो नहीं सकती सो इसमें कुछ शास्त्र का आधार भी है या केवल दन्तकथा मात्र है ? । इस प्रश्न के उत्तरमें आपने कहा कि इस कथन में कुछ भी सत्यता नहीं है कि 'आचार्य के बिना दूसरा कोई जवनशलाका कर नहीं सकता।' प्रमाण देते हुए आपने कहा—आचारदिनकर ग्रन्थान्तर्गत जवनशलाका-प्रतिष्ठाविधि में १ आचार्य, २ उपाध्याय, ३ साधु, ४ जैन प्राज्ञ और ५ धुल्लक य पांच जवनशलाका-प्रतिष्ठा करने के अधिकारी बताये हैं ।'

१ आचार्य पाठशैल्य, साधुभिज्ञानसत्त्विये ।

जैनविधौ धुल्लकैश्च, प्रतिष्ठा विधितेऽहम् ॥' (आचारदिनकर)

आज आपने कहा कि 'आचार्य विना प्रतिष्ठा नहीं हो सकती' यह मागता गन्तरग-उपासना की होना समझें। क्योंकि तपाम-ग्रीव उपाध्याय धर्ममागर्जीन औष्ट्रिमतो-  
 'सूत्रदायिका' नामक अपने ग्रन्थमें रातरग-उ की मान्यताओं का रण्टन करते हुए लिखा है कि 'आचार्य विना प्रतिष्ठा का नियम करना न्यूनप्ररूपणात्मक मि पाल है। इस के सम-  
 यन में उ रहते हैं ' यह कथन प्रतिष्ठारूपादिग्रन्था में निरुद्ध है। क्योंकि यहाँ उपाध्याय आचार्य भी प्रतिष्ठा-अन-  
 नशलाका करने की आज्ञा दी गई है, और शीगुरुवर माहा-  
 त्म्यमें सामान्य साधु भी प्रतिष्ठा-अननशलाका कर सकते हैं  
 ऐसा प्रतिपादन है।'

## ८ अजनशलाका की प्रतिष्ठा है

आज शाल मारगाड में एक रुद्रि सी हो गई है कि पुरानी मूर्तिया मन्दिरकी म स्थापन करने के विधिविधान को तो प्रतिष्ठा रहते हैं और नयीन मूर्तिया पर सस्कार कर पून-  
 नीय बनान के विधान को 'अजनशलाका।' परन्तु असक

१ 'आचार्य विना प्रतिष्ठानिवेध प्रतिष्ठारूपादिना विरुद्ध। तत्रापाध्यायादीनामन्यनुमानान्न। भाशुगवमाहा-  
 त्म्य सामान्यसाधुरपि प्रतिष्ठाकृतेति।'

( औष्ट्रिमतासूत्रदायिका पत्र ' )

वात तो यह है कि विमसे नयी मूर्तियां पूजनीय बनती हैं उसी विधान का नाम 'प्रतिष्ठा' है, और प्राचीन मूर्तियां जो मन्दिर में पसरान और स्थापन करने के विधान का नाम 'विमप्रवेशविधि', यही कारण है कि नवीनविमों को अञ्जन शलामापूर्णक पूजनीय करने का विधान करने वाले ग्रन्थों का नाम 'प्रतिष्ठाश्रवण' पड़ा और प्राचीनविमों को स्थापन करने सम्बन्धी विधि का ग्रन्थ 'विमप्रवेशविधि' इस नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

## ९ कार्यान्वयन-नोकारमियों के चढ़ावे

लोगों का मन की शराजों का समाधान करने का बाद महाराजसाहब ने सध जो धर्मशाला में इच्छा होने की सूचना की और सध इच्छा हुआ, तब आपने फर्माया कि 'आज का दिन प्रेष्ठ है, इस वास्तव काम की शुरुआत आज ही हो जानी चाहिये। गौधूलिक का समय अच्छा है, उस समय जाजम निष्ठा कर चढ़ावा गोलना शुरू करना चाहिये।' महाराजसाहब की आज्ञा सध ने मस्तक पर चढ़ाई और कई हुए समय में जाजम का मुहूर्त किया और अञ्जनशलामा के दस दिन और शान्तिस्नात्र का एक दिन मिलकर कुल ११ दिन की ग्यारह नोकारमियों के चढ़ावे बोले गये जो नीचे लिखे जाते हैं।

३००१) अक्षर रूपया तीन हजार एक का चढ़ावा स०  
१९९१ द्वितीय वैशाख यदि ११ की नोकारमी का

मुहता डोगालालजी मुलतागमलजी कपूरचन्द  
के बेटे पोता की तरफ से हुआ ।

२२०१) अक्षरे रुपया चाइस सौ एक का चढ़ावा द्वितीय  
वैशाख वदि १२ की नोकारसी का मा० साइव  
चन्दजी डुनणमलजी की तरफ से हुआ ।

२२०१) अक्षरे रुपया चाइस सौ एक का चढ़ावा द्वितीय  
वैशाख वदि १३ की नोकारसी का मा० चुनीलाल  
जी कस्तूरजी की तरफ से हुआ ।

२५०१) अक्षर रुपया पचीस सौ एक का चढ़ावा द्वि० वै०  
वदि १४ की नोकारसी का मुहता चुनीलालजी  
ओरुचन्दजी फुसाजी क बेटे पोता की तरफ से  
हुआ ।

२५०१) अक्षर रुपया पचीस सौ एक का चढ़ावा द्वि० वै०  
वदि ०)) की नोकारसी का मुहता जेसाजी धुडानी  
की तरफ से हुआ ।

२४०१) अक्षरे रुपया चोइस सौ एक का चढ़ावा द्वि० वै०  
शुदि १ की नोकारसी का सा० गणेशमलजी  
हरकचन्दजी भीमरान सुरतानी क बेटे पोता की  
तरफ से हुआ ।

- २३०१) अधरे रुपया तेरस सौ एक का चढ़ाया द्वि० वै०  
शुदि ० की नोकरमी का मा० राउजी भाणजी  
की तरफ से हुआ ।
- ३५०१) अधर रुपया पैंतीस सौ एक का चढ़ाया द्वि० वै०  
शुदि ३ की नोकरमी का मा० भेगजी राजमल  
मणेशमल की तरफ से हुआ ।
- ४००१) अधरे रुपया चार हजार एक का चढ़ाया द्वि० वै०  
शुदि ४ की नोकरमी का मुहता फोजमलजी हजारी  
मलजी की तरफ से हुआ ।
- १३००१) अधरे रुपया तेरह हजार एक का चढ़ाया द्वि० वै०  
शुदि ५ जजनमलका की नोकरमी का सा०  
दीपचन्दजी सागरमल सदाजी की तरफ से हुआ ।
- ५००१) अधर रुपया पांच हजार एक का चढ़ाया द्वि०  
व० शुदि ६ की नोकरमी का मुहता भलेचन्दजी  
पुराजजी की तरफ से हुआ ।

ऊपर मुजब ग्यारह नोकरमिया का चढ़ाया की कुल रकम

४२६११) अधरे बयालीस हजार ठ० सौ और ग्यारह रुपया  
हो गई जिससे सफल सध को अतीव हर्ष प्राप्त हुआ, इतना

चढ़ाया एक ही वाज्रम पर होना यह उक्त महाराजश्रीका अतिशय और उस दिन क पुण्यार्कयोग का प्रबल प्रभाव नमझा गया ।

## १० कुकुम पत्रिका

नौकारसियों निश्चित हो जाने के बाद महाराजसाहब क द्वारा क्रियाविधान के दिन गुरुसर होकर आपही के तत्पराधान म श्री सकल जैन सघ को निमन्त्रित करने क लिय उकुम पत्रिका का मसोदा तैयार हो गया जो अधरश नीचे गुजर है ।

॥ श्रीजिनाय नम ॥

॥ अनन्तलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने नम ॥



॥ परमसुविहितशिरोमणितपागच्छाचार्य  
श्री १००८ श्री विजयसिद्धिस्त्री-  
श्वरपरमगुरुभ्यो नम ॥



श्रीपार्श्वनाथजिन अजनशलाका-प्रतिष्ठामहोत्सव  
श्री गोलनगरे



श्रीगोलनाम्नि नगरे, जयति जिनो नाभिराजकुलतिलक ।  
यो मङ्गलमयमृति-व्यभ इति प्रोच्यते रिपुर्ध्वं ॥१॥

चैत्ये नवे युगलभूमिवर द्वितीय,

ऽपूर्वात्सर्वेन त्रिधिना च प्रतिष्ठमान ।

नानाभिधानविदितोजितसत्प्रभाव ,

पार्श्वा ददातु भविना हृदयस्मितानि ॥२॥

जानन्दाद्वयपूर्णमङ्गलघट मार्तण्डमुख्यैर्ग्रह ,

समेव्य दिग्धीश्वदेवनिर्करसाराधितादिद्वयम् ।

सघोष्ठायसमुद्रशीतकिरण मत्यप्रतिष्ठास्पद,

लोकालोकरुविट सुगान्तिनिलय उन्द जिनाधीश्वरम् ॥३॥

गच्छे श्रीविजयादिसिद्धिमुगुरो प्राप्त प्रतिष्ठा पद्म,

सच्चारित्रिसमाजलब्धमुयशा वैदुष्यसुर्यैर्गुणैः ।

कल्याणो विजयान्तश्चरुविदित सौभाग्यनामत्यम् ,

भूयास्तां शुनिसुतमौ सकुशलौ भव्यात्मचेतोमुद ॥४॥

गोलनगर रलियामणो, नदी सुम्बडी तीर ।

विचित्रवृक्ष सोह जिहा, अमृतर्माठा नीर ॥१॥

पार्श्वनाथ आदि बहु, जिनवरयित्र सनूर ।

अज्जनशुलारा कारण, प्रगुणित गुण भरपूर ॥२॥

तत्कारण उत्सव तणी, रचना माधव मास ।

अधारी अम गीनति, सय पधारो खास ॥३॥

स्वस्ति श्री पार्श्वजिन प्रणम्य तत्र श्री नगर महा-  
शुभस्थान विराजमान पंचपरमष्टिमहामन्त्रस्मारक दशगुरुभक्ति-  
कारक सम्यक्त्वमूलद्वादशप्रतधारी जिनशासनशोभाकारी चतु-  
रसुपान परमबुद्धिनिधान इत्यादि अनेकगुणोपमालकृत परम  
पूज्य श्रीसमलसयसमस्त योग्य.

एतान् श्रीगोलनगरस लि० सयसमस्त का

श्री जयजिनेन्द्र वाचना जी ।

यहां पर श्री दशगुरु क प्रतापसे आनन्द मङ्गल वर्त  
रहा है, आप साहिबां का मद आनन्द मङ्गल चाहत हैं ।

निशेष नम्र विनति यह है कि हमारे यहां पर श्रीदशगुरु  
और आप श्री सत्र क प्रताप से द्विभूमिक शिखरचन्द्र जिन-  
मंदिर उन पर तैयार हुआ है जिस में विराजमान करने के लिये  
श्रीपार्श्वनाथ आदि अनेक जिनचिबों की अज्जनशुलारा प्रतिष्ठा  
और भगवत्स्थापना का शुभ मुहूर्त मुनिमहाराज श्री १००८



श्रीकल्याणविजयजी के मङ्गलपदों से विक्रमसंवत् १९९१ (मारवाड की गणना मुजय १९९०) के द्वितीयशाख शुद्धि ५ वार गुरु ता० १८ मङ्ग ईश्वरी मन् १९३४ के दिन करना निश्चित किया है। यह अजयनशलाभा-प्रतिष्ठा परमपूज्य प्रातः स्मरणीय मुनिहितमृगिन्द्रिरोमणि तपागन्ध्याचार्य श्री१००८ श्रीविजयमिन्द्रिन्द्रिरीश्वरजी महाराज की आज्ञानुसार उन्हीं के श्रममन्त्रोपमन्त्रितवामक्षेप से पुरातनचत्ता मुनिश्रीकल्याणविजयजी तथा मुनि सौभाग्यविजयजी के शुभहस्त से होगी और ईश्वरी क्रियाविधान महाराज साहिब की आज्ञानुसार गुरा साहिब श्रीभक्तिसोमजी करायेंगे।

उक्त महोत्सवसंबन्धी शुभकार्य करने के लिये नीचे मुजय दिन सुकरर किये गये हैं—

(१) वैशाख यदि ११ गुरु-जलयाग का बरघोडा, वेदि-फापूजन, मङ्गलमें प्रतिमास्थापन, तथा कुम्भस्थापन होगा और भटा मुहता छोगालाल मुलतानमल धौगडमल बटा पोता कपुर चदजी की तरफ से नरपदजी की पूजा तथा नोकरसी होगी।

(२) यदि १२ गुरु-नद्यावर्त तथा जष्टमगल पूजन-स्थापन होगा और सा० माहेबचद, कुनणमल, रिखदास, हमीरमल मुनीलाल मेवरचद, रूपराज मिनेराज, बेटा पोता ताराचदजी की तरफ से नदीश्वरद्वीप की पूजा तथा नोकरसी होगी

(३) यदि १३ शुक्र-दश दिक्पाल तथा नमग्रह का पूजन स्थापन होगा और लुणिया मुहता जुहारमल, चूनीलाल, धर्मचद, गीरमचद, नेणमल, गेवरचद, रिस्वरचद, बेटा पोता पीथाजी की तरफ से अष्टप्रकारी पूजा तथा नोफारसी होगी ।

(४) यदि १४ शनि-सिद्धचक्र का पूजन होगा और कागरसा सा० चूनीलाल, अम्बेराच, गणेशमल, बेटा पोता फूमाजी की तरफ से नवपदजी की पूजा तथा नोफारसी होगी ।

(५) यदि ३० रवि-मीमस्थानक का पूजन होगा और बदा मुहता जसराज, जीतमल, बेटा पोता धूडाजी की तरफ से मीमस्थानक की पूजा तथा नोफारसी होगी ।

(६) वैशाख शुदि १ मोम-च्यवनकल्याणकमहोत्सव होगा और भणशाली मुहता गणेशमल, हरस्वचद, भीमराज, जोइतमल, गेवरचद, मीठालाल, रूपराज, भूरमल, बेटा पोता सुरताजी की तरफ से बारह व्रत की पूजा तथा नोफारसी होगी ।

(७) शुदि २ मंगल-जन्मकल्याणकमहोत्सव होगा और बाफणा सा० रामाजी, कालुराम माणकजी की तरफ से ज्ञानावरणीय कर्म की पूजा तथा नोफारसी होगी ।

(८) शुदि ३ बुध-प्रतिमा, दड, कलश आदि के अष्ट दश अभिषेक हामे और भणशाली मुहता मेराजी, राजमल,

हरखचंद, मागीलाल बेटा पोता रिमानजी की तरफ से निनाणु प्रसार की पूजा तथा नोकारसी होगी ।

(९) शुदि ४ गुरु-दीक्षा रल्याणक्रमहोत्सव तथा अधि धासना रिधान होगा और बदा मुहता फोजमल, जुहागमल, हजारामल, कुनणमल, दवराज, शुक्रराज, नथमल, रिखचंद, हस्तीमल, बदा पोता केरींगजी की तरफ से अतरायक्रम की पूजा तथा नोकारसी होगी ।

(१०) शुदि ५ शुक्र-केवलप्रानकल्याणकविधिपूर्वक शुभ-लग्न-नवाश्रक में जिनपिंघों की अजनशलाका प्रतिष्ठा होगी सिद्धिकल्याणकविधि होगी और शुभलग्न-नवाश्रक में श्री पार्थनाथ आदि ७ जिन ममवान नवीनप्रामाद में तथा पद्मप्रभ आदि २ जिन भगवान प्राचीनचैत्य में तख्तनशीन किय जायगे और अधिष्ठायक यध्व यध्विणी यधास्थान प्रतिष्ठित किय जायगे, दोनों जिनमदिरों पर मुवर्णकलश ध्वजा दंड आरोपण हंगे और भणशाली सा० दीपचंद, सागरमल, हस्तीमल, वस्तीचंद बेटा पोता सदार्जी की तरफ से मतरह मेदी पूजा तथा बडी नोकारसी होगी ।

(११) शुदि ६ शनि-प्रात समय द्वारोद्घाटन रिधि होगी और भणशाली मुहता जोधाजी, भलेचंद, पुखराज बेटा पोता गुलबाजी की तरफ से रुहत्गातिस्नात्र पूजा और नोकारसी होगी ।

## दोनेवाले महोत्सव की रूपरेखा

मनोहर और विशाल प्रतिष्ठामंडप में नहाती र्व श्रीशत्रु-जय और मिरनारगिरि की सुंदर रचना क उपरांत समयसरण की रचना होगी, पूजा पढ़ाने के लिये प्रसिद्ध गर्वये और भक्ति-भावना क लिये जैनगायनमंडली आयगी, उत्सव के दिना में हमेशा नर्या नर्या जगिया और रोशनी होमी, मोना चानी के रथ, पालखी, हाथी, घोड और जयेंजी बेंड आदि मामग्री के साथ नित्य बरघोड निकलेंगे, टकोरखाना और फिटमन लाइट आदि माधन भी महोत्सव की शोभा में वृद्धि करग।

इस महामांगलिक धार्मिक कार्यक्रम पर आप श्रीसच अपने अपने मित्रमंडल और कुटुंब परिमार सहित पधारने की अवश्य कृपा करेंगे, क्योंकि श्रीसच के पगारने से श्री जिन शासन की विशेष उन्नति होगी, यही अर्थ।

वीर सवत् २४६०, विक्रम सवत् १९९० का प्रथम नैशाख वदि ११, ता १०-४ ईमवीमन् १९३४

श्रीसकलसच-गोल की तरफ से मा. दीपचंद मदाजी का जयनिनेद्र वाचना जी।

नाट—रेलमार्ग से गोल आन गाली का जिसनगड और गकरारोड उतरना चाहिये, दोनों स्थानों से गोल ५ कोस के फामले पर है। मोटर, रंगगाडी, ऊट चिगरह वाहन मिलत हैं। परनपुरा रोड से आन गाल मोटर से आ सकत हैं।

## ११ पदरह सौ कुकुमपत्रियाँ लिखीं

अहमदाबाद से कुकुमपत्रिया समितिने रेल्वे पार्सल कर पहले ही भेज दी थी, इस कारण गोल के सघने धमशालामें एकत्र हो प्रथम वैशाख अर्थात् ११ के दिन कुकुमपत्रिया लिखना शुरू किया और गात्रा नगरों और व्यक्तियों के नाम से करीब १५०० कुकुमपत्रिया लिखी और आदमियों की मारफत तथा डाकद्वारा मंत्रालय पहुंचायी गयीं ।

## १२ कामों का बंटवारा

या तो गात्र क ८ पंच इस प्रतिष्ठासमन्धी काम के लिये मुरारर रे ही तथापि सुगमता क लीये भिन्न भिन्न समितियों में इस काम का बंटवारा कर दिया गया था ।

### (१) सामान-समिति—

कुकुमपत्री का मसौदा पूर्ण होने पर सघ इकट्ठा कर वह सुनाया गया और सघ को पसंद आने से उस की पक्की प्रेस जोपी की गयी ।

अनन्यलोकामहोत्सव के निधिविधान में, शान्तिस्ना प्रेम और प्रतिष्ठामंडप के लिये जिन जिन चीज सामानों की आवश्यकता होने उन के लिस्ट

चानेवाली सामानसमिति के सुपुर्द किये । चूकमपत्री छप  
याना और मंदिरजी के कलशों पर मोना चढ़ाना आदि काम  
भी इसी समिति के हवाले किये गये ।

चैत्र शुनि १५ मा के दिन यह ४ मन्थों की समिति  
अहमदाबाद के लिये रवाना हुई और १० दिन के अंदर अपना  
कार्य समाप्त कर वापस आ गयी ।

## (२) प्रतिष्ठामंडप-समिति—

प्रतिष्ठामंडप के काम पर देख बाल रखने और उस के  
उपयुक्त सामान जुटाने के लिये भी एक ४ मन्थों की समिति  
कायम की गयी थी ।

कशी, बांस, पाटिये आदि लकड़ी का सामान, टीन के  
पत्तर, पट्टियाँ, कील आदि लोह का सामान और रंगीन तथा  
सादा कपड़ा, रंग-सोगान मगरा कर हाजिर करना और  
मंडप बनाने वाले कारीगर मजदूरों पर निगरानी रखना आदि  
समाप्त काम इस समिति के हवाले किये हुए थे ।

## (३) स्वायत्तसमिती-समिति—

। नौकारमियों के लिये जरूरी खदशी चीनी-खाद, गुड,  
तापान तैयार किया हुआ खदशी मैदा, चावल, दाल, चण,

चमला, अमचूर, कोरुम आदि खाद्यमामग्री एकत्र करने के लिये दो मेम्बरा की एक समिति नियत की थी जिसने बरेली से देशी चीनी, भटिण्डा से ताजा मेदा, ब्यागर से गुड और अन्यान्यस्थाना से अन्य चीज एकत्र की ।

### (४) भोजनमण्डप-समिति—

भोजनमण्डप (परठा) के लिय गाव से सटा हुआ एक रहट का जाम ( अरहट की भूमि ) पसद किया गया था, क्योंकि वह नजदीक भी था और जल तथा छाया का भी बहा सुख था ।

इस काम के लिये ४ सभ्यों की एक समिति मुकरर थी जिसने सब से पहले रहट पर जल की कुण्डी ( टाकी ) बधा कर उहा से रसोईघर तक एक बन्द नीक पकी बधा दी । नीक के मुहाने पर एक बड़ा टाका ( होद ) बधा लिया ताकि नीक द्वारा लाया गया जल सीधा टाका में ही गिरे । टाका के पास कोठिया रख कर छान कर कोठियों में भरने और कोठियाँ से बाल्टियों द्वारा मिट्टी के मटके भर कर परठे में जगह जगह रखने और उनमें से बाल्टियों में ले गिलासा से सर्वत्र पहुचाने की व्यवस्था ध्यान में रख कर उपर्युक्त जल की व्यवस्था की गयी ।

जानेवाली सामानसमिति के सुपुर्दे मिये । कुकुमपत्री छपवाना और मंदिरजी के कलशों पर मोना चढ़ाना आदि काम भी इसी समिति के हवाले किये गये ।

चैत्र शुदि १५ मा के दिन यह ४ सभ्यों की समिति अहमदाबाद के लिये खाना हुआ और १० दिन के अंदर अपना कार्य समाप्त कर वापस आ गयी ।

## (२) प्रतिष्ठामंडप-समिति—

प्रतिष्ठामंडप के काम पर दख भाल रखने और उस के उपयुक्त सामान जुटाने के लिये भी एक ४ सभ्यों की समिति कायम की गयी थी ।

कणी, वास, पाटिये आदि लकड़ी का सामान, टीन के पतरे, पट्टियां, कील आदि लोह का सामान और रंगीन तथा सादा कपड़ा, रंग-रोगान भगवा कर हाजिर करना और मंडप बनाने वाले कारीगर मजदूरों पर निगरानी रखना आदि तमाम काम इस समिति के हवाले किये हुए थे ।

## (३) ग्राह्यसामग्री-समिति—

नौकरसिंघों के लिये जरूरी स्वदेशी चीनी-खाद, गुड़, ताना तैयार किया हुआ स्वदेशी मैदा, चावल, दाल, चणा,



चवला, जमचूर, कोकम आदि स्वाद्यमासग्री एकत्र करने के लिये दो मेम्बरो की एक समिति नियत की थी जिसने बरेली से दूरी चीनी, भटिण्डा से ताजा मेदा, व्यापर से गुड और अन्यान्यस्थानों से अन्य चीजें एकत्र कीं ।

### (४) भोजनमण्डप-समिति—

भोजनमण्डप (परठा) के लिये गात्र से मटा हुआ एक रहट का जात्र ( अरहट की भूमि ) पसद किया गया था, क्योंकि वह नजदीक भी था और जल तथा छाया का भी बड़ा सुत्र था ।

इस काम के लिये ४ मन्त्रों की एक समिति मुफरर थी जिसने सब से पहले रहट पर जल की कुण्डी ( टाकी ) बधा कर वहाँ से रसोइघर तक एक नन्द नीक पक्की बधा दी । नीक के मुहाने पर एक बड़ा टाका ( होद ) बधा लिया ताकि नीक द्वारा लाया गया जल सीरा टाका में ही गिरे । टाका के पाम कोठिया रख कर छान कर कोठियों में भरने और कोठियाँ से बाल्टियों द्वारा मिट्टी के मटके भर कर परठे में जगह जगह रखने और उनमें से बाल्टियों में ले गिलासों से सर्वत्र पहुचाने की व्यवस्था ध्यान में रख कर उपर्युक्त जल की ... मयी ।

जल क टाक (होद) क पास हुड फामले पर रसोई के लिय छोटी बड़ी करीब २० भट्टिया मोटा कर उन पर चांदनी उधाड़ गयी । इसी स्मोड स्थान क निम्न एक बड़ा होल बना दिया था जहा पर स्मोई क रतन, वालिया, रसोई का अन्याय मामान और तैयार हुई स्मोद लापसी, सीरा बगैरह रखने क लिय बड २ रुटाव रखे गय ।

इम होल क पिछल भाग में एक बड़ा नौहरा खोलाया गया था जिसमें धी, गुड, चावल मेदा, चीनी, गेहू का दलिया बगैरह सामान रखा गया । जहा जल का टाका बाधा गया था वहा एक बड़ा भारी बड का दूरत था जिसकी छाया टाक क ऊपर और आस पास दूर दूर तक पहुचती थी, परन्तु यह छाया भी सब क लिये पयास नहीं थी इम कारण उसक सामने करीब ३०००० तीस हजार घनफुट जमीन पर माई पाना, चादनियो और खादिया से छाया की गयी थी । इसक उपरान्त इम जगह से कुछ ही दूर उसी खेत में अन्य वर्ण क लोगो के जीमने बैठने क लिये जमीन टीक करायी गयी थी ।

### (५) धृत-समिति—

जोर्डर से अगर जगैर जोर्डर से आने वाले धी क व्यापारिया से परीक्षापूर्वक धी खरीदने, उसको गम कर छानने और डिब्बो में बन्द कर गोशाम में रखने का कार्य इम धृतसमिति

क सुपुर्द था । इसके ४ सभ्य ध और घृतसत्रन्धी कुल कार्य इनके स्वाधीन किया गया था । इस समिति ने करीब ७०० मन ( पञ्जाली ८० रुपया भर क पके मन के हिमाय स३११ मन स कुछ अधिक घृत खरीदा और गर्म कर छान कर पीपों में भर रसोइ के गोदाम में रख दिया ।

### (६) मसाला-समिति—

प्रतिष्ठा के मौके पर शरू तरकारियों में डालने के लिये मिर्च, हल्दी, धनिया, जीरा, नमक आदि जरूरी मसाले कुटवा पिसवा कर तैयार करने के लिये भी दो सभ्यों की एक समिति नियत की गयी थी, जिमने पक्की १० मन मिर्च और इसके अनुमार ही जरूरी मसाला कुटवा पिसवा के तैयार करवाया ।

### (७) घास चारा-समिति—

प्रतिष्ठा पर जाने वाली बैलगाड़ियों के बैला, घोड़ों, उट्टा और हाथियों के लिये जरूरी घास चारा इकट्ठा करने के लिये भी दो सभ्यों की एक समिति नियत की गयी थी । कुछ तो घास पशुओं ने पहले खरीद लिया था तो भी वह कम मालूम होने से फिर घास खरीद कर करीब ५०० सौ गाड़ियां घास और १००० बैलगाड़ियां ( गुवार की भूमी ) और इससे

भी अधिक प्रमाण में गहू का पुलाव ( खाफला ) खरीद कर एकत्र किया था ।

### (८) बरघोडासाज-समिति—

बरघोड का साज-मामग्री इकट्ठी करने के लिये भी ४ सभ्यो की एक समिति नियत की गयी थी । इस समिति ने उदयपुर जाकर पण्डित सुखदरप्रसाद जी क पास उदयपुर क हाथिया की भागनी की, परन्तु गैररियासत का मामला बता कर पण्डित साहब ने हाथियो के भेजने में कठिनायी बतायी, इससे समिति के सभ्यो ने एक हाथी घानेराव ठि-रान में और एक हाथी खेरवा ठिराने में लाना वहा जाकर तय किया । उसी दौर में जोधपुर जाकर वहा का बेंड बाजा मंगाना निश्चित किया । इसके अतिरिक्त आहार में सोना चादी के रथ पालकी आदि और अन्य स्थानों में अन्यान्य-मामान लाना निश्चित कर दिया ।

### (९) मन्दिर कमठा-समिति—

उम समय दोना मन्दिर जी क रिपर काम और जरूरी पूरा करने के लिए कमठा चल रहा था । करीब २५ और ५० मजदूर हमेशा काम कर रह थे, इन सब निगसानी रखने, जरूरी सामान तैयार रखने, हाजरी पास

दने लेने और पगार चुकाने का कार्य हम समिति के सुपुर्द था ।

(१०) प्रकीर्णप्रयत्नक—

ऊपर लिखे मुजब भिन्न भिन्न कार्य भिन्न भिन्न समितियाँ में बांट दिये गये थे फिर भी छोटे बड़े अनेक कार्य थे, जैसे पुलिस पार्टी का इन्तजाम, चौकी पहरें का बन्दोबस्त, स्वयंसेवक मण्डलों के जुलाने का प्रबन्ध, इलेक्ट्री और गैस की दीवा बतियों के मगाने का बन्दोबस्त, नगर में योग्य-स्थानों में और प्रवेशमार्गों पर दरवाजे खड करवाना आदि । ये सब कार्य पञ्चोने और अन्यान्य मजदूरों ने किये ।

### १३ प्रतिष्ठामण्डप

सब समितियाँ में भोजनमण्डप-समिति और प्रतिष्ठामण्डप-समिति का कार्य सबसे अधिक ज़ाबदारी का था । सारे उत्सव का मुख ये दो ही कार्य थे जो उक्त समितियों के सुपुर्द थे । भोजनमण्डप-समिति के कार्य की रूपरेखा ऊपर दी जा चुकी है । अब हम प्रतिष्ठामण्डप का दिग्दर्शन करावेंगे ।

प्रतिष्ठामण्डपसम्बन्धी सबसे बड़ा मामला उसके योग्य जमीन की पसन्दगी का था । गांव वालों के इसमें तीन मत

धे । अधिक भाग की इच्छा प्राचीन मन्दिर के पास गुरा सा-  
 हन भक्तिसोमजी क नौहर में यह मण्डप बनवाने की थी ।  
 कृतनेरु ग्रामरु कहते व कि यहा जमीन रुम है, भोजन  
 मण्डप क निम्न उत्तरी दरवाजे के बाहर मण्डप बनवाना  
 जन्डा है, तन कतिपय सज्जनों की इच्छा महन्त साहब के  
 मठ में मण्डप बनवाने की थी । जास्तिर यह सज्जाल महाराज  
 साहन पर छोडा गया । आपने तीनों स्वानों को नजर में  
 निकाला और मठ क बाहर का बाड़ा और उसरु मामने वाली  
 जमीन पमन्द की । यहा क मठपति महन्त श्री अजितभा  
 रतीजी बडे ही गुणी और मिलनसार मञ्जन ह । आर  
 शैवधम क आचार्य होते हुए भी जैनधम क प्रशमर और सध  
 क प्रति सद्भाव रखने वाले विद्वान् सन्यासी है । प्रतिष्ठा  
 कराना निश्चित हुआ तभी से आपने यहा क सध को अपनी  
 तरफ से सभी तरह की मदद देने की महानुभूति दक्षित की  
 थी । महाराज साहन की पसन्दगी की जमीन पर प्रतिष्ठा  
 मण्डप बनवाने के लिये आप की तरफ से तुरन्त आज्ञा मिल  
 गयी । पूरु तरफ की गड की भीत तुडवा कर जमीन बाहर  
 क मैदान क साथ मिला दी गयी । यहा से कूटा क रूट दूर  
 करना दिया गया । ऊपर ऊपर की मुर्दा भली गुप्ता कर बाहर  
 फेंका दी गयी और उस जमीन पर मकडो गाडी ताजी शुद्ध  
 मिट्टी और नदी की गाल डलना कर मण्डप भूमि का तल  
 भाग ऊचा लिया गया ।

महाराज माह्य की सलाह मुनव मण्डप का प्लान बनाया गया था और उम्मी मुजब शुभमुहूर्त में मण्डप स्तम्भारोपण का कार्य आगे चलाया गया, और करीब एक महीने के अन्दर दृढविमान तुल्य सुन्दर मण्डप बन कर तैयार हो गया।

मण्डप के नीचे करीब ३२६८ रत्तीम मौ जडसठ घनफूट जमीन थी। मण्डप तीन भागों में बंटा हुआ था। सबसे पिछले भाग में रायी तरफ शुभुजय तीर्थ, दाहिनी तरफ गिरनार और मध्यभाग में तीन गद्युक्त ममयमरण की रचना की गयी थी। ये तीर्थ इतने तादृश बने थे कि मानों साक्षात् अपने मूलरूप में ही आकर खड़े हो गए हों। एक एक टाँक, एक एक ढक्कन और एक एक गढ़ किछेरा जाकार इस ढङ्ग से बना था कि जानकार प्रेक्षक देखते ही रह दते थे कि यह शुभुजय है और यह गिरनार।

पहाड़ों पर चढ़ने के मार्ग, बुधलताओं के दृश्य, जंगली जानवरों के दृग्गृह चेहर, बहते हुए झरनों और नदियों के दृश्य, जलकुंड और चलते हुए फुगारे देखने वालों को आश्चर्य चकित और आनंद भग्न बना देते थे।

मण्डप के मध्यभाग में करीब ६६५ घनफूट भूमिभाग पर नवीन मूर्तिया स्थापित करने और उन का विधि विधान करने के लिये वेदिस्थायें बनी थीं। यह मध्यवेदिमण्डप

मिहराजदार १२ दरवाजा ॥ सुशोभित था । इस के चारों ओर ७-७ फूट चौड़ी परिक्रमा रक्खी गयी थी ।

वटिका मंडप और पंच पोलिया के बीच मिहासन पर प्रतिष्ठित प्रतिमा स्थापन करने का स्थान और पंचपोलिया के सामने बाहर के भाग में करीब १४२६ घनफूट जमीन पर आलीशान मभामण्डप बना था । जहाँ पर गर्भये पूजा पढ़ाते, गायनमंडली गाती नाचती और दशरुगण जिनभक्तिरसा मृत का पान करते थे ।

मंडप के तीनों भागों में कुल मिलाकर २३ बगड़ीदार मिहराज वाले दरवाजे थे और ८ माद । मारा मंडप ऊपर से साद और नीचे से निनिध रगदार रखों से सजाया गया था ।

छोट बड काच के तगता, हाडिया, गोला, घुमर, मीना कारी पट्टियों और रंगीन पुष्पमालाओं में मंडप दबनिमान की तरह जगमगा रहा था । भीतर नाच ही प्रेनका री आरे चोंधिया जाता और चित्त प्रसन्न हो जाते थे ।

प्रतिष्ठामंडप के सामने एक आयादार मदान लगा हुआ था, जहाँ बड, नीम, इमली आदि के बड बड वृक्ष लहरा रहे थे माना कुदरत ने ही पानिमां के लिये घनी छाया कर रक्खी थी । करीब १०००० दश हजार मनुष्य इस आया में सुखपूर्वक बैठ सकते थे । मैदान के पूर्र भाग में एक मीठे



थानों की यात्रा की और उत्तरभाग में गोल का प्रसिद्ध मठ, उसका चाग और कुआ। इन सब कारणों से प्रतिष्ठामण्डप और उसके आगे पाम का दृश्य अतिशय मनोहर लगता था और दिन रात वहाँ मनुष्यों की भीड़ लगी रहती थी।

## १४ समितियों की पुनर्नियुक्ति

भिन्न भिन्न कार्य भिन्न भिन्न समितियों के सुपुर्द करने की बात हम ऊपर लिख आए हैं। उन कामों में से बहुत से काम प्रतिष्ठा के पहले करने के थे, जब एन रे काय प्रतिष्ठा के पहले ही समाप्त करके समितियों नियुक्त हो चुकी थी। इन महोत्सव निरुद्ध आने पर बहुत से अन्य कार्य उपस्थित हुए थे, इसलिए उन नियुक्त समितियों के सभ्यों से नयी समितियाँ नियुक्त की गयीं।

### (१) मुकाम-डेरा-समिति—

इस समिति में ४ सभ्य थे। आगन्तुक महमानों के ठहरने के लिये महाजनो और अन्य लोगों के मकानों को खोलवाना, उनको झड़वा झुड़वा के ठीक करना और आने वाले महमानों का वहाँ मुकाम करवाना इत्यादि इस समिति का कार्य था।

## (२) मार्गसफाई-समिति—

इस समिति में दो सभ्य थे । गांव भरके मार्गों को ठीक ठाक कराना, मार्ग में पड़े हुए पत्थर, लकड़ी, सामान को उठवा कर मार्ग खुला कराना, पड़े हुए बड़े कंकड़ दूर फेंकवा कर मार्ग की सफाई कराना और उत्सव दिवसान दीना टाइम वहां पानी छिड़कवाना इस समिति का कार्य था ।

## (३) जलप्रबन्ध-समिति—

इस समिति में ४ सभ्य थे । जहां जहां महमान ठहरें हो उन तमाम घरों में जल भराना, मार्गमें जगह जगह छाया करवाके जल के प्याउ बिठवाना, जल की रूई कमी तो नहीं है इत्यादि बातों पर ध्यान रखना इस समिति का मुख्य कार्य था ।

## (४) भगलघर-समिति—

इस समिति में ४ सभ्य थे । प्रतिष्ठा के विधि विधान में उपयोगी फल, मेवा, पूजामामथ्री आदि चीजा को सभाल कर भगलघर में रखना और जरूरी समय पर निकाल कर देना, औपधिया मंगवा कर पकृत करना और समय पर हाजर करना इस समिति का कर्तव्य था ।

## (५) पास प्रदान-समिति—

इस समिति में दो सभ्य थे। ठडार्द के मसाले, गर्म चाह पृत, दूध, गुड, शकर, आटा, दाल, चावल, ममाला आदि कुल भोजन सामग्री और घाम, गुवारतरी, पुलाव आदि चारे का पास काट देना इस समिति का काम था।

## (६) सीयासामान-समिति—

इस समिति में भी दो सभ्य थे। आटा, दाल, घी, गुड, शकर, उठे और गर्म ममाले आदि कुल मोदीखाने का सामान इस समिति के हवाले था।

सेवासमितियों, पूजा-भक्तिममितियां और गुजराती मह-मानों को ही नहीं बल्कि सर्वसभ को ही आम तौर से अर्ज कर दी गई थी कि जिनको मार्यजनिक भोजन पसंद न हो वे महाशय यथष्ट सीया मगवा लिया करें। यद्यपि इस समिति का काम चीट्टीमुजब सीधा देने का था, तथापि इनको हि दायत की गई थी कि जैन यात्रिक के लिए वह चीट्टी पास के ऊपर ही निर न रहे, इस कारण से बगैर घाम के भी जैन यात्रिक को उसकी इच्छामुजब यह सीधा तोल देती थी।

## (७) चारादान-समिति—

इस समिति में दो सभ्य थे। इस समिति का कार्य घाम

की गज्जी पर निगरानी रखना और पास लेकर आने मालों को मोटरों द्वारा घाम चारा दिलवाना था ।

हाथी, घोड़े, बैल, ऊट, झीरह को इस ममिति के द्वारा ही घाम चारा प्राप्त होता था ।

#### (८) रसोईघरनिरीक्षण-समिति—

इस समिति में पांच सभ्य थे । रसोई घर की निगरानी, रसोई के लिये जरूरी सामान और वतन हजार रखना, वची चुची रसोई को ठिकाने लगाना, रसोई के लिए ड्यून, मन्दूर हजार करना इत्यादि काम इस समिति के सुपुर्द था ।

#### (९) जिननिर्माणक समिति—

इस समिति में दो सभ्य थे । जयपुर जाकर नये जिन-निर्माण बनवाने का आर्डर देना, मिम्बों की तैयारी के लिये ताक़ीद देना और तैयार होने पर मिम्ब लेने जाना इस समिति का कार्य था । इस समिति की भाफ़्त करीब २५००) पच्चीस सौ रुपयाँ के जिनमिम्ब नये बनवाए गये थे ।

#### (१०) पूजा भक्ति-समिति—

इस समिति में ४ सभ्य थे । उत्सव के दिवसों पर पूजा पढ़ाने की तैयारी करना, स्नानिया को तैयार करना आदि काम इस समिति के सुपुर्द था ।

## १५ चिम्बों का आगमन

गोलनगर के दोनों जिन मन्दिरों के लिए कुल ११ जिन चिम्बों और ४ यध यधिणियां की मूर्तियों की जरूरत थी और प्रारम्भ में इनके लिये ही सारीगरा को स्वाम ओर्डर दिये थे । परन्तु बाद में दूसरे भी अनेक गांव नगरों के जैनसधों की जिनचिम्बों के लिए माग होन के कारण अधिक चिम्बों के लिए ओर्डर दिये गये थे । चिम्ब तैयार होने की खबर मिलते ही चिम्बनिर्मापक ममिति के दो मध्य उन्हें लेने के लिए जयपुर गये और चिम्बों को रेल्व पार्सलों में ले आए । कुछ चिम्बों का पालिम होना चाकी होने में दो दिन के बाद उन्हें सारीगरा खुद पहुंचाने आये थे ।

ओर्डर के चिम्बों के उपरान्त भी जयपुर में कुछ चिम्ब आये थे जो सभी खरीद लिये गए और भिन्न भिन्न गांवों के सधों की प्रार्थना में उनके गांव के नाम के अनुकूल लेख और लालन खुदवा कर प्रतिष्ठा में रख दिए गए थे । जयपुर के अतिरिक्त सीरोही, मेहमाना, मिनोर (गुजरात), जजमेर, गालेमर आदि दूसरे भी अनेक स्थानों में जैनचिम्ब प्रतिष्ठा अजनअलार्का के लिये आए थे । सिरोही से २५, मेहसाना से १३ पाषाण के चिम्ब आए थे । मिनोर से आये हुए चिम्बों में एक चिम्ब स्फटिकरत्न का था । इसके मिया चांदी की अनेक चौबीसिया, पञ्चतीर्थिया, षष्ठतीर्थिया, मिदूचक्र, अष्टमङ्गल

और सर्वधातु के छोटे झड अनेक जिन विम्ब मायिक आरुसर्वा की तरफ में नजदीक दूर से जाये थे । पाषाण और धातु के मिलकर २०० दो सौ के ऊपर विम्बसम्या हो चली थी ।

जयपुर से आए हुए सभी विम्ब प्राचीन शैली के और पके श्वेत पाषाण के होने से दखन ही दर्शकों के चित्त प्रमत्त हो जाते थे ।

### १६ स्वयंसेवक मण्डल

प्रतिष्ठामहोत्सव पर पन्ध्र होने वाले सप की भक्ति, वरघोड़ों की व्यवस्था और अन्य काम की उचित व्यवस्था के लिये स्वयंसेवकमंडलों को बुलाने का महाराज साहबने उपदेश दे कर योग्य सेनामंडलों को आमंत्रित करवाया था जिम में निम्न लिखित ३ सेनामंडलोंने आ कर कुल व्यवस्था अपने ऊपर ले ली थी ।

#### (१) श्री आदिजिन सेना मंडल-तख्तगढ़

सेना मंडलों में प्रमुख उपर्युक्त तख्तगढ़ का मंडल था । इस में मयारदों के ८० स्वयंसेवक (गालटियर्स) थे । दो सक्टेरी, केप्टन, सजानची आदि अधिकारी भी मण्डल के साथ ही थे । ये सभी अपना अपना काम देस पहिने और मने हुए थे ।

इस मंडल के लिये गोल क श्रीसचने २५ बैलगाडियों दो दिन पहले ही तखतगढ़ भेज दी थीं, इस से मंडल द्वितीय वैशाख शुदि १० क प्रभात समय में ही गोल आ गया और सघ के आग्रह से मयगदों और गाने के जुलूम क आकार में नगर में चक्कर लगाया, जिस से नगरनियसियों पर अपूर्व प्रभाव पड़ा और सामान्य जनता तो इस मंडल की पुलिस से भी अधिक ममझने लगी ।

(२) दूसरा मंडल जालोर का “श्री ओसनाल नवयुगक सेनामंडल” था । इस मंडल में कुल २५ स्वयंसेवक थे ।

यह मंडल वैशाख शुदि १३ को गोल आया और इसने भी प्रथमागत तखतगढ़ के मंडल के साथ हिलमिल कर सघ की सेवा बजाई ।

(३) तीसरा मंडल गोल का “श्रीपार्श्वनाथ सेना मंडल” था । यह मंडल यद्यपि नया था फिर भी पूजाक मण्डलों के साथ मिल कर इसने भी अपनी सेवा अर्पण की ।

### १७ मंडला की कार्यव्यवस्था

इन मंडलनि उत्तम पर जो सराहनीय कार्यव्यवस्था द्वारा सघसेवा की है उमका सपूर्ण वर्णन करना इस लेखिनी की शक्ति के बाहर की बात है ।

मंडल क मभी सभासद प्रातःकाल ४॥ साढ़ चार नै उठ जाते और जरूरी कामों से निवृत्त हो ५॥ साढ़े पाच से छ बने तक प्रतिष्ठामण्डप, दोनों मंदिर और भोजनमंडप विंगरह म चौकी पहरे की ड्यूटी भरण लगते थे, नौ बजने पर उन की जगह नये वालंटियर आते और वे अपने अपने कमरों में जाते। जलपान करके फिर वे अपनी अपनी ड्यूटी पर चले आते थे। इस प्रकार बारी बारी स मभी वालंटियरों को जुद जुद स्थानों पर पहरा भरना पड़ता और यह क्रम हमेशा रात क ११ बने तक रहता।

प्रातःकाल ७ से ९ तक और दो पहरे का २॥ मे ४॥ तक बरघोड क चढ़ावे गोल जात थे, यह भी सत्र कार्य सेना मंडल के अधिकार म था। चढ़ावे पूरे होते ही प्रतिष्ठामंडप क मैदान में दोनों समय बरघोड चढ़ते और नगर के मुख्य मार्गों में चक्कर काट कर फिर प्रतिष्ठामंडप के निकट आकर विमर्जन होत।

बरघोड विमर्जन होत ही खास खास स्थानों क पहरेदार वालंटियरों को छोड़ शेष मभी स्वयमेव भोजनमंडप में जाते और भोजन की पांत शुरू कराते। सत्र कामा में मेरामंडलों क लिए यह काम एक कसौती रूप था। एक माथ हजारों मनुष्यों की पांत कर जीमने बँठाना और उन को थालिया, गिलाम, जीमन, ग्राक तर्कारिया, चारल, दाल और पानी



आदि सब सामान पहुँचाना और यह भी बगैर मिले क, इन मेवामडलों के मित्र अन्य किसी से नहीं उन सस्ता। महो-  
त्म्य के आखिरी दिनों में जब कि महमाना की सग्या  
१५००० में २०००० तक पहुँच चुकी थी, इन मडलों ने  
जो तत्परता पूरक सेवा उठायी, इतनी विशाल जनसंख्या  
होने पर भी किसी चीज की कमी न आने दी, यह एक चिर-  
स्मरणीय प्रसंग है और विविध ग्रन्था के श्रीसूच जो वहाँ  
पधार हुए वे इस प्रसंग को कभी नहीं भूलेंगे।

### १८ बरघोडा (जुलूम)

हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं कि दोनों समय बरघोडे  
निकलते और उन की व्यवस्था स्वयंसेवक करते, परंतु इतने  
ही में बरघोडा की वास्तविकता का जवाब नहीं हो सस्ता,  
इस लिये यहाँ बरघोडे के सन्ध में कुछ लिखेंगे।

बरघोडा निकलने के समय जनसमुदाय इतना इरडा  
हो जाता कि देखने वालों को पता तक नहीं चलता कि इस  
भीड़ का रुई ठोर भी है या नहीं, इतने पर भी मेवामडलों  
की व्यवस्था इतनी उत्तम थी कि किसी को कुछ तकलीफ  
नहीं होने पाती।

बरघोडे में सब में आगे नगारा निशान चलता और  
अपनी प्रचंड ध्वनि में भीड़ को हटाता हुआ मार्ग करता जाता।

निशानडक के पीछे चलती हुई विविधवेश-भूषाभूषित घोडस्यारों की टुकड़ी प्रेक्षकों का ध्यान अपनी तरफ रखा करती।

घोडस्यारों के पीछे रथ, रकले, सहनगाड़ी, मोनाचादी का रथ आदि की कतार चलती हुई बरघोड की मध्यता प्रदर्शित करती।

रथगाडिया की कतार के पीछे डोल, थाली, तुरही, आदि दशी बाजा चलता और अपनी ध्वनि में प्रेक्षकों के हृदयों को हृष्यमान बनाता।

दशी बाजे के पीछे अंग्रेजी बड जाने गालों की टुकड़ी मयवर्दी के चलती।

इस के बाद दोनों हाथी अपने अपने साज शणमार के साथ १०-१०-१०-१२ सवारियाँ लिये मदगति से चलते हुए बरघोड की शोभा को बनाने लगे।

इस के बाद भगवान की पालकी और पुरुषार्थ ताल, डोलक के साथ भक्तिमय गाने गाता चलता था।

पुरुषार्थ के बाद सोना चांदी के मेरु, कल्पवृक्ष, पारणा, सुपन आदि विविध साज उपाड हुए मधुर गीत गाता स्त्री मंडल चलता। इस मंडल के चारों तरफ स्वयंसेवक स्त्रियाँ फोर्डन बना कर बड़ी मुस्तेदी के साथ चलते थे।

खीमडल के पीछे मामान्य जन गण चलता था ।

इस प्रकार की व्यवस्था के साथ उसघोड़ा निकलता तो दर्शकगण की इतनी भीड़ होती थी कि इसमें उधर जाना मुश्किल हो जाता, फिर भी स्वयमेवमा की तत्परता से उसमें किसी तरह का रुष्ट या नुस्मान नहीं होने पाता था ।

### १९ पुलिसपाटी का दन्तजाम

यद्यपि सभी स्थानों में मेयामडल अपनी तत्परता में चौकी पहर भरते रहते थे, फिर भी गहर और खाम करने रात्रि के समय पुलिस भी अपनी डगुटी बजाती रहती, पुलिस सुप्रिन्टेण्डेंट, पुलिस सपइन्स्पेक्टर और कान्स्टेबल मिल कर करीब ३५ पुलिसमैन तो स्टैंट के और उतने ही चौकी पहरदार ठिकाने गोल के तथा १०—१२ खानगी आदमी मिल कर ७०—८० आदमी दिन रात चौकी पहर का काम करने थे । इस के अतिरिक्त गोल के चारों ओर मार्गों में भी चौकियाँ बिठा दी थी, जिससे दिन-रात किसी भी समय कहीं भी जाने जाने वालों को चोर लुटरो का भय न हो । इतना होने पर भी पुलिस के सत्रा दिन रात गांव में और जंगल में गस्त लगात रहते थे । इस उत्तम प्रयत्न का ही परिणाम था कि सफ़ा गांवों में हजारों मनुष्यों के इन्ट्रे होना पर भी कहीं भी लूट खोस या चोरी का नाम तक सुनने में नहीं आया ।

## २० जागीरदारा की महानुभूति

पुलिसपाटा के उपरान्त उत्सव के दिनों में आम पाम के जागीरदार माद्यों की भी पूरी महायत्ता और सहानुभूति थी, वे अपनी अपनी हदम तो चौकी पहरे से इन्तजाम करते ही थे, परंतु अनेक ठाकुर साहब तो गोल के श्रीमंथ के आमंत्रण से मान के उत्सव में भाग लेने गोल भी पधार गये थे, जिन में कई ताजिमी ठिकानों के मोनानवीस थे, इन में राकग ठाकुर साहब की महारानी विशेष उल्लेखनीय हैं, आप अपने ठिकाने के करीब सेन घोड़े लेकर गोल पधार थे और इन्हीं घोड़ों से प्रतिष्ठा के बरघोडे की शोभा अधिष्ठ रक्ती थी।

## २१ सदृशी-दवाखाना

उत्सव की तैयारी मुजब पहल हा जागाही मिल चुकी थी कि गोल में एक बड़ा भारी मेला होनराला है। इस मेले में पधारन वाले महमाना में से किन्हीं से कुछ भी शारीरिक तकलीफ हो जाय तो उन की सेवा चिन्तिमा के लिये गोल में एक छोटासा सदृशी दवाखाना भी खोल दिया था, जिन में जरूरी दवाइया तैयार रखी थी। इस दवाखाने में डाक्टर त्रियुत लाभशम्भरजी आचार्य उलावे गये थे जो 'आयुर्वेदिक' और 'एलोपैथिक' इन दोनों पद्धतियों के एक अनुभवी चिकित्सक हैं।

दयगुरु की कृपा और श्रीपार्थनाथ भगवान् के अतिशय से उत्तम के दिनो में ऋतु इतनी अनुकूल और सुखदायक रही कि उक्त दयाखाने का शोभा बढ़ाने के अतिरिक्त कोई उपयोग नहीं हुआ। यद्यपि दयाखाना जाहिर रास्ते पर था और उम के द्वार पर “स्वदेशी-औषधालय” इस प्रकारका बोर्ड लगा दिया जा तथापि उत्सव के दर्मियान किसी के माया तक नहीं दुखा और दयाखाने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

## २२ ऋतु की अनुकूलता

गर्मी का समय मारवाड के लिये अतिशय प्रतिकूल ऋतु है। इस मौसम में मरत ताप और प्रचण्ड आधियों से मनुष्य प्रायः बेचैन रहा करते हैं, और इस वर्ष तो वर्तमान पत्रों में कई भविष्यवाणियों भी छप चुकी थी कि द्वितीय वैशाखशुद्ध ६ के दिन बड़ा भारी भूकम्प और आधियों आने के योग्य है। इन उड़ती बातों से मनुष्य और भी चौकन्ने हो गये थे कि प्रतिष्ठा के दिनों में क्या होगा और क्या नहीं। द्वितीय वैशाखशुद्ध ७-और ८ की दो दिन हुआ इनने जोगे की चली कि लोग और भी मशक हो गये, आ जा कर महाराज से पूछत—‘गुरुमहाराज ! अगर इसी प्रकार हुआ चलती रही तो सब कैसे झट्टा हो सकगा ?’ भोल भाविक मनुष्या की इस बेचैनी पर महाराज साहब फरमाते—‘गभराओ मत, गुरुदय की से मन ठीक होगा।’ और सचमुच मन ठीक

ही हुआ, नगमी से हवा कम होन लगी और ठगमी तक बहुत ही कम हो गयी। एसादशी के प्रभातसमय में हवा उम प्रमाण पर जा गयी जितना कि उम श्रुतु के लिए जरूरी थी। इस हवा के चलने से श्रुतु में सामा परिवर्तन हो गया। पहले लू और मरत ताप से जो घबराहट होनी थी वह बिल्कुल मिट गयी। वातावरण इतना ठंडा हो गया कि रात के समय अस्सर जोड़ कर मोना पड़ता था और यह श्रुतु की अनुकूलता प्रतिष्ठामहोत्सव समाप्त हुआ और सब अपने अपने स्थान पहुँचा तब तक रही।

## २३ कार्यों का प्रोग्राम

यद्यपि उत्सव में होनेवाले कार्यों का प्रोग्राम पहले ही निश्चित कर के कुटुम्बपत्री में छपाया लिया था और हमशा उमी मुजन कार्य होते रहते थे, फिर भी उन कार्यों के निमित्त जो जो चीज सामग्री जरूरी होती उन की सूचिया बना कर पहले ही तिन महाराज माहुर अधिकारी समितिवा को सुपुर्द कर देते थे, जिस से योग्य सामग्री पहले ही तैयार करके रख दा जाती थी। इन्द्र इन्द्राणिया का प्रोग्राम भी इ वीं सूचियों में लिख दिया जाता था।

नवीन बिम्बों पर वैशाखगुदि १ के दिन से सस्कार होन लगे थे परंतु कुछ मूर्तिया गुदि २ के शाम को आयी थी इस

राग लेख लाछन सुदवाने के बाद व शुदि ३ के दिन विधि में शामिल की गया और उमी दिन प्रथम ज्यवन और जन्म कल्याणरु के संस्कार करके फिर मंत्र पर तीसरे दिन का विधान किया गया था। इन के सिवा सभी कार्य कुकुमपत्री में लिखे मुनत्र ही किये गये थे।

## २४ क्रिया-विधान

प्रतिष्ठा-अजनशलाका सन्धी जो जो क्रिया-विधान माधु से हो सकता था वह तो महाराज श्रीकल्याणविजयजी तथा मुनिश्रीसौभाग्यविजयजी के ही हाथ में होता था, परन्तु जो कार्य गृहस्थोचित होते व श्रेष्ठ नगीनभाइ और उन के सहकारियों के हाथ में होते थे।

यद्यपि कुकुमपत्री में महाराज साहज के हाथ नीचे क्रिया-कारक के तौर पर गुरु साहज श्रीभक्तिमोमजी का नाम ठप था, परन्तु ९० भक्तिमोमजी रुई महीनों में बीमार होने में क्रियाविधान करने के लिये छापी (उठोदा) से श्रेष्ठ नगीन भाइ को बुलाने का प्रयत्न महाराजसाहज ने पहले ही कर लिया था और नगीनभाइ द्वितीयश्रावणशुदि ११ के रोज अपनी महदामीमडली के साथ वहा पधार गये थे। चैत्यवदन, मंत्रन्यास, मुद्रा, जिनाह्वान, रामश्लेष, नेत्रोन्मीलन आदि जो जो कर्तव्य गुरुमहाराज के रग्ने योग्य होते थे सब

महाराजसाहब स्वयं कर लेते थे और रलियेप, नवद्य दौमन, पुष्पाचलि, जगचर्चा, पूना आदि जो जो कृत्य श्रावक के करन योग्य होते वे सभी श्रेष्ठ नगीनभाइ और उन के सहकारी करते थे । गुरु और श्राद्ध दोनों त्रियासगुरु अपने अपने काया में कुशल होने में विधि विधान बहुत ही शान्ति और निरामयतापूर्ण हुआ करता था ।

### २५ पूजा-भक्ति

द्वितीय वैशाखदि ११ के दिन शुभमुहूर्त में प्रतिष्ठामण्डप में मिहामन स्थापित किया गया था और उस में पूर्वप्रतिष्ठित जिनप्रतिमा पधार कर उसी दिन स वृकुमपत्री में लिखे मुजन भिन्न भिन्न पूजायें पढ़ा कर भगवान की भक्ति की जाने लगी थी ।

यों तो गोल में तथा बाहर में जाये हुए सध में पूजा पढ़ाने वाले बहुतसे गँवये थे, तथापि पूजाभक्ति को अधिक रोचक बनाने के लिये पूजा पढ़ाने के लिये पालिताणा के प्रसिद्ध गँवये श्रीयुत नदलालजी बुलाये गये थे । इन गँवयाजी को जिन्होंने पूजा पढ़ाते सुना है वह ही इन के गाने की सुनियो जानते हैं । हम रसात्मक विषय का कलम से लिखना असम्भव है । जय य हारमोनियम के साथ पूजाओं की ढाल गाने लगते थे हजारों आदमियों की सभा स्तब्ध सी हो कर चुपचाप सुनने



लगती थी । अच्छे अच्छे गाने वाले भी इन के सामने गाने का साहम नहीं करने पाते थे, फिर भी ये स्वयं अन्य गायों को भी गाने के लिये ममय देते थे ।

पूना हारमोनियम, दुकड़, खजरी, ढोलक, ताल आदि मर माज के साथ पढ़ाई जाती थी ।

## २६ रोशनी

यों तो रात्रि के ममय मारे नगर में गैम भी किस्मन बत्तिया लगती और सर्वत्र चराचोंध प्रकाश हो जाता था, परंतु प्रतिष्ठामण्डप भी रोशनी भी तो उठा ही ओर होती थी ।

बाहर का मैदान और मभामण्डप तो किस्मन लाइटों से चराचोंध हो जाता था और मध्यमण्डप रंगरेखी काच की हाडियों और गुमर में जो बत्तियाँ लगती उन में देदीप्यमान हो जाता । वेदिसाजों की मिनाकारी-जड़ित मण्डपिकाओं पर जो सेंकड़ा धीजली के ग्लोब लगते उन के प्रकाश में तो मानों अयोध्या का सा दृश्य उपस्थित हो जाता था । गीनली की बत्तियों के उज्ज्वल प्रकाश में हांडी, गुमरों के तैल के दीपक चद्रयुक्त आकाश में तारों के से शोभते थे । उन के प्रतिविम्ब जो काच के तरतों पर पड़ते उन से लोगों को भ्रान्तिहीन हो जाति कि अमली दीपक कौन हैं और

विषय कौन ? इस दृश्य को देख कर दर्शक स्वर्गविमानों की कल्पना करते और उन के अस्तित्व का अनुमान लगाने लगते थे ।

### २७ भावना-बैठक

दिन के समय निम्न प्रकार पूजाभक्ति का ठाठ जमता उसी प्रकार रात्रि के समय करीब पहर रात तक सभामण्डप में भावना की बैठक होती थी । इसके लिए पालिताणा से श्रीनिन्दत्तधुरि-ब्रह्मचर्याश्रम की संगीतमण्डली बुलाई गयी थी, जो सर्वमान्य के साथ द्वितीय गैशायरदि ११ को ही उड़ा पहुँच गयी थी । मण्डली में ८ तो समयस्क ( समाप्त अवस्था के ) विद्यार्थी थे और बाकी मैनेजर, मास्टर, रजिस्ट्रार गैरह, कुल १० आदमी थे । यों तो मण्डली वाला दिन के समय भी पूजा में जबरन आया करते थे, परन्तु रात्रि के समय जहाँ के हम के साथ जब व सभामण्डप में आते लोग नृत्य (नाच) देखते और संगीत सुनने के लिए अर्धीर हो जाते और सभा मण्डप के उपरान्त बाहर का मैदान भी दर्शकों में ठमाठम भर जाता ।

करीब रा॥-३ घंटा तक मण्डली अपनी कला के साथ भक्तिभाव काती । रामक्रीड़ा, डडीखेल, खालीभ्रमण, रस्मी गुथन आदि अपनी कुशलतायुक्त कलाओं के प्रदर्शन के साथ

यह जो नाचती, गाती और सवाद करती उस से सभा चित्र लिखित सी हो जाती और वहा से उठने का मन नहीं करती।

द्वितीय-वैशाखवदि १४ के दिन श्रीपाश्वनाथ विद्याभवन-तीखी (भारगट) की संगीतमण्डली भी वहा आ पहुची और तीन दिन तक अपने नृत्य, गान और त्रिभिधकलाप्रदर्शन पूर्वक भगवान् की भक्ति करती रही।

तीखीमडली तीन दिन क उपरान्त दूमरे गान चली गयी थी परन्तु पालीताणामण्डली तो आखिर तक वहा रह कर भगवान् की भक्तिद्वारा मनुष्यो का मनोरजन करती रही।

### २८ श्रीपूज्यधरणीन्द्रसूरिजी का आगमन

उत्तर के दिनों में जयपुर की खरतरगच्छीयगादी के पुत्राचार्य श्री धरणीन्द्रसूरिजी गोल से ४-५-कोश पर ही थे, परन्तु इस बात की महाराजसाहब से या गोल के श्रीसच को खबर नहीं थी, इस कारण उन्हें आमत्रण नहीं दिया जा सका, सूरिजी बाकरा से रत्तदा पधारे और वहा से उन के रोट्यालजी और एक अन्य यतिजी महाराजसाहब के पास आये और श्रीपूज्यजी ॥१॥ और उन की गोल पधारने की इच्छा ॥२॥ ॥ साहबने उमी समय गान के- ॥३॥ ४ पचो ॥ श्री पूज्यजी को कुटुम्बपरी देने

उपदेश किया, पक्षों ने महाराज का उपदेश शिरोधार्य किया और दूसरे दिन प्रभातसमय कुकुमपत्री लिख कर कोटवालजी को दे दी, शाम को श्रीधरणीन्द्रसरिजी भी सह परिवार गोल पधार गये और श्रावक सघने मत्कारपूर्ण नगर में ले जा कर तपागच्छ कर उपाश्रय में मुशाम करवाया ।

श्रीपूज्य महोदय नरयुवान होते हुए भी शिक्षित और शान्तप्रकृति के सज्जन हैं । आप प्रतिष्ठा-सबन्धी क्रियाविधान दखने और भगवद्भक्ति में भाग लेने को प्रतिष्ठामण्डप में पसारा करते थे ।

## २९ महारात्रि के चढ़ावे

मारवाड में निगाह या प्रतिष्ठा के लग्न दिन से पूर्वदिन की रात 'महारात' (महारात्रि) कहलाती है, क्योंकि प्रकृत उत्सव की अन्तिम रात्रि होने से उस में अधिक धामधूम और जागरण होने की सज्जह से वह लंबी चौड़ी हो जाती है ।

प्रस्तुत जवनशलाभा-महोत्सव की महारात भी उत्कृष्ट धूम धाम और विविधप्रकार के चढ़ाव बोलने के कारण सब कुछ 'महारात' हो गयी । दोना मदिरों में मूर्तियाँ विराजमान करने, घण्ट दड कलश चढ़ाने, तोरण वादने आदि के कुल चढ़ावे इसी रात्रि में बोलें गये । इस रातमें भाग्यशालि श्रावका

चढ़ावे बोल कर अपनी लक्ष्मी का जो मनुष्ययोग किया उस विवरण नीचे मुजब है ।

(१) श्रीपार्श्वनाथजी के मंदिर के चढ़ावा के आदेश—

४०१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर ऊपर पञ्चा चढ़ाने का आदेश मुहता नेणमल, मिश्रीमल, गणेशमल, मुहता बपूरजी के बेटों पोतों ने लिया ।

४०२) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर के शिखर पर सुवर्ण-फलश (इडा) चढ़ाने का आदेश मा० गोमाजी, चुनीलाल, बनराज, मोनमल, दानमल, सा० आशाजी के बेटों पोतों ने लिया ।

४०३) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर के मंडप पर फलश (इडा) चढ़ाने का आदेश मुहता भीमाजी, खेतमल, जावतराज, कमलचंद, मुहता दवाजी के बेटों पोतों ने लिया ।

४०४) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर के दूसरे मंडप पर फलश (इडा) चढ़ाने का आदेश मुहता हरकचंद, इंदरमल, चुनीलाल, मुहता भूताजी के बेटों पोतों ने लिया ।

- १००१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर ऊपर चोमुखनी की दहरी पर कलंग (डडा) चढ़ाने का आदेश भगशाली मुहता जुहारमल, पीरचद, पुखराज, मु० कुरताजी के बेटों पोतने लिया ।
- १००१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर पर दह चढ़ाने का आदेश बुद्धि० सा० भीमराज, रिखरदाम, मा० जुहारमलजी के बेटों पोतने लिया ।
- ३४५१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर में मूलनाथजी श्री पार्श्वनाथ भगवान् विराजमान करने का आदेश मुहता मेघराज, भगाजी, जनाजी, हजारामल, माण० रुचद, मिश्रीमल, कुदनमल, घेवरचद, गांधी मुहता मोतीनी के बेटों पोतों ने लिया ।
- १३०१) रुपया में पार्श्वनाथजी की दाहिनी (जीमणी) तरफ श्री शान्तिनाथ भगवान् विराजमान करने का आदेश बुद्धि० सा० जगानमल, अखयरज, भूरमल, सुखराज मा० तरानी के बेटों पोतों ने लिया ।
- ११२५) रुपया में पार्श्वनाथजी की बायीं (डाही) तरफ चंद्र प्रभस्वामी विराजमान करने का आदेश मुहता भला जी, पुखराज, मुहता गुलवाजी के बेटों पोतों ने लिया ।

- ८५१) रुपया में चौमुखजी में पहला बिंदु स्थापित करने का आदेश मुहता हीराजी, मिश्रमल, रिखरदास, सुखराज, जाटदानमल मिश्रीमल, फूलचंद, पात्ममल, मुहता जमाजी के बेटों पोतों ने लिया ।
- ७५१) रुपया में चौमुखजी में दूसरा बिंदु स्थापित करने का आदेश नृपिया मुहता भूनाजी दानाजी ने लिया ।
- ७५१) रुपया में चौमुखजी में तीसरा बिंदु स्थापित करने का आदेश सूजाणी मा० उमाजी प्रेमचंद हुनरमल सूजाणी प्रतापजी के बेटों पोतों ने लिया ।
- ५५१) रुपया में चौमुखजी में चतुर्थ बिंदु स्थापित करने का आदेश जीराबला सा० तिलोरचंद, मिश्रीमल, दलीचंद सा० किसनाजी के बेटों पोतों ने लिया ।
- १२५) रुपया में गभार के अंदर खचक (आले) में बिम्ब स्थापित करने का आदेश मुहता अनाजी, मेघाजी, दमाजी, गणेशमल, हरखचंद, मिश्रीमल, सुखराज, सिरदारमल, उस्तीचंद साकलचंद, मुहता हिन्दुजी के बेटों पोतों ने लिया ।
- ६५१) रुपया में गभारे के अंदर दूसरे खचक (आले) में बिम्ब स्थापित करने का आदेश मा० मगाजी, सेदाजी,

समिलचद सा० अमराजी के बेटों पोता ने लिया।

१२५) रुपया में श्री पार्श्वनाथजी के मंदिर में अधिष्ठायक श्रीपार्श्वनाथ स्थापन करने का आदेश सा० वीरमजी दानाजी ने लिया।

१०१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर में अधिष्ठायिका श्री पद्मारती देवी स्थापन करने का आदेश सा० भगजी लखमाजी ने लिया।

१५०१) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर तोरण चढ़ाने का आदेश श्रीसाधुनिचामी लूणिया मुहता घेलाजी, नेणमल मुहता बर्जीगजी के बेटों पोता ने लिया।

२५०११) रुपया में पार्श्वनाथजी के मंदिर का द्वार खोलने का आदेश मुहता पूनमचद, भीमराज, सुखराज, कैरल-चद, मुहता रेखचदजी के बेटा पोता ने लिया।

(०) श्री कृष्णमदवजी के मंदिर के चढ़ावों के आदेश—

३२०१) रुपया में श्रीकृष्णमदवजी के मंदिर पर ध्वजा चढ़ाने का आदेश सा० दीपचद, नेणमल, भूरमल, ध्वजा-णी मूलाजी के बेटा पोता ने लिया।

। में (इडा) चढ़ाने का आदेश सोलफी प्रागजी,



जीतमल, सुरतानमल, पुखराज, पारममल, सरूपजी  
क बेटो पोतो ने लिया ।

३६०१) रुपया में मण्डप पर कलश (डडा) चढ़ाने का आदेश  
सा० गणेशमल, हरखचद, भीमराज, जोशतमल,  
घेखरचद, मीठालाल, भणशाली सुरताजी के बेटों  
पोतो ने लिया ।

१२०१) रुपया में दड चढ़ाने का आदेश मुहता मिश्रीमल,  
शिवराज, फूलचद, नेणमल, बदा मुहता मैषाजी  
के बेटों पोतोंने लिया ।

८०१) रुपया में श्रीरूपभद्रजी की दाहिनी (जीमणी)  
तरफ जिनबिम्ब स्थापन करने का आदेश सा०  
हिम्मतमल, हजारीमल, मानमल, लक्ष्मीचद, घेख  
रचद, सा० रायचदजी के बेटों पोतोंने लिया ।

९५१) रुपया में श्रीरूपभद्रजी की बायी (डायी) तरफ  
जिनबिम्ब स्थापन करने का आदेश मुहता तिलो-  
कचद, लखमीचद, मुहता जुहारमलजी के बेटों  
पोतो ने लिया ।

८०५) एक अधिक जिनबिम्ब स्थापन करने का आदेश  
श्री खतदानियासी सा० मरूपजी, खिखदास,  
सा० , , , बेटों पोतों ने लिया ।

११५१) रुपया में श्रीरूपभद्रजी के मंदिर तोरण वादने का आदेश श्री माधु निपासी मुहता गीठाजी, सोन मल, मागरमल, मुहता परस्वाजी के वटा पोतो ने लिया ।

२०१) रुपया में श्री रूपभद्रजी के मंदिर में श्री गोमुख यक्ष स्थापन करने का आदेश लुणिया मुहता श्रीकमजी, चूनीलाल, भानमल, जयानमल, दीपचंद, मुहता मूलाजी के वटा पोतो ने लिया ।

१७१) रुपया में श्रीरूपभद्रजी के मंदिर में श्री चक्रेश्वरी देवी स्थापन करने का आदेश सा० छोगाजी बच्छाजी ने लिया ।

ऊपर के दोना मंदिरा सभन्धी बुल चढावे द्वितीय वैशाख शुदि ४ की रात में बोले गये थे, और उसी समय सकडा गाम नगरों के श्रीसच की मभामें इन चढारा के आदेश अतिम बोली बोलने वालों को दिये गये थे ।

बड समय ही अपूर्वउत्साहजनक था । भाग्यशाली श्रावक अपनी लभ्मी का सदुपयोग करने के लिये एक एक से आगे बढ़ते थे और जब किसी भी चढावे का आदेश उन को मिलता तब वे इतने आनंदित होते थे माना उन्हें किसी अपूर्व पदार्थ की प्राप्ति हुई हो ।

रात को करीब तीन बजे के समय महाराजी की यह सघमभा विमर्जन हुई थी और गोल श्रीसंघ के आगमन उसी समय से द्वितीय दिन के कार्यों में प्रवृत्त हुए थे।

### ३० पंचमी का भगल-प्रभान

संवत् १९९१ के द्वितीयवैशाखगुस्लपंचमी का प्रभात अपूर्व भगलसमय था। जैन संघ के ही नहीं मनुष्यमात्र के मुख पर उस समय एक प्रकार की प्रसन्नता छापी हुई थी। जिन जिन भाग्यवानों ने रात्रि के समय चढ़ाए गोल व व सर स्नानमञ्जनपूर्वक शुद्धवस्त्र पहन कर तैयार हो रहे थे।

महाराजमाह्व भी आज बहुत जल्दी से अपने आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो कर प्रतिष्ठामंडप में पधार गये थे। जिन विम्बा के अधिवासनापर्यंत के संस्कार पहले हो चुके थे, आज जजनगुलाफाद्वारा नेत्रोन्मीलन कर करलज्जान और निर्माणकल्याणक की विधि करना शेष था। इन कामों के उपयुक्त सर मामंत्री पहले ही से तैयार करना रसमी थी। शेष विधान पूरा करने के उपरान्त जजनगुलाफा का लग्न और नवाश आते ही मुनिमहाराज श्रीकल्याणविजयजीने सुर गणेशलाफा से श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की जजनशलाफा की। बाट में शेष सभी जिनविम्बा के भी जनन कर नेत्रोन्मीलन किया। यह कार्य बड़ी शान्ति और शुभ निमित्तों में हुआ।

महाराजसाहब की इस विधान क मत्राटि कण्ठस्थ व, इस कारण कार्य शीघ्रतास समाप्त हो गया । तुम्हें ही निर्माणक कल्याणक की विधि करके आपन मंगलगाथापाठ किया और बाद में स्थापनीय-चिम्बो को पालकियों में प्रसजमान कर मंदिर की तरफ रवाना किया ।

### ३१ चिम्ब-प्रवेश और स्थापन

चिम्बस्थापन क, ध्वजा दंड कुलशु चढ़ाने के और तोरण बादने आदि क चढ़ाव निन्हा ने सोल व, उन्हें पहले ही हिदायत कर दी थी कि वे ख्यादय होते ही तैयार रहें । चढ़ाना सोलन गल समय पर जा पहुँचे थे । शेष मघ और मामान्य जनममुदाय इस मंगल कार्य क दर्शन के लिय पहले ही उत्सृण्ठित हो रहा था । प्रतिष्ठामण्डप और मंदिर तक इतनी भीड़ जमा थी कि तिल रखने की जगह नहीं, तथापि स्वयंसेवकों की दुशलता से जुल्म चलने का रास्ता हो जाता था ।

प्रतिष्ठामण्डप से स्थापनीय चिम्बा क लिय महाराज साहब साथ उरघोडा मंदिरजी पहुँचा । वहाँ से मुनिमहाराज श्री कल्याणविजयजी श्रीपार्श्वनाथजी क मंदिर में पधारे और मुनि श्रीमौभाग्यनिनयजी श्रममंदरजी क मंदिर में । चिम्बों का सामेला रवाना होने क बाद तोरण बादा गया और द्वार

पर पुराणे की विधि के बाद मित्र मंडप में ले जाये गये ।  
स्थापना की जगह पर सब कुछ कार्य पहले ठीक कर दिया  
गया था और तात्कालिक विधि उस वक्त्त कर करना क शुभ  
-लग्न-नवाशक का समय आते ही दोनों मंदिरों में चढ़ाव  
गोल कर आदेश लेने वालों के हाथों से जिनमित्र विराजमान  
कराये गये, ध्वजा, दंड, कलश चढ़ाये गए । यक्ष यक्षिणी  
स्थापित कराये गये । स्थापित जिनमित्रादि पर मुनिमहाराज  
श्रीरत्न्याणविजयजी तथा मौभाग्यनिनयनी के शुभ हस्तों  
से वामक्षेप हुआ । याचकों को निपुल दान दिया गया, तब  
गगनभेदी जयनाद करती हुई लोगों की भीड़ वहां से कुछ  
हटने लगी ।

### ३२ याचकदान

प्रतिष्ठा जैसे उत्सवों में 'याचकदान' भी अपना खास  
स्थान रखता है ।

जब से अजनशलाका-महोत्सव शुरू हुआ तभी से याच  
कदान भी जारी था । भगलकलशस्थापना पर, ग्रहदिग्पा  
लादिपूजन पर, अभिषेक पर, दीक्षामहोत्सव विधि आदि के  
प्रसंगों पर याचकदान करने की प्रवृत्ति परम्परा से चली  
जाती है । इन प्रसंगों पर तो भोजक, दाक्षिण और पूजक आदि  
को दान दिया जाता ही है, परन्तु का खास प्रसंग तो प्रतिष्ठा

है, उस समय उसयुक्त जातियों के अतिरिक्त शिल्पि का भी पारितोषिक दान (इनाम) दिया जाता है। जजनशलाका जैसे महोत्सवों में इस प्रसंग पर मुँडका रूपया का दान देना पड़ता है, गोलनगर में भी श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा और स्थापना के समय वैसा ही हुआ, मन्त्र याचक दान से सतुष्ट किये गए।

इस के बाद मन्त्र स माकृता का दान मुँडका दान है। अर्थात् प्रतिष्ठा होने के बाद प्रतियाचक कुछ दान दिया जाता है जो 'मुँडका' कहलाता है। खास तो मुँडका दान देने की रीति सेवका के लिए ही प्रचलित है, परन्तु आज कल यति लोग भी मुँडका लेते हैं और उन के मुँडके की रक्कम सेवका के मुँडके की रक्कम से दोगुनी होती है। अर्थात् सेवका को प्रतिमनुष्य एक रूपया दिया जाता है तो यतियों को दो, सेवका को दो तो यतियाँ को चार। मारवाड में याचकों में मन्त्र से अधिक सग्या सग्या की, उन के बाद यतियों की, फिर श्रीमाली ब्राह्मण, भट्ट ब्राह्मण, भोजर, रावल आदि जातियों के नम्बर होते हैं।

गोल के महोत्सव पर सग्या की सग्या ५०० पाच सौ के लगभग थी। यतियाँ की १०० एक सौ की। श्रीमाली, भट्ट, रावल, भोजर आदि प्रत्येक की सग्या सौ के अदर थी। गोल के सघने सेवका को प्रति मनुष्य ३ रूपया मुँडका

दिया यतियों को प्रतिमनुष्य-६-६ रुपये दिये । ब्राह्मण, रामल आदि को प्रतिमनुष्य १-१ रुपया दिया और भोजनों को एक मुक्त दान दिया ।

इन याचकों के उपरान्त माखाड में हिडोला, नानक-शाही, जोचड आदि अनेकप्रकार के मनुष्य आते हैं जो कुछ न कुछ लू ही जाते हैं ।

गोल के थीसयने प्रतिष्ठामहोत्सव पर कुल ३०००) तीन हजार से अधिक रुपया का याचक दान दिया ।

### ३३ इन्द्र महाराज का आगमन

दश दिन पूरी शान्ति में बीते, न ज्यादा हवा चली, न गर्मी पड़ी और न ठण्डि हुई । इस पर लोग कहने लगे—‘सब कुछ ठीक रहा, पर हम माँके पर इन्द्र महाराज का पधारना जरूरी था ।’ अर्थात् माखाडवासियों की कुछ ऐसी मान्यता है कि प्रतिष्ठा-अञ्जनशलाका के प्रसंग पर गौड़ी बहुत धृष्टि होना शुभ शङ्कन है । ऐसा होने से प्रतिष्ठा निधिपूर्ण हुई यह समझा जाता है ।

द्वितीयद्वाराशुदि ५ मी को रात्रि के करीब दश बजे थे । प्रतिष्ठामण्डप के सामामण्डप में गायन मण्डली नाचगान कर २५ हजारों मनुष्यों की सभा २ भाग

एकतान से दख-सुन रही थी। हजारों की मानससख्या होने पर भी मिरा गाने के और जोई आवाज उठा नहीं थी। ठीक उन्ही समय पश्चिम दिशा में एकायक मेघगर्जना सुनाई दी। थोड़ी सी आधी के साथ बादल की घटा भी ऊपर चढ़ती हुई दखने में आयी और बिजली ने भी अपनी चमक से लोगों को चमका दिया। शान्त सभा एकदम क्षुब्ध हो गयी। उत्पातों की भविष्य वाणी के स्मरण से लोगों में भगदड़ मच गयी। परंतु कुदरत की भी उल्लिहाही है। लोग सभा से पूरे उठने भी न पाये ये निष्पाद की घटा दो दो चार चार छाट डालती हुई ऊपर होकर चली गयी। यद्यपि वहां से दश पदरह कोश पर इस भयराज ने काफी जल वर्षाया और वायु देव ने भी अपना जच्छा रल आजमाया, परंतु गोलनगर में रहने मात्र को छोट डालने के उपरान्त कुछ भी उत्पात नहीं किया और आधी तो आकाश में ही देखी गयी सो सही, जमीन पर उसकी खर तक नहीं पड़ी। यह गड़गड़ करीब ८-१० मिनटा में ही उन्द हो गयी और लोगो ने कहा कि 'लो इन्द्र महाराज भी पधार गए।'।

### ३४ प्रतिष्ठा के दिन की जनसंख्या

दश दिनां से गोलनगर में हजारों मनुष्यों का खासा मेला लगा हुआ था और यह दिन निन वृद्धिगत होता जाता



था । यह वृद्धि पञ्चमी के दिन अन्तिम भीमा को पहुँच गयी थी, क्योंकि महोत्सव का जाखिरी दिन यही था । द्वितीय पञ्चाश्वशुदि ४ के शामको गोल में कम से कम २०००० बीस हजार मनुष्यों की सख्या थी और यह सरया प्रायः जैन महमानों की थी । नगर भर क घर, मकान, चौकी, चतुरा सब मनुष्यों का ठमाठम भरे हुए थे । इनके उपरान्त सेवर, भोजर, जति आदि याचकों ने अपने डेर सरुई नदी के तट पर और उसके भीतर जमाये थे । सरुडो व्यापारी अपनी अपनी दूकानें चौर मदाना में लगा कर जमे हुये थे । पचमी के दिन चतुर्थी की जनसख्या में पयास (काफ़ी) वृद्धि हुई । इसमें मुख्य सख्या अन्य वर्ण के मनुष्या की थी और वह बारह तेरह हजार से कम न होगी । जैनों की सरया में आज दोतीन हजार की और वृद्धि हुई होगी । जैन और जेनेतर मिलकर आज की जनसख्या ३५००० पतीम हजार के आम पास थी । आज गोलनगर में तो क्या उस के बाहर भाग में भी मनुष्यों की इतनी भीड थी कि चलने को मार्ग नहीं मिलता । यद्यपि इस मनुष्य सध की सख्या निश्चित रूप से नहीं की गयी थी, तथापि उस दिन के भोजन के उठाव के ऊपर जनसख्या कृती गई थी तो पैंतीस हजार के लगभग होना पाया गया था । उस दिन गोल की पन्द्रह १५ (जालोर को १८॥) सरुसी की लापसी पकायी गयी थी । महाजनो का खगलू भोगा से कम होता है और वे १ कलमी

जैनो की थी। अन्य वर्ण के लोग आज बहुत कम रह गए थे। टीफा मण्डने के बाद शाम को जीम कर यह मेला भी विमर्जन होने लगा और रात पड़ते पड़ते बहुत लोग निस्वर गये, दूसरे दिन मुझिल से बाहर के पन्द्रह सौ मनुष्य बहा रह होंगे।

### ३६ सेवा का सम्मान

सेवा करना एक अति कठिन कार्य है, परन्तु सेवा का सम्मान करना भी कम कठिन नहीं। प्रायः दस्ता जाता है कि जब तक मनुष्यों को गर्ज होती है तब तक वे सहायता करने वालों की खुशामद किया करते हैं, परन्तु काम निरलने के बाद वे अपने सहायकों को भूल जाते हैं, आनन्द का विषय है कि गोल के श्रीसच के सम्बन्ध में ऐसा नहीं हुआ। प्रतिष्ठा के काम में जिन जिन की सहायता मिली श्री गोल के श्रीसच ने उन सबकी उचित कदर की। दृष्टान्त के तौर पर हम स्वयं सेनक मण्डलो के सम्मान का यहाँ उल्लेख करेंगे।

श्री आदिजिन-सवामण्डल-तखतगढ़ और श्री ओमवाल नमयुगक सेवामण्डल जालोर ने गोल के श्री सच को होने वाली अपूर्ण यश प्राप्ति में अपनी अपूर्ण सेवा द्वारा जो सहायता प्रदान की थी वह श्रीसच के ध्यान के बाहर नहीं थी।

सेवामण्डला की इस सेवा के सम्मानार्थ गोल के श्रीसच ने वैशाख शुद्ध ७ के दोपहर को तीन बजे प्रतिष्ठा-मण्डप के

सभामण्डप में श्री सखलजैनमध की सभा होने सन्धी नोटिस निकाल दिये व जिम से समय होत ही सभामण्डप सभासदों से भर गया था। पूजाक्त दोनों सेवामण्डल भी अपनी अपनी उर्दी पहने हुए सभा में हाजर थे। गोल का श्रीसध भी समय होते ही वहा उपस्थित हो गया था।

सभा का प्रमुखपद खरतरगच्छ के आचार्य श्रीमान् धरणीन्द्रधरिजी को दिया गया। मंगलाचरणादि होने के बाद श्री गोल क मध की तरफ से जालोर-दरबारस्कूल के तत्कालीन हडमास्टर साहब मुहता किमनराजजी ने सभा बुलाने का उद्देश प्रकट किया।

श्री जालोरवासी शानूगा कानमलजी रामलालजी ने प्रतिष्ठासन्धी कार्य का दिग्दर्शन कराने के साथ अन्य स्थानों में होने वाली प्रतिष्ठा-अजनशलाकाओं से इस अजनशलाका की विशिष्टता समझाई और ऐस भारी कार्य की इस प्रकार निर्विघ्न समाप्ति होने में महाराज साहबका पुण्यप्रभाव और स्वयंसेवकों की अपूर्व सधमेवा को कारण बताया।

इसके बाद गोल के सध की तरफ में मुहता भेरुमलजी चकील जालोरवालोंन अभिनन्दन पत्र (मानपत्र) सभा में पढ़ कर दोनों मण्डलों को अर्पण किये और प्रसंगोचित व्याख्यान दिया। पाठरुग्ण के अलोकनार्थ हम उनमें से एक अभिनन्दनपत्र को नीचे उद्धृत करते हैं।

## “अभिनन्दन पत्र”

श्री जादिजिन सेवामण्डल-तन्वतगढ़-माखाट

माइयो !

आप सज्जनो ने हमारे यहा जजनशलारा के शुभ प्रसंग पर पधार कर रात-दिन तन-भन में जो मची सेवा की है उसकी प्रशंसा करना हमारी शक्ति के बाहर है । हमारे पास एक भी ऐसा शब्द नहीं है कि निममे हम आपके इस कार्य की सिंचिन्मात्र भी प्रशंसा कर सकें, हजारों मनुष्यों के रोजाना खान-पान और ऋषोड आदि की प्रशमनीय व्यग्रस्था करके आपने हमारे ही नहीं बल्कि मेरुडा गांव के जैनमध के हृदयपट पर अपूर्ण प्रभाव डाला है ।

आपकी इस नि स्वार्थ सघसेवा और कार्यक्षमता का हम हार्दिक सम्मान करते हैं, और शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आपका सेवामण्डल इसी प्रकार केसेवाभास में यशस्वी बने ।

यद्यपि आपकी इस सघसेवा का बदला देना हमारी शक्ति के बाहर है फिर भी हमारा सघ आपके कार्य से खुश होकर सुवर्ण चादी के ‘सम्मान पदक’ और ‘अभिनन्दन पत्र’ अर्पण करता है जिन्हें आप स्वीकार कर हमें जाभारी करेंगे ।

ता २०-५-३४ ई०

आपका शुभचिंतक

दा० दीपचंद मुलानी

जैन मध-गोल

॥ दानमल मायजी

दा॥ स्वप्नचंद साहेरजी

॥ भेरा कमनाजी

मुता मेघराज मोतीचंदजी ।

॥ ताराचंदरा छे,

अभिनन्दन पत्र की नकल उम पर हस्ताक्षर करने वाले गोल क पत्रों के नाम के साथ ऊपर मुजब हैं । जालोर क ओसगल नवयुगर सेवामंडल को दिया हुआ अभिनन्दन पत्र भी अक्षरशः ऊपर मुजब ही है ।

अभिनन्दन पत्र अर्पण करने के बाद भी कई मज्जनो ने प्रासंगिक विवेचन किने । जोर मुनिमहाराज श्रीकल्याण-विजयजी का-

‘सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्यः’

इस पोट्ट पर मार्गभित व्याख्यान हुआ । अन्त में प्रमुख महोदय ने बड़ा ही आकर्षक और रोचक व्याख्यान और इस अजनशलाका जैसे महान् कार्य को निश्चिन्तापूर्वक पार पहुचाने के उदले में पूज्य मुनिमहाराज साहबों को बराह दी और इस प्रकार के उर्मसार्य में लक्ष्मी का व्यय करके धर्म और सधमक्ति का लाभ उठाने वाले गोलनगर के जैन-मध को हार्दिक धन्यवाद दिया ।

जत मैं दोनो सेना मंडलों ने अपने कम्बर के प्रयोगों  
स मभाजनों का मनोरञ्जन किया और जयध्वनि के साथ  
सभा विसर्जन हुई ।

### ३७ आय-व्यय

मारवाड की प्रतिष्ठा-अन्नशलाकाओं में आय-व्यय  
अर्थात् उपज और खर्च भी अपना खास स्थान रखते हैं । अन्य  
दशा में जैन प्रतिष्ठाओं में न ज्यादा खर्च होता है, न पैदायश,  
परन्तु छोटी मारवाड के लिये ये दोनों बातें बड़े महत्त्व की  
होती हैं । यहाँ के जैनो के लिये मंदिर की प्रतिष्ठा कराना  
बड़े से बड़ा कार्य होता है । वे अपनी शक्ति भर खर्च करके  
प्रतिष्ठा-महोत्सव करत हैं । इस प्रसंग पर उन्हें कम खर्च करने  
के लिए कहा भी जाय तो नहीं मानते । कहते हैं, खर्च नहीं  
करेंगे तो उपज कैसे होगी ? । कुछ अंश में यह बात है भी  
सही । प्रतिष्ठा पर जैसा खर्च किया जाता है वैसी ही  
उपज भी होती है ।

प्रतिष्ठा-अन्नशलाकाओं में उपज के ४ चार मद् होते  
हैं—१ नोकरसिया के चढ़ावे, २ गरघोडे के चढ़ावे, ३ धरजा,  
दंड, फलश, निम्नस्थापन आदि के चढ़ावे और ४ टीका अथवा  
भंडार माडना ।

इसी प्रकार प्रतिष्ठाओं में खर्च क भी अनेक मद होते हैं जैसे १ भोजन, २ सामग्री जुटाना, ३ पूजापा, ४ प्रतिष्ठा मंडप, ५ भोजनमंडप, ६ कीर्तिदान आदि। इन सब में भोजन खर्च सब से जागे निम्नलता है। शेष उक्त और अनुक्त अनेक कामों में हजारों रुपया खर्च होता है।

पिछले पचास वर्ष क अदर होने वाली मारगड की जजनशलाकाओं में गोल की जजनशलाका जैसे अपना अग्र स्थान रखती है वैसे ही इस क आय व्यय भी अपना स्वाम स्थान रखते हैं। गोल की जजनशलाका में कुल उपन चारों मदों से नीचे लिखे मुजन हुई।

४२६११) धयालीम हजार छ सौ ग्यारह रुपया चैत्रशुदि १० क दिन बोले गय ११ नौकागमिया क चढावो क हुए।

१९४५) इलीस हजार नौ सौ पैंतालीस रुपया ग्यारह दिन क बरघोडा (जुलूमों) में बोले गय चढावा क हुए।

१८७) छत्तीस हजार एक सौ सत्तासी रुपया वैशाख शुदि ४ को रातममय में बोले गय धजा, दड, कलश, बिम्बस्थापनादि क चढावा क हुए।

गौ हजार रुपया टीस क मड।

कुल जोड १०९७४३) एक लाख नौ हजार सात सौ तयालीस रुपया ।

गोल की अजनशलाका में भोजन, साधनसामग्री भेंट और दान आदि भिन्न भिन्न विषय में कुल ५०००० पचास हजार रुपया क लगभग खर्च हुआ ।

### ३८ उत्सव की परिसमाप्ति

उत्सव के और पर्य के दिन जात मालूम होते ह जाते मालूम नहीं होत । अजनशलाका-महोत्सव जब तक दूर था लोग दिन गिनत और तरह तरह के मनोरथ मसूरे बाधते थे परंतु उत्सव आया और गया इस का माना पता ही न लगा ।

लगभग तमाम अन्य वर्ण के लोग और तीन चार हजार के आसरे जैन महमान तो पचमी के शाम को ही रवाने हो गये थे । शेष सधनन वैशाख-शुक्लपक्षी के शाम को जीम कर रवाने होने लगे व सो रासी रात आधी बहा तक जाते ही रह । इस दिन रात तक लगभग सारा जैन सघ विदा हो चुका था, फकत दोना संगमडल, गायनमडली, खास खास महमान और गायगालों के सगे सबन्धी निगैरह मिल कर करीब १५०० पदरह मौ मनुष्य पीछे रहने पाये होंगे ।

पचमी के शाम से मसमी के शाम तक गोल की चारों



तब के तमाम मार्ग चलते रह । चोरी पहर का बदोस्त होने से रोग दिन और रात चलत ही रहते थे । सप्तमी को नगर में मनुष्य बहुत कम दिखत था । यद्यपि तब तक बाहर के बहुत आदमी ये और नगर मनुष्या से भरा हुआ था तथापि ३००००-३५००० हजार मनुष्य का मेला देखे हुए मनुष्यों को सप्तमी का दिन जन शून्यसा दिखता था और अष्टमी के गेन तो वहा और भी अधिक निचनता मान्य होती थी ।

इस प्रकार गोल का चिरस्मरणीय जनशलाका-महोत्सव गडी सनघज के साथ आया और शान शौकत के साथ बीता, परंतु हजारों मुखों में ये शब्द छोटता गया 'धन्य जनशलाका ! धन्य गोल !' ।

## ३९ परिशिष्ट

श्री गोलनगर जनशलाका उत्सव पर गायनमंडली के

गाए हुए गायन

१ गायन

(राग-केशरीया थासु)

भयो जोन्डव भारी, पार्श्वप्रतिष्ठा गोलनगर में ॥ जारणी ॥

गुलडी सरिता सुदरतट पर, श्री गोलनगर उद्दाम ।

जैन जगत ज्योति शलाकायत, जनशलाका गुम काम के भयो ॥

पाश्र्वप्रभु श्री तन्त विसानित, अररनिन शुभ साध ।  
 दीपचद शेठ श्री सघनायक, कर गोलसघ साध रे ॥ भयो० ॥२॥  
 मुनिप्रवर श्री कल्याणविजयजी सौभाग्यविजयजी सगे ।  
 गुरा साहय श्री भक्तिमोमजी, कर किया शुभरगे रे ॥ भयो० ॥३॥  
 रग नेरगी धना गवटा, मडप रचना भारी ।  
 विविधराजितमधुरध्वनि से, सोहत प्रभु अरारी रे ॥ भयो० ॥४॥  
 नक्षत्रयात्रम-मगीतमडल, मिद्वलेनयी आव ।  
 गीत-नृत्य-राजितलयोधी, 'नाभर' प्रभुगुण गार रे ॥ भयो० ॥५॥

## २ गायन

(राग-वीरा वड्याना यात्री०)

धन्य जोन्डन आज, प्रभुजी निगने, आनद मगल आज, ।  
 प्रभु पाश्र्व विसजे, शिवसुखराने, आनद-मगल आज, ॥ आ० ॥  
 सरिता सुगुडी तीर मनोहर, गोलनगर सुस्थान ।  
 जैनप्रभाकर पाश्र्वप्रभुजी, कीधी करुणा महान रे ॥ ध० ॥१॥  
 नायक सघतणा दीपचदजी, शेठ शूरा गुणवान ।  
 नि स्वार्य भाव प्रमभक्ति वी, स्वार्य धनावे सुजान रे ॥ ध० ॥२॥  
 मुनिप्रवर श्री कल्याणविजयजी, सौभाग्यविजयजी साध ।  
 गुरा साहय श्री भक्तिमोमजी, करे किया भलिभात राधन्य० ॥३॥

शोभा मडपनी मासे भलेरी, रुढता न आव पार ।  
 नौतम अनुपम रचना रुपाली, जन-मन-रजनहार ॥ धन्य० ॥ ४ ॥  
 भक्तिजन नर नारी करा, हँस हरख न माय ।  
 धाय कृतार्थ प्रीतधी पधारी, निरखीने जिनराय ॥ धन्य० ॥ ५ ॥  
 धाय भूमि मरुधर केरी, धन्य नगर ते वास ।  
 धन्य सुभग जन वासी अर्धा, ज्या पार्श्वप्रभुना वाम ॥ धन्य० ॥ ६ ॥  
 श्री सिद्धक्षेत्र सुतीर्थभूमिना, त्रलक्षचर्याश्रम-पाल ।  
 प्रीत प्रभुगुणगाय सदा ने, इच्छे सफल जयकार ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

### ३ गायन

(राग-प्रभु भजन मर प्रभु भजन०)

गोलनगर धन्य गोल नगर ॥ जा० ॥  
 शोहामणु पुर शोमे मनोहर,  
 रम्य रमाल भूमि मरुधर ॥ गोल० ॥ १ ॥  
 पुनीत सरिता सुखडी केरा,  
 वह सदाए ज्या निर्मल जल ॥ गोल० ॥ २ ॥  
 पार्श्वप्रभुजीना दरवार दीप,  
 ज्योति जेनी जगमगे झलहल ॥ गोल० ॥ ३ ॥  
 श्रीदीपचदजीसम श्रीमतो,  
 स्वार्थ वगर ॥ गोल० ॥ ४ ॥

मुनिप्रवर श्री कल्याणत्रिनयजी,  
 सौभाग्यत्रिजयजी श्रेष्ठ छत्तर ॥ गोल० ॥५॥  
 गुरा माहेव भक्तिसौमसमा ज्या,  
 मुनिगुणज शोह गुम कर ॥ गोल० ॥६॥  
 वय दिवस शुभ आनदकारी,  
 पार्श्वप्रतिष्ठा सुखार्थ मंगल ॥ गोल० ॥७॥  
 शोभा अनुपम उर हरसावे,  
 जानद जानद छाया मरल ॥ गोल० ॥८॥  
 श्रीमिद्वेदेनब्रह्मचर्याश्रम,—  
 नेरा शिषु गुण गावे जिनवर ॥ गोल० ॥९॥

४ श्री गोलनगरमण्डनपार्श्वनाथस्तवन

(राग-समुद्र क लाला०)

पासप्रभु की मोहनी मूरत,  
 देखत दिल को मोह लिया ॥ १० ॥  
 गोलनगर म आप विराजो,  
 तरीसमा जिनचद ।  
 दर्शन तरा जान ही पाया,  
 निट गया कम का फद ॥ पासप्रभु० ॥ १॥

॥ रनी क्या आनदकारी,  
 रत तरी है अतिप्यारी ।  
 मलम सारी तुम गुण गावे,  
 तबत बढत सीस नमावे ॥ पाम० ॥२॥  
 नामे एकाणु द्वितीय वैशाखे,  
 गुणचमी सच सच की साखे ।  
 नूतनमदिर तख्त गिराने,  
 बरजयनाद से मंदिर गाजे ॥ पाम० ॥३॥  
 निरुपति प्रभु मोहनगारा,  
 गोलप्रजा के हो सुखकारा ।  
 आश पुरो सच सकुट चूरो,  
 दिन दिन मपत् हो भरपुरो ॥ पाम० ॥४॥  
 चामाराणी के बदन प्यार,  
 प्रभावती के आप दुल्हार ।  
 मौभाग्यविजय की अर्ज सुणीजो,  
 दाम की खबरा नित नित लीजो ॥  
 पासप्रभु श्री० ॥५॥

५ लावणी

आनन्द छे आज  
 गोभा छे अज  
 नानी माहि  
 काइ

૬૮ શ્રી ગોલનગરીય-પાન્થનાવપ્રતિષ્ઠા-પ્રવ ધ

મનિમય મળ્ડપ રચિયો છે અતિ ઉત્સાહ,  
ચાર ચાર જોયાને મન લલચાને ॥આનન્દ ૭૦॥૧॥

ચાજિત્ર વહુ ત્રિય ત્રિધ પરચારના ચાને,  
વતા ત્રણ જાનને અતિ મધુરા લાગ ।  
હસ્તી ઘોડા સ્થ મનુષ્યનો નહીં પાર  
ચલી જમચા માટે ઉત્તમ ભોજન સાર ॥આનન્દ ૦ ॥૨॥

ઇન્દ્રાપુરી સમ ગોલનગર તો શોભ,  
જોયાન માટે દયમમા પળ યોમે ।  
મુનિ જ્ઞાણવિજયજી મહારાજ ભલે પધાર્યા,  
મુનિ સૌભાગ્યવિજયજી મહારાજ હમોને ભા-યા ॥આનન્દ ૦ ૩॥

સચ્ચ દગળીસ નેડા (૧૯૯ ) મામ વેચાસ,  
ગુરુપક્ષને ઉત્તમ શુભચાર ।  
પ્રભુ પારમનાથ ગુમપચમીદિને પચારાને,  
એ ગુમ ઢિવસે આનન્દ અતિ વરતાશે ॥આનન્દ ૦ ॥૪॥

ગુણ ગાય ભોજક પર જોડી વહુભાવે,  
પ્રભુ પાન્થનાવના દર્શનથી દુસ જાવે ॥  
આનન્દ છે જાને ગોલનગરની માહિ,  
શોભા છે અપરપાર મળા નથી કાફ ॥૫॥

॥ શ્રુતિ સમાપ્ત ॥

## परिशिष्ट २ पोषधविधि ।

### दिवस-पोषध

#### १ पोषध

“पोष द गति इति पोषध ’ अर्थात् धम की पुष्टि कर उसे ‘पोषध’ कहते हैं । पोषध जैन-धामक के पालने योग्य गारह व्रतों में से ‘ग्यारहवा’ व्रत है । सामान्यतया यह अष्टमी चतुर्दशी जादि पर्वदिना में और विशेषप्रसंगों में किसी भी दिन किया जाता है ।

मुख्यतया पोषध आठ पहर का करना चाहिये, परंतु जिनकी भावना आठ पहरका करने की नहीं होती वे दिन की अवका रात्रि की चार पहर का भी पोषध करते हैं ।

पोषध के मुख्य भेद चार होते हैं—१ आहारपोषध, २ शरीरसत्कारपोषध, ३ ब्रह्मचर्यपोषध और ४ अध्यापारपोषध ।

१-उपवास जादि तप करना उसका नाम ‘आहारपोषध’

२-स्नान-मिलेपनादि शरीरविभूषा का त्याग करना सो

३-निषयवासना का त्याग कर ब्रह्मचर्य पालन करना उसे 'ब्रह्मचर्यपोषध' कहते हैं।

४-सामारिरुप्रवृत्तिया का त्याग कर अर्मध्यानमें प्रवृत्ति करना उसका नाम 'अव्यापारपोषध'।

उक्त चार भेदा जो दश और मयसे गिनने में आठ भेद होते हैं और उनका संयोगी भेद ८० होते हैं, परन्तु पूर्वाचार्यों की परंपराानुसार आज कल केवल आहारपोषध दश और सर्व भेद में किया जाता है, शेष तान प्रकार के पोषध सर्व से किये जाते हैं, दश में नहीं। आहारपोषध में सर्व प्रकार के आहारों का त्याग कर 'चउनिहार' उपनाम करना उसको 'मय से आहारपोषध' और तिनिहार उपनाम, या तिल, नीबू, एकाशन करना उसको 'दश से आहारपोषध' कहते हैं।

## २ पोषध लेने का समय

मुग्धवृत्त्या रात्रिप्रतिक्रमण करने के पहले पोषध लेना चाहिये, फिर रात्रिप्रतिक्रमण कर के प्रतिलम्बना करनी चाहिये, परन्तु आजकल पहले रात्रिप्रतिक्रमण कर लेते हैं, फिर शरीर चिन्ता आदि से निवृत्त हो जिनमर्दिग का योग हो तो जिनपूजा कर के बाद में पोषध ग्रहण करते हैं। कुछ भी हो परन्तु जहाँ तक हो सक पोषध जल्दी लेना चाहिये, समय हो तो पूजा



कर कंपोप लेना अच्छा है, परन्तु पूजा क जाग्रह में पोषध लेने में अधिक विलम्ब करना भी अच्छा नहीं है ।

### ३ पोषधलेने की विधि

प्रथम खमाममण ठकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् इरियावहिय पडिकमामि' 'इच्छ' यह कर 'इरियावही' 'तस्म उत्तरी' 'अन्नत्थ' चोलकर एर 'लोगस्म' अथवा चार नयकार का नाउस्सग कर, पार कर ऊपर प्रकट लोगस्म चोल, फिर खमा०, इच्छा० 'पोमहमुहपत्ति पडिलहु' इच्छ यह कर

१-यह 'इच्छ' 'इच्छामि' त्रियापद का रूप है इसका अर्थ 'चाहता हूँ' यह होता है । यह पद आवेशम्योरुगामरुहोन से गुरु का आवेश प्राप्त होने पर चोलना चाहिये, परन्तु गुरु के अभाव में स्थापनाचाथ का गुरु मान कर उनके भागे त्रिया करते समय भी प्रयत्न आवेश क अन्त में यह पद धनदय चोलना चाहिये ।

२-यह जहा 'लोगस्स' का नाउस्सग लिखा हो यहा 'लोगस्स' ही गिनना चाहिये, परन्तु जिसको लोगस्म पार न हो वह एक लोगस्स क उदले में चार नयकार गिने ।

३-जहा केवल इरियावही करने का लिखा हो यहा भी इसी प्रकार खमाममणपूर्वक आवेश माग कर इरियावही, तस्म उत्तरी, अन्नत्थ जादि मूत्र चोलकर एक लोगस्स का नाउस्सग करना चाहिये धार ऊपर प्रकट लोगस्स कहना चाहिये ।

४-यहा जहा खमा० लिया हो यहा 'इच्छामि खमास

मुहपत्ति की पडिलेहणा कर स्वमा० इच्छा० 'पोमह सदिमाहु'  
 'इच्छ' स्वमा० इच्छा० 'पोमह ठाउ' 'इच्छ' यह के दोनों  
 हाथ जोड़ एक नम्रार पदमर खड़ा हो "इच्छकारि भगवन्।  
 पसाय करी पोमहदडक उच्चराओजी" इस प्रकार बोलकर गुरु  
 मुख से पोमह उचरे, गुरु का योग न हो तो स्वयं अपने  
 मुखसे नीचे का पाठ पढ़कर पोषध उचरे—

“करेमि भन्ते पोमह, आहारपोमह डेमओ सव्यओ, सरीर  
 सव्यारपोसह सव्यओ, उभचेरपोमह सव्यओ, अब्बापार-  
 पोमह सव्यओ । चउन्निह पोसह ठामि । जावदियस  
 पज्जुरासामि, दुप्पिह तिप्पिहण—मणेण वायाए काएण, न करेमि  
 मणो वद्विउ जावणिज्जाए निस्सोहिजाए मयपण उदामि  
 इस प्रकार यह संपूर्ण सूत्र पोलना ।

१—जहाँ इच्छा० लिया है उहाँ "इच्छाकारेण सविसह  
 भगवन्" इतना ध्यान पालना चाहिये ।

२—गुरु के अभागे में पोषध लिया हुआ कोई जानकार  
 ध्यानक वहाँ द्वातर हो तो उसका मुखसे भी पोषध निया  
 जा सकता है ।

३—गाठ पहर का पोषध उचरते समय 'जावदियस'  
 के स्थान में "जाय अहारत्त" और रात्रि के चार पहर का  
 पोषध उचरते समय 'जाय सेसदियस रत्त' ऐसा पाठ  
 पालना चाहिये । यदि चार पहरका और आठ पहर का  
 साथ उचरना हो तो जाय दिवस अहारत्त ऐसे पालना  
 चाहिये । प्रातः काल चार पहर का पोषध उचरनेवाला

न करवमि, तस्म भन्ते पडिकमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाण वोसिरामि ।”

खमा० इच्छा० ‘सामायिकमुद्रपत्ति पडिलेहु ?’ ‘इच्छ’  
रह बैठकर मुद्रपत्ति पडिलेहुण कर और खमा० इच्छा०  
‘सामायिक सदिसाहु’ ‘इच्छ’ खमा० इच्छा० ‘सामायिक ठाउ’  
‘इच्छ’ रह एक नवकार गिन “इच्छकारि भगवन् पमाय करी  
सामायिक दडन उच्चरापोजी” यह चीठ कर गुरुमुखसे अधरा  
स्वय नीचे का पाठ बोलकर सामायिक व्रत उच्चर-

“करमि भन्ते सामाहय, सावज्ज जोग पञ्चस्वामि, जार  
पोसद पञ्जुवासामि, दुनिह तिविहेण-मणेण वायाए काएण न  
करमि न करवेमि, तस्स भन्ते पडिकमामि निन्दामि गरिहा-  
मि अप्पाण वोमिरामि ।”

बाद में खमा० इच्छा० ‘वसणे सदिसाहु’ ‘इच्छ’ खमा०  
इच्छा० ‘वसणे ठाउ’ ‘इच्छ’ खमा० इच्छा० ‘सज्झाय सदि-

पत्ति रातपापध भी करना चाहें तो दिन के रहते हुए फिर  
पोपध उच्छरे और पाठ “जाय अहोरात्त” बोले ।

“पोपध के बिना सामायिक करता हो उमसी भी  
यही विधि है । इरियावही करवे सोधा सामायिक मुद्रपत्ति  
पडिलेहुण करे और तीन नवकार गिनने पर्यंत तमाम विधि  
यहां लिखे मुत्तर करे सिर्फ ‘जायपोसद’ के स्थान ‘नार  
नियम-एम्मा पाठ गले ।

साहु' 'इच्छ' स्वमा० इच्छा० मज्झाय करु 'इच्छ' रहकर तीन नवमार गिनना। फिर स्वमा० इच्छा० 'बहुवेल सदिमाहु' 'इच्छ' स्वमा० इच्छा० 'बहुवेल करु' 'इच्छ'।

### प्रतिलेखनाविधि—

स्वमा० इच्छा० 'पडिलेहण करु' 'इच्छ' कहकर मुहपत्ति थराला, कटासन (बैठका), कन्दोरा और पहिरी हुई घोती, इन पांच उपकरणों की पडिलेहणा करना। बाद में स्वमा० दकर इरियावही का साउमगग करना, ऊपर प्रकट लोगस्म कहना। फिर स्वमा० 'इच्छागरी भगवन् पमाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी' 'इच्छ' कह कर स्थापनाचार्य की पडिलेहणा कर, स्थापनाचार्य की पडिलेहणा दूसर ने कर ली हो अथवा गुरुमहाराज के स्थापनाचार्य के सामने क्रिया की जाती हो तो एक बड़ेर श्रावक क अग्रतिलेखित उत्तरासन की पडिलेहणा करना। बाद में स्वमा० इच्छा० 'उपधिमुहपत्ति पडिलेहु' 'इच्छ' कह मुहपत्ति की पडिलेहणा कर, फिर स्वमा० इच्छा० 'उपधि सदिमाहु' 'इच्छ' स्वमा० इच्छा० 'उपधि पडिलेहु' 'इच्छ' कह कर बाकी क पाम में रखे हुए तमाम वस्तुओं की 'पडिलेहणा' करे।

पडिलेहणा करने के बाद इरियावही कर एक पौषधिक

क्षेत्र लव और दूसरी बार इरियावही करके “अणुनाणह जसुगगहो” ये शब्द गोल कर उस परठ देने, परठन के बाद ‘बोमिरे’ यह पद तीन बार गोल, फिर मात्र अग्निधि आगतना का ‘मिच्छामि दुखड’ देकर देववन्दन करें।

५ पोषण लेने के पहले पडिलेहणा करने की विधि—

इरियावही करके स्वमा० इच्छा० ‘पडिलेहणा करु’ ‘इच्छ’ कह कर मुहपत्ति, कटासन, चरगला, और दूसरे तमाम वस्त्रों की पडिलेहणा एक मात्र कर लेनी चाहिए, फिर इरियावही कर राजा लेना और दूसरी इरियावही कर विधिपूर्वक परठना चाहिये।

जिम्हने पोषण लेने के पहले पडिलेहणा कर ली हो उस को पोषण लेने के बाद सिर्फ पडिलेहणा के आदेश लेने चाहिए और जहां ‘मुहपत्ति पडिलेहण’ का आदेश हो वहां मुहपत्ति की पडिलेहणा करनी चाहिए, दूसरे उपकरणों की फिर पडिलेहणा करने की जरूरत नहीं है, और न राजा लेने परठने की ही जरूरत है। मात्र अग्निधि आगतना का ‘मिच्छामि दुखड’ देकर देववन्दन करना चाहिये।

१-ऊनी झाड़ू से जमीन छानने से जो कूड़ा फकट एकठा होता है उसे ‘काना’ कहते हैं।

२-‘परठने’ का तात्पर्य खाने—छोड़ने से है।

## ६ पोषध लेने के बाद 'राइय' प्रतिक्रमण—

जिसे पोषध करना हो उसे पहले सन्निक्रमप्रतिक्रमण अवश्य कर लेना चाहिये, पर तु किमीने कारणविशेषसे प्रतिक्रमण न किया हो तो उसे पोमह लेने के बाद भी पडिलेहणा करके देवगन्दन करने के पहले नीचे लिखे मुचर राइयप्रतिक्रमण का लेना चाहिये ।

इरियानही कर स्वमासमण ठे आदेशपूर्णक कुसुमिणी दुसु मिणी का फाउस्मग्ग करना, आगे जी गिधि नित्य मुजघ करनी, मात्र सात लाख क स्थान इच्छा० 'गमणागमणे आलोउ' 'इच्छ' कह कर नीचे लिखा हुआ गमणागमणे का पाठ बोलना—

## गमणागमणे—

“इर्यासमिति, भाषाममिति, एषणाममिति, आदानभट्ट-  
निस्सरेगसमिति, पारिद्धागणियासमिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति  
कायगुप्ति ए पाच ममिति त्रणगुप्ति आठ प्रवचनमाता श्रारक  
तणे धमे सामायिक पोसह लीवे रुडी रीते पाली नहीं, खडना  
पिराधना थइ होय ते सगिहु मन, वचन, कायाए करी तस्स  
मिच्छामि दुक्कड ।’

अन्तस 'भगवानह' आदि कहने के पहले स्वमा० इ-

छा० 'बहुवेल सदिमाहु' 'इच्छ स्वमा० इच्छा० 'बहुवेल करु' 'इच्छ' कह कर फिर 'भगवानह जादि रुइके 'जहुइ जेसु' कहना और बाद में सब क माय दयवन्दन करना ।

### ७ देवचन्दन विधि-

प्रथम स्वमाममणपूर्वक इरियावही करना, 'लोगस्म' कह क उत्तरामन कर स्वमा० इच्छा० 'चैत्यवन्दन कर ?' 'इच्छ' कह कर चैत्यवन्दन, नमुत्थुण और 'जय वीयराय' (आभयमखडा) तक कहना, फिर स्वमा० इच्छा० 'चैत्यवन्दन कर ?' 'इच्छ' कह कर चैत्यवन्दन, नमुत्थुण, अरिहतचेइयाण, अन्नत्थ, १ नरकार का काउमग्ग और १ स्तुति, इमी प्रकार लोगस्म, पुक्कररदीवड्डे और सिद्धाण बुद्धाण के अंत में एक एक नरकार का काउमग्ग और एक एक स्तुति कहनी। चतुर्थ स्तुति कहने के बाद बैठ कर नमुत्थुण कहना और फिर पहले ही की तरह 'अरिहतचेइयाण' आदिसे लेकर 'सिद्धाण बुद्धाण' और 'वैयान्चगराण' तक के मूल और चार स्तुतिया कहनी।

दूसरी बार चतुर्थ स्तुति कहने के बाद फिर नमुत्थुण दोनों नावति और स्तवन कह क 'आभयमखडा' तक 'जयवीयराय' कहना । फिर स्वमा० इच्छा० 'चैत्यवन्दन कर' 'इच्छ' कह कर चैत्यवन्दन और नमुत्थुण कह कर 'जयवीयराय' सपूर्ण कहना और अविधि आशातना का मिच्छामि दुक्कड देकर सज्झाय करना ।

## ८ सज्ज्ञायविधि—

समा० इच्छा० 'सज्ज्ञाय नरु' 'इच्छ' यह नरु उम्ह पगा पर बैठ नरु गिन क एरु जन 'मन्नहजिगाण' सज्ज्ञाय यह और नरु मन सुने । सज्ज्ञाय के नत में फिर नरु गितने की जरूरत नहीं है ।

## "मन्नह जिगाण" सज्ज्ञाय—

मन्नह जिगाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह सम्मत्त ।  
छुट्ठिह आउस्मयम्मि, उज्जुता होह पइदिचम ॥१॥

पव्वेसु पोमहनय, दाण झील तयो अ भायो अ ।  
सज्ज्ञायनमुत्तारो, परोपपारो न जयणा य ॥२॥

जिणपूआ निणयुण्ण, गुरुयुअ साहम्मिआण वच्छल ।  
यवहारस्स य सुद्धी, रहनत्ता तित्थजत्ता य ॥३॥

उवमम-विवेग-सगर, भामासमिई ठनीवरुणा य ।  
धम्मज्जणससग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥

संघोररि बहुमाणो, पुत्तयलिहण पभाउणा तित्थे ।  
मङ्गल किच्चमेअ, निच्च सुगुरुएसेण ॥५॥



## ९ पोरिसी पढाने की विधि—

पोसहजालो को कच्ची ६ घड़ी दिन चढ़ने के बाद पोरिसी पढानी होती है जिसकी विधि इस प्रकार है—

खमा० इच्छा० 'गुहपडिपुन्ना पोरिसी' दूमग खमा० इच्छा० 'इरियागहिय पडिम्कमामि इच्छ' कह इरियागही कर १ लोगसम का माउसमग करना, ऊपर प्रगट 'लोगसम' बोल खमा० इच्छा० 'पडिलेहण करु ?' 'इच्छ' कह कर मुहपत्ति सी पडिलेहण करनी ।

## १० राइमुहपत्ति पडिलेहण विधि—

गुरुमहाराज का योग होने पर भी राइप्रतिमग उनक समक्ष जादेशग्रहणपूर्वक न किया हो तो पोसहजालो को गुरुमहाराज के समक्ष राइमुहपत्ति पडिलेहनी चाहिये, जिसकी विधि इस प्रकार है—

प्रथम खमामग २ इरियागही करना, फिर खमा० इच्छा० राइमुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छ' कह मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो उदन देकर इच्छा० राइय आओउ इच्छ 'आलोएमि जो

१—जहा जहा 'जे चदन' देने का लिखा हो वहा सधत्र "इच्छामि गमासमणो अडिउ जाअणिज्जाए निसीहिआए अणु जाणह मे मिउग्गह निसाहि" इत्यादि सपूर्ण सूत्र दो बार बोल कर छात्रशरत उदन करना चाहिये ।

मे राइजो०' इत्यादि पाठ सोल क 'मन्त्रस्तत्रि राइ १' इत्यादि कहना, राद म गुरु पदस्थ हो तो दो उदन दफर और सामान्य हो तो एक 'रमाममण' दफर 'इच्छार' और 'जम्भुद्विजोह' क पाठसे खनाना । जन में फिर दो उदन दफर 'इच्छारी भगवन् पमाय रही पञ्चस्वाण रा आदग दीजोजी' कह कर पञ्चस्वाण लेना ।

इसक राद दो दो खमाममण, इच्छार, और जम्भुद्विजोह' क पाठ से रात्री क सर्व मुनिगना को उदन करना ।

## ११ जिनदर्शन प्रविधि—

पोषध लने क बाद जिनमदिर दर्शनाय अवश्य जाना चाहिये । उत्तरामन कर, रुटामन करे पर, चरपला रायी बगल में और मृदपत्ति दाहिने (जीमणे) हाथ में रख कर जीवजयणा पालत हुए अभिगम, निमीहि जादि विधिपालन पूर्णक मदिरमें प्रवेश करना और मन्दर में जा दर्शन, स्तुति कर इत्यविहीप्रतिक्रमणपूर्णक चैत्यउदनप्रविधि करना, राद में 'निमीहि' कह कर मदिर से पीछा पोषधशाला जाना । मदिर पोषधशाला से १०० कर्म से अधिक दूर हो तो आकर इरियावही करना और 'गमणा गमणे' कहना, अन्यथा जरूरत नहीं ।

## १२ दूसरी बार काजा लने की विधि—

अगर वर्षाकृत का समय हो तो चौपविक को पोरिमी पढ़ाने के बाद और दो पहर का दबवदन करने के पहिले चौपधाला में दूसरी बार काजा (पूजा) निम्नलिखित चाहिये ।

दूसरी विधि इतनी ही है कि एक जन इरियावही करके मगान में काजा निम्नलिखित कर यों ही बाहर पठ दब, फिर इरियावही करने की जरूरत नहीं है ।

## १३ पञ्चस्त्राण पारने की विधि—

चौविहार उपवासगालों को तो पञ्चस्त्राण पारने की जरूरत नहीं है, परन्तु जिनको त्रिविहार उपवास, आयतिल, निमी अथवा एकाशन हो उनको पूजाक्त विधिसे दोपहर का दबवदन करने के बाद नीचे लिखी विधि से पञ्चस्त्राण पारना चाहिये ।

- प्रथम इरियावही करके समा० इच्छा० 'चै यमन्दन करु' 'इच्छ' कहकर 'जगचिन्तामणि' का चैत्यमन्दन, नमुशुण, दोनों जायन्ति, उग्रमगगहर और सम्पूर्ण जयरीयराय रहना ।

१—वर्षाकृत आश्विनवदि १ से कार्तिक शुद्धि १ तक गिना जाती है, परन्तु वर्तमान परम्परा मुनय आपाद शुद्धि १ से कार्तिक शुद्धि १४ तक दूसरी बार काजा लिया जाता है ।

नाद में स्वमा० इच्छा० 'मञ्जाय नरु' 'इच्छ' कह क एक  
 नमस्कार गिन 'मन्त्रह निगाण' मञ्जाय करना । फिर स्वमा०  
 इच्छा० 'मुहपत्ति पडिलेहु ?' 'इच्छ' कह मुहपत्ति पडिलेहुणा  
 करनी और स्वमा० इच्छा० पञ्चस्वाण पारु ? 'यवाशक्ति'  
 फिर स्वमा० इच्छा 'पञ्चस्वाण पारु' 'तहत्ति' कह क दाहिना  
 (नीमना) हाथ मुठियाल कर चरयला के ऊपर स्थापना और  
 एक नमस्कार गिनक तो पञ्चस्वाण स्था हो उम रा नान ले  
 रा नीचे रा पाठ बोलना—

“उग्गाए धूर नमुकारमहि । पोरिमी साठपोरिमी धूर  
 उग्गाए पुरिमद्वुमुट्टिमहिअ पञ्चस्वाण कयु चउविहार आयविल,  
 नीरि, एकाशन नयु त्रिनिहार पञ्चस्वाण फासिअ पालिअ  
 मोहिअ, तीरिअ, मिट्ठिअ, आगदिअ, ज च न आराहिअ  
 तस्म मिच्छामि दुक्कड ।”

उपर रा पाठ बोलने क बाद एक नमस्कार गिनना ।

पोरिमी, साठपोरिमी, पुमिअ अवगा इनक साथ आय  
 विल, नीरी, या एकाशन का पञ्चस्वाण क्रिया हो वे ऊपर क  
 पाठ से अपने पञ्चस्वाण पारें, परंतु जिनके त्रिनिहार उपवास  
 हो वे नीचे क पाठ से अपना पञ्चस्वाण पारें—

“धूर उग्गाए उपवास नया त्रिनिहार, पोरिमी—साठ  
 पोरिमी पुरिमद्वु मुट्टिमहिअ पञ्चस्वाण कयु पाणाहार, पञ्च

क्ताण फामिअ, पालिअ, सोहिअ, तीरिअ, किट्ठिअ, आरा-  
हिअ अ च न आराहिअ तस्म मिच्छामि दुक्कड ।”

प्रत्यक पञ्चक्खाण पारनेवालो को जत में एक एक  
वक्कार गिनना चाहिये ।

### १४ पानी पीने और भोजन करने की विधि-

पौषट्ठिक को तिथिहार उपवास हो और पानी पीना हो  
तब ऊपर की विधि से पञ्चक्खाण पार के आसन पर बैठ  
याचित अचित्त जल पीना चाहिये और जिस वर्तन से जल  
पिया हो उसे शुद्धवस्त्र से पोछ लेना चाहिये और जल के  
वर्तन को ठक कर रखना चाहिये ।

जिसके आनिल, निवी या एकाग्र हो और अपने घर  
भोजन करने जाना हो उसको ईयांसमिति पालते हुए जाना  
और घरमें प्रवेश करके “जयणा मगल” ये शब्द बोल कर  
बैठने की जगह कटासन पीछा के बैठना, स्थापना स्थाप कर  
क इरियावही करना और खमासमण दकर ‘गमणा गमणे’  
कहना चाहिये । फिर पाटला, धाली आदि भाजन देख साफ  
कर स्थिर आसन बैठ भोजन करे । उस समय मुनिराज का  
योग हो तो उनको दान दकर भोजन करे । आहार उतना ही  
ले जितना सुखपूर्वक खाया जा सके, क्योंकि भोजन उच्छिष्ट

(जठा) छोड़ने पर पौषधिक को प्रायश्चित्त लेना पड़ता है भोजन करते समय मोलना नहीं चाहिये, दोड़ चीज लेने हो तो इशार से मागे जयन्त पानी से कुल्ला करके मोले ।

जिमको घर न जाना हो वह पौषधशाला में ही पुत्रादि द्वारा लाया जाहार करे । घर जाकर स्थापना स्थापने, इरिया बही करने आदि की जो विधि बही है वह पौषधशाला में भोजन करने वालों को करने की जरूरत नहीं । बाकी सब बातें दोनों जगह समान भावसे करनी चाहिये ।

भोजन के बाद मुख शुद्ध करके 'दिसचरिम तिमि-हार' का पञ्चकलाण कर लेना चाहिये और जहा बैठ कर आहार किया हो वहा काजा निराल लेना चाहिये ।

भोजन के लिये घर जाने वाला को भोजन करके तुरत पौषधशाला आ जाना चाहिये और सरसो जाहार करने के बाद इरियावाही कर 'जगचिन्तामणि' से लेकर 'जयवीरराय' पर्यन्त चैत्यवन्दन करना चाहिये ।

१—आप कह रही प्रवृत्ति अधिम चल रही है इस लिये विधि में गिरना पड़ा है वास्तव में पौषधिक को दूसरे का गया हुआ जाहार पानी ग्रहण करना ठीक नहीं स्वयं लेना चाहिये अथवा अथ पौषधिक से भगवाना चाहिये, क्योंकि दूसरे अवती का लाया हुआ जाहार पानी ग्रहण करना पापघ का दोष माना गया है ।

## १५ मल मूत्र की शक्ता दूर करने की रीति-

औदारिक शरीर मल मूत्र का स्थान है इस कारण पोष  
हवालों को भी इन शरीर शक्ताओं को दूर करना पड़ता है,  
परतु पोष में यह काम जयणापूर्वक करना चाहिये, इस लिये  
पोषधिरु को अचित्त (गर्म क्रिया हुआ) जल, छोटी कुडिया  
और पोछनी आदि चीजें पहले से ही याच कर रख लेना  
चाहिये ।

जब शक्ता निवृत्ति क लिये जाना हो, पहले पहनने का  
वस्त्र बदल देना चाहिये, मुद्रपत्ति रुमर में-कटोरे में भरा  
दनी चाहिये और चरगले को धायी (टापी) गल में रख,  
कलमाल में कल जोड़ कर, अन्यथा गंगर रुल क एरान्त  
में जडा बैठने की जगह हो कुटिया को पोछनी से पोछ कर  
उसमें लघुशक्ता (पैशाच) करे और बाहर अववा जहा खुली  
जगह हो उसको परठ (फेरु) द । । परठने की जगह जाकर  
पहले कुडि को जमीन पर रख मनमें “अणुजाणह जस्सुग्गहो”  
ये शब्द बोले, बाद में परठे और परठने के बाद फिर कुडी को  
नीचे रख कर मन में तीन बार ‘पोसिर’ यह शब्द बोल ।  
मादमें कुडि को स्थान पर रख द ।

बाढा अधमा खुला बडा मैगान हो और मनुष्यो की  
दृष्टि अधिक न पडती हो तो रिना कुडि के भी लघुशक्ता नि  
र्वीव जा मफती है ।

शरा निवृत्ति करने क बाद हाथ धो डालना चाहिये ।

उड़ी शरा (टट्टी) भी इसी विधिसे जाना चाहिय । यहा कुडि क स्थान जल का लोटा लेकर जहा टट्टी जाने की जगह हो, जाना और बैठने क पहले “अणुजाणह जस्सुग्गहो” तथा उठने के बाद तीन बार ‘रोमिर’ शब्द पूर्ववत् बोलना चाहिये । शरानिवृत्ति कर स्थान पर आ क हाथ पग शुद्ध करना और पहरने का वस्त्र बदलना चाहिय । बादमें स्थापना-चार्य के समुख इरियावही कर ‘गमगा गमणे’ रुहना ।

### १६ चौथे पहर की प्रतिलेखनाविधि-

पौषविक्र उक्त जरूरा कामों से निवृत्त होने क बाद स्वाध्याय-ध्यान या धर्म चर्चा में समय बीतावे और दिन के तीन पहर बीतने क बाद दूसरी बार पडिलेहणा कर जिसकी विधि नीचे मुजन है ।

खमा० इच्छा० ‘गहुपडिपुआ पोरिसी’ फिर खमा० इच्छा० ‘इरियावहिअ पडिक्कमामि’ ‘इच्छ’ कह कर इरिया वर्हा करना, बादमें खमा० इच्छा० ‘पडिलेहण करू?’ ‘इच्छ’ फिर खमा० इच्छा० ‘पोषणशाला प्रमाज्जु’ ‘इच्छ’ कह के उपवासचाला मुहपत्ति, कटासन और चरबला की पडिलेहण करे और जिमने आयविल, एसाशन आदि किया हो वह उपयुक्त



तीन चीजों के उपरान्त कटोरे और घौती भी डमी समय पहिलेहण कर ।

बादमें पाच उपकरणों की पडिलेहणा करनेवाले इरिया-वही करके और तीन उपकरण पडिलेहने वाले बिना इरिया-वही किये ही 'खमासमण' देकर 'इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहणो जी' इस प्रकार आदेश माग के मुनिराज का योग हो और स्थापनाचार्य की पडिलेहणा उन्होंने कर दी हो तो उठेरे आगर के उत्तरासन की पडिलेहणा करे, अगर स्थापनाचार्य की पडिलेहणा न हुई हो तो होने तक रुहर जाय, बादमें उत्तरामन पडिलेह, अगर गुरुमहराज का योग न हो और स्थापनाचार्य के आगे पोसह किया हो तो यहा स्वयं स्थापनाचार्य की पडिलेहणा करे, फिर खमा० इच्छा० 'उपधिमुहपत्ति पडिलेहु' 'इच्छ' कह मुहपत्ति पडिलेहणा करे, बाद में खमा० इच्छा० 'मज्झाय करु' 'इच्छ' कह एक नवकार गिन उकड़ घँठ कर 'मन्नह जिणाण' सज्झाय कहे । बाद में खाने वाले दो बदन देकर पानी न पीना हो तो पाणाहार का और पानी पीना हो तो मुट्ठिसहिय का पच्चक्खाण करे । तिबिहार उपवासवालों को उदन देने की जरूरत नहीं, वे खमासमण दे के 'इच्छकारी भगवन् पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश दीजो जी' कह कर पाणाहार का पच्चक्खाण करे । चउविहार उपवास-वालों को यहा पच्चक्खाण करने की जरूरत नहीं है । जिसने प्रात काल तिबिहार उपवास का पच्चक्खाण किया हो परतु

पानी न पिया हो और पीना भी न हो तो यहा पर चउमिहार  
 उपवास का पञ्चकस्वाण कर ले । फिर स्वमा० इच्छा० 'उपधि  
 सदिमाहु' 'इच्छ' स्वमा० इच्छा० 'उपधि पडिलेहु' 'इच्छ' कह  
 कर बाकी सर्ग वम्बो की पडिलेहण करे । पडिलेहण करक  
 सग अपने अपने उच्चादि उपकरण उठा कर खड हो जायें और  
 उनमें से एक जन हरियायही करके राजा ल शुद्ध कर दूमरी  
 बार हरियायही कर विधिपूर्वक परठ देव और अन्त में सर्ग  
 अग्नि आशातना का मिच्छामि दुक्कड दें ।

### १७ मुट्टिसहिअ पञ्चकस्वाण पारने की विधि—

पडिलेहण में जिसने मुट्टिसहिअ का पञ्चकस्वाण किया हो  
 और पानी पीना हो वह पडिलेहण करक पहले मुट्टिमहिअ का  
 पञ्चकस्वाण पारे ।

मुट्टिसहिअ का पञ्चकस्वाण पारने में विशेष विधि नहीं है,  
 मटासनपर बैठ दाहिने (जामने) हाथ की मुट्ठी वाल कर चरबले  
 पर रखे और एक नवकार गिन कर "मुट्टिमहिअ पञ्चकस्वाण  
 फ सिअ, पालिअ, मोहिअ, तीरिअ, किट्ठिअ, जाराहिय, ज च  
 न जाराहिय तस्स मिच्छामि दुक्कड" यह पाठ बोल पञ्चकस्वाण  
 पारे और यह भी न बने अथवा याद न हो तो मुट्ठीवाल क  
 तीन नवकार गिनने से भी चल सकता है । पीछे देवगन्दन के  
 पहले पहले पानी पी लेने, क्योंकि देवगन्दन करने के बाद

पानी नहीं पिया जाता । बाद में सब मिलकर तीसरी बार का देववन्दन करे ।

## १८ दैनसिक प्रतिक्रमण—

प्रतिक्रमण पोमहवालों और दूसरों के लिये एक ही है, परन्तु उसमें जहा जो फरक जाता है वह यदा पताया जाता है ।

पौषधिक श्रापक को प्रतिक्रमण के समय सामायिक लेने की, पचक्खाणसुहपत्ति पडिलेहणे की और पच्चक्खाण लेने के लिये दो वन्दन देने की जरूरत नहीं है, क्यों कि उनका सामायिक ली हुई है और पच्चक्खाण की क्रिया पडिलेहण के समय की हुई है । हा, पाणाहार का पच्चक्खाण पहले न किया हो तो उस समय कर ले । मात्री पौषधिक को इरियावही करके प्रतिक्रमण का चैत्यवन्दन शुरू करना चाहिये और दैनमिक या पाधिक जो प्रतिक्रमण हो विधिमुज्झ करना चाहिये । उसमें मात लाख और जठारह पापस्थान की जगह पौषधिक “इच्छाकारेण सदिमह भगवन् गमणागमणे आलोउ ?” ‘इच्छ’ कह कर “इरिया समिति, भापाममिति०” इत्यादि ‘गमणा-गमणे’ का पाठ बोले और ‘करेमि भन्ते’ के पाठ में ‘जाव नियम’ के स्थान में ‘जाव पोमह’ शब्द बोले ।

## १९ पोषध पारने की विधि—

प्रतिक्रमण समाप्त होन के बाद पोमह पारने के पहले दडामन, कुण्डिया, पानी विगैह चीजे चिसके पोषध न हो कम गृहस्व को सुपुर्द कर दे और फिर इस विधि से पोमह पारे।

पहले खमासमणपूर्वक इरियावही करे और चउकरसाय से ले नयरीयरायपर्यन्त चैत्यमन्दनयूत्र बोले। फिर खमा० इच्छा० 'मुहपत्ति पडिलेहु?' 'इच्छ' कह मुहपत्ति पडिलेहु, बाद में खमा० इच्छा० 'पोसह पारु?', यथाशक्ति, खमा० इच्छा० 'पोसह पार्या?', तद्वत्ति कहके एक नयकार गिन दाहिना (जीमना) हाथ चरवला के ऊपर स्थापन कर नीचे लिखा हुआ 'सागरचन्दो' का पाठ कह—

## सागरचन्दो—

“सागरचन्दो रामो, चन्दमहिंसो मुदसणो धर्मो ।  
जैसि पोसहपडिमा, अखडिआ जीविअते रि ॥१॥

घचा सलाहणिआ, सुलसा आर्णदकामदेवा य ।  
जास पससइ मयन, ददव्वयत्त महायीरो ॥२॥”

पोमह विधिण लीघो, विधिण पार्या, विधि करता जे कह,

अग्निधि हुआ होय ते सगिह मन वचन कायाए करी मिच्छा-  
मि दुक्कड ।

फिर खमा० इच्छा० मुहपत्ति पडिलेहु ? 'इच्छ' कह कर  
मुहपत्ति पडिलेहुण करे और खमा० इच्छा० 'सामायिक पाठ' ?  
यथाशक्ति, खमा० इच्छा० 'सामायिक पाठुं' 'तद्वत्ति' कहके  
चरवलें पर हाथ स्थापन कर नयकार गिन नीचे लिखा सामा-  
यिक पारने का पाठ बोले—

“मामाअनयजुत्तो, जान मणे होइ नियमसजुत्तो ।

छिन्नइ असुह कम्म, सामाअजत्तिआयारा ॥१॥

मामाअयमि उ रए, समणो इर सानओ हवइ जम्हा ।

एएण कारणण, बहुमो सामाअय कुजा ॥२॥”

सामायिक निधे लीधु, विधे पाठुं, विधि करतां जे कह  
अग्निधि हुआ होय ते सगिह मने वचने कायाए करी मिच्छा  
मि दुक्कड ।”

## रात्रिपोषध—

### १ पौषधिक प्रकार

रात्रिपोषध माल दो प्रकार क होते हैं—एक तो आठ पहर का पोषध लेने वाले और दूसर शामको रात्रिपोषध लेने वाले आठ पहर का पोषध लेने वाला को फिर रात्रिपोषध उच्चरन की जरूरत नहीं है।

शाम को रात्रिपोषध लेने वाले भी दो तरह क होते हैं—कोई प्रातः चार पहर का पोषध लेकर शामको रात्रिपोषध उच्चरते हैं और कोई करल शाम को ही रात्रिपोषध लेते हैं। इनमें जो दिनक पौषधिक शामको रात्रिपोषध उच्चरते हैं उन को शाम की पड़िलेहण के समय डरियावही से लेकर 'बहु-बल करणु' तक की तमाम विधि दिवसपोषध की विधि मुजब ही करनी चाहिये, मरिफ 'वमणे सदिसाहु' 'वमणे ठाउ' ये दो जात्रेण लेने क बाद एक खमासमण दे के 'इच्छाकारण सदिमह भगवन् सज्झायमां तु' इम प्रकार का एक ही जादश लेना और एक नयकार गिनना चाहिये, तीन नहीं। परन्तु निनके दिवसपोषध नहीं है ये रात्रिपोषध लेते समय भी 'बहुबल करणु' पर्यंत की तमाम विधि दिवसपोषधविधि के अनुसार करें।

ग्रामकी पडिलेहण और दयनन्दन सब पोषधिक एकसाथ समान रीति से करें ।

## २ स्थण्डिलपडिलेहणा

सभी प्रकार के रात्रिपोषधिका को जल, पयारी के लिए सधारिया-उत्तमपट्टा, रानों में डालन के लिये कुण्डल और दडामन जादि जरूरी उपकरण पाम में रख लेना चाहिये । इतना ही नहीं किंतु रात्रि में माया परठने और स्थण्डिल जाने योग्य नजदीक, मध्यम और दूर ऐसे तीन स्थानों को देख रखना चाहिये । आधुनिक प्रवृत्ति मुख्यसधारण करन की पगढ़ पोषधशाला के द्वार के आम पाम की भूमि और पोषधशाला से १०० हाथ तक के प्रदेश को अनुक्रम से नजदीक मध्यम और दूर का स्थान माना जाता है । इन स्थानों की प्रतिलेखना आज तक नीचे मुख्य २४ मण्डलों द्वारा की जाती है ।

प्रथम इरियागही करके खमा० इच्छा० 'स्थण्डिल पडिलेहु?' 'इच्छ' कह कर चरगला दाहिने हाथमें ले उपर्युक्त स्थानों की तरफ फिराता हुआ नीचे का पाठ बोले—

( १ )

१ आगाढे आयन्ने उच्चार पामणणे अणहियासे ।

२ आगाढ आसन्ने पामणणे अणहियासे ।

- ૩ આગાદે મજ્જે ઉચ્ચાર પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૪ આગાદે મજ્જા પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૫ આગાદે દૂર ઉચ્ચાર પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૬ આગાદે દૂરે પાસવળે અળહિયાસે ।

( ૨ )

- ૧ આગાદે આસન્ને ઉચ્ચાર પાસવળે અહિયાસે ।
- ૨ આગાદે આસન્ને પાસવળે અહિયાસે ।
- ૩ આગાદે મજ્જે ઉચ્ચાર પાસવળે અહિયાસે ।
- ૪ આગાદે મજ્જે પાસવળે અહિયાસે ।
- ૫ આગાદે દૂર ઉચ્ચાર પાસવળે અહિયાસે ।
- ૬ આગાદે દૂર પાસવળે અહિયાસે ।

( ૩ )

- ૧ અળાગાદે આસન્ને ઉચ્ચારે પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૨ અળાગાદે આસન્ને પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૩ અળાગાદે મજ્જે ઉચ્ચારે પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૪ અળાગાદે મજ્જે પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૫ અળાગાદે દૂરે ઉચ્ચારે પાસવળે અળહિયાસે ।
- ૬ અળાગાદે દૂરે પાસવળે અળહિયાસે ।



( ४ )

१ अणागाढे आमन्ने उच्चार पासवणे अहियासे ।

२ अणागाढे आमन्ने पामवणे अहियासे ।

३ अणागाढे मज्जे उच्चार पामवणे अहियासे ।

४ अणागाढे मज्जे पासवणे अहियासे ।

५ अणागाढे दूरे उच्चार पामवणे अहियासे ।

६ अणागाढे दूरे पामवणे अहियासे ।

ऊपर जो ६-६ मण्डला के ४ पाठ दिये गये हैं उन प्रत्येक में पहला दूसरा तीसरा चौथा और पाचवा छठा ये दो दो वाक्य अनुक्रम से निम्न, मध्यम और दूर के स्थण्डिलों की प्रतिलेखना के प्रतिपादक हैं इस वास्ते प्रत्येक पदक में इन दो दो वाक्यों को बोलते समय नजदीक मध्यम और दूर के स्थण्डिल की प्रतिलेखना की भावना से उस तरफ चरबला फिराना चाहिये । आज कल की प्रवृत्ति में पहले छ मण्डल करते समय चरबला पथारी के स्थान की तरफ फिराते हैं, दूसरे छ मण्डलों में पोषधशाला के भीतर द्वार के पास, तीसरे छ में द्वार के बाहर और चौथे छ मण्डल करते समय पोषधशाला के बाहर सौ हाथ के अन्दर चरबला फिरा कर प्रतिलेखना की भावना की जाती है ।

## ३ दैनसिक प्रतिक्रमण

दैनसिकप्रतिक्रमण सभी पौषधियों के लिये समान है इस वास्तु 'त्रिमपोषध' के अधिकार में कहें मुजब ही रात्रि पोषधगाला को भी दैनसिकप्रतिक्रमण कर लेना चाहिये। हा, इतना जरूर है कि रात्रिपोषधगालो को प्रतिक्रमण के पूर्ण होने पर इरियाइही या चउक्मायादिविधि करने की जरूरत नहा है, क्योंकि यह विधि उनको सथारापोरिसी पढाते समय करने की है।

## ४ सथारा पोरिसी पढाने की विधि—

लगभग एक पहररात तक का समय पौषधिक को म ज्ञाय-ध्यान या धमचर्चा में पीताना चाहिये, और नाद में पूर्वप्रतिलिखित स्थान में दण्डायन या चरवले से प्रमार्जन कर सथारा करे। पूर्वमाल में सथारा दर्भ का किया जाता था परन्तु आज कल उनी सथारिया या कम्बल बीछा कर उस पर एक सूती कपडा (उत्तरपट्टा) बीछा लेते हैं।

सथारा बीछा कर नीचे लिखी विधि से सथारा पोरिसी पढाई जाती है।

स्वमा० इच्छा० 'बहुपडिपुना पोरिसी' फिर स्वमासमण पूर्वक इरियाइही करे। नाद में स्वमा० इच्छा० 'बहुपडिपुना

पोरिमी राडयसथारए ठामि' 'इच्छ' कह चउरुमाय मा चैत्य-  
उन्दन और नमुत्थुण से जयसीयरायपर्यन्त विधि कर, फिर  
समा० इच्छा० 'सथारापोरिमी विधि भणावरा मुहपत्ति पडिले  
हु ?' 'इच्छ' कह मुहपत्ति पडिलेहण कर, पीछे "निमीहि  
निसीहि निमीहि नमो खमासमणाण गोयमारण महामुणीण"  
यह पाठ, एक नरकार और करमि भन्ते गोल, इस प्रकार  
इस पाठ से एक नरकार, तथा करमिभन्त क माय तीन बार  
बोलकर फिर नीचे का पोरिमी पाठ पड़े-

"अणुजाणह जिट्ठजा-अणुजाणह परमगुरु,  
गुरुगुणरयणेहि मण्डियमरीग ।  
नट्ठुपडिपुन्ना पोरिमी, राडअमथारए ठामि ॥१॥  
अणुजाणह सथार, घाट्टुमहाणेण, रामपासण ।  
कुक्कुडिपायपमारण, अतरत पमज्जण भूमि ॥२॥  
सफोइअसडामा, उव्वट्ठत य कायपडिलेहा ।  
दव्वाइउवओग, ऊमासनिरम्भणालोए ॥३॥  
जइ मे हुज पमाओ, इमस्म देहस्सिमाइ रयणीए ।  
आहारमुवहिदह, सब्ब तिप्पिहण गोमिरिअ ॥४॥  
चत्तारि मगल-अरिहन्ता मज्जल, मिद्धा मज्जल,  
माह मज्जल, केवलपण्णत्तो अम्मो मज्जलम् ॥५॥  
चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,  
साह लोगुत्तमा, केवलपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥६॥

पौषधिक के रात्रिकप्रतिक्रमण में जो फेरफार है वह “पोषध लेने के बाद रात्रिकप्रतिक्रमण” नामक ‘दिवसपोषध’ के प्रकरण में बता दिया है।

### ६ प्राभातिक प्रतिलेखना—

रात्रिपौषधिका को प्राभातिक प्रतिक्रमण करके सुबह होने के लगभग समय में प्रतिलेखना करनी चाहिये।

इस प्राभातिक प्रतिलेखना की विधि अक्षरशः “प्रतिलेखना विधि— नामक ‘दिवसपोषध’ के ४ वें प्रकरण लिखे मुनन है। भेदमात्र इतना ही है कि वहाँ पोषध उधर के अनन्तर होने से ‘इरियायही’ किये बिना ही पड़िलेहण गुरु की जाती है और यहाँ स्वामिमणपूर्वक इरियायही करने के बाद स्वामि० इच्छा० ‘पड़िलेहण करु?’ इत्यादि आदेश मागे जाते हैं, रात्री तमाम विधि एक ही है।

### ७ देवचन्दन तथा सज्झाय—

प्रतिलेखना के बाद रात्रिपौषधिका को “देवचन्दन विधि” नामक ७ वें प्रकरण में लिखित विधि मुनन देवचन्दन और “सज्झायविधि” नामक ८ वें प्रकरण में लिखित विधि मुनन सज्झाय करना चाहिये। बाद में दण्डासन, कुण्डी, पानी, कण्डल, कम्पल, जादि जो चीज याच कर ली हों वे सब पोषधरहित-गृहस्थ को साप द। बाद में पोषध पारे।

## ८ रात्रिपोष्य पारने की विधि—

रात्रिपोष्य और दिवसपोष्य के पारने की विधि में कुछ भी अन्तर नहीं है। भेदमात्र इतना ही है कि दिवसपोष्य पारने समय इरिपारही करके 'चउमरसाय' से ले 'जयरीय-राय' पर्यन्त चैत्यगन्दन कर रात में खमाममणपूर्वक पोष्य पारने की मुहपत्ति पडिलेहते हैं। इसके आगे दोनों प्रकार के पोष्य पारने की विधि "पोष्य पारने की विधि" नामक १९ वें प्रकरण में लिखे मुजब है।

## प्रकीर्णक

### १ पोष्य ग्रन्थ के पाच अतिचार—

- (१) शय्या-सवार की भूमि की पडिलेहणा न करे, अथवा अग्निधि से पडिलेहण करे।
- (२) शय्या-सवार की भूमि की प्रमार्जना न करे, अथवा अग्निधि से प्रमार्जन करे।
- (३) स्थण्डिलभूमि ( लघुनीति-बड़ी नीति जाने की जगह ) की प्रतिलेखना न करे, अथवा अग्निधि से प्रतिलेखना करे।
- (४) स्वडिलभूमि की प्रमार्जना न करे, अथवा अग्निधि से

- (५) पोषध विधिपूर्वक पूरा न करे, पारणा की चिन्ता करे, घर के काम की चिन्ता करे, पोषध के १८ दोष न टाले।

मर पौषधियों को पोषधग्रन्थ के उपर्युक्त पाच अतिचार टालने का प्रयत्न करना चाहिये।

### ० पोषधग्रन्थ के १८ दोष—

- (१) अत्रती गृहस्थ का लाया हुआ आहार पानी ग्रहण करे।
- (२) सरस आहार क लोभ से पोषध करे।
- (३) पोषध क निमित्त पहले सरस आहार करे।
- (४) पोषध में अपना पोषध क लिये पहल शरीर विभूषा करे।
- (५) पोषध क निमित्त बस्त्र धुलाय।
- (६) पोषध के निमित्त आभूषण घड़ाये अपना पहिर।
- (७) पोषध क निमित्त गन्ध लगाय।
- (८) शरीर पर से मेल उतारे।
- (९) अमलशयन कर-निद्रा करे।
- (१०) स्त्रीकृपा करे।
- (११) आहारकृपा करे।
- (१२) सत्कृपा करे।

- (१३) शक्रधा करे ।
- (१४) प्रतिलखन-प्रमार्जन क्रिय विना मल मूत्र पगटे ।
- (१५) क्रिमी की निन्दा कर ।
- (१६) मातापिता पुत्र भाई आदि से मामारिह राते करे ।
- (१७) चौरमन्त्रन्धी रातालाप कर ।
- (१८) स्त्रियों के अङ्गोपाङ्ग मरगदृष्टि से देखे ।

ऊपर लिखी हुई १८ बातें पोषध में करे तो पौषधिरु को दोष लगता है इसलिये इनका त्याग करना चाहिये ।

### ३ सामायिक के ३० दोष—

( मन के १० )

- (१) विधि मन्त्रे वगैर सामायिक कर ।
- (२) यश कीर्तिनी आशा से सामायिक करे ।
- (३) धन की इच्छा से सामायिक करे ।
- (४) सामायिक करने का गर्व करे ।
- (५) लोकनिन्दा क भय से सामायिक करे ।
- (६) सामायिक करके पौद्गलिक सुखप्राप्ति का निदान करे ।
- (७) सामायिक के फल में सशय करे ।
- (८) रूपाययुक्त चित्त से सामायिक करे ।
- (९) गुरु का अथवा स्थापनाचार्य का विनय न करे ।
- (१०) शत्रु से सामायिक न करे ।

## ( वचन के १० )

- (१) कुचन मोले ।
- (२) उपयोगशून्य अत्रिचारित भाषण करे ।
- (३) किसी के ऊपर अमत्य कलह लगावे ।
- (४) शान्तिरुद्ध मोले-उत्सृज भाषण करे ।
- (५) सूत्रपाठ पूरा न बोले ।
- (६) किसी के साथ कलह करे ।
- (७) राजकृपादि चार विरुधा करे ।
- (८) किसी की ठट्ठा मस्खरी करे ।
- (९) सूत्रपाठ अनुद्ध मोले ।
- (१०) सूत्रपाठ का उच्चारण जल्दी जल्दी करे ।

## ( पापा के १२ )

- (१) पग ऊपर पग चढ़ा कर बैठे या ऊंचे आमन बैठे ।
- (२) चपलता से गार गार आमन बदले ।
- (३) हिरन की तरह चपलदृष्टि से चारों ओर देखा करे ।
- (४) सामर्थ्य कार्य करने का सफल करे ।
- (५) स्वप्न आदि का अनष्टम (जोठा) लेकर बैठे ।
- (६) बिना कारण हाथ पग पसार और सकोचे ।
- (७) अङ्गुली ले (जालम मरडे)
- (८) अङ्गुली जादि से मरोड कर झटके पाडे ।



‘यस्य दायनी १ गा रुम्’ तर्क क २० मोड शरीरपटिलेहणा  
कहे, इसलिये इनको मोलने समय इनके नामे ( ) ऐसे  
कोष्ठक में लिखित जङ्ग-विनय ने मुद्राति को दिग कर  
व्यक्ती पटिलेहणा की जाती है ।

## पटिलेहण में मोलों का उपयोग

उपर जो मुद्रातिपडिच्छा का गान् रुम् कहे है वे पुरुषों  
को अपासे समझना चाहिये । बिना जगपटिलेहणा के  
बोना में से मन्तरु क ३, हृदय ५ ३ ती दो भुजाओं के  
४ इन १० मोलों को छोड़ कर शेष २ जानती है ।

घौती, उत्तरानन, रुम्ब २ आदि रचो की पटिलेहणा  
करने समय भी मुद्रातिपडिच्छा २० मोल करने चाहिये । कदासन  
चावला और घौती रुम्बो २० मोलों में से कुछ के  
क्रमसु पन्डह, दग और दग मोलों में पटिलेहने चाहिये ।

## ७ योग्य म जल्दी उपकरण-

दिव्य-पात्र कन बांछ को १ मुद्राति, १ चम्पना,  
१ कदासन, १ घौती, १ घौती रुम्बो, १ उत्तरानन, १  
लघुनीति तर्क बडीनीति जानें समय पहिले मोल मोली  
और १ नाक मण्ड करने के लिये रच कर मुद्राति करने उप-  
रान पात्र में रख कर योग्य लेना चाहिये ।



‘प्रसन्नायनी रथा करु’ तरु क २५ गोल शरीरपडिलेहणा के है, इसलिये इनको गोलत ममय इनक आगे ( ) ऐसे कोष्ठक में लिखित जङ्ग-विभाग में मुहपत्ति को फिरा कर उसकी पडिलेहणा की जाती है ।

### पडिलेहण में गोलों का उपयोग

ऊपर जो मुहपत्तिपडिलेहणा क गोल कहे हैं वे पुरुषों की अपेक्षासे समझना चाहिये । स्त्रिया जगपडिलेहणा के गोलों में से मस्तक के ३ हृदय के ३ और दो भुजाओं के ४ इन १० गोलों को छोड़ कर शेष ४० गोलती हैं ।

धौती, उत्तरामन, कम्बल आदि चारों की पडिलेहणा करते ममय भी मुहपत्तिक २५ गोल रहने चाहिये । कगासन चारवला और सूती कन्दोरा इन्हीं २५ गोलों में से शुरू के कमश पन्द्रह, दश और दश गोलों से पडिलेहने चाहिये ।

### ५ पोषण में जरूरी उपकरण-

दिवस-पोषण करने वाले को १ मुहपत्ति, १ चरवला, १ कटामन, १ धौती, १ सूती कन्दोरा, १ उत्तरामन, १ लघुनीति तथा बड़ीनीति जते समय पहिरने योग्य धौती और १ नाक साफ करने के लिये बस्त्र का डुम्डा, इतने उपकरण पास में रख कर पोषण लेना चाहिये ।

गन्निपोषध करने वाले को उक्त ८ उपकरणों के उपरांत नीचे लिखे हुए उपकरण भी लेने चाहिये—१ उनी कम्बल, (ठण्डी ऋतु मौसम हो तो २ भी रख सकते हैं) २ उत्तरपट्टक सूती, १ कुण्डल जोड़ी, १ दण्डासन, १ चूनाडाला हुआ पानी, १ लोटा । इससे भी ज्यादा किसी उपकरण की जरूरत हो तो रख लेना चाहिये ।

### ६ कम्बल-काल

आषाढ शुदि १५ से कार्तिक शुदि १४ तक ६ घड़ी, कार्तिक शुदि १५ से फागुन शुदि १४ तक ४ घड़ी और फागुन शुदि १५ से आषाढ शुदि १४ तक २ घड़ी का कम्बलकाल है, इसलिये प्रातः इतनी कच्ची घड़ी दिन चढ़ने के पहले और सायं इतनी घड़ी दिन शेष रहे उसके बाद पोषधिक को कम्बल जोड़े गैर गुले जाग्राह में न जाना चाहिये ।

### ७ अचित्त-जल काल

आषाढ शुदि १५ से कार्तिक शुदि १४ तक ३ पहर, कार्तिक शुदि १५ से फागुन शुदि १४ तक ४ पहर और फागुन शुदि १५ से आषाढ शुदि १४ तक ५ पहर पर्यन्त अग्नि से 'अचित्त' किया हुआ जल 'अचित्त' रहता है । उक्त काल के बाद वह फिर पूर्ववत् 'सचित्त' हो जाता है, इस वास्ते समय पूरा होने के पहले ही उममें बीड़ा सा कली का चूना-जिमसे

पानी का रंग ठाछ की जाछ जैसा हो जाय-डाल देना चाहिये ताकि वह २४ पहर तक 'अचित्त' ही रह ।

### ८ जानने योग्य ज्ञाने—

- (१) चार अथवा जाठ पहर का पोषध करने वाले को उस दिन कम में कम एकाग्रता का तर तो अवश्य करना चाहिये ।
- (२) गुरु के योग में पोषध गुरुमुख से ही लेना चाहिये । यदि दर होने के भय से स्वयं उच्चर ले तो भी बाद में गङ्गमुहपत्तिपडिलेहणा के पूर्व फिर गुरुमुख में उच्चरना चाहिये ।
- (३) पडिलेहणा उरुद्व पगा पर बैठ कर करनी चाहिये, उस समय बोलना न चाहिये, उत्तरासन रखना न चाहिये, जीवजन्तु की अयणा करनी चाहिये ।
- (४) मुहपत्ति आदि पांच उपकरणों की पडिलेहणा स्थापना चार्य भी पडिलेहणा के पहले भी हो सकती है, परन्तु 'उन्डफारी भगवन् पसायफरी पडिलेहणा पडिलेहामो जी' इसके आगे की पडिलेहणाविधि स्थापनाचार्य की प्रतिलिखना होने के बाद ही की जा सकती है ।
- (५) पोषध में मध्याह्न का दशवन्दन सिधे अगर पढ़ा नहीं पावते ।

- (६) पौषधिक और अपौषधिक मभी को एकाग्रन नित्री या आयतिल करने के बाद 'दिवसचरिम तिग्निहार' का पञ्चकखाण करना चाहिये।
- (७) दूसरी बार भी पडिलहणा म उपनास आदि तपमाला को रुन्दोरा और पहरने की बोती समके पीछे पडिले हनी चाहिये।
- (८) मुख्यतया पौषधिक को रात्रि में स्थण्डिल जाने का निषेध है, परन्तु कारणविशेष मे जाना पड तो पोषध माला से सौ कदम के अन्दर जाना चाहिये।
- (९) अलङ्कार में कनल जोडे बिना खुली जगह म जाने बैठने, सोन का पौषधिक को निषध है।
- (१०) पौषधिक को मुहपत्ति और चरमला हर समय अपने पास रखना चाहिये और सौ हाथ के उपरान्त कहीं भी जाना हो तो कृत्तमनसायमें रख कर जाना चाहिये।

॥ इति ॥



## ‘पोषधविधि’का परिशिष्ट—

दशावकाशिक व्रत लेने और पारनेकी विधि—

मास के बारह व्रतोंमें ५ अणुव्रत और ३ गुणव्रत धार लिए नहीं जाते, परन्तु ४ सिद्धाव्रत अभ्यासक होने से बार बार लिये और पार जात हैं।

मासाधिक और पोषव्रत के लेने तथा पारनेकी विधि ‘पोषधविधि’ में लिखी जा चुकी है, और ‘अतिथिमरिमाग्न’ क्रिय प्रकार किया जाय इसकी रीति भी उसके वर्णनमें दी गई है। अब रहा ‘दशावकाशिकव्रत’ सो इस के लेने और पारनेकी विधि यहां पर लिखी जाती है।

दशावकाशिकव्रत लेने की विधि में दशभेदसे वर्णित है। गुजरात में यह व्रत लेने के पहले द्रव्य, वेद और भाग से साप्ताहिक प्रवृत्तियों का मनन निम्न के गुरुमुखसे जयना स्वमुखसे—

‘देसायगासिय उग्रभोग पवित्र’

भोगेण महमागारेण महत्तरागारेण सन्ध्यामाह्वितियागारेण  
योमिरइ”

यह आलावा बोल कर दशानकाशिर उचरते हैं और रा  
दमें तत्काल जयवा समयान्तरमें सामायिक करते हैं। कुल  
१० सामायिक करके दशानकाशिर पूरा करत है।

मारवाड में कहीं कहीं तो ऊपर मुनर ही दशानकाशिर  
रिया जाता है, परन्तु उड स्थानों में ‘पोषध’ की ही तरह य  
ह मत भी इगियाजहीप्रतिक्रमगपूर्वक मुहपत्तिपटिलेहणा कर  
के रमा० इच्छा० ‘दिमावगाशिर सदिमाउ’, रमा० इच्छा०  
‘दिमावगाशिर ठाउ’ ‘इच्छ’ कह नयभार गिन के नीचेका  
आलावा बोल कर उचरते हैं—

‘अह न भते तुम्हाण समीरे दसावगाभिय उभोग  
परिभोग पञ्चक्खामि, दुग्धि तिग्धिण-मणेण नायाए ऋण  
न करमि न ऋवेमि, त दसावगासिय चउब्धिह पन्नत्त-  
दन्धजो, खित्तओ, कालजो, भाव तो। दन्धजो ण दसा  
वगासिय सन्धदन्धाइ अहिगिच्च, खित्तजो ण जाय पोसइसाला  
ए वा, कालओ ण जाय नियम वा दिवस, भावजो ण जाय  
एस परिणामो न परिणइइ, तस्म भते पडिक्कमामि निंदामि  
गरिहामि ण्णाण वोसिरामि ॥”

१ उच्चरनेवाला ‘जसिरामि’ वाले जो स्वमुखासे उच्च  
स्ता हो तो केवल ‘वोसिरामि’ ही बोले।



इस के बाद सामायिकविधिसे सामायिक उचरते हैं और शाम को जब दशावकाशिक पारते हैं उसी समय सामायिक भी पारते हैं।

दशावकाशिक पारते समय इगियावही, मुहपतिपडिल-हणा और आदेश लेना आदि विधि पोषध की तरह की जाती है और चरगले पर हाथ स्थापन कर नरकार गिन कर 'सागर चगे' की जगह नीचे की गाथा बोली जाती है—

“ज ज मणण उद्ध, ज ज वायाए भामिय पार ।

ज ज काएण कय, मिच्छामि दुक्कड तस्म ॥”

इस के बाद सामायिक पारते हैं। इति ।







